॥ श्री धन्वन्तरये नमः ॥

प्राणाचार्य का विशिष्ट अङ्क

प्रयोग मणि माला

जिसमें

२५१ वैद्यों के ५०१ प्रयोग, परिचय और
चित्र एवं सम्पादकीय टिप्पणी
सहित वर्णित हैं

सम्पादक

वैद्य बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य

मैनेजिङ्ग डायरेक्टर-प्राणाचार्य भवन लिमिटेड
बिजयगढ़ (अलीगढ़)

भाग २	सन् १६४६ ई०	अङ्क विशिष्ट

इस प्रति का मूल्य—८)

प्रकाशक

प्राणाचार्य भवन लिमिटेड

विजयगढ़ (अलीगढ़)

प्रथम बार १०००

—मुद्रक—

वैद्य बांकेलाल गु

प्राणाचार्य प्रेस

विजयगढ़

दो शब्द

आपकी चिर प्रतीक्षा एवं हमारे दीर्घ काल के परिश्रम के रूप "प्रयोग मणिमाला" आपके सम्मुख उपस्थित है। इसका न मुझे किन २ परिस्थितियों के फल स्वरूप करना पड़ा है, वर्णन तो बहुत बड़ा पोथा बन जायगा फिर भी कुछ वर्णन करना संगिक न होगा। आज से ३० साल पूर्व धन्वन्तरि कार्यालय की पना मैंने अपने पूज्य बहनोई स्वर्गीय लाला राधाबल्लभ जी वैद्यराज हयोग से की और धन्वन्तरि मासिक का प्रकाशन भी शुरू । स्थापना के २-३ साल उपरान्त मेरे बहिनोई का अल्पायु र्गवास होने एवं उनके दोनों पुत्र देवीशरण गर्ग व ज्वालाप्रसाद ल की आयु क्रमशः ७ व ५ वर्ष होने से समीपस्थ सज्जनों मुझे ही उनका संरक्षक नियुक्त किया गया। मैंने उनके लालन ालन के साथ ही उचित शिक्षा दीक्षा का भी प्रबन्ध किया। साथ ी मैंने धन्वन्तरि कार्यालय को जिस स्थिति पर पहुंचाया वह सर्व विदित है। पर जब वह पढ़ लिख गये व योग्य होगये तब वह मुझसे कुछ कटु व्यवहार रखने लगे। यह व्यवहार कई वर्षों चला और अन्त मे २६ जुलाई १९४८ को आकर धन्वन्तरि कार्यालय के बटवारे के रूप में प्रकट हुआ। मैंने बटवारा कर लिया और पृथक होगया।

धन्वन्तरि के कार्य काल मे मैंने गुप्तसिद्ध प्रयोग नामक पुस्तक प्रकाशन की घोषणा की थी और सहृदय वैद्यों ने प्रेम पूर्वक अपने अमूल्य प्रयोग उसके लिये सहर्ष दिये। यह प्रयोगादि मैंने इकट्ठे किये और उसका पूरा सम्पादन कर लिया। पुस्तक के लिये कागज आदि का प्रबन्ध हो ही रहा था तब तक यह सब होगया तथा पुस्तक के समस्त कागजात मुझे उनको सौंपने पड़े। मैंने अपनी सम्पादित कापी अपने नाम से प्रकाशित करने की शर्त पर देना

स्वीकार किया पर उन्होंने ऐसा न कर धन्वन्तरि के विशेषांक रूप से यह चीज निकाली और सम्पादन भी स्वयं किया। तब रा कई प्रयोग प्रेषकों व रुपया जमा कराने वालों के पत्र मुझे मिले और मैं इस बात को बाध्य हुआ कि स्थिति स्पष्ट करूं अतः इस वर्ष के अं ४ में मैंने अपनी स्थिति स्पष्ट की और यह निश्चय किया कि मैं पुस्तक रूप में पुनः ऐसा ग्रंथ प्रकाशित करूं। मैंने अनेक वैद्यों से पत्र व्यवहार किया और उन्होंने अपने प्रयोगादि सहर्ष मुझे भेज दिये इसी के फल स्वरूप यह पुस्तक आपकी सेवा में उपस्थित है।

यद्यपि इसके प्रकाशन में यथेष्ट विलम्ब हुआ जिसका मुख्य कारण साधन हीनता थी पर फिर भी उद्योग सफल हुआ और अब जैसी भी हो सकी यह आपके सामने उपस्थित है। इसमें शीघ्रता वश भूलें भी रह गई हैं जो अगले प्रकाशन मे सुधार दी जायगी कृपया इनकी सूचना हमें दें।

इस पुस्तक के अतिरिक्त भी सैकड़ों वैद्यों के परिचय, चित्र व प्रयोग हमें मिले हैं यह सब शीघ्र ही द्वितीय भाग मे प्रकाशित करेंगे अतः आपको अपने प्रेमी जनों के प्रयोग आदि हमें भिजवा कर इस प्रकाशन में सहायता देनी चाहिये। किन्हीं विशिष्ट सज्जन के प्रयोग यदि आप स्वयं न मंगा सकें तो हमें लिखें हम प्रार्थना करेंगे और मंगाने की चेष्टा करेंगे। इस भाग के उपरान्त तृतीय भाग के प्रकाशन की कोई आशा नहीं है अतः आप अपने २ प्रयोगादि शीघ्र ही भेजदें।

अन्त मे हमें सखेद सूचित करना पड़ता है कि श्रीमान मणीन्द्रकुमार जी मुखर्जी जो इस पुस्तक के प्रकाशन मे हमारे प्रमुख सहायक थे हृदय गति रुक जाने के कारण स्वर्गवासी होगये हैं। परमात्मा उनके परिवार और उनकी आत्मा को धैर्य प्रदान करे।

—शुभाभिलाषी

[signature]

आयुर्वेद सूरि, प्राणाचार्य, महामहोपाध्याय

स्व० श्री लक्ष्मीराम जी स्वामी

समर्पण

प्राणाचार्य, आयुर्वेद सूरि, वैद्य रत्न, महा महोपाध्याय

श्रीमान् परम पूज्य स्व० लक्ष्मीराम जी

स्वामी, जयपुर स्टेट

की

पुण्य स्मृति में

सादर समर्पित

प्राणाचार्य के विशिष्ट अंक

प्रयोग मणिमाला

प्रथम भाग

के

पूर्वार्द्ध की

अकारादि क्रम से माननीय लेखकों की सूची

—*—

—

—वाजीकरणाङ्क—

इसमें भारत के मान्य विद्वानों द्वारा लिखित लेखों द्वारा वाजीकरण क्या है, वाजीकरण की आव श्यकता, वाजीकरण द्रव्य, वाजीकरण प्रयोग आदि बीसियों प्रकार के लेखों से वाजीकरण पर प्रकाश डाला है। एक बार देखें और प्रयोग सेवन कर अपनी स्वास्थ्य रक्षा करें।

मूल्य-४) पोस्ट व्यय पृथक

प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ (अलीगढ़)

अर्श रोग हर प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

बाल रोग नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

प्रदर रोग नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

वीर्य रोग हर प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

सुजाक नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

वात व्याधि हर प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

उपदंश नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

क्षय रोग नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

शीत पित्त रोग नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

नेत्र रोग नाशक योग

(पूर्वार्द्ध)

फोड़ा फुंसी नाशक योग

(पूर्वार्द्ध)

कुष्ठ हर प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

खाज खुजली नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

उन्माद, हिस्टेरिया, अपस्मार नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

दर्द नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

विशूचिका हर प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

कास श्वास हर प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

संग्रहणी नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

दन्त रोग नाशक प्रयोग

(उत्तरार्द्ध)

रक्त दोष नाशक प्रयोग

(उत्तरार्द्ध)

मधुमेह नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

निमोनिया नाशक प्रयोग

स्त्री रोग नाशक प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

पांडु नाशक योग

(उत्तरार्द्ध)

नहरुवा नाशक योग

(उत्तरार्द्ध)

भगन्दर नाशक योग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

नासूर पर योग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

उदर रोग नाशक योग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

सर्प दंश नाशक योग

(उत्तरार्द्ध)

(पूर्वार्द्ध)

हृदय की निर्बलता नाशक

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

विविध प्रयोग

(पूर्वार्द्ध)

(उत्तरार्द्ध)

—आयुर्वेदीय औषधियां—

हमारे यहां सब प्रकार की रस, भस्में, कूपीपक्व, रसायन, गुटिका, चूर्ण, अवलेह, तैल घृत, आसव, अरिष्ट, आदि सभी आयुर्वेदीय औषधियां यथेष्ट मात्रा में हर समय तैयार रहती हैं। इन सबका निर्माण ४० वर्षीय अनुभव प्राप्त वयोवृद्ध "वैद्य बांकेलाल गुप्त" द्वारा कराया जाता है।

बिक्री विभाग में औषधियां उचित परीक्षण के उपरान्त ही रखी जाती हैं। पेटेण्ट औषधियों के गुण तो सर्व विदित हैं।

एक बार परीक्षा करें।

सूची पत्र व एजेन्सी नियम के लिये लिखें।

प्राणाचार्य भवन लि०, विजयगढ़ (अलीगढ़)

श्री धन्वन्तरये नमः

(प्राणाचार्य का विशिष्ट अङ्क)

प्रयोग मणिमाला

प्रथम भाग

(पूर्वार्द्ध)

शत शत स्वागत है ग्रन्थराज

रचियता—न्यायायुर्वेदाचार्य वैद्य पं० चन्द्रशेखर जी जैन शास्त्री

—o—

हे तेज-पुञ्ज ये योगराज ।
हे योगिराज से योगराज ॥

अनुपम अमृत भूत सुन्दरतम,
पीयूष-पाणि गुम्फित अनुपम ।
रुग्णावलि को जीवनधन सम,
शत-शत स्वागत है ग्रंथराज़ ॥

हे योग धुरन्धर गुण ललाम,
योगिन् ! जगती-सेवक निकाम ।
तव चरणों में शत-शत प्रणाम,
करता है सकल समाज आज ॥

हे तेज-पुञ्ज हे योगराज ।
हे योगिराज से योगराज ॥

वैद्य भास्कर बांकेलाल गुप्त "प्राणाचार्य"

अध्यक्ष-प्राणाचार्य भवन

विजयगढ़ (अलीगढ़)

—※—

आपका जन्म सं० १६४६ विक्रमी में अग्रवाल कुल भूषण श्रीमान् लाला मक्खनलाल जी मारवाड़ी के यहां हुआ। आपने अपने बहनोई लाला राधावल्लभ जी वैद्य के सहयोग से धन्वन्तरि कार्यालय की स्थापना की और धन्वन्तरि नामक मासिक पत्र प्रकाशित किया। आयुर्वेद की शिक्षा भी आपने उन्हीं से प्राप्त की थी। आपको अपने आयुर्वेद प्रेम और सेवाओं के फल स्वरूप सैकड़ों प्रशंसा पत्र, स्वर्ण पदक और उपाधियां मिलीं। श्रीमान् १०८ हिज-होलीनैस द्वारिकाप्रसाद जी गोस्वामी ने "वैद्य भास्कर" तथा बम्बई से प्रतापकुमार पोपटराम आयुर्वेदिक यूनिवर्सिटी ने "प्राणाचार्य" की उपाधि प्रदान की है। आप यू० पी० वैद्य सम्मेलन के अन्तर्गत कई सम्मेलनों के सभापति रह चुके हैं। अ० भा० वैद्य सम्मेलन के अन्तर्गत औषधि व्यवसायी सम्मेलन के सभापति भी रह चुके हैं। अलीगढ़ जिला वैद्य सम्मेलन और कानपुर जिला वैद्य सम्मेलन के भी सभापति रहे हैं। आप डिस्ट्रिक्ट बोर्ड अलीगढ़ और इण्डियन मैडीशन बोर्ड यू० पी० के भी सदस्य रह चुके हैं। आपने बीसियों औषधियों की खोज करके उनसे हजारों रोगियों को आरोग्य प्रदान किया है। श्वास रिपु, ज्वर निग्रह, कासान्तक, रक्त रोधक रसायन भारतीय कुनीन आदि अनेक पेटेण्ट औषधियां आपके द्वारा आविष्कृत हुई हैं। आप संग्रहणी, क्षय, शोथ, श्वास रोग के विशेषज्ञ हैं।

आपको अ० भा० आयुर्वेद महा मण्डल के लग-भग सभी अधिवेशनों पर औषधि निर्माण कला के फल स्वरूप प्रमाण पत्र, रौप्य एवं स्वर्ण पदक मिले हैं। आपने धन्वन्तरि से विशेष कारणों से साझा बांट सम्बन्ध विच्छेद कर प्राणाचार्य भवन लि० की स्थापना की है। और प्राणाचार्य मासिक पत्र का प्रकाशन किया है। धन्वन्तरि की जो उन्नति हुई है उसका समस्त श्रेय आपको है, यह सभी जानते हैं। ऐसे ही वैद्य रत्नों से आयुर्वेद सजग एवं जागरूप है। भगवान धन्वन्तरि से प्रार्थना है कि आपको दीर्घायु कर आयुर्वेद की उत्तरोत्तर उन्नति में सहायक बनावें। आपके २ परीक्षित प्रयोग निम्न हैं।

—वैद्य रामस्वरूप शर्मा
प्राणाचार्य भवन लि०

जुकाम पर—

वलि मशोधित मेव पलार्द्धकं,
रस मपीह समं दरदोत्थितम्।
युगल मायस खल्व विमर्दितं,
भवति यावदहोऽञ्जन सन्निभम् ॥१॥

दिन मासो रूदये नयनेऽञ्जिते,
हरति शूल मरोप शिरः स्थितम्।
स्रवति दूषित रूद्ध कफादिकं,
श्रुति सुलोचन नासिक या क्षणात् ॥२॥

दुष्ट प्रतिश्याय हरं रूद्ध श्लेष्म निर्हरणम्,
शिरः शूलः प्रशमनं ह्यनुभूतं निषेव्यताम् ॥३॥

हिंगुलोत्थ पारद २ तोला आमलासार गन्धक २ तोला —को लोहे की कढ़ाई में डाल लोहे के मूसले से मर्दन करें जब

सुरमा सत बारीक होजाय तब शीशी में भर कर रखले।

सेवन विधि—प्रातः काल सुरमा की भांति दोनों नेत्रों से लगावें। इससे नाक और आंख से दूषित नजला का जल निकल कर बिगड़ा हुआ जुकाम नवीन रुका हुआ जुकाम और नवीन प्राचीन शिरः शूल शान्त होजाता है।

मलेरिया पर—

शम्बूकं दश तोलकं सुविमलं ग्राह्यं ततो भावयेत्,
+ चूर्णं कर्षमितं जले शरमितेऽऽवाप्यास्बुना तेनवै।
सम्मर्द्याऽनुचचक्रिकां लघुतरां शुष्कां पुटे वारणे,
दत्वा शीतल मेत देवच पुनः सम्मेलये द्युक्तितः ॥१॥
माष कैरव नव भिस्तुलाधृतं पत्र तालक मिहोत्तमं पुनः,
तेन पूर्व भसितेनबुद्धिमानकन्यकाम्बु विनिमर्दितमूततः ।२।
देयाद्रक्ति मितश्च माक्षिक युतं पूर्व ज्वरात् निश्चितं,
घंटाया द्वितया दशौ पुनरिह घंटैक पूर्व ध्रुवम्।
घोरानवेग वतो ज्वरांश्च विषयान हन्तीह सत्यं वचः,
स्तस्यादत्र नियोजितं गदवतांसौख्याय सम्पद्यताम् ॥३॥

—शम्बूक (छोटे २ सङ्ख जो पोखर में होते हैं घोंघा भी जिन्हें कहते हैं) १० तोला लेकर शुद्ध (साफ) करले और १ तोले चूना को ५ तोले पानी में भिगो कर नितार ले उस पानी में शम्बूक को मर्दन कर टिकिया बना सुखा शराव सम्पुट कर गजपुट की अग्नि दे स्वांग शीतल होने पर निकाल ६ माशे तबकी हरताल को ग्वारपाठे के रस में मर्दन कर उसमें शम्बूक भस्म मिला मर्दन कर खुश्क कर रखलें।

सेवन विधि—१ रत्ती की मात्रा ले शहद से चटावें।

+ चूर्णं (चूना कलई)

आयुर्वेदशास्त्री

डाक्टर श्री पं० रामजीवन जी त्रिपाठी

एम० एम० एस० एफ० मेडीकल, प्रैक्टीशनर

इन्चार्ज केडिया अस्पताल

फतेहपुर—जयपुर

—o—

आप ब्राह्मण कुल भूषण पं० श्री पुरोहित नारायण जी के पुत्र हैं। आपका जन्म सम्वत १६५० के फाल्गुण मास में हुआ। आपने संस्कृत की मध्यमा, सम्मेलन की साहित्य-रत्न, आयुर्वेद शास्त्री, परीक्षा उत्तीर्ण की है। साथ ही ऐलोपैथी की एल० एम० एस० एफ० परीक्षा भी पास की है। आप पहले बन्धु मासिक के सम्पादक थे और अब प्रजाबन्धु साप्ताहिक पत्र के सम्पादक हैं। धमार्थ औषधालय के चिकित्सक भी हैं। अ० भा० वैद्य सम्मेलन फतेहपुर के अधिवेशन के प्रधान मंत्री रहे थे। म्युनिसिपल कमि-

श्नर भी हैं आप सर्व साधारण के प्रिय पात्र हैं कांग्रेस के कारण दो बार जेल भी हो आये हैं।

आप बड़े परिश्रमी और उद्योगी हैं साथ ही उदार भी हैं आपकी उदारता का एक नमूना पाठकों के सामने "स्थानीय अवसादक" की प्रयोग विधि स्पष्ट हृदय से सर्व साधारण के उपकार के लिये प्रकट करना है। यह अविष्कार यदि योरोप में होता तब आपकी बड़ी ख्याति होती साथ ही धन भी प्राप्त होता। यह एक प्रयोग ही हजारों रुपये के मूल्य का है। और साथ ही यह प्रमाणित करता है कि भारतीय वैद्य भी डाक्टरों के समान आविष्कार कर सकते हैं, यदि उन्हे अवसर दिया जाय। हम इस प्रयोग के प्रकाशनार्थ भेजने से आपके बड़े आभारी हैं।

स्थानीय अवसादक *

१—शरफोखा की जड़ की छाल ताजी लेकर छोटे छोटे टुकड़े कर कुचल ले और बीस गुन पानी में डाल गरम करे। जब पानी ५

---

* श्री माननीय डाक्टर साहब ने हमारे विशेष अनुरोध पर यह प्रयोग 'गुप्त सिद्ध प्रयोग' को दिया था और वह धन्वन्तरि में छपा भी पर प्रयोग अधूरा ही छपा था। अब के जब प्रयोग मणिमाला प्रकाशित करने का विचार हुआ तब उसकी शेष विधि के लिये हमने आग्रह किया और डाक्टर साहब ने उदारता पूर्वक वह शेष विधि भी लिखदी अब यह प्रयोग पूर्ण है। इसे बना लाखों रुपये पैदा कर सकते हैं ऐसे आविष्कार के लिये यदि डाक्टर साहब विदेशी होते तब संसार में ख्याति, प्रतिष्ठा और धन तीनों ही प्राप्त करते। हम डाक्टर साहब की इस उदारता के लिये अनेक धन्यवाद देते हैं।

गुना रह जाय तब उतार कर और मल कर कपड़ा में छान ले, जिससे शरफोंखा का सब तत्व निकल आवे। अब उस छने पानी को पुन: औटावें जब लेहवत गाढ़ा होजाय और यह मालूम हो कि अब बर्तन की गरमी से जो कुछ गीलापन है नष्ट होजायगा तब उतार लें और चलाते रहें जब खुश्क होजाय तब खुरच कर निकाल ले यदि पूर्ण खुश्क न हो तब छाया में सुखाले पुनः अग्नि पर न रखें। यह शरफोंखा का घन सत्व हुआ इसका रङ्ग राख के रङ्ग के सदृश होगा। इससे भी काम ले सकते हैं पर वह यथेष्ट गुण नहीं करेगा अतः इस शरफोंखा के घन सत्व के बराबर हड्डी के कोयले का पाउडर (Bone Charcoal Powder) मिला कर बीस गुने पानी में मिला दें और तब इसे उबालें तीन चार उफान आने पर ब्लाटिंग पेपर (सोखता) में छानलें। हड्डी का कोयला ऊपर रह जायगा क्योंकि वह घुलनशील (Soluble) नहीं है और औषधि मिश्रित पानी नीचे चला जायगा अर्थात् छन जायगा, उस छने हुये पानी को मंद आंच पर चढ़ा कर भांप उड़ादें। (Evaporate) करदे। नीचे जो तल छट मिलेगी वह औषधि है इसी प्रकार दो दफा कर लेने से रङ्ग बिलकुल सफेद हो जावेगा, यह सफेद रङ्ग का क्षार या घन सत्व उत्तम स्थानीय अवसादक (Local areasthetic) होगा यह हमारी अपनी ईजाद है और हमारा दावा है कि पाश्चात्य चिकित्सकों को जिस प्रोकेन, परकेन, नोवाकेन पर इतना नाज है उससे यह औषधि किसी भी अवस्था में कम नहीं है।

व्यवहार विधि—यह प्रयोग कतई हानिकारक नहीं है बिना अनुभवी वैद्य भी इसका प्रयोग कर सकते हैं इसकी मात्रा एक से दो रत्ती तक है। ८ परसेंट का घोल बना कर जहां "सुन्न" करना हो उस स्थान के चारों तरफ इंजैक्शन कर देना चाहिये। दांत को निकालना हो तो मसूड़ों में एक सी० सी० अर्थात् १७

बूंद इंजेक्ट कर दें और दो मिनट बाद दांत निकाल दें कोई तकलीफ नहीं होगी यदि यह भी न हो सके तब एक दो रत्ती सूखी दवा ही मसूड़ों में खूब जमा कर भर दें और ३-४ मिनट बाद दांत उखाड़ लें।

कविराज श्री० पं० श्री विजयकाली जी भट्टाचार्य

स्मृतितीर्थ एम० ए० १५० बहु बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता।

—४—

आपकी आयु लगभग ५४ वर्ष की होगी। आप श्री० पंडित चिरंजीव जी भट्टाचार्य के सुपुत्र हैं। आप अंग्रेजी संस्कृत के विद्वान और आयुर्वेद के आचार्य हैं। आप अखिल भा० वैद्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री रह चुके हैं। मलेरिया रोग के सिद्धहस्त चिकित्सक हैं। आपने मलेरिया के रोग का बड़ा अनुसन्धान किया है और मलेरिया चिकित्सा नामक पुस्तक भी बङ्गाली भाषा मे लिखी है। मलेरिया विषय पर भाषण देने के लिये आपको वैजवाड़ा सम्मेलन में निमंत्रित किया गया था आप कलकत्ता के प्रसिद्ध विद्वान चिकित्सक हैं आप जैसे वैद्य रत्नों से ही आयुर्वेद का गौरव बढ़ता है। बीस वर्ष से अधिक चिकित्सा कार्य कर आपने बड़ा अनुभव प्राप्त किया है।

मलेरिया पर--

२—पीपल छोटी २ भाग | अतीस कड़वी ४ भाग
श्वेत बच ४ भाग | + संखिया शुद्ध ¼ भाग
अभ्रक भस्म शतपुटी ½ भाग | पर्पटी (रस पर्पटी) ½ भाग
लोह भस्म शतपुटी ½ भाग | करंज बीज २ भाग

विधि—सब औषधियों को कूट कपड़ छन कर भस्म, पर्पटी, संखिया मिला खरल में डाल निम्न औषधियों के स्वरस अथवा क्वाथ में १-१ भावना लगा मूंग बराबर गोली बना सुखाकर रख ले।

भावना की औषधियां—सप्तपर्णी, निम्ब, कटु रोहिणी, गुडूची, कंटकारी, भूनिम्ब, ।

सेवन विधि—प्रथम दो तीन दस्त करा कर कोष्ठ शुद्ध करले और ज्वर के वेग से तीन घण्टे पहले एक, एक घण्टे बाद एक एक गोली गरम पानी से दें। ज्वर का वेग शान्त होने पर प्रातः सायं ४-५ दिन दें। फिर ८ वें दिन सेवन करें।

पथ्य—हलका भोजन जैसे शाक, सब्जी, दूध आदि।

+ संखिया की शोधन विधि—श्वेत संखिया के छोटे छोटे टुकड़े कर पोटली में बांध १६ गुने दूध में डाल दोला यन्त्र से एक पहर पकावे। पश्चात् निकाल पानी से धोकर धूप में सुखा काम में लावे। दूध को दही का जामन डाल जमादे और दही जमने पर मथानी से बिलोय कर घृत निकाल कर रखले तक्र को जमीन में गाढ़ दे। यह घृत वात व्याधि और नपुंसकता में व्यवहार करें।

—सम्पादक

कविराज श्री० जसवन्तराय जी सहगल आयुर्वेदाचार्य

मुहल्ला सहगलान, जालन्धर

—:—
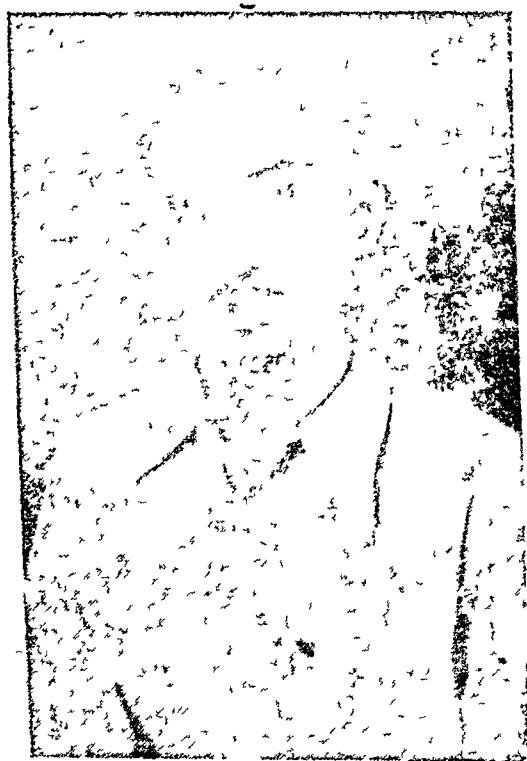
आप क्षत्रिय वंश भूषण श्री लाला प्यारेलाल जी सहगल के सुपुत्र हैं। आपकी आयु लगभग २७-२८ वर्ष की है जी। आपने आयुर्वेद भिषक वैद्य विशारद, वैद्य कविराज आयुर्वेदाचार्य परीक्षायें पास की हैं तथा अनेक स्वर्ण, रौप्य पदक और प्रशंसा पत्र भी प्राप्त किये हैं आपने अपने परिश्रम से अच्छी योग्यता और ख्याति प्राप्त की है। आप बड़े मिलनसार और हंस-मुख हैं।

—सर्पगन्धादि वटी—

३—सर्पगन्धा ५ तोला
बालछड़ ४ तोला
उदसलीब ४ तोला
हींग भुनी १ तोला
केशर २ तोला

विधि—सबको कपड़ छन कर पान के स्वरस की भावना दे, खुश्क कर रखलें।

व्यवहार विधि—मात्रा—१॥ माशे से तीन माशे पर्यन्त, जल के साथ या अश्वगन्धारिष्ट के साथ प्रातः सायं फकावें। इससे हिस्टेरिया को शीघ्र लाभ होता है उन्माद में भी लाभदायक है निद्राकारक है। ×

ज्वर उतारने के लिये----

४—मुक्ताशुक्ति भस्म एण्टी फैब्रीन दोनों सम भाग मिला कर रखलें।

मात्रा—२ से २॥ रत्ती गरम पानी के साथ सेवन करावे। शीतला, मोतीझरा दोषी ज्वर को छोड़ बाकी सब प्रकार के ज्वरों को उतारने के लिये उत्तम है। इसका सेवन करा कर कपड़ा ओढ़ कर लेट रहे जब पसीना आकर ज्वर उतर जाय तब पसीना पोंछलें। ❋

× इसके बनाने में उदसलीब असली मिलना बड़ा कठिन होता है। अनेक स्थानों पर लिखने और तलाश करने पर हमें १३॥) तोला के भाव मिला। हमने यह प्रयोग बनाया और परीक्षा किया अति ही लाभदायक पाया। यह एक ही प्रयोग वैद्यों को सैकड़ों रुपये व्यय करने पर भी न मिल सकता था वह कविराज जी ने हमारे विशेष आग्रह में प्रकाशनार्थ दिया था।

—सम्पादक

❋ ज्वर उतारने के लिये लेखक को ऐलोपैथी का सहारा लेना पड़ा है हम उन्हें रसतन्त्रसार का एक प्रयोग लिखते हैं जो ज्वर उतारने को उत्तम है।

विधि—नौसादर, चूना, (कलई) दस दस तोले लेकर चीनी के पात्र में डाल उसमें ईख का सिरका २० तोला जब झाग शान्ति हो जाय तब २ सेर पानी डाल और मिला कर रखदे। ३-४ घण्टे बाद ऊपर से अर्क नितार कर रखलें।

मात्रा—१ से २ तोला। तीन २ घण्टे बाद अर्क सोंफ या जल मिला कर तब पसीना आकर ज्वर उतर जाता है। मूत्र साफ आता है नवीन ज्वर मलेरिया आदि में प्रयोग करें। —सम्पादक

श्रीमान् पं० उमाशंकर जी द्विवेदी शास्त्री आयु०

आरोग्य सदन, वृन्दावन (मथुरा)

—※—
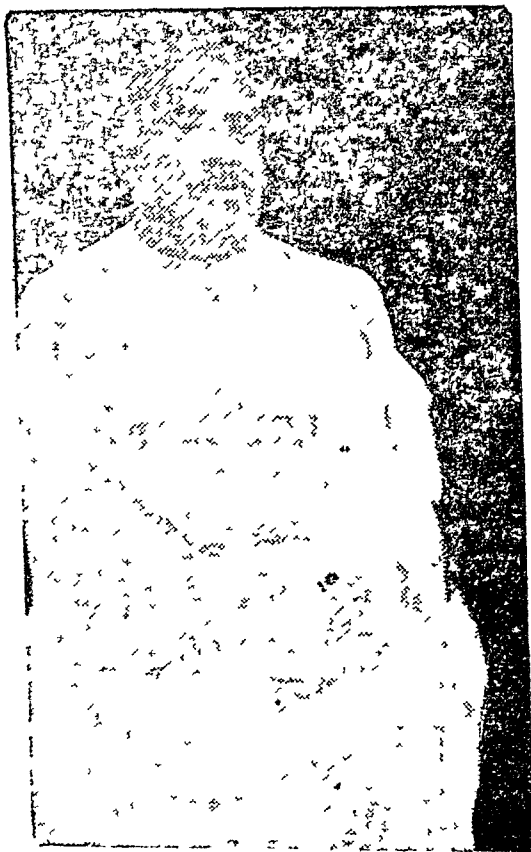
आपका जन्म सम्वत् १९४५ वि० में श्रीमान् विद्यारत्न पं० दुर्गादत्त जी शास्त्री घटिकाशतक के यहां हुआ। आपने जयपुर की शास्त्री आचार्य काशी की मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप को अनेक प्रशंसा पत्र स्वर्ण पदक और आयुर्वेद भूषण, प्रतिवाद भयंकर, आयुर्वेद मार्तण्ड आदि उपाधियां भी मिली हैं। आप गुरुकुल वृन्दावन के आयुर्वेद विभाग के प्रधानाध्यापक हैं। आप की हिन्दुस्तानी दवाखाना मथुरा के नाम से एक फार्मेसी भी है। आप यू० पी० इंडियन मेडीशन बार्ड के सदस्य भी हैं। आप यू० पी० मे बड़े प्रसिद्ध और अनुभवी वैद्यों में हैं आप के शिष्य तो अनेक ही हैं जो प्रसिद्ध वैद्य हैं। आपने दोष परिचय, राजयक्ष्मा प्रदीप पुस्तकें भी लिखी हैं।

अश्मरी हर—

५—पाषाणभेद ६ माशे	एरण्डमूलत्वक ६ माशे
बड़े गोखुरू ३ माशे	बरुना (बरना) की छाल ३ माशे

कुलथी १ तोला सरकंडे की जड़ ३ माशे

सांभर लवण १॥ माशे जवखार १॥ माशे

विधि—उपरोक्त औषधियों की एक मात्रा है। इसे आध सेर जल में चढ़ा कर शेष ऽ= रहे तब छान कर निम्न औषधि मिला कर पिलावे—

शिलाजीत १ रत्ती मुक्ताशुक्ति भस्म १ रत्ती

शीतल पर्पटी एक रत्ती

—यह क्वाथ प्रातः और सायं काल सेवन करावे और मध्यान और रात्रि को—पाषाण वज्र रस एक माशे लेकर पपीता के वृक्ष के रस एक तोला में मिला कर चटावें। यह पाषाण वज्र रस रस-योगसागर ग्रन्थ के नम्बर १५५ का प्रयोग है।

पथ्य—दाल चावल। खटाई नहीं देना चाहिये। इसके सेवन से वृक्क और पित्ताशय की पथरी (अश्मरी) कट कर निकल जाती है। शूल बन्द होजाता है।

राजवैद्य श्री कुं० वीरेन्द्रदेव जी आयुर्वेदाचार्य

श्री वन्चनार आयुर्वेद भवन, वरालोकपुर-इटावा

आपका जन्म सम्वत् १९६० में राठौर राजपूत कुल भूषण स्वर्गीय श्री कु० बलदेवसिंह जी के यहां हुआ। श्रीमान पं० रामेश्वर जी शास्त्री वैद्यराज से आपने विधि पूर्वक आयुर्वेद शास्त्र पढा और प्रत्यक्ष कर्माभ्यास किया। आप राकेश के सहायक सम्पादक रह कर आयुर्वेद की सेवा कर चुके हैं, आप रजिस्टर्ड वैद्य हैं और अनेक प्रशंसापत्र भी प्राप्त कर चुके हैं। आप ने [illegible] रोगों का [illegible] किया [illegible] है।

जलोदर पर-

६—उत्तम मांडूर भस्म ५ तोला गौ मूत्र २० तोला

—में डाल लोह पात्र में गरम करें जब गौ मूत्र जल जाय भस्म खुश्क रह जाय तब निकाल पीस छान कर रख लें।

मात्रा—१-१ रत्ती प्रातः सायं निम्न क्वाथ के साथ।

क्वाथ—कुटकी ४ तोला पुनर्नवामूल २ तोला

को यव कुट कर दस तोला गौ मूत्र ६० तोला जल में डाल मन्द अग्नि से काढ़ा करें। जब चतुर्थांश रहे तब छान कर ६ माशे मधु शर्करा (ग्लूकोज़) अथवा मधु मिला कर उपरोक्त भस्म मुख मे डाल ऊपर से पिला दें। औषधि सेवन के बाद जी मिच-लाने या वमन होने का भय हो तब पान या इलायची खिला दें एक बार की सेवन की हुई औषधि से ५-६ दस्त होजाते है यदि रोगी निर्बल हो तब औषधि एक बार ही सेवन करावें।

गुण—कठिन से कठिन जलोदर जो डाक्टरों द्वारा बार बार पानी निकाल कर और असाध्य कह कर छोड़ा हुआ हो उसको भी इस प्रयोग से ४० दिन में लाभ होजाता है।

पथ्य—भूख की इच्छा होने पर तत्क्षण औटाया हुआ ऊंटनी का दूध मधु से किम्वा द्राक्षा से मीठा कर के दे। ऊंटनी के दूध के अभाव में अजा दुग्ध (बकरी का दूध) दे सकते हैं। तृषा (प्यास) लगने पर प्रथम तो दुग्ध से ही प्यास शान्त करने का यत्न कर यदि दुग्ध से काम नहीं चले तब ५ तोला पुनर्नवा की जड़ें यव कुट कर दो सेर पानी में औटावें जब १।। सेर पानी रह जाय तब उतार छान कर रखले ठण्डा होने पर थोड़ा २ पिलावे दूध में भी पानी के स्थान पर यही क्वाथ डालें।

रोगान्त पथ्य—कोद्रव चावल, ऊंट अथवा बकरी के दूध में खीर बना कर खिलावें प्रथम एक तोला चावल दें और धीरे २ बढ़ा कर ५ तोले करलें। मिश्री अथवा मधु शर्करा या मधु से फीका मीठा करदें। जब ५ तोले कोद्रव चावल की खीर प्रातः हो जाय तब सायङ्काल घीग्वार का गूदा निकाल उष्ण जल मे छोटे छोटे टुकड़ों को ३-४ बार धोकर और साफ कर १६ गुने दूध में डाल खीर सदृश बना खिलावें। एक तोले प्रथम दें और ५ तोले तक बढ़ावें। इस तरह २-३ सप्ताह दें। पपीता, अंजीर, मुनक्का भी पथ्य होने के बाद दे सकते हैं औषधि पहली बन्द करदें। और—

लोह भस्म २ रत्ती	मांडूर भस्म २ रत्ती
यवक्षार ४ रत्ती	मधु ६ माशे

—मिला प्रातः सायं देते रहें दो तीन सप्ताह बाद पंचकोल के क्वाथ में मूंग साबित दो तोला, गेहूँ का दलिया २ तोला डाल कर पकावे पकते समय थोड़ा नमक डालदें। पश्चात् अन्न को बढ़ावे दुग्ध घटाते रहें। जब पूर्ण स्वस्थ्य होजाय तब वृहत् शुष्कमूलादि तैल की मालिश कर गरम पानी से स्नान करावें।

हृदरोग पर रसायन--

७—जया (गुड़हल) पुष्प १२५	श्याम मिश्री ऽ॥
सुपक्व नीबू	१० अदद

विधि—एक काँच के पात्र में बारह बारह पुष्पों की पंखड़ी पृथक २ करके बिछावें और मिश्री को पीस कर उसमें ४ तोला शर्करा सदृश पिसी हुई पुष्प पङ्खड़ियों पर बिछादें, इसी प्रकार पुनः उसके ऊपर १२-१३ पुष्पों की पङ्खड़ियों को बिछा कर पूर्ववत

४ तोला पिसी हुई मिश्री बिछा दें, हर एक बार एक एक नीबू को काट कर उस पर्त के ऊपर निचोड़ दिया करें, इसी विधि से हर एक पर्त पर १२-१३ पुष्प पङ्खड़ियां बिछा ४-४ तोला पिसी मिश्री बुरक और १-१ नीबू स्वरस निचोड़ दें। जब सब पुष्पों सहित मिश्री और नीबू का कार्य उपरोक्त अनुसार पूर्ण हो जावे तब पात्र का ढक्कन लगा धूप में रखदें, दो दिन पश्चात उक्त पात्र को खोल कर पुष्पों को मल कर स्वच्छ वस्त्र से छाने। और बोतल में भर कर सुरक्षित कार्क लगा कर रख ले। गुड़हल के रङ्ग का सुन्दर सुमधुर द्रव तैयार होगा।

गुण—हृदय रोग, उन्माद रोग, रक्तार्श तथा रक्त प्रदर पर चमत्कारिक गुण प्रदर्शित करता है।

अनुपान—हृदय रोग में अर्जुनत्वक क्वाथ ऽ— में २ तोला मिला प्रातः दे। १॥ तोला गुलकन्द को गुलाब जल में पीस उसमें उपरोक्त निर्मित पुष्प रसायन १॥ तोला मिला रात को सोते समय खिला मीठा गुनगुना दूध आवश्यकतानुसार पीने को देते रहें।

पथ्य—में सुपाच्य रोचक पत्र शाक, दूध, पुराने गेहूँ की रोटी।

नोट—अर्जुन छाल के क्वाथ के अभाव में ४-४ तोला अर्क केवड़ा और वेदमुश्क अर्क में मिला कर पिया करे।

उन्माद रोग पर—

—दही की मलाई एक छटांक में पुष्प रसायन १॥ तोला मिला प्रातः मध्यान एवं सायं ४ बजे दिन को दे।

रक्तार्श तथा रक्त प्रदर पर—

—धारोष्ण मधुर गौ दुग्ध आध सेर में २॥ तोला पुष्प रसायन मिला प्रातः सायं पीने को दे।

आयुर्वेदाचार्य श्रीमान पं० रामदत्त जी शर्मा शास्त्री

राम रसायन शाला

एटा यू० पी०

आपकी आयु लगभग ४७ वर्ष की होगी। आप राजामऊ निवासी श्रीमान् पं० चिरंजीलाल जी शर्मा वैद्यराज के सुपत्र हैं। आपने व्याकरण की शास्त्री और अ० भा० वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेदाचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। आप एटा जिले के प्रसिद्ध और अनुभवी वैद्य हैं।

कामिनी कल्पलता—

८—गैरिकाञ्जन वब्बूल गुन्द्र गोक्षुर रञ्जदा ।
लाक्षाजाती कतीराख्यशङ्ख जीरक खादिरम् ॥१॥

द्वि कर्ष मज्जनं ग्राह्य प्रत्येकं कर्ष मात्रकम् ।
श्लक्ष्ण चूर्णं विधाया भीरुकाथे मर्दयेद्दिनम् ॥२॥

कामिनी कल्पलता नाम्नी वटी सार्द्धं कर्माषिका ।
छाया शुष्का प्रयोक्तव्या प्रातः सायं प्रयत्नतः ॥३॥

वासा शतावरी दार्वी वला विल्व रसाञ्जनैः ।
रक्त चन्दन कैरातमुस्तैः शीत कषायकः ॥४॥

वटीसुक्तानुपातव्यः प्रदरं हन्ति योषिताम् ।
श्वेतं रक्तं तथा कृष्णं कटि शूल समन्वितम् ॥५॥

पिण्डिको द्वेष्टनं तृष्णां कष्टर्तवं शिरोरुजम ।
साङ्गमदं च दौर्बल्य रजोदोषं भ्रमं तथा ॥६॥

वटी चान्वर्थ नाम्नीयं योनि संकोचकारिणी ।
प्रकाशिता दृष्ट फला ललनानां सुखवहा ॥७॥

व्याख्या (अर्थ)

शुद्ध स्वर्ण गैरिक		घी में भुना हुआ गोंद बबूल
गोखुरू बड़े	फिटकरी का फूला	पीपल की लाख
पत्ता चमेली	कतीर	सेलखरी
कत्था पपरिया	प्रत्येक १-१ तोला	सफेद सुरमा २ तोला

—इन सबका बारीक चूर्ण कपड़छन कर शतावर के क्वाथ में एक दिन मर्दन कर १॥ माशे की मात्रा से गोलियां बना कर छाया म सुखा कर रख लीजिये और सुबह शाम एक एक गोली खाकर ऊपर स—

अडूसा	शतावर	दारू हल्दी
खरैंटी	बेलगिरी	रसौत
लाल चन्दन	चिरायता	नागर मोथा

—इन सब को सम भाग लेकर एक तोला औषधियों का शीत कषाय पिलाना चाहिये और शास्त्रोक्त पथ्य पालन करना चाहिये। इस यथा नाम तथा गुण वाली वटी के सेवन करने से स्त्रियों का साध्य सफेद तथा लाल, काला प्रदर, कमर का शूल, तिलियों की एंठन, प्यास, मासिक धर्म के समय का शूल, शिर दर्द अङ्ग मर्द, दुर्बलता, भ्रम, तथा रज के दोषों को दूर कर गर्भ धारण करने की योग्यता होती है। यह स्त्रियों को सुख देने वाली

बटी उन्हीं के हितार्थ प्रकाशित की गई है।

तुत्थ तैलम–

१—तुत्थं मृतास्य कर्षैकं कुडवं चक्र मर्दकम्।
दारु गन्धा महानिम्ब मज्जा निम्ब समुद्भवा ॥१॥
चम्पा वाताम धत्तूर शिंशिपा कण्टकारिका:।
बीजानि पीत पुष्पाया: रुबूकोष्ट्र पुरीषकम् ॥२॥
नारिकेलिफलं शुष्कं प्रत्येकं द्विपलोन्मितम्।
कुडवं बाकुची ग्राह्या किञ्चित् स्थूलञ्च चूर्णयेत् ॥३॥
काच कूप्यां निधायैव वालुका यन्त्र मध्यगाम्।
कूपीमधो मुखां कृत्वा तल यन्त्र विधानतः ॥४॥
क्रमेणज्वालयेद्वह्निं तैलं पात्यं सुयुक्तितः।
काचपात्रे पिधायाशु मुखमुद्रांच कल्पयेत ॥५॥
तुत्थ तैल समाख्यातं चर्मरोग विनाशनम्।
अभ्यङ्गान्नाशयेत्तूर्णम् चर्म कुष्ठं विचर्चिकाम् ॥६॥
व्युचीं पामां तथा कच्छूं विस्फोटं च विपादिकाम्।
रकसां किटिभं दद्रू कण्डूं च फलकोशयोः ॥७॥
शतारु मलसदारीं दारुणाकमरूंषिकाम्।
सिद्धं तैल वरं प्रोक्तं भिषजां भूति हेतवे ॥८॥

अर्थ

तूतिया मुर्दासङ्ग १-१ तोला
बीज पमार १६ तोला चीड़ की लकड़ी
बकायन के फलों की मिंगी निबौरी की मिंगी
चम्पा की लकड़ी बादाम का छिलका धतूरे के बीज
शीशम का रांच (अन्दर का रक्त वर्ण काष्ट)

बड़ी कटेरी के बीज सत्यानाशी के बीज
अरण्डी के चिरों की मिङ्गी ऊंट की मेंगनी गोला
प्रत्येक ८-८ तोला बावची १६ तोला

—इन सबको मोटा मोटा कुचल कर कपर मिट्टी की हुई आतशी शीशी मे भर कर शीशी के मुख मे युक्ति से तार भर दें ताकि औषधि नहीं गिरे और तारों के सहारे तैल नीचे रखे हुये कांच के गिलास में टपकता रहे अब शीशी को एक बड़ी नांद में जिसमे छेद हों नीचे को मुख कर रख दीजिये और ऊपर से इतनी बालू भरदी जाय कि शीशी के पेंदे पर डेढ़ अंगुल ऊंची रह सके। अब इस नांद को बड़े चूल्हे पर रख दिया जाय शीशी की गर्दन की सीध मे काच का गिलास पानी मे रखकर नाद मे कंडे भर कर आच दीजिये अग्नि कम होने लगे पुनः कुछ थोड़े थोड़े कंडे डालते रहे जब तैल टपकने से कम होने लगे कंडे डालना बन्द कर स्वाग शीत होने दिया जाय गिलास मे आया हुआ तैल शीशी में भर कर मजबूत डाट बन्द कर रख लिया जाय। इस तुत्थ तैल को पिचु (फुरैरी) द्वारा लगाने से चर्म कुष्ठ, विचर्चिका, छाजन, पामा, विस्फोट, बिवाई, रकसा, क्रिटिभि, कच्छू, अण्ड कोषों की खुजली, शतारु, अलस, दारुण, अरूंषिका तथा चमड़े की बीमारियां दूर होती हैं यह श्रेष्ठ तथा गुप्त तैल वैद्यराजों के लाभार्थ प्रकाशित किया गया है।

१—इन दोनों प्रयोगों के सम्बन्ध में यदि कुछ सम्मति लेने की आवश्यकता हो निःशङ्क होकर सलाह कर सकते है।

२—इन प्रयोगों के प्रयोग करने पर जो जो विशेष अनुभव हों उन्हें संग्रहीत कर यथा समय वैद्य समाज में अवश्य ही प्रकट करे ताकि विशेष लाभ मिल सके।

श्रीमान् वैद्यराज पं० शंकरदत्त जी गौड़ भिषक् के०

वनौषधि भण्डार एवं शंकर फार्मेसी, जबलपुर

—०—

आप गौड़ ब्राह्मण कुल में विद्वद्वर्य श्रीमान पं० हरिप्रसाद जी वैद्यराज के सुपुत्र हैं। आपकी आयु ४५-४६ वर्ष के लगभग है। आपने बंगाली सन्यासी श्री १०८ स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी सरस्वती जी महाराज कनखल की सेवा में १० वर्ष तक रह कर आयुर्वेद की शिक्षा क्रियात्मक प्राप्त की। प्रथम आपने हापुड़ (मेरठ) में शंकर फार्मेसी की स्थापना कर चिकित्सा कार्य आरम्भ किया और कार्य को बढ़ा जबलपुर में फार्मेसी और वनौषधि भन्डार की स्थापना की। आप यू० पी० इंडियन मेडीशन बोर्ड के रजिस्टर्ड वैद्य हैं। सम्मेलनों द्वारा चिकित्साचार्य, वैद्यभूषण, भिषक् केशरी आदि उपाधियां प्राप्त की हैं। साथ ही आपने स्वर्ण रौप्य, पदक भी प्राप्त किये हैं। अनेक सभा समितियों के पदाधिकारी और शंकर निघन्टु, नपुंसक सजीवन आदि पुस्तकों के लेखक भी हैं। आप मध्यप्रान्त के प्रसिद्ध गणमान्य वैद्यों में हैं। साथ ही लेखक और वक्ता भी हैं।

इक्कीस

फरफियून 1 तोला ॥

विधि—सब औषधिया यव कुट कर सरसों का तेल १॥ सेर में डाल गरम करे। जब अच्छी प्रकार औषधियां सिक जांय थोड़ी जली भी होजांय तब उतार कर तेल छान कर रक्खे इसमे उफान अधिक आते है कढ़ाई में असावधानी से आग लग जाती है यह ध्यान रहे मन्दाग्नि मे पकावे।

उपयोग—इस तेल की मालिश करने से शरीर के सब भाग का दर्द दूर होजाता है। गठिया, वात व्याधि नाशक है वात जन्य शूल शीघ्र शान्ति होजाता है।

आयुर्वेदाचार्य पंडित सोमदेव जी शर्मा सारस्वत

सम्पादक—कालेज पत्रिका, प्राईम प्रिंसपल-
ललितहरि आयुर्वेद कालेज, पीलीभीत।
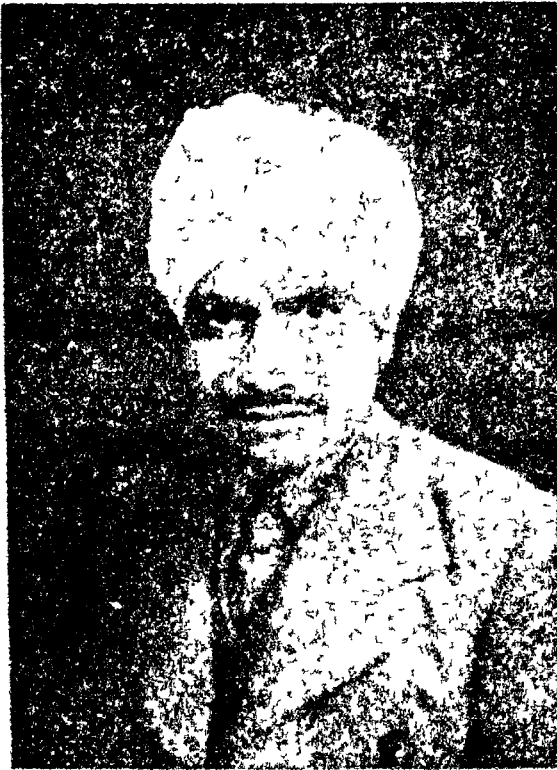
आपका जन्म मवीगढ़ पोस्ट बरला जिला अलीगढ़ निवासी सारस्वत ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान् पं० रघुनन्दनजी शर्मा वैद्य के यहाँ सम्वत १९६६ वि० मे हुआ। आपने व्याकरण मध्यमा, साहित्याचार्य तथा अंग्रेजी से एफ० ए० हिन्दू विश्व विद्यालय काशी की आयुर्वेदाचार्य. मेडीसन एन्ड सर्जरी (A. M. S.) की डिग्री प्राप्त की है तथा

---

* फरफियून यूनानी औषधि है जो एक वृक्ष का दूध होता है
—सम्पा०

अनेक प्रशंसापत्र, मानपत्र, स्वर्ण रौप्य पदक और काव्यसूरि, वैद्य धुरीण आदि उपाधियां प्राप्त की हैं। अनेक पुस्तकों की टीकायें की हैं उनमें आयुर्वेद प्रकाश की टीका की अधिक प्रशंसा है। कालेज पत्रिका के सम्पादक और लालनहरि आयुर्वेद कालेज के बाइस प्रिन्सिपल हैं। आयुर्वेद के अनेक पत्रों के लेखक और बड़े सज्जन-सार व्यक्ति हैं।

कुष्ठघ्न चूर्ण-

१३—शुद्ध गन्धक (कटुतैल द्वारा शोधित) १ तोला

काली मिर्च (१॥ घण्टे खट्टी छाछ में भिगो कर और छिलका उतार हुआ) १ तोला

त्रिफला चूर्ण (त्रिफलामात्र पिसा हुआ) ६ तोला

विधि—काली मिर्च का चूर्ण करके लेना चाहिये। तीनों को खरल में डाल अमलतास की जड़ के रस की ३ भावना दें चूर्ण कर रखलें।

व्यवहार विधि—प्रातः सायं दो दो माशे चूर्ण को आठ आठ माशे अमलतास की जड़ के रस में मिला कर सेवन करें साथ ही निम्न प्रयोग बनाकर कुष्ठ स्थान पर लेप भी करना चाहिये।

कुष्ठघ्न लेप-

१४—कटु तैल से शोधित गंधक को अमलतास की जड़ के रस में पीस कर प्रतिदिन शरीर में जिस स्थान पर कुष्ठ हो वहां पर लेप करें। सूखने पर गर्म जल से धोकर साफ कर लें।

टिप्पणी—कुष्ठ एक चिर स्थायी रोग है इसलिये इस प्रयोग के सेवन करने से पूर्व विरेचन द्वारा कोष्ठ शुद्ध कर लेना आवश्यक है। रोग पुराने नवीन के अनुसार ही रोग नष्ट होने में देरी लगती है. पर लाभ अवश्य होता है।

अपथ्य—क्षारीय पदार्थ (पापड़ आदि) खट्टे पदार्थ, तैल, कांजी के बड़े आदि विदाही पदार्थ तथा अरहर की दाल आदि खाना निषिद्ध। है *

अध्मान हर लेप—

१५—वच देवदार

सोंफ हींग सेंधा नमक कूठ

विधि—समान भाग लेकर (खट्टी) छाछ (मठा) के साथ खूब बारीक पत्थर की साफ की हुई सिल पर पीस गरम कर रोगी की नाभि तथा उस के चारों तरफ गाढा २ लेप कर दें। इसके लगाने से अपानवायु की अनुलोम गति होगी अपानवायु, या मूत्र, अथवा दोनों ही आ जाने से उदर शूल तथा अध्मान दूर हो जाता है। साधारण ज्वर मन्थर ज्वर के अध्मान (अफरा) में भी लाभ दायक सिद्ध हुआ है। ×

---

*कुष्ठ रोग मे विरेचन के लिये इन्द्रवारुणादि क्वाथ सर्वोत्तम है। हम तो कुष्ठ रोग में प्रथम स्नेहन, वमन, विरेचन, वस्ति यह पंचकर्म कराकर चिकित्सा करते हैं और बीच २ में इन्द्रवारुणादि क्वाथ से विरेचन भी कराते रहते हैं साथ ही पथ्य मे निमक नहीं देते; चना, घृत, शक्कर, यह तीन ही पदार्थ पथ्य मे देते हैं। अतः इसी प्रकार शरीर का शोधन और पथ्य करा उपरोक्त प्रयोग का व्यवहार किया और लाभदायक पाया पर लाभ बहुत ही धीरे २ होता मालूम हुआ। इसमे हमने भोजनोपरान्त खदिरारिष्ट दो दो तोला और रात्रि को सोते समय ताल भस्म का भी प्रयोग बढ़ा दिया तब शीघ्र लाभ होता देखा गया। —सम्पादक

× ज्वर की अवस्था में लेप ही करना चाहिये किन्तु शूल आध्मान, की अवस्था में—

क० श्रीमान् डा० लल्लूभाई आर० एस० एस०

जीवन फार्मेसी रजिस्टर्ड तादलजा वाया

बोडेली जिला बड़ौदा जी० बी० एस० रे०

—:—
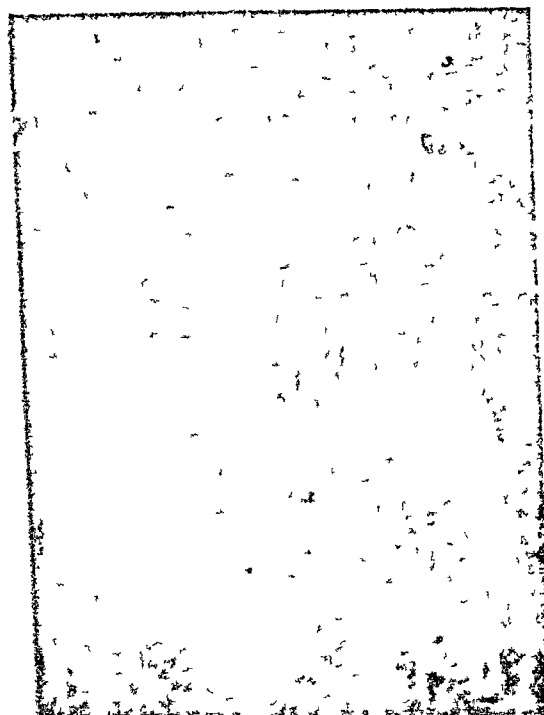
आप की आयु लगभग ४५ वर्ष की होगी। आप पटेल वंश भूषण श्रीमान् वैद्य द्वारिकादास जी पटेल के सुपुत्र हैं। आप ने डाक्टरी और आयुर्वेद दोनों को पढ़ा है। आप सर्पदंश और श्वास के विशेष चिकित्सक है और इनकी चिकित्सा पर ही अनेक स्वर्ण रौप्य पदक और प्रशंसापत्र मिले हैं।

[illegible] यहाँ परम्परागत चिकित्सा कार्य होता आया है।

[illegible] की छाल ६ माशे — अमलतास का गूदा २ माशे

[illegible] — पंच कोल ५ माशे

[illegible] १ माशे, — कचलाना १ माशे

[illegible] — १ माशे

—[illegible] तोला पानी में औटावें जब ४ तोला रहे तब छान कर [illegible] भी हो जाता है मूत्र भी होने [illegible] है। [illegible] लगाने खाने के [illegible] शीघ्र शान्ति हो [illegible] है।

—सम्पादक

श्वास नाशक रसायन–

१६—लोह भस्म १२ तोला | मौक्तिक भस्म १॥। तोला
शु० आमलासार गंधक | ६ तोला
अभ्रक सहस्र पुटी | ६ तोला
स्वर्ण भस्म ३ तोला | रससिन्दूर ३ तोला
स्वर्ण माक्षिक भस्म | ३ तोला

विधि—सब भस्में सम्पूर्ण विधि से उत्तम बनी विश्वास योग्य लेनी चाहिये और सब को १ खरल में डाल मर्दन कर छोटी कटेरी का स्वरस, बकरी का दूध, मुलेहठी का रस, नागर बेल के पान का स्वरस इन चारों की क्रमशः दश दश भावना दें दो दो रत्ती की गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—श्वास रोगी को प्रथम दिन निम्न वमन योग से वमन करावें जिसका उसका जमा हुआ दूषित मल (कफ) निकल जाय उसके पश्चात् दूसरे दिन से एक एक गोली प्रातः और सायं काल, शहत और ६४ पहरी पीपल के साथ सेवन कराने से सब प्रकार के श्वास और कास में लाभ होता है। नये और पुराने श्वास रोग जिस में पूय हो जाने से कफ पीला दुर्गन्ध युक्त हो गया हो उसको शीघ्र लाभदायक है।

कंठ प्रदाह और श्वास नलिका की शिथिलता को दूर करना हो तब बहेड़े के चूर्ण के अनुपान से सेवन करावें। जब कफ श्राव अधिक हो तब अड़ूसा स्वरस के साथ दें और श्वास वाहनियों का दाह शमन कर मधुर रस उत्पन्न करना हो तब मुलेहठी के चूर्ण अनुपान से सेवन करावें। दूषित कफ के शोधनार्थ सुहागे का फूला और शृङ्ग भस्म मिलाकर सेवन करावें। मूत्र द्वारा विष को निकालना हो तब प्रातः काल सेवन से इसके एक घन्टे पहिले ३-४ रत्ती शु० शिलाजीत खिला ऊपर से १५-२० तोले धारोष्ण बकरी का दूध पिलावें।

वमन योग—

१७—एक जवान मुर्ग लेकर उसका पेट चीर कर अन्दर से अन्त-ड़ियां निकाल दें किन्तु पित्ता आदि व यकृत न निकालें तथा ऊपर से बाल भी साफ करदें फिर अत्यन्त कड़वे किस्म का तम्बाखू लेकर खूब बारीक पीस कर (पहिले पीस कर तैयार रक्खे) मुर्ग के पेट में भरकर सीदे और फिर घी के चिकने मृतिका पात्र मे डाल कर पाताल यंत्र से तैल निकाले अनुमानता आठ स दश तोले तक तैल निकलेगा उसम २।।) तोला मैनफल खूब बारीक पीस कर मिलावें और संभाल कर शीशी म रखले। जब वमन करानी हो तब शीशी को हिला कर उसमें से एक एक करके तीन अंगुली चटावे। ईश्वर की कृपा से थोड़ी देर से ही खुल कर वमन होगी और सीने से हर प्रकार का कफ बलगम निकल कर सीना हलका हो जायगा।

नोट—वमन कराने से पूर्व हलवा खिलाकर वमन करानी चाहिये। *

---

* श्वास रोगी को यदि पंचकर्म करा कर औषधि सेवन कराई जाय तब बड़ा लाभ होता है। यदि स्नेहन, स्वेदन, वमन यह तीन कर्म भी करा दिये जांय तब भी पूरा लाभ होता है। लेखक ने वमन ही को लिखा है। इससे भी लाभ होता है। वमन के लिये उपरोक्त प्रयोग जो नहीं कर सके वह तूतिया और फिटकिरी की मिश्रित भस्म बना कर गरम जल मे निमक शहद डाल कर दे तब भी उत्तम वमन हो जाती है। निमक मैनफल को फका ऊपर से गरम जल पिलाने से भी वमन हो जाती है।

—सम्पादक

श्वास नाशक--

१८—आक की लोंग (फूल में जो निकलती है)   २५०

जायफल २ तोला	लोंग १ तोला
जावित्री २ तोला	अकरकरा असली २ तोला

—लेकर कूट कपड़ा में छान शुद्ध मधु मिला चने बराबर गोली बना सुखा रखलें।

उपयोग—प्रायः सायं दो दो गोलीं गरम पानी के साथ सेवन करानी चाहिये इससे कष्ट साध्य दमा (श्वास) रोग भी नष्ट हो जाता है।

वमन विधि—आक की जड़ का कपड़ छन चूर्ण ६ माशे गरम पानी के साथ फकाने से श्वास रोगी को वमन हो जाती है और फूला हुआ दमा (श्वास का अर्थात् दौरा) सत्वर बैठ जाता है। ३ दिन यह चूर्ण फकाने क बाद ही ऊपर की गोली सेवन करनी चाहिये। ईश्वर कृपा से श्वास रोग नष्ट हो जायगा, तैल खटाई मिर्च धूम्रपान, दारू, गाँजा, कफ कारक वायु वर्धक पदार्थ और आहार विहार, त्याग देने चाहिये।

सर्पदंश हर बूटी,

गुम्मा (गोमा) बूटी का स्वरस छोटे को ६ माशे बड़े मनुष्य को १ तोला पिलाने से सर्प विष सत्वर नष्ट हो जाता है। यदि सर्पदंश रोगी मूर्छा वस्था में हो तब इस बूटी के स्वरस को नाक, कान, आँख में डालने से सर्प विष दूर होता है होश में आने पर १-२ मात्रा पिला भी देनी चाहिये।

सर्पदंश पर,

१६—गरंविषं टकणमूषण च तुत्थं समं शंकुरु देवदाल्या।
रसेन पिष्टो विष वज्रयातोरसोभवेत्सर्व विषैकहंता॥

बच्छनाग, टंकण,
काली मिर्च, तूतिया,

—सबको समान भाग लेकर बंदाल के रस में घोट कर चार चार माशे की गोलियाँ बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—इन गोलियों को सेवन कराने से सब प्रकार का विष दोष नष्ट हो जाता है, इसे "वज्र पात रस,, कहते हैं इस रस को मनुष्य के मूत्र अथवा गौ मूत्र के साथ सेवन कराने से सर्प विष तत्काल शान्ति हो जाता है।*

वैद्य भगवानदास जी आयुर्वेदाचार्य

श्री नारायण आयुर्वेदिक औषधालय
नयागञ्ज, हाथरस

—।—

आपका जन्म सं० १९७४ वि० में श्री० लाला नारायण प्रसाद जी स्वर्णकार के यहां हुआ। आपने विधिवत गुरुमुख से आयुर्वेद शास्त्र और यूनानी चिकित्सा को पढ़ा और अनुभव प्राप्त किया है। आप अपनी चिकित्सा के फलस्वरूप अनेक प्रशंसा पत्र प्राप्त कर चुके हैं हाथरस नगर वैद्य सभा के उपप्रधान भी रह चुके हैं आप बड़े मिलनसार और हंसमुख वैद्य हैं।

* इस वज्रपात रस को मनुष्य मूत्र में घिस कर लगाने से बिच्छू विष तत्काल शान्त होजाता है। —सम्पादक

शिरो मर्दन तैल—

आमला २॥ तोला
हरड़ का छिलका २॥ तोला
बहेड़े का छिलका २॥ तोला
ब्राह्मी बूटी १ तोला
शंखाहुली १ तोला
भंग दपकी १ तोला

विधि—उपरोक्त औषधियों में जो हरी (ताजी) मिल सकें उन्हें हरी ताजी ही लेना श्रेष्ठ है पर तोल में सूखी १ तोला हो तब हरी ५ तोला लेना चाहिये। सब औषधियों को यव कुट कर एक सेर पानी में रात को भिगोदें और सुबह गरम करें जब चतुर्थांश शेष रहे तब छान लें और उस छने अर्क में १ सेर खालिस तिल का तैल डाल बहुत धीमी २ आंच पर गरम करें जब तैल मात्र रहे तब उतार छान कर रखलें।

उपयोग—यह तैल सावधानी से रखा जाय तब वर्षों खराब नहीं होता। इसको शिर से मालिश करने से प्रलापक सन्निपात, उन्माद, बेहोशी दूर होती है तेज बुखार में शिर पर मालिश करने से ज्वर कम होजाता है।

ज्वर उतारने वाला सुरमा—

विधि—तूतिया चमकदार ५ तोला लेकर खरल में डाल बारीक करें और नीबू का रस डाल खरल करते रहें जब १०८ दिन खरल होजाय तब नीबू का रस डालना बन्द कर मर्दन कर सुरमा की भांति महीन होने पर शीशी में भर कर रखलें।

उपयोग—जिस जगह वैद्य को अपना चमत्कार दिखाना हो वहां पर एक सलाई भर कर एक आंख में लगा दीजिये। थोड़ी देर बाद ही ज्वर उतरना आरम्भ होजायगा। और जिस तरफ के नेत्र में दवा नहीं लगाई गई थी उस तरफ का ज्वर बना रहेगा उस

तरफ भी नेत्र में दवा लगाने पर उस तरफ का भी ज्वर उतर जायगा दोनों नेत्रों में एक साथ लगाने से सम्पूर्ण शरीर का ज्वर उतर जायगा। *

सुजाक पर–

बिधि—हल्दी; मुलेहठी, अनार दाना तीनो औषधियों को समान भाग लें और कूट कपड़ छन कर रखलें।

उपयोग—प्रयोग साधारण सा है पर गुण अद्भुत है। ६ माशे की मात्रा से तीन बार जल के साथ फकावें अर्थात् प्रति दिन १॥ तोला औषधि खिला देनी चाहिये। भोजनोपरान्त चन्दनासव दो तोला पानी दो तोला मिला कर पिलादें २१ दिन में सुजाक जाता रहता है। जलन पहले दिन ही शांत होजाती है। पुराना से पुराना सुजाक इस दवा से नष्ट हुआ है।

---

* नारीनारेश्वर आदि अंजनों की भांति ही इसे साधारण ज्वर में ही प्रयोग करना चाहिये। जब ज्वर १०३ से ऊपर जाने लगे तब भी प्रयोग किया जा सकता है।

—सम्पादक

आयुर्वेदाचार्य श्रीमान वैद्य विष्णुकान्त जी जैन रत्न

सम्पादक "वैद्य" मुरादाबाद

—०—

आपका जन्म खंडेलवाल जैन कुल भूषण श्रीमान् स्वर्गीय वैद्यराज हरिशंकर जी जैन सम्पादक 'वैद्य' मुरादाबाद के यहां हुआ। आपकी आयु ३१ वर्ष के लगभग है। आपने आयुर्वेद का अध्ययन क्रियात्मक अपने पूज्य पिता जी से ही किया और उनके जीवनभर का अनुभव भी प्राप्त किया। आप वैद्य मासिक पत्र का बड़ी योग्यता और लगन से सम्पादन कर रहे हैं, और आशा है कि आप आयुर्वेद का हित साधन करते रहेंगे।

श्वास रोग पर—

२०—खसखस के दाने — १।। पाव

खसखस के बोंडे (पोस्त के डोंडे) — एक छटांक

—दोनो को मिट्टी या पत्थर के पात्र में रात्रि में जल में भिगोदें। सवेरे उसको जल के साथ पत्थर पर खूब पीस कर छान ले फिर उस दूध को मन्दाग्नि से पकावे। जब गाढ़ा हो जाय तब तीन पाव मिश्री डाल कर कुछ देर तक फिर पकावे। और एक

छटांक मुलहठी का कपड़छन चूर्ण डाल कर उतार लें। इसे एक उत्तम चौड़े मुँह की काँच की शीशी में भर कर रख दें।

मात्रा—४ माशे प्रातः सायं दोनों समय।

श्वास रोग के भयङ्कर वेग को यह तत्काल शान्त करता है। इसका कई रोगियों पर प्रयोग किया जा चुका है।

विषम ज्वरों पर—

२१—पीली कौडी की भस्म वत्सनाभ काली मिरच

—सब समान भाग लेकर कुकर भागरे के रस में खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बनाले। ज्वर चढने से ६ घण्टे पहले एक एक गोली मुनक्का के साथ खाने से सब प्रकार के विषम ज्वर दूर होते हैं।

हृदय रोग पर—

२२—कलौजी को पीस कर ३ माशे की मात्रा से प्रातः सायं दोनों समय एक छटांक गधी के दूध के साथ सेवन करने से आश्चर्यजनक लाभ होता है। इससे हृदय की दुर्बलता और हृदय की अधिक धड़-कन शीघ्र कम होकर हृदय बलवान होता है और हृदय की गति ठीक होती है।

स्तम्भन पर—

२३—उत्तम गाजा या चरस ४ तोला लेकर एक सेर उत्तम भैंस के दूध में डाल कर पकावें, जब दूध अच्छे प्रकार पक जाय तब उसका दही जमादे फिर उस दही को रई से मथ कर उसमे से घृत निकाल लें। उक्त घृत को पाव भर शुद्ध खांड़ की चाशनी मे डाल कर पकावे जब लेह की समान गाढ़ा होजाय तब उसमे उत्तम कास्मीरी—

केशर १ माशे — दालचीनी २ माशे

जायफल ३ माशे — धनिया ४ माशे

—चारों चीजों का बारीक चूर्ण बना कर डालदें. एवं आंच पर से उतार लें। इसे १ माशे से ६ माशे तक बलानुसार गौ दुग्ध के साथ देना चाहिये। यह उत्तम स्तम्भक योग है। अत्यन्त बलकारक और वीर्य स्तम्भक है। इस पर अम्ल पदार्थ नहीं खाने चाहिये।

कवि० श्री० मणीन्द्रकुमार जी मुखर्जी बी० ए०

आयुर्वेद शास्त्री, कविशेखर, प्राणाचार्य, वैद्य वाचस्पति,
भू० पू० सभापति—अ० भा० वैद्य सम्मेलन और विद्यापीठ
प्रिन्सीपल-आयुर्वेद महा विद्यालय, ऋषि कुल (हरिद्वार)

—०—

आपकी आयु लगभग ४५ वर्ष की होगी। आप बङ्गाली मुखोपाध्याय कुल भूषण है। आपने बी० ए० इंगिलश की पास कर माननीय कविराज उमाचरण जी भट्टाचार्य और कविराज शिरोमणि श्यामदास जी वाचस्पति से आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त की और अनेक उपाधियां पदक प्रशंसा पत्र प्राप्त किये आप भारत के महान नेता माननीय मोतीलाल जी नेहरू के चिकित्सक रह चुके हैं। जनरल आफ आयुर्वेद के सम्पादक है। विशेषता तो यह है कि आप ३२-३३-३४ वें अखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन के लगातार सभापति चुने गये हैं जो प्रतिष्ठा किसी विद्वान वैद्य को नहीं मिली। ऋषिकुल आयुर्वेद विद्यालय हरद्वार के प्रिंसिपल हैं।

अर्धावभेदक हर लेप—

२४—बादाम — तिल काले — कच्ची हल्दी

आमलकी — समान भाग

प्रयोग—प्रथम मस्तक पर शतधौत घृत की मालिश कर उपरोक्त औषधियां २ तोले ले पानी में पीस कल्क बना मस्तक पर लेप कर देने से सब प्रकार के शिर दर्द विशेषतया अर्धावभेदक नष्ट होजाता है।

पीड़ा युक्त वात ग्रन्थि हर लेप—

२६—मुसब्बर रसौत फिटकिरी
चौथाई तोला अफीम —) भर

—धतूरे के अर्क में पीस कर पीड़ायुक्त वातग्रन्थि, पीड़ा युक्त वातज शोथ पर लेप करने से शान्त होजाता है।

आयुर्वेद मार्तण्ड श्री पं० रघुवरदयाल जी भिष०

नौघरा, कानपुर

—o—

आपका जन्म १९४० वि० में ब्राह्मण भट्ट परिवार में श्रीमान् पं० यमुनानारायण जी भट्ट वैद्यराज के यहां हुआ था। आपने व्याकरण की मध्यमा और साहित्याचार्य के खण्ड तथा काव्यतीर्थ परीक्षाएं पास की हैं। कलकत्ता से आप को आयुर्वेद मार्तण्ड और भिषग्रत्न उपाधियां मिली हैं। आप यू० पी० वैद्य सम्मेलन के मन्त्री भी रह चुके हैं। अनेक पुस्तकों के लेखक और टीकाकार हैं। यू० पी० इण्डियन मेडीशन बोर्ड के मेम्बर हैं। अनुभवी विद्वान चिकित्सक हैं। कानपुर जिला कांग्रेस के प्रधान भी हैं।

वाजीकरण—

२७—संखिया १ तोला हरताल १ तोला
मीठा तेलिया १ तोला सिंगरफ १ तोला

विधि—बतक के अण्ड की जर्दी | २० तोला
कुसुम के ताजे फूलों का रस | २० तोला
ढाक के ताजे फूलों का रस | २० तोला
आवाँ हल्दी का क्वाथ | २० तोला

—में उपरोक्त चारों औषधियों का मर्दन कर जब गोली बनाने योग्य होजाय तब चने बराबर गोली बना पाताल यन्त्र से तैल निकाल कर शीशी में रखलें।

सेवन विधि—रात्रि को सोने से एक घण्टे पहले पान में एक लकीर दवा की करके खा लेना चाहिये। इससे बहुत बाजीकरण और स्तम्भन होता। +

बाल रोग पर—

२७—एक तोला सफेद संखिया को २० सेर गौ दुग्ध में मन्द मन्द आंच से पकावें। जब दूध गाढ़ा होजाय तब संखिया की डली निकाल ले और ३ माशे संखिया ३ छटांक सफेद शक्कर मिला कर २-३ दिन तक खूब खरल कर रखलें।

व्यवहार विधि—छोटे २ बच्चों को सर्दी से हरे पीले दस्त तथा अपच के कारण होने वाले पतले दस्तों में, सर्दी से आये ज्वर में कास (खांसी) में देने से अति लाभ होता है ×

+ पाताल यन्त्र की विधि परिभाषा प्रकरण में देखिये।
—सम्पादक

× शरद ऋतु में जो बालक सर्दी से नित्य रोगी रहते हैं उनके लिये अति लाभदायक है। मात्रा—एक दो चावल माता के दूध के साथ दें। प्रसूता स्त्रियों को जाड़ों में देने से उन्हें कमर का दर्द, शरीर का दर्द, सरदी खांसी में लाभदायक है। इसका निकला दूध जमीन मे गाड़ देना चाहिये पात्रों को खूब साफ कर लेना चाहिये।
—सम्पादक

श्रीमान् पं० देवराज जी 'सुमन' काश्मीरी

प्राणाचार्य भवन विजयगढ़

जिला अलीगढ़

—०—
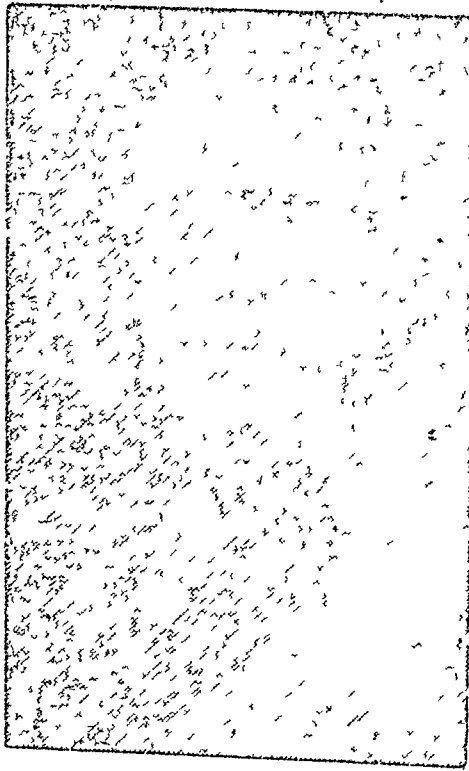
आपका जन्म अरनगढोटा (स्टेट जम्मूतवी-काश्मीर) निवासी स्वर्गीय ज्योतिर्विद कविराज पं० विश्वरूप जी द्विवेदी 'साहित्य-रत्न' आयुर्वेद शास्त्री के यहा सम्वत् १६८३ वि० में हुआ। आपने 'हिन्दी प्रभाकर' और आयुर्वेद विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। व्याकरण पिता जी से ही पढ़ा है और आयुर्वेद क भव भी उन्हीं से प्राप्त किया है।

शक्ति वर्धक तिला—

२८—केंचुआ ४० तोला श्वेत कचनार की जड़ की छाल २० तोला

घोड़े का सुम्म १०० तोला	सांडा नग ६
कूठ कड़वा २ तोला	बोर बहूटी २ तोला
केकड़ा ३ तोला	घुंघची श्वेत ३ माशे
दालचीनी ३ माशे	लौंग ३ माशे
अकरकरा ३ माशे	जायफल ३ माशे
केशर १ तोला	जोंक २ तोला

मालकांगनी २ तोला	हिरन की इन्द्री नग २
रेंगा माही	५ तोला

विधि—प्रत्येक को पृथक यव कुट कर शूकर की वसा इतनी मिलादे कि अच्छी प्रकार सन जाय और तीन दिन दूध में रक्खा रहने दे चौथे दिन पातालयन्त्र से तेल (तिला) निकाल लें।

उपयोग—सुपारी और सीवन छोड़ बाकी इन्द्री पर मालिश करें और बँगला पान सेक कर बांध दें, पानी न पड़ने पावे इसका ध्यान रखें। इसके कुछ ही दिनों के लगाने से नपुंसकता नष्ट होती है यदि इसके लगाने के पहले निम्न शक्ति वर्धक पोटली से सेक भी करें तब शीघ्र लाभ होता है।

शक्ति वर्धक पोटली—

२६—आवां हल्दी	गोला पुराना	हाथी दांत का चूरा
काले तिल	मालकांगुनी	असगन्ध
अकरकरा	मेदा लकड़ी	केंचुआ
बीर बहूटी	बिनौले की मींग	चिलगोजा
कूठ कड़वा	चांदनी सफेद	केशर
रेंगा माही		प्रत्येक समान भाग

विधि—सबको जव कुट कर पृथक पृथक एक खरल में डाल जैतून का तैल इतना डाले कि सन जाय। फिर ६-६ माशे की पोटली मलमल के कपड़ा में बांध इन्द्री का सेक करें सेक के बाद तिला लगाना और भी उत्तम है। इससे नपुंसकता नष्ट होती है।

श्री० कुंवर मानसिंह जी चौहान वैद्य भूषण

मु० पो० सचेंडी जिला कानपुर

—०—
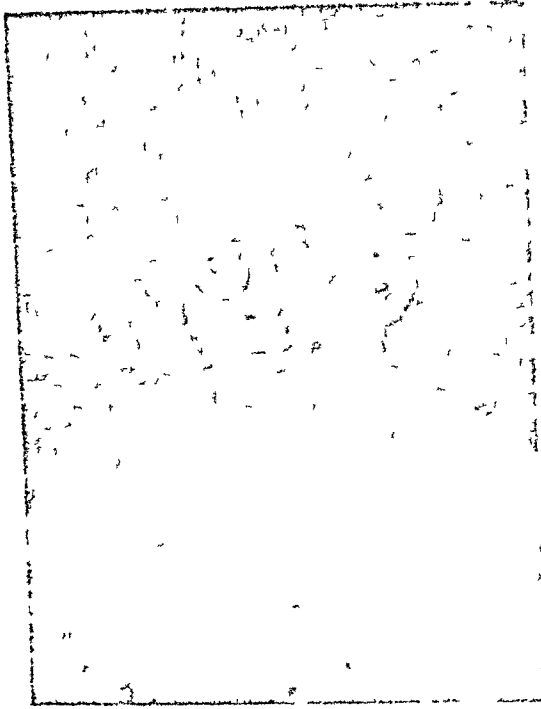
आपका जन्म १६७१ वि० में श्रीमान ठाकुर [illegible] सिंह जी राजपूत चौहान के यहां हुआ। आपने वैद्यभूषण परीक्षा उत्तीर्ण की है और [illegible] वर्ष से गांव में [illegible] कर रहे हैं। योग्य [illegible] व्यक्ति हैं उद्योगी और धर्मात्मा हैं, गरीब जनता की बड़ी लगन और निःशुल्क चिकित्सा करते हैं।

उन्माद पर--

३०—सर्पगन्धा १० तोला — उदसलीब असली १ तोला
दुग्धवच ५ तोला — ब्राह्मी ५ तोला
शङ्खाहूली ४ तोला — अफीम १ तोला

विधि—अफीम छोड़ शेष औषधियां कूट कपड़ा में छान ले और एक खरल में अफीम डाल थोड़ा ब्राह्मी का स्वरस या क्वाथ डालें, और घोटें। जब अच्छी तरह घुट कर कुछ पतला लेह के समान होजाय तब कपड़ छन चूर्ण डाल कर ब्राह्मी का स्वरस या क्वाथ डाल ६ घण्टे मर्दन कर मटर बराबर गोली बना सुखा शीशी में भर कर रखले।

सेवन विधि—उन्माद रोगी को एक एक गोली दिन में तीन बार केवड़े का अर्क पांच पांच तोले के साथ दे, दूसरे दिन दो दो और

तीसरे दिन तीन तीन दे सकते हैं पर ध्यान रहे कि जब गोली की मात्रा बढ़ावें तब केवड़े के अर्क की मात्रा भी बढ़ानी चाहिये। जब नींद खूब आने लगे तब मात्रा बढाना बन्द कर दें और धीरे धीरे मात्रा घटावें। भोजन में घृत, दूध अधिक दें। गरम पदार्थ नहीं दें। दस्त न होता हो तब दस्त डूस से या रेचक औषधि से कराते रहे।

वै० भ० श्री० पं० कृष्णाचार्य वैद्यराज

आयल मेडीशन मेकर्स एन्ड परफ्यूमर्स.

पटियाली गंगा जि० एटा

—०—
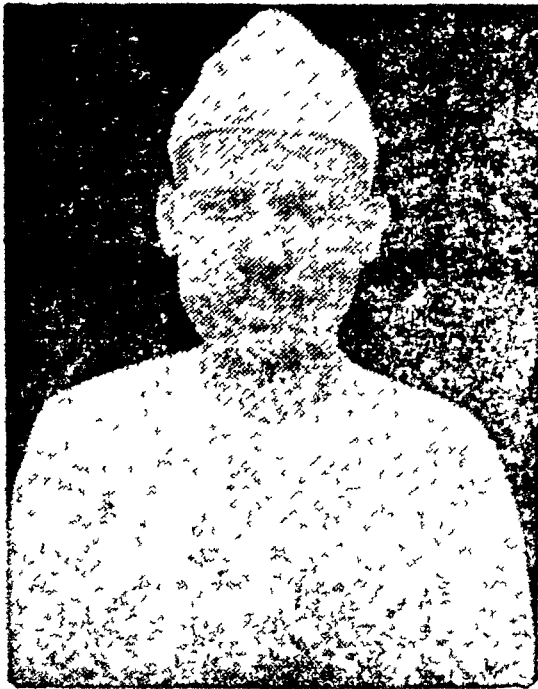
आपकी आयु लगभग ३० वर्ष की है। आपने वैद्यराज और वैद्य भूषण परीक्षा पास की है १० वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आप अपने इलाके में प्रसिद्ध वैद्य हैं सैकड़ों प्रशंसा पत्र भी प्राप्त किये हैं।

स्त्री रोग हर खंड—

२१—दक्षिणी सुपारी ४० तोला

छुहारा गुठली रहित ४० तोला

इकतालीस

मजीठ 10 तोला

—तीनों को कूट कपड़ छन करलें। और उसे दश सेर गाय के दूध में डाल खोवा बनालें फिर मूंग का आटा २० तोला, गेंहू का आटा २० तोला को थोड़े से घृत में भून लें और फिर खोवा मिला कर और एक सेर गाय का घृत डाल कर मन्दाग्नि से खूब भूने जब लाल सा हो जाय तब ३ सेर मिश्री की चासनी में डाल कर घोटे। जब एक जान हो जाय तब बबूल का गोंद २० तोला प्रथक घी मे भून और पीस कर उस में ही मिलादें। बादाम की गिरी पीसी छिली ४० तोला को भी उसमें मिला दें फिर—

गोखरू ४० तोला,
पलास का गोंद २० तोला,
गोंद २० तोला,
सालिम मिश्री २॥ तोला
दालचीनी २॥ तोला,
लोंग २॥ तोला,
बड़ी इलायची के दाने २॥ तोला,
सोंठ २॥ तोला,
जायफल २ तोला,
जावित्री १ तोला
पिस्ते का फूल १॥ तोला,
सुपारी का फूल १॥ तोला,
कचनार की छाल ६ माशे,
बबूल की छाल ६ माशे
संखाहोली ६ माशे
केशर १ तोला.
कस्तूरी ६ माशे

—सब कूट कपड़ छन कर उस में ही मिला दें। और अग्नि पर ही रख खूब घोटें जब रवा रवा से हो जाय अर्थात् खिल जाय तब उतार कर रखलें।

सेवन विधि—इसको एक तोला सुबह और १ तोला रात्रि को दूध के साथ सेवन करावें। इसके सेवन से सब प्रकार के आर्तव रोग नष्ट हो जाते हैं। श्वेत और रक्त प्रदर भी नष्ट हो जाता है। कटिशूल, कुक्षशूल, गर्भाशय विकार भी नष्ट हो सन्तान सुख भी

मिल जाता है। बल और रक्त वर्धक है। शरीर की कान्ति बढ़ जाती है एक बार परीक्षा प्रार्थनीय है।

नेत्र रोग हर ताम्र भस्म—

३२—फिटकिरी सफेद	५ तोला
समुद्रफेन	५ तोला,

—दोनों को बारीक खरलकर कपड़ मिट्टी की हुई एक आतसी शीशी में भर कर दूसरी आतसी शीशी लें उन दोनों का मुख जोड़ कपड़ मिट्टी करदें और एक तवे पर आँच के दहकते हुए कोला रख उस पर दवा वाली शीशी रखदें और दूसरी शीशी पृथ्वी पर रख दें कुछ समय बाद दवा वाली शीशी से दूसरी शीशी में तैल (अर्क) आ जावेगा ठन्डा होने पर खोले उस में ३ तोला के अन्दाज तैल निकलेगा उसे चीनी या क के प्याले में निकाल कर रखलें। आतशी शीशी की जगह फ्लास्क जो केमीकल के काम में आते हैं लेना उत्तम है कारण उनका मुख साफ बना होता है।

उस तैल में, ग्वालियर का मोटा पैसा तांबे का रेती से रितवा कर और सवा तोला तोल कर डाल दें और ढक कर सुरक्षित स्थान में रखदें। ५-६ दिन में ताम्र की स्वयं भस्म हो जावगी उस भस्म को खरल में पीस कपड़ा में छान शीशी में रखलें।

उपयोग—रात्रि को सोते समय सुरमा की भांति सलाई से नेत्रों में लगा कर सो जावें (यह लगता है) इससे समस्त नेत्र विकार नष्ट हो जाते हैं। प्रारम्भ के मोतियाबिन्दु में भी लाभदायक है। परीक्षा प्रार्थनीय है।

श्रीमान् पं० योगेन्द्रदेव जी शर्मा वैद्य

आरोग्य वर्धक औषधालय भांकरी पोस्ट पनेठी जि० अलीगढ़

—o—
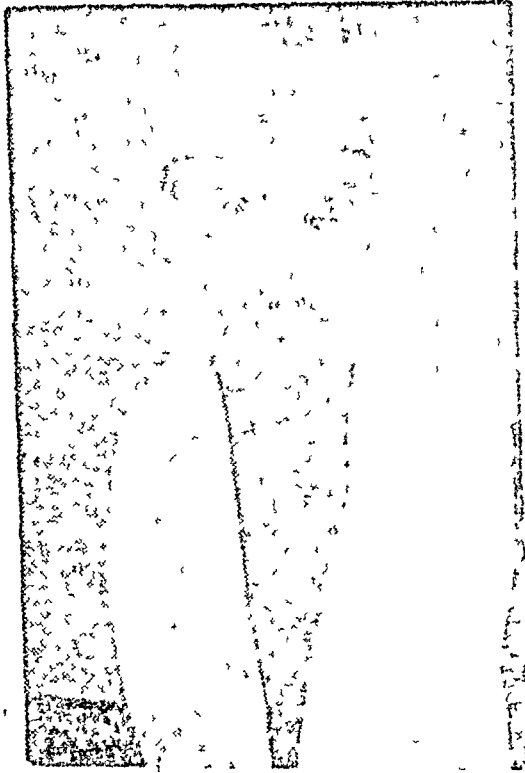
आपका जन्म सम्वत १९७४ वि० में श्रीमान पंडित डालचन्द्र जी शर्मा के यहाँ हुआ। आप अपने क्षेत्र मे प्रसिद्ध और अनुभवी वैद्य हैं। मिलनसार और उदार है गरीब रोगियों की निशुल्क चिकित्सा करते है।

मकरध्वज रस—

३३—सोने के पतले कटंक भेदी पत्रों को शुद्ध कर ४ तोला लेकर उसमें ४ तोले शुद्ध पारद डाल मर्दन करें जब पारद स्वर्ण को अपने में मिला ले चमक न रहे तब गंधक शुद्ध कर डालो और जब कज्जली बन जाय तब लाल करड़ा फूलों के स्वरस मे १२ घन्टे ग्वारपाठे के रस में मर्दन कर खुश्क करलें और एक आतशी शीशी पर ७ कपरोटी कर सुखालें और उसमें कज्जली बालुकायन्त्र में रख २ दिन २ रात्रि की अग्नि दें और स्वयं शीतल होने पर शीशी के गले में लगे मकरध्वज को निकाल रखलें। इस मकरध्वज में से—

कविराज पं० मणीन्द्रकुमार मुकर्जी आयुर्वेदा०

प्रिंसीपल ऋषिकुल आयुर्वेद विद्यालय, हरद्वार।

मकरध्वज १ तोला कपूर ४ तोला लौंग ४ तोला,
काली मिर्च ४ तोला, जायफल ४ तोला,
कस्तूरी ६ माशे

—कपड़ छन कर और मिला कर ४-६ घन्टे मर्दन कर शीशी में भर कर रखलें।

सेवन विधि—इसकी मात्रा २ रत्ती से १।। माशे तक पान के रस में मिला चाटें अथवा दूध की मलाई में मिला कर चाटे ऊपर से दूध पी सकते हैं। इसके सेवन से वीर्य विकार, पाचन विकार नष्ट होकर बल वीर्य की वृद्धि होती है नपुंसकता भी दूर होती है। जाड़ों में होने वाला खांसी कफ जुकाम दूर होता है। अनुमान भेद से अनेक रोग नाशक है।

सिद्ध सूत—

३४—शु० पारा १ तोला मोती भस्म १ तोला
स्वर्ण भस्म १ तोला चाँदी भस्म १ तोला
यव क्षार १ तोला शु० गंधक ५ तोला

विधि—शु० गंधक को छोड़ पांचों औषधियां कमल के पत्तों के स्वरस में ३-४ घन्टे मर्दन कर शु० गंधक डाल १२ घन्टे पुनः मर्दन कर खुश्क करलें और कपड़ा मिट्टी की हुई आतशी शीशी में भर बालुकायन्त्र में रख १२ घन्टे की अग्नि दें और स्वयं शीतल होने पर रस को निकाल रखलें। यह सिद्ध सूत तैयार हुआ।

सेवन विधि—मात्रा २ रत्ती प्रातः सायं मूसली का चूर्ण और मिश्री मिला सेवन करावें इससे नपुंसकता दूर होती है बल वीर्य बढ़ता है। घृत दूध अधिक सेवन करावें लाल मिर्च, खटाई गुड़ दही आदि पदार्थ सेवन न करावें।

रसशास्त्री श्री० डाक्टर प्यारेलालजी गुप्त वै० विशा०

संचालक—उमेदकुंवरि धर्मार्थ डिस्पेंसरी

मुंगेली जि० बिलासपुर

—०—
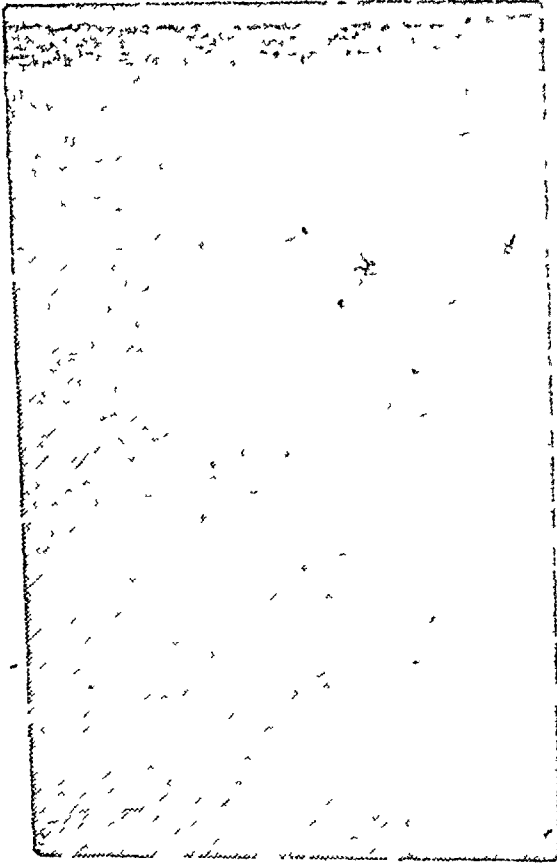
आपका जन्म सम्वत १९५७ में केशरवानी वैश्य श्रीमान् लाला रूपनुनाथ के यहां हुआ। आपने रस शास्त्री बनारस में, वैद्य विशारद हिन्दी विश्व विद्यालय प्रयाग से तथा एम० बी० ई० एच० मेरठ से पास की है। धात्री विज्ञान आदि कई एक पुस्तकें भी लिखी हैं आपने इंजैक्शन चिकित्सा नामक पुस्तक भी लिखी है जो अभी छपी नहीं है आप ३० वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे है। बड़े अनुभवी और सिद्ध हस्त चिकित्सक हैं। मिलनसार और दयालु हैं आपने बाइक्रोमोपैथी के इंजैक्शन भी तैयार किये है। इन्जैक्शन विषय के एक माने हुये विद्वान हैं।

बल वर्धक अरिष्ट—

३५—असगन्ध ४० तोला सफेद मूसली २० तोला

नागरमोथा १० तोला रास्ना १० तोला

विधि—

निशोथ १० तोला	बड़ी हरड़ १० तोला
दारू हल्दी १० तोला	मुलेहठी १० तोला
हल्दी १० तोला	अर्जुनत्वक १० तोला
विदारी कन्द १० तोला	चीते की छाल ८ तोला
मजीठ १० तोला	सफेद चन्दन ८ तोला
श्यामलता ८ तोला	अनन्त मूल ८ तोला
दुग्ध बच ८ तोला	लाल चन्दन ८ तोला
पानी	१२८ सेर

विधि—जव कुट कर पानी में रात्रि को भिगोदे प्रातः मन्द मन्द अग्नि से पकावे जब जब अष्टमांश रह जाय तब उतार कर छान कर वोतल या चीनी के पात्र में भरदे और इसमें १२ औंस रेक्टीफाईडस्प्रिट या अलकोहल अथवा प्योर ब्रांडी शराब मिलादें, तथा धाय के फूल का कपड़ छन चूर्ण २ सेर फूल प्रयुङ्ग, दालचीनी, इलायची, तेजपात, प्रत्येक चार चार तोला काली मिर्च, नागकेशर, पीपल, सोंठ, प्रत्येक दो दो तोला को वारीक कपड़ छन चूर्ण कर मिलादें। और पात्र या वोतल का मुख बन्द कर खूब हिला कर रखदें, ७ दिन धूप में रखा रहने दें पर दिन भर में दो तीन वार खूब हिला दिया करें फिर दो दिन विना हिलाये ही रखा रहने दें, १० वें दिन नितार फिल-टर पेपर में छान वोतलों में भर मजबूत कार्क लगा कर रखले।

सेवन विधि—१ से १॥ तोले तक की मात्रा में दें। वालकों को ५ से ६० वूंद तक दें। दवा से चाथाई शहद और दूना जल मिला कर पिलावें। प्रातः सायं अथवा प्रातः सायं रात्रि को सेवन करावे। इसके सेवन से वल स्फूर्ति वढ़ती है। प्रमेह, नामर्दी, मूर्छा, मृगी, हिस्टेरिया, मानसिक दुर्वलता, उन्माद, दिमाग की कम-जोरी, भ्रम, सन्यास, नेत्र की निर्वलता आदि रोग भी नष्ट

होते हैं। इसके गुण तो अनेक हैं पर यहां मुख्य २ ही दिये गये हैं।

प्लीहारि-

२६—नीबू का रस फिलटर किया हुआ ६ औंस
ग्वार पाठे के गूदे का रस २ तोला
एसेन्स आफ कोपलाइन पाव औंस

—सबको शीशी में भर कार्क लगा दो दिन रखदे फिर छान कर आधा औंस रेक्टीफाईड स्प्रिट मिला कर रखदें।

मात्रा—१ से ४ ड्राम तक। बराबर का पानी मिला कर।

विशेष प्रयोग विधि—सोडाबाई कार्ब को एक औंस पानी में घोले और ऊपर से प्यौर प्लीहारि दो तीन ड्राम डालदे। डालते ही फेन उठेगा पर तुरन्त पी जाना चाहिये। इससे प्लीहा वृद्धि; यकृत वृद्धि, पेट का दर्द, अजीर्ण बद हजमी दूर होती है, पित्त की गर्मी दूर होती है भूक लगती है।

वैद्य भूषण श्री० पं० वंशलोचन जी त्रिवेदी वै० शा०

दक्खिनडाणी रेलवे कार्टर नं० २० बेल गछिया (कलकत्ता)
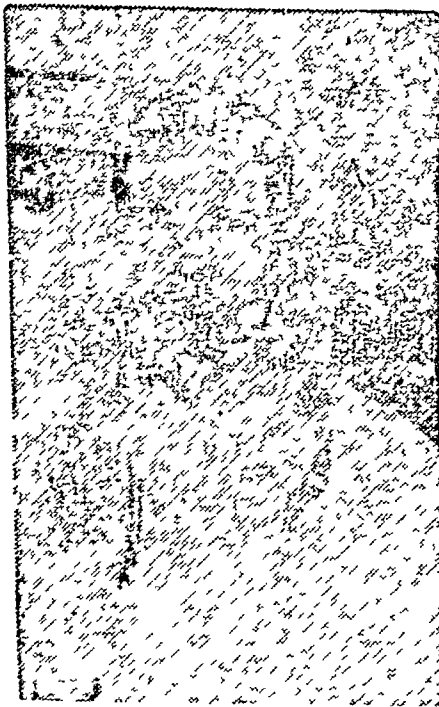
आप सोदॉव पोस्ट कोरटा डीह जिला बलिया निवासी श्री० पं० सत्यनारायण जी त्रिवेदी वैद्य श्री दुर्गेश्वर आयुर्वेदिक औषधालय के अध्यक्ष के सुपुत्र हैं। आपकी आयु २५-२६ वर्ष की होगी। आप खानदानी वैद्य हैं। आपने वैद्य भूषण आयुर्वेद शास्त्री परीक्षाऐं पास की हैं।

श्वास (दमा) नाशक–

३७—मुक्ता भस्म नं० १ कज्जली द्वारा जारित। रसराज सुन्दर के अनुसार बना कर वैद्य रखलें। जब श्वास रोगी आवे तब अर्जुन की छाल का चूर्ण कर मुक्ता भस्म मिला घृत के साथ चटावें। छाल ताजी हो सड़ी, गली, घुनी न हो। रोगी के बलानुसार सेवन करावें। यह प्रयोग विशेष अनुभव पिता और गुरु कृपा से मिला है मैंने सैकड़ों श्वास रोगी को दिया है एक बार आप भी परीक्षा करलें। +

दाद पर–

३८—नारियल का खोपड़ा सीसम का बुरादा

समान भाग

विधि—पाताल यन्त्र से तैल निकाल रखलें दाद पर लगाने से कुछ जलन तो करता है पर दाद शीघ्र ही नष्ट होजाता है शत प्रति शत लाभकारी है। *

पाताल यन्त्र— एक हांडी के पेंदे में छेद करले छेद ऐसा हो कि उङ्गली जा सके उसमें तार या सींक लगादे जिससे उसमें भरने पर दवा बाहर न निकल सके पर तार या सींक ढीली लगावे जिससे तैल निकल सके फिर उस हांडी में औषधि भर कर मुख बन्द करदे और एक बड़ी नांद के पेंदे मे भी छेद करदे और उसके भीतर हांडी ऐसी रखे कि छेद के ऊपर ही हांडी का

+ प्रयोग साधारण है पर लाभ खूब करता है।

—सम्पादक

* प्रयोग यह भी उत्तम है। शत प्रतिशत लाभदायक है।

—सम्पादक

क्रमशः

छेद रहे और उस नांद को चूल्हे पर रखदें नांद और हांडी के बीच में जो जगह रहे उसमें कण्डा भरदे तथा हांडी के ऊपर तक कण्डा भर कर आग लगादे और छेद के नीचे प्याला रखदे आग के कारण हांडी और दवा गरम हो तैल निकल कर छेद के द्वारा प्याले मे धीरे २ आजावेगा।

श्रीमान् वैद्यराज साधूसिंह जी कछवाहा

श्री देश हितकारक औषधालय

कन्नौज

—:o:—

आपका जन्म सम्वत् १६५० में फरुखाबाद जिले के विनोरा ग्राम मे हुआ। आप सन १०१७ ई० से चिकित्सा कार्य कर रहे है। आपका औषधालय अपने इलाके मे प्रसिद्ध है। अनुभवी और सिद्ध-हस्त वैद्य हैं।

हिंगुल भस्म–

३६—गन्दा विरोजा एक सेर कढ़ाई मे डाल कर चूल्हे पर रक्खे और नरम आंच दें और हिंगुल की डली ५ तोले को उसके बीच मे रख देवें एक घण्टे भर बाद फिर आंच तेज कर देवे कढ़ाई के ऊपर विरोजा को भी आग लग जावेगी कुछ पर-वाह नहीं जलने दो जब विरोजा जल जावे तो सिंगरफ की डली निकाल कर एक करछुल (कछुआ) जैसा कि भुज्जियों के भाड़ में बालू डालने का होता है) में रखें और नरम आंच करें उसके ऊपर तैल फासफोरस की १-१ बूंद गिराते जावें यहां तक कि एक पाव तैल फास फोरस खतम हो जावे इसके बाद करछुला में भिलावा ५ तोला पीस कर डाल देवे और उसके ऊपर घी ५ तोला, शहद ५ तोला डाल कर हल्की २ आंच देवें

थोड़ी देर के बाद तेज आंच करें। यानी ४ घण्टा नरम आंच ४ घण्टा दरम्यानी आंच और ४ घण्टा तेज आंच करें यानी १२ घण्टा आंच देकर उतार लेवें और सिगरफ की डली निकाल कर फिर दुबारा करछुला में रख कर भिलावा ५ तो० शहद ५ तोला, घी ५ तोला माल कांगनी ५ तोला डाल कर ४ पुहर यानी १२ घण्टा ऊपर की विधि से आंच देवें। भिलावा वगैरा जल जाने पर ताजा यानी दुबारा घी ५ तोला शहद ५ तोला, माल कांगनी ५ तोला, भिलावा ५ तोला डाल कर इसी तरह एक आंच और देवे बाद को भिलावा वगैरा की राख से उस डली को साफ करके फिर करछुला में रखें और उसके ऊपर दूध आक (मदार) १ सेर का चोया देवें (यानी कड़छ में डली रख कर कड़छ को नरम आंच पर रख कर आक का दूध उसके ऊपर १-१ बूंद टपकावें इसी को चोया देना कहते हैं) जब सब दूध खतम होजाये उसके बाद शराब ब्रांडी चार बोतल का चोया देवें जब चारों बोतलें ब्रांडी की खतम हो जायें तब फिर अर्क प्याज ८ बोतल चोया देकर खतम करें बाद को दुध आक मे ७ दिन तक खरल करके टिकिया बनावें साया में सुखा करके ५ तोला कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म (मुर्गे के अण्डों के छिलकों की भस्म) दूध आक में खरल करके उस हिंगुल वाली टिकिया पर चारों तरफ लेप करके साया में सुखा लेवें फिर दस तोला कुक्कुटाण्डत्वक भस्म लेकर एक बड़े सरवा में आधी भस्म बिछावें और फिर हिंगुल वाली टिकिया उसके ऊपर रख कर आधी कुक्कुटाण्डत्वक भस्म उसके ऊपर रखें और हाथ से खूब दबा देवें दूसरा सरवा उसके ऊपर रख सराब सम्पुट कर कपरौटी करें फिर सुखा कर ६ सेर उपलों की आंच में रख कर फूंक देवें स्वांग शीतल होने पर टिकिया को

निकाल कर कुक्कुटाण्डत्वक भस्म को अलग करदे हिंगुल भस्म को अलहदा कर लेवें खरल में पीस कर शीशी में रखें।

मात्रा—२ चावल से ४ चावल तक यह भस्म २ तोला मलाई और २ तोला मिश्री मिला कर खूब जाड़ा पड़ने पर सुबह को लें एक हफ्ता के अन्दर वह ताकत पैदा होगी जिसका अन्दाज़ा खाने वाले को ही होगा।

नोट—सिवाय जाड़े के दिनों में गर्मी के दिनों में यह भस्म हरगिज सेवन नहीं करना चाहिये। दवा सेवन के समय खूब जाड़ा हो जिसको चिल्ला जाड़ा कहते हैं दूध व घी खूब इस्तैमाल किया जावे विधिवत तैयार करने पर अगर हमारे लिखे मुताबिक यह भस्म काम न देवे तो हम को लिखें हम हर्जाना देने के लिये तैयार हैं।

नोट नं० २—जिस वक्त हिंगुल बिरोजा में पकाया जावे उस वक्त खुली जगह में पकाया जावे। अन्दर मकान के न पकाया जावे।

नोट नं० ३—भिलावा का चूर्ण करके करछुला में डालना चाहिये।

नोट नं० ४—तेल फासफोरस डाक्टरी दुकान से मिल जायेगा इसके बूंद डालने से रोशनी ऐसी मालूम होती है।

तिला-

४०—घुंघचिल सफेद सफेद कन्नेर मग्ज अरंडी
साफ केंचुआ साफ बीर बहूटी जोंक साफ
रेग माही अकरकरा असली प्रत्येक ऽ=ऽ=
कुचला १ छटांक भरक एक छटांक
जुन्दबेदस्तर १½ तोला माल कांगनी ५ छटांक

चर्बी शेर ऽ=　　　　　　　　चर्बी रीछ ऽ=

जमाल गोटा १ छटांक　　　　　　　　संखिया ॥)

तेल काले तिल का जितने में दवा मिल सके उतना ही लिया जावें।

विधि—सब सूखी चीजों को पीस छान करके चर्बियों को मिला देवे फिर बाद को काले तिलों का तेल इतना मिलावे जितने मे दवा तर होसके बाद को आतशी शीशी में भर कर शीशी के मुंह में तारों की गुच्छी लगा कर ऊर्ध्वपातन यन्त्र द्वारा तेल पातन करे। कढ़ाई में रख कर तेल पातन करे।

लगाने की बिधि—लिङ्ग की सीवन और अगला हिस्सा छोड़ कर तिला लगावे और ऊपर से गरम पान का पत्ता बांधे।

वैद्यशास्त्री श्री० वैद्य ओंकारनाथ जी गोभिल

परेट बाजार मुन्नालाल स्ट्रीट, कानपुर

—*—

आपका जन्म सम्वत् १९६० में अग्रवाल कुल भूषण लाला प्यारेलाल जी वैद्य के यहां हुआ। आप श्रीमान् वैद्य भास्कर व[illegible]लाल जी गुप्त प्राणाचार्य के भतीजे हैं। आपने उक्त वैद्यराज जी के द्वारा ही व्याकरण और आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त कर वैद्य शास्त्री की उपाधि प्राप्त की थी आप पहले धन्वन्तरि औषधालय की शाखा में प्रधान चिकित्सक रहे फिर कानपुर में लक्ष्मी धर्मार्थ औषधालय में प्रधान वैद्य के पद पर रहे अब स्व[illegible] रूप से चिकित्सा कार्य कर प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं। संग्रहणी और मन्दाग्नि के विशेष चिकित्सक हैं।

निवेदन

क्षुधा सागर-

४१—रसं गन्धकं टंकणं वह्नि व्योषं वराटा पटु पंच हिंगुल वह्नम।
ततोवत्सनाभं भवेत्सब सार्धम द्रवैर्नागवल्याविखल्वेविमर्दम्
पुनः निम्बु नीरेण संमृद्धिसारम् वटीश्चापयात्रंपिवेदश्रंगवेरम।
हरेत सर्वशूल हरेतसर्वकासं क्षुधासागरं सागरंवह्नितुल्यम ॥

अर्थ—पारद गन्धक सुहागा
चित्रक मूल छाल सोंठ कौड़ी भस्म
पांचो नमक हींग लौंग
प्रत्येक १-१ तोला शुद्ध बच्छनाग ६॥ तोला

—लेकर कपड़ छन चूर्ण कर पान के रस में ३ दिन मर्दन करे फिर नीवू के रस में ३ दिन मर्दन करे और उरद बराबर गोली बना सुखा रखले।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक एक गोली अदरख के रस में सेवन कराने से सर्व प्रकार के शूल और कांस को नष्ट करती है। भूक बढ़ाने वाली और पाचक है।

पाचन विकार-

४२—काली मिर्च ५ तोला काला नमक ५ तोला
सेंधा नमक ५ तोला कांच का नमक ५ तोला
* नौसादर उड़ाया हुआ २० तोला
पोदीना छाया में सूखा हुआ २० तोला
सोंठ घारकी ५ तोला जीरा भुना ५ तोला
हींग भुनी २॥ तोला सनाय पत्ती २॥ तोला

विधि—सबको कपड़ छन कर चूर्ण बना रखले। १॥ माशे से ६ माशे तक गरम पानी से भोजनोपरान्त सेवन कराने से पुराना कब्ज नष्ट होजाता है भूक बढ़ती है, भोजन शीघ्र पच जाता है।

---

* नवसादर को डमरू यन्त्र में रख कर उड़ा लेना चाहिये।

—सम्पादक

औपमन्यव श्रीमान् पं० दीनदयाल जी वैद्य भि०

आयुर्वेद कुटीर—अलीगढ़ शहर

आपकी आयु लगभग ५० वर्ष की होगी। आप कर्णवास जिला बुलन्दशहर निवासी श्रीमान् पं० रामनारायण जी राजगुरु के पुत्र और ब्रह्मनिष्ठ लाला जी महाराज के पौत्र हैं। आप १६ वर्ष से अलीगढ़ में चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपने विधिवत व्याकरण आयुर्वेद और धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ा है आपने अलीगढ़ रह कर अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की है अनुभवी वैद्य हैं अनेक सभा संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सभ्य है।

मल्ल भस्म—

४३—विधि—एक तोला श्वेत मल्ल को गौ दुग्ध में दोला यन्त्र विधि से शुद्ध करलें और पलाण्डु आध सेर की लुगदी वना उसके बीच में मल्ल की डली रख कपड़ मिट्टी कर खूब गरम भूभल में गाढ दें। जिस तरह लोग वेगन आदि का भरता करते हैं, उस तरह भून लें अग्नि अधिक न हो कि पलाण्डु जल जाय यह ध्यान रहे इस तरह १२१ बार अग्नि देने से मल्ल की उत्तम भस्म बन जाती है। आध सेर की एक ही पलाण्डु मिल जाय तव इसमें छेद कर संखिया की डली रख ऊपर से पलाण्डु का ही ढक

(आर्क) लगा कपरोटी कर भस्ता करलें इस प्रकार की १२१ अग्नि देने से भी मल्ल भस्म उत्तम बन जाती है।

सेवन विधि—शरद ऋतु मे एक सेर चावल तक मक्खन अथवा मलाई मे प्रातः काल ही सेवन करें (दिन भर में एक ही मात्रा देनी चाहिये) घृत दुग्ध यथेष्ठ मात्रा मे सेवन करावे। ११ दिन में ही नपुंसकता नष्ट हो जाती है बल बढ़ता है। उत्तेजना बढ़ाने के लिये अद्वितीय है। वात और कफ रोगों में भी अति लाभ दायक है।

विशूचिका—

४४—अर्क मूलत्वक छाया मे सुखाया हुआ और लवंग फूल सहित समान मात्रा मे ले और जल मे मर्दन कर चना बराबर गोली बना ले। यह विशूचिका में जल के साथ सेवन कराने से अति लाभ करती है।

कविराज श्रीमान पं० मूलशंकर जी त्रिपाठी वैद्य

किशोर आयुर्वेदिक फार्मेसी, २०५ सदर बाजार, जब्बलपुर

आपका जन्म सम्वत् १९८० वि० में कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में श्रीमान् पं० शिवसवकप्रसाद जी त्रिपाठी के यहां हुआ। आपने आयुर्वेद भूषण वैद्य शास्त्री, विद्यारत्न, रामायणाचार्य, कविराज परीक्षाएं और उपाधिया प्राप्त की। वैद्य प्रदीपिका पुस्तक लिखी जो अभी अमुद्रित है। ४ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर एक स्वर्ण पदक ३ रौप्य पदक प्रशंसा प्राप्त किये हैं। आप एक कार्य कुशल वैद्य है।

भगन्दर नाशक–

४५—विधि--एक भाग पारे को २ भाग आमलासार गंधक के साथ खरल में डाल ग्वार पाठे का रस डाल मर्दन कर कज्जली करें और इस कज्जली को तांबे के सम्पुट मे बन्द कर राख से भरी हाड़ी के बीच में रख एक दिवस की आंच दें और स्वय ठन्डा होने पर सम्पुट को निकाल जम्भीरी नीबू के रस की ७ भावना दे एक एक रत्ती की गोली बना सुखा रख लें।

सेवन विधि—एक एक गोली प्रातः सायं घृत अथवा मधु के साथ देने से भगन्दर रोग समूल नष्ट हो जाता है। औषधि सेवन के बाद लहसुन अथवा मूली का रस अवश्य सेवन करना चाहिये। पथ्य में रोगी को मीठे तथा शीतल भोजन, मैथुन, दिवस निन्द्रा आदि से सर्वथा दूर रखना चाहिये।

कुष्ठ नाशक–

४६—चित्रक	त्रिफला	सोंठ
इलायची	नागरमोथा	जीरा
पिप्पली	मिर्च	जवाखार
देवदारू	बच	कलोंजी
सेंधा नमक	वायविडंग	अतीस
चव्य	कूठ	अजमोद

विधि—उपरोक्त सब औषधियों को कूट कपड़ा में छान लें और सब औषधियों के बराबर शुद्ध गूगल लें और कपड़ छन चूर्ण में मिला मधु डाल कूट कर चार माशे की गोली बना रखलें।

सेवन विधि—प्रति दिन भोजन के साथ एक गोली का सेवन रोगी को कराने मे सब प्रकार के कुष्ठ, व्रण, कृमि, अर्श, संग्रहणी, मुख रोग, गुल्म रोग नष्ट हो जाते हैं

कविराज श्रीमान् पं० रामगोपाल जी शर्मा

फरियाई आयु० फार्मेसी और व्याधिमोचन औषधालय

गोंदिया जिला रायपुर सी० पी०

—०—

आपका जन्म सं० १६३६ वि० में रामपुर जिला प्रतापगढ़ निवासी श्रीमान् पं० लक्ष्मीदत्त जी के यहां हुआ। आपने व्याकरण, ज्योतिष और आयुर्वेद शिक्षा विधिवत प्राप्त की है। आप संस्कृत, हिन्दी मराठी, गुजराती, मारवाड़ी भाषा के पूर्ण पंडित हैं। आपने आयुर्वेद की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप को अनेक प्रशंसा पत्र, पदक और उपाधिया मिली हैं। आयुर्वेद महामहोपाध्याय की उपाधि भी मिली हैं जो एक महत्व पूर्ण समझी जाती है। आप सी० पी० प्रान्त के प्रसिद्ध और अनुभवी वैद्य हैं। अनेक वैद्य० सभाओं के पदाधिकारी और वैद्य सम्मेलन के सभापति भी रह चुके हैं। मद्रास ढि० कों० के आयुर्वेद विभाग के आनरेरी चीफ एडवाईजर भी रह चुके हैं अच्छे लेखक और वक्ता है।

मधुमेहारी—

४७—स्वर्णसिंदूर

लोह भस्म नं० १

वंग भस्म

नाग भस्म

यशद भस्म | अभ्रक भस्म उत्तम
स्वर्ण माक्षिक भस्म | छोटी इलायची के बीज
जायफल | सेमर कंद | गुड़मा

विधि—प्रत्येक एक एक तोला लें खरल में डाल मर्दन करें। (खुश्क ही) जब खूब महीन हो जाय सत्त शिलाजीत १। तोला डाले और सेमर छाल के रस, गुडुची रस बिल्वपत्र रस, कोमल दाड़िम का रस, निम्ब छाल का रस, गूलर के रस की प्रथक २ भावना देकर दो दो रत्ती की गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि— एक से २ गोली तक दिन में दो बार अर्थात् प्रातः सायं मधु के साथ चटा ऊपर से गुडुची स्वरस २॥ तोला पिलावें * इसके सेवन से मधुमेह और सोम रोग नष्ट हो जाते हैं। वीर्य वर्धक और पौष्टिक भी है। प्रमेह, वीर्य विकार नाशक भी है। औषधि सेवन के १-२ घन्टे बाद- मक्खन, मलाई, दुग्ध, का सेवन कराना चाहिये।

वात मुक्ता—

४८—नाग भस्म ३ माशे | मुक्ता पिष्टी ३ माशे
अभ्रक उत्तम ३ माशे | दुग्ध बच ६ माशे
केशर ६ माशे | ब्राह्मी ६ माशे
जटामासी ६ माशे | खुरासानी अजमायन ६ माशे
भीमसेनी कपूर | ६ रत्ती

---

* गोली निगलवा ऊपर से मधु मिला गिलोय का स्वरस पिलाना उत्तम रहता है। गोली पीस कर मधु में चाटने से गोली का कुछ अंश पीसने से रह जाता है।

—सम्पादक

विधि—सब को खरल में डाल बारीक करलें और फिर ब्राह्मी का स्वरस, गुडूची का स्वरस की भावना दे और १ माशे भाग को एक छटांक जल में ओटावें जब १॥ तोले रहे तब छान कर उस में ही मिला मर्दन करें और २ रत्ती कस्तूरी डाल मर्दन कर एक एक रत्ती की गोली बना सुखा रखले।

सेवन विधि—एक से २ गोली तक दिन में २-३ बार मन्दोष्ण गौ दुग्ध शर्करायुक्त अथवा जल के साथ सेवन करावें। इसके सेवन से अपतन्त्र वाय (हिस्टेरिया) रोग नष्ट होता है। स्मरण शक्ति बढ़ाने में भी अव्यर्थ है। मस्तिष्क को शक्ति देती है हृदय को बल देती है पाचन क्रिया को भी सुधारती है।

दमादमन—

४६—काकड़ासिंगी ५ तोला पोहकरमूल ५ तोला
पिपल्ली ५ तोला बहेड़े की छाल ५ तोला
नोसादर सत्व १ तोला शु० सोनागेरू ६ माशे

उपयोगविधि—सब को खूब बारीक पीस छान कर रखलें ४ रत्ती से १॥ माशे तक मधु में मिला कर २-३ बार चटावें। कफ युक्त और सूखा श्वास में आशु लाभ प्रकट होता है। सब प्रकार की खांसी में भी लाभ होता है। श्वासनक सन्निपात (निमोनिया) श्वास नलिका प्रदाह भी लाभदायक है। +

+ हमने रोगी को प्रथम स्नेहन, स्वेदन, वमन करा कर इस प्रयोग को दिया और एक रोगी को बमन ही करा कर सेवन कराया दोनो रोगियों को लाभ हुआ। वमन हमने—२ भाग फिटकिरी १ भाग नीला थोथा की भस्म बना कर उसमें से ६ माशे भस्म २ माशे नमक मिला गरम पानी के साथ पतली दाल खिलाने के बाद फकाया था इससे खुल कर वमन होगई थी। —सम्पादक

श्रीमान् डाक्टर एस० आर० दास जी भिषक्

नं० २२ नोर्थ तुकोगंज रेसकोर्स
इन्दौर सी० आई०

—।—

आपका जन्म सन् १६६० ई० को क्रिश्चयन परिवार के श्रीमान ईश्वरदास जी के यहां हुआ। आपके पिता कान्यकुब्ज ब्राह्मण से ईसाई हुये थे। आपने आयुर्वेद विद्यापीठ की भिषक और होमियोपैथी की एच० एम० बी०, एम० बी० बी० आई० पास की है। आपको स्वर्ण पदक और प्रशंसा पत्र भी मिले हैं आप १८ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं और अपने क्षेत्र में यथेष्ठ प्रगति की है।

क्लीवत्व हर तिला—

५०—तिल का तैल ३ तोला — आक का दूध १० तोला
अंडे की पीतता (मुरगी के अंडे की जरदी) — १० तोला
आब रेशम बारीक कतरा हुआ — ४ तोला
मीठा तेलिया १ तोला — जमाल गोटा १ तोला
सफेद सङ्खिया १ तोला — मेनसिल १ तोला

तबकी हरताल १ तोला पारद १ तोला

गंधक १ तोला

विधि—आब रेशम को मदार (आक) दूध में भिगोदे और छाया में सुखा ले बाद में तिल तैल और अन्य सब औषधियां मिला कर खूब मर्दन करे जब गोली बनने योग्य होजाय तब रत्ती रत्ती की भर की गोलियां बना छाया मे सुखा लें और फिर इन गोलियो से पाताल यन्त्र स तैल निकाल ले और शीशी मे भर काके लगा २१ दिन धूप मे रखे। उङ्गली पर लगा कर देखे उङ्गली से कड़ापन आजावेगा मुड़ने में आलस होगा तब समझें ठीक बन गया हैं यदि कड़ापन न आवे तब पुनः धूप म १५-२० दिन रखने से ठीक होजायगा।

उपयोग विधि—४-६ बूंद रात्रि को सीवन और सुपारी बचा कर मालिश करे ऊपर से पान लपेट कर कच्चे सूत से बांध दें ७ दिन के लगाने से कैसा ही नपुंसक हो लाभ होजाता है।

स्थूली करण—

५१—विधि और उपयोग—ब्रांडी सुरा न० १ की थोड़ी लेकर उसमे कान का मैल जितना मिल सके मिला कर और खूब खरल करें जब लेसदार मरहम सा होजाय तब रखले। रात्रि को सोते समय थोड़ा सा ले इन्द्री पर मर्दन करे और लेप करे। ऊपर से भोज पत्र अथवा पान या शरद पत्र बाध दे। प्रातः पट्टी खोल कर—

गुल बाबूना इन्द्र जौ नाखूना

आंबा हल्दी त्रिफला

—का क्वाथ बना उस क्वाथ से धो डाले। इस प्रकार व्यवहार करने से १०-११ दिन मे ही इन्द्री स्थूल होजाती है।

स्तभन चूर्ण-/

५२—विधि और सेवन बिधि—इमली के बीजों के दो दो टुकड़ा कर पानी में भिगोदें तीन दिन बाद छिलका दूर करके और खरल मे डाल खूब घुटाई करे और समान भाग मिश्री मिला मर्दन करने से पतला सा द्रव्य होजायगा पुनः मर्दन करते रहें जव खुश्क होजाय तव रख ले। एक माशे की मात्रा से प्रातः साय सेवन करने से स्वप्न प्रमेह और मूत्र के साथ धातु जाना बन्द होजाता है और मैथुन के ४ घण्टे पूर्व ३ माशे की मात्रा से दूध या जल के साथ फांकने से स्तम्भन होता है। हानि कभी नही करता बल बीर्य को बढ़ाने वाला भी है।

वैद्यभूषण श्री० कवि० बाबूलाल जी पुरे 'विशारद'

श्री बसन्त कुसुमाकर आयुर्वेद भवन
मानपुर (मध्यप्रदेश) होल्करस्टेट

आपका जन्म सन १९०६ ई० को सिमरोल (महू इन्दौर) निवासी ब्रह्म कुल भूषण श्री० पं० वाल कृष्ण जी पुरे वैद्यराज के यहां हुआ। आप के यहां परम्परागतचिकित्सा व्यवसाय चला आता है। आपने हि० सा० 'विशारद' आयुर्वेद भिषक परीक्षा उत्तीर्ण की और इन्दौर के गण्यमानों की एक

सभा से वैद्य भूषण उपाधि मिली। देवासराज्य में सरकारी वैद्य रह चुके है। आप बड़े परिश्रमी और मिलनसार हैं।

अशोकादि पेय--

५२—विधि—अशोक छाल (वक्काल) ४० तोला

लोध मुलहठी रसवत (रसौत)

धाय के पुष्प प्रत्येक १०-१० तोले

—लेकर यव कुट कर ८ सेर पानी में कलईदार वर्तन में भिगोदें। और ८ घन्टे भीगने के बाद मंदाग्नि से पकावे जब १ सेर शेप रहे तब छान कर बोतल में भरदे और उसमें ४० तोला शहद तथा २० तोला मृत संजीवनी सुरा मिला कर गरम स्थान में १० दिन रखी रहने दें बाद फिल्टर पेपर में छान कर रखले।

सेवन विधि—आधा तोला दवा २ तोला पानी मिला कर पिलावें। एक दिन रात में ३-४ बार पिला सकते हैं। इसके सेवन से प्रदर, आर्तव रोग, सोम रोग नष्ट होजाते हैं बल बढ़ता है। गर्भाधान अथवा गर्भपात के बाद सेवन कराने से बल; रक्त भूक बढ़ती है यह औषधि २१ से ४१ दिन तक सेवन करानी चाहिये।

अमृत—

५३—सत्व अजमायन १ तोला सत्व इलायची १ तोला

रूह जाफरान १० माशे रूह पान ७ माशे

रूह सन्दल ४ माशे सत्त दालचीनी ४ माशे

रूह बादाम ५ माशे सत्त शरदचीनी ४ माशे

कपूर देशी १ तोला सत्त प्याज़ ४ माशे

सत्त अदरख ४ माशे	सत्त नारङ्गी ४ माशे
रूह जायफल ५ माशे	सत्त नींबू ५ माशे
सत्त लौंग ३ माशे	रूह केवड़ा ३माशे
सत्व पोदीना	३ माशे

विधि—सबको मिला शीशी में भर ४ दिन धूप मे रखदे और चार दिन छाया में रखा रहनेदे आठ दिन बाद उपयोग करे।

उपयोग विधि—इसका प्रयोग अमृत धारा; पियूष धारा, सुधासिन्धु की भांति ही करना चाहिये यह उनसे उत्तम है वैद्य बना कर लाभ उठावे। सामयिक रोग तो इस से नष्ट होते ही हैं पर सिंघाड़े मे देने से पित्तज धातु विकार स्वप्न दोष आदि भी नष्ट होते हैं।*

अर्शान्तक–

५४—नीम की निबौली की मींग २ तोला

शुद्ध रसौत २ तोला	खून खुराबा २ तोला
शुद्ध गूगल २ तोला	हरड़ बड़ी का छिलका २ तोला
सनाय पत्ती १ तोला	गुलाब पुष्प १ तोला
पीपल छोटी	१॥ तोला

विधि—गूगल को छोड़ बाकी सब औषधियां कूट छान ले और गूगल को खरल कर उसमें मिलादे तथा मूली के पत्तों के रस में मर्दन कर गोलियां बना सुखा रखले।

---

* हमने सत्व पोदीना के स्थान पर पिपरमेंट डाला था। साथ ही ६ माशे अफीम भी डाल दी थी किन्तु २-३ वस्तु न होने से वह नहीं डाली गईं फिर भी प्रयोग उत्तम रहा।

—सम्पादक

सेवन विधि—दो दो या चार चार, रोगी के अवस्थानुःसार जल के साथ प्रातः सायं सेवन करावें। मलावरोध हो तब एनीमा लगाते रहें। इसके सेवन से रक्तार्श और बादी का अर्श नष्ट होजाता है।

कविराज श्री० धर्मदत्त जी आयुर्वेदाचार्य

श्री धर्म आयुर्वेदिक फार्मेसी

खन्ना टी० पी० आर०

—o—

आपका जन्म लाहौर में सन् १९१० ई० में मोसाल ब्राह्मण के 'दत्त उपजाति' के कुल-भूषण श्रीमान् पं० चौधरी चरणदास जी वैद्य वैद्य रत्न के यहां हुआ था आपने सनातन धर्म आयु, र्वेदिक कालेज लाहौर से आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की तथा वहां के अश्वनीकुमार मासिक पत्र एवं छात्र-परिषद के कार्य कर्ता रहे। आपके निबन्ध और लेखों से तो वैद्य-समाज परिचित ही है। एक निबन्ध पर गवर्नमेंण्ट आयुर्वेद कालेज पटना की छात्र सभा ने स्वर्ण-पदक दिया था तथा गौ मूत्र चिकित्सा नामक पुस्तक के लिये अ० भा० वैद्य सम्मेलन से स्वर्ण-पदक और औषधि निर्माण की कुशलता पर रौप्य पदक मिला था। आप अनेक वैद्य सभा-सोसाइटी के कार्य कर्ता धर्मार्थ चिकित्सालयों के चिकित्सक तथा प्रोफेसर भी रह चुके हैं। अ० भा० आयुर्वेद महा-मंडल के आजीवन सदस्य हैं। अनेक संस्थाओं के परीक्षक भी हैं।

मुजाक नाशक वस्ति -

४५—धनियां १ तोला　　　　मेंहदी पत्र सूखे १ तोला

शुद्ध रसौत १ तोला　　　　दही का तोड़ (जल) १ बोतल

विधि—सबको यव-कुट कर बोतल में भर दही का तोड़ डाल कार्क लगा तीन घन्टे धूप में रख दें फिर उसको छान कर रखलें।

प्रयोग विधि—उपरोक्त छने हुये तरल को कांच की पिचकारी में भर कर मूत्र नलिका में लगा दे। मूत्र नलिका की जड़ को पकड़ ले जिससे तरल अन्दर न जाने पावे नली में ही रहे। १-२ मिनट रोक निकाल देना चाहिये। प्रति दिन एक बोतल के प्रयोग से ३ दिन में सुजाक नष्ट होजाता है।

व्रण नाशक मरहम—

५६—तिल का तैल २० तोला सिन्दूर असली ५ तोला
मुर्दासङ्ग १ तोला तुत्थ ६ माशे
राल १ तोला गन्दा विरोजा २॥ तोला
मोम देशी २ तोला

विधि—सर्व प्रथम तैल को लोह पात्र में गरम करके उसमें सिंदूर डाल दें (मोंम को छोड़ शेष औषधियां कूटकर कपड़ छन कर ले) जब तैल काला पड़ जाय तब मोंम डालदे और मोंम के पिघलने पर सब औषधियां कपड़ छन की हुई डालदे, लोह कलछला से चलाता रहे जब सब मिल जाय तब अग्नि से उतार कर भी चलाते रहें। जब खूब ठंडा होजाय तब चलाना बन्द कर चौड़े मुंह की शीशी में रखलें।

उपयोग—व्रण को साफ कर पोंछ लें और मरहम को कपड़ा पर लगा जरा गरम कर चुपकादे।

नोट—सिंदूर तैल में डालने पर जो धुआं निकले उससे बचते रहें क्योंकि यह धूआं हानिकारक होता है।

राजवैद्य श्रीमान् पं० श्रीकृष्ण जी शर्मा वैद्यरत्न

सर्व हितकारी परमार्थ औषधालय

केकड़ी जिला अजमेर

—०—

आपका जन्म सम्वत् १९५७ वि० में सवाई माधोपुर (जयपुर) औदीच्य ब्राह्मण कुल में हुआ। आपने कविराज, वैद्य रत्न, वैद्य भूषण आदि उपाधियां और अनेक प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं आप विद्वान अनुभवी और क्रिया कुशल वैद्य हैं और अच्छे लेखक भी हैं।

नयनामृत अंजन—

५७—शोधित सुरमा १० तोला उत्तम भीमसेनी कपूर (बाजारू नहीं) ३ तोला

यशद पुष्प (जयपुर का श्वेत काजल) ५ तोला

लौंग ५ माशे पुष्प नीला थोथा १ तोला

कलमी शोरा असली ५ माशे

विधि—सब औषधियों को खरल में बारीक पीस कर चैत्र मास में निम्ब पुष्प (निम्ब खिचड़ी) के स्वरस में ११ दिन निरन्तर खरल करे १२ वे दिन गुलाब जल उत्तम जो सेन्ट का न हो उसमें

खरल करें पश्चात छाया में सुखा ले फिर ३ घंटे कांसे के पात्र में घोट कर रख लेना चाहिये।

उपयोग—शीसे की सलाई से प्रातः साय अंजन करने से नेत्र सम्बन्धी सब रोगों में लाभदायक है। मोतिया बिंद में बिना औपरेशन के ही लाभ होजाता है किंतु बराबर कुछ दिन लगाना चाहिये।

स्नायु विध्वंस मलहम—

५८—अहिफेन सावुन कपड़ा धोने का भिलावा
नर कचूर श्वेत चिरमी (चौंटनी) सिंदूर उत्तम
वत्सनाभ सुहागा कुचला

प्रत्येक औषधि १॥ १॥ तोला
असली तैल ४० तोला

—विधि—प्रथम सब औषधियां मैदा के समान बारीक कर कपड़ा में छान लें। सावुन, भिलावा, सिंदूर, कुचला, तैल - इनको अलग रखना चाहिये। तैल को कढ़ाई में डाल अग्नि पर गरम करें तैल गरम होने पर कुचला डाल देवें जल कर कोयला होजाने पर निकाल कर फेंक देवें इसी प्रकार फिर भिलावा डाल जला देवे पश्चात् कपड़ छन किया चूर्ण तैल मे डालकर कढ़ाई को उतार लेवें, फिर सावुन सिंदूर मिला देवें और लोह मूसल से २४ घण्टे निरन्तर घुटाई कर काच पात्र में रख लेना चाहिये।

उपयोग—जिस रोगी के वाला (नहारू) ने मुंह कर दिया हो या छाला होगया हो तो उसे फोड़ कर इस औषधि को पीपल के पान के ऊपर चिरमी (रत्ती) जितनी लगा कर थोड़ा सा तपा करके नहारू के मुख पर रख देना चाहिये। और ५-७ पीपल के मुलायम पत्ते कुछ नवाया करके ऊपर से रख पट्टी बांध दे, उस पट्टी

को तीसरे दिन खोलना चाहिये और गरम जल से धोकर पुनः इसी प्रकार मरहम लगा पीपल के पत्ता रख बांध देवे और फिर तीसरे दिन खोले। इस प्रकार तीन वार पट्टी बांधनी चाहिये। अर्थात् ६ दिन में नहरू बिलकुल ठीक होकर जख्म रह जायगा । फिर दो चार दिन इसी मलहम को नहरू के जख्म पर लगाते रहें जिससे जख्म ठीक होजायगा। महीनों कष्ट पाने वाला रोगी ६ दिन में चलने फिरने लायक होजायगा

यदि स्नायु मे शोथ (सूजन) हो तब शोथ के ऊपर कालीजीरी को शीतल जल मे वारीक पीस कर गरम कर सूजन पर लगा देवे। ऊपर से कुछ गरम किये हुये पीपल के पत्ते रख पट्टी बांध देना चाहिये। सूजन अवश्य मिट जायगी।

विद्यालंकार श्रीमान कविराज अत्रिदेव जी गुप्त

लिम्बड़ा लेन चरक भवन के सामने
जामनगर (काठियावाड़)

—०—

आपका जन्म अग्रवाल कुल भूषण श्रीमान लाला लौलीराम जी के यहां हुआ। आपकी आयु लगभग ४४-४५ के होगी आप गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक हैं। आयुर्वेद मे प्रथम आने से एक स्वर्ण पदक विद्यालय से मिला और दूसरा स्वर्ण पदक

अ० भा० वैद्य सम्मेलन मे मिला। आपने चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टाँग संग्रह ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद किया है अनुवाद (टीका) शैली नवीन ढंग की अति उत्तम है । आपका शास्त्र ज्ञान व क्रिया ज्ञान अतिउत्तम है आप एक सफल अध्यापक और लेखक हैं। आयुर्वेद औषधालय चलाने की नवीन योजना अभी आपके मस्तिष्क में है भगवान आपको अपनी योजनाओं में सफलता प्रदान करें।

शिर दर्द के लिये—

५९—वातिक शिर दर्द के लिये जिसमें वेदना का स्थान व समय निश्चित नहीं, उसमें रात्रि को पथ्यादि क्वाथ (शार्ङ्गधर का) तथा प्रातः गोदन्ती भस्म १ माशा घी और चीनी के साथ देना चाहिये।

पैत्तिक शिर दर्द-जिसमें स्थान निश्चित है, उसमें शिरः शूलादिवज्र रस को मधु के साथ देना उत्तम है। पाठ-भैषज्यरत्नावली का है।

कफ जन्य शिर दर्द में—नारदीयलक्ष्मीविलास की एक मात्रा आद्रक के रस और मधु में देना उत्तम है। ×

स्मृति वर्धक—

६०—प्रातः काल उठ कर ताम्र के पात्र का पानी पीना (उषा पान) फिर गाय के दूध में घी और चीनी मिला कर उसके साथ अश्वगन्धा का चूर्ण लेना चाहिये। अश्वगन्धा—जंगल की मोटी जड़ लेना चाहिये। कम से कम ३ मास प्रयोग करके फिर देखें कि स्मर्ण शक्ति कैसी है।

+ पथ्यादि क्वाथ, शिर शूलादि वज्र रस, नारदीय लक्ष्मी विलास के प्रयोग स्थानाभाव से यहां नहीं लिखे गये हैं। —सम्पादक

वैद्य शास्त्री डाक्टर पं० श्यामजी मोहन जी, वैद्य

श्री राजकुमार महेन्द्रसिंह ए० एच० डिस्पेंसरी

भूमट नगरी धार स्टेट सी० आई०

—०—
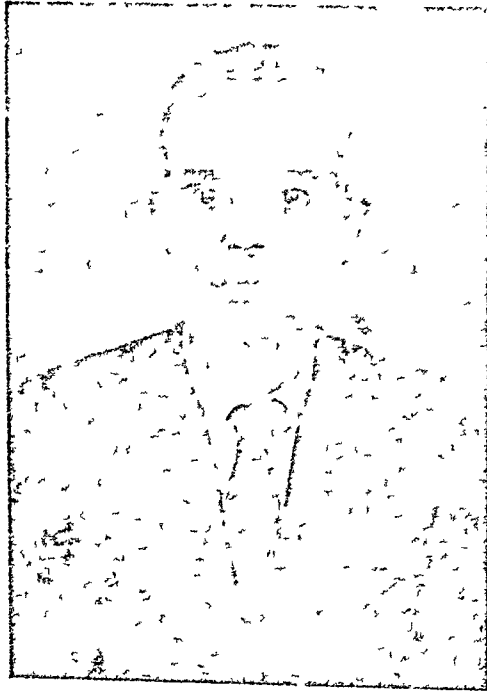
आपकी आयु ३० वर्ष की है। आप सौनौठ गोकुलपुर पोस्ट पन्हैंठी जिला अलीगढ़ निवासी श्रीमान प० कुन्दनलाल जी के सुपुत्र हैं आपका दूसरा नाम पं० श्यामसुन्दर लाल जी है। आपने वैद्य शास्त्री और एच० एम० बी० एस० परीक्षायें पास की हैं। अनेक स्वर्ण रौप्य पदक प्राप्त किये हैं। प्रशंसा पत्र भी। आप बड़े योग्य मिलनसार और अनुभवी वैद्य हैं।

अपस्मार हर नस्य—

६१—मोर पक्षी (मयूर पंछी) का अन्डा लेकर उस अंडे में ऐसा छेद करे जो फिर बन्द किया जा सके तथा अन्डा फूटे नहीं और पीली जरदी सब निकल आवे। उससे पीली जरदी निकाल उसके बराबर काली मिर्च कपड़ छन की हुई लेकर एक खरल में दोनों पदार्थ डाल मर्दन कर खुश्क करले और उस अंडे में ही भर कर मुख बन्द कर सावधानी से रक्खा रहने दें।

उपयोग विधि—मृगी रोगी को दौड़ा होरहा हो, रोगी बेहोश हो, या तड़प रहा हो उस समय इस दवा की एक चुटकी लेकर रोगी का मुख बन्द कर नाक से सुंघावे इसके सुंघाने से मृगी

का कीड़ा उसी समय बाहर निकल आवेगा, उसे लेकर फेंक दें या जमीन में गाढ़ दें और बाद में नेवला जानवर के रक्त को गुड़ या शक्कर में मिला कर रोगी को प्रति चौथे दिन दिन खिलावें (महीने में आठ दिन खिलावें) तो रोग हमेशा को शान्त होजायगा, यही दवा सर्प के काटे हुये आदमी की नाक में सुंघाने से रोगी चैतन्य होजायगा तब न्यौला जानवर के मूत्र की भीगी मिट्टी रोगी को खिलावे तो सर्प विष शांति होजाता है।

अर्श रोग नाशक वटी–

६२—२५ तोले रीठा लेकर उसके अन्दर की काली गुठली निकाल कर फेंकदें और छिलका लेकर उसमें काली मिर्च २॥ तोला मिला कर खरल में कूट कपड़ा में छान ले और शहद डाल कर मटर बराबर गोली बना कर रखलें। प्रातः और सायंकाल बासे पानी के साथ निगलवा दिया करें तथा—झरबेरी की जड़की कोंपल १ सेर लाकर छाया में सुखा कूट कर रखलें, और आधी छटांक को एक सेर पानी में उबाल कर और छान कर ठण्डा करले इस पानी से टट्टी जाने के बाद मल द्वार को साफ करे और रात्रि को सोते समय निम्न धूनी की औषधियों से गुदा को धूनी दे।

धूनी की औषधियां–

नौसादर १ तोला	नीला थोथा १ तोला
शोरा कलमी ६ माशे	गंधक आमलासार ६ माशे
गांजा बीज ६ माशे	भांग बीज १ तोला
राल १ तोला	गूगल ५ तोला
उपजा हुआ सींग ५ तोला	रूमी मस्तगी २ तोला

सिगरफ १ तोला
रस कपूर १ तोला

चन्द्ररस १ तोला
हरिताल वर्की २ तोला

अजमायन
२ तोला

कड़वी तोरई के बीज २ तोला
सर्प की कांचली ६ मासे

कच्छप पृष्ठ (कछवा की खोपड़ी)
१ तोला

बकरी की मेंगनी
२ तोला

—सब को कूट छान कर रखलें। जमीन में एक गड्ढा खोद उसमें जङ्गली कंडा की आंच कर उसमें थोड़ी दवा डाल गुदा को धूनी दें यदि धूनी न बना सकें तब उपरोक्त बटी और जल से धोने से भी लाभ होजाता है।

भिषगाचार्य श्री० पं० रामदत्त जी शर्मा

म्यूनिस्पल कमिश्नर, तिलक चौक. बूंदी स्टेट

—०—

आपका जन्म सं० १९६२ वि० में दधीच ब्राह्मण कुल के श्रीमान् पं० भंवरलाल जी शर्मा व्यास राजवैद्य के यहां हुआ था, आपने देहली से भिषगाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की है, अब आप बूंदी सभा के मेम्बर और म्यूनिस्पल कमिश्नर भी हैं। आप खानदानी सिद्धहस्त चिकित्सक और ख्याति प्राप्त वैद्य हैं।

चौहशार

ताल भस्म—

६३—स्वर्ण वर्की हरताल को शुद्ध कर १० तोला लें और—

घी ग्वार १ सेर — नीबू का रस १ सेर
सरफोंका काथ या स्वरस — १ सेर
थूहर का दूध १ सेर — अर्क दुग्ध १ सेर

—प्रत्येक में अलग २ घोटें और टिकिया बनाकर ७ दिन धूप में रख सुखा लें एक मिट्टी के मटके में ढाक की भस्म भर कर बीच में रखदें ऊपर नीचे ढाक की राख रहनी चाहिये, दबा दबा कर भरें बाद को ६२ पहर प्रथम मन्द फिर तेज आंच लगावें और शीतल होने पर टिकिया (भस्म) निकाललें।

परीक्षा—आग पर डालने से धुआं न दें तब ठीक भस्म है यदि धुआं दे तो कच्ची भस्म है अतः फिर उतनी अग्नि पुनः दें जब भस्म बन जाय तब काम में लावे।

सेवनविधि—मात्रा आधी चावल से १ चावल तक। पुराना ज्वर जो हल्का २ बना रहता और अनियमित बढ़ता हो उसमें चोलाई शाक पत्र के स्वरस १ तोला के साथ प्रातः सायं देने से १०-१५ दिन में ज्वर निमूल हो जाता है यह हमारा विशेष अनुभव है।

पथ्य—खिचड़ी, दलिया, दाल, दूध आदि देवे, वात रक्त में मजिष्ठादि काथ के साथ दें ४० फायदो लाभ करता है। वात-रक्त मे ४० दिन मे लाभ होता है किन्तु १०-१५ दिन और भी खिलावें घृत अधिक सेवन करें। अनुपान भेद से और भी अनेक रोग नाशक है। कुष्ठ प्रभृति रोग में भी लाभदायक है।

अपथ्य-तैल मलना, अग्नि से तापना, धूप में फिरना आदि।

श्री० बा० किशनलाल जी वर्मा वैद्य

श्री चित्रगुप्त आयुर्वेदिक औषधालय

आकोट (बरार)

—*—
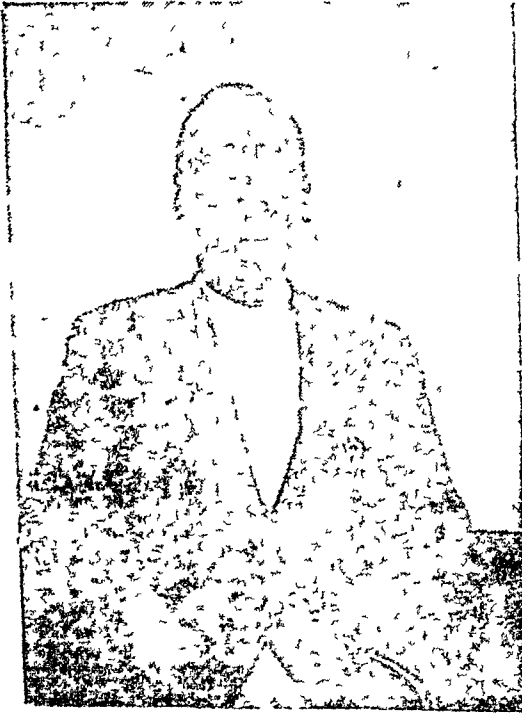
आप श्रीवास्तव कुल के भूषण हैं आपकी अवस्था ५० वर्ष के लगभग होगी। आपने श्री० महामहोपाध्याय बाला-राम जी तिवारी से आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त की है, और अयोध्या से आयुर्वेद-मनीषी की उपाधि और अनेक अभिनन्दन पत्र, प्रशंसा पत्र, पुरस्कार प्राप्त किये है, ग्वालियर वैद्य सम्मेलन से भी प्रमाण पत्र मिला है। आप अनेक वैद्यक संस्थाओं के पदाधिकारी और प्रसिद्ध वैद्यहैं।

क्षाराम्ल—

६४—अदरख का रस २० तोला — नीबू का रस ४० तोला

सांभर नमक १ तोला — काला नमक १ तोला

सेंधा नमक १ तोला — पापड़खार हरा १ तोला

सज्जी खार १ तोला — सुहागे का फूला १ तोला

विधि—सब क्षार बारीक पीस दोनों रसो में मिलाकर चीनी की बरनी

में भर ७ दिन रक्खा रहने दें फिर छान कर बोतल में भर कर रखले। ※

व्यवहार विधि—३ माशे यह क्षाराम्ल ६ माशे पानी के साथ मिला कर पिलाने से उदर शूल शान्त होजाता है। अजीर्ण, विशूचिका और मुख की विरसता भी इससे दूर होती है।

अमृत प्रभावटी—

६५—काली मिर्च १ तोला	पीपरामूल १ तोला
लवङ्ग १ तोला	हरीतकी १ तोला
अजमायन १ तोला	इमली १ तोला
अनार १ तोला	विड नमक १ तोला
कांच का नमक १ तोला	पीपल छोटी २ तोला
जवाखार २ तोला	चित्रक मूल २ तोला
जीरा सफेद भुना २ तोला	सोंठ २ तोला
धनियां २ तोला	इलायची २ तोला

आमले २ तोला

विधि—इन सबका चूर्ण कर नीबू के रस की तीन भावना लगा कर दो दो रत्ती की वटी बना कर रखले।

सेवन विधि—दिन में दो समय शहद में अथवा अदरख के रस मे देने से गले की जलन, और अमल-पित्त का नाश होता है।

※ क्षाराम्ल—में औषधियां और नीबू तथा अद्रक का रस डाल ७ दिन रखने के बाद छान कर वोतल मे भर लें यह ठीक नहीं, बिना छाने ही हमने वोतल मे भर लिया और व्यवहार किया (जिस तरह जँभीरी द्राव वनाते हैं उस तरह ही बनाया) अजीर्ण, पेट का हलका दर्द, कब्ज में लाभकायक पाया —सम्पादक

श्री० परमहंश स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

C. P. सन्त वसन्तसिंह जी वैद्य रत्न
मीरघाट—बनारस

—o—
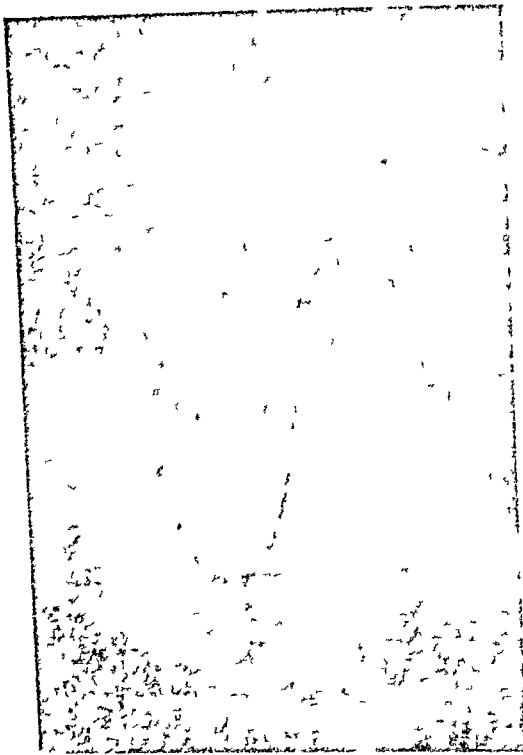
पंजाब प्रान्त के एक धनवान परिवार में आपका जन्म सम्वत १६१० में हुआ था। आप छोटी अवस्था में ही लखनऊ अपने गुरुदेव के यहा चले आये थे, वहा आपने वेदान्त और आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की। आप अच्छे योगी और अनुभवी चिकित्सक है। हमारा परिचय ३२ वर्ष पूर्व प्रयाग में त्रिवेणी स्नान को जाते समय नाव पर हुआ। आप बड़े दयालु और मिलनेसार हैं। देशाटन आपने खूब किया है। जगह २ वैद्यों से मिलकर उनके अनुभव को स्वयं प्राप्त करते रहे हैं और अपना अनुभव उन्हें निस्कपट देते भी है इससे आपका अनुभव खूब बढ़ गया है। आप स्थान २ पर भ्रमण कर वहां के रोगियों की धर्मार्थ चिकित्सा कर उनको स्वास्थ्य प्रदान कराते रहते है साथ ही आयुर्वेद का प्रचार भी होता है आपकी वृद्धावस्था होने पर भी स्वास्थ्य उत्तम और इन्द्रियां बलवान है।

नेत्र पुष्प हर अर्क—

६६—चूना अनबुझा १० तोला

नौसादर	२० तोला	ममीरी	२॥ तोला

विधि—तीनों को कूट कर बारीक कपड़ा में रख पोटली बनालें और उसे अधर लटका दें नीचे शीशे का पात्र रखदें। यह क्रिया वर्षा ऋतु में करें। वर्षा की हवा से यह पसीज पसीज कर बूंद २ उस पात्र में गिरेगी, जब गिरना बन्द हो जाय तब पात्र से दवा निकाल शीशी में भर कर रखलें। इसको सीक से या पतली फुरहरी से नेत्रों के फूले पर लगाने से फूला धीरे कट जाता है। असाध्य फूला व माता वाला फूला छोड़ सब को लाभ करता है। वर्षा ऋतु में ही यह बनता है। ×

शोधित अजमायन–

६७—अजमायन १ सेर लेकर ८ पहर पानी में भिगो दें और फिर मल कर उसकी मीग (बीज) निकाल साफ करलें। फिर ४ सेर नीबू का रस डाल कढ़ाई में पकावें जब आधा जल जाय तब—

काली मिर्च पीपल छोटी सैंधव नमक २०—२० तोला

पीस छान कर डाल दें और फिर गरम कर जब खूब गाढ़ा हो जाय उतार ले शीतल होने पर हाथ से या खरल से थोड़ा थोड़ा लेकर मर्दन कर चूर्ण रूप कर रखलें।

व्यवहार विधि—यह अति स्वादिष्ट और दीपन पाचन है। अरुचि के लिये एक ही औषधि है। अजीर्ण, पेट का दर्द, अफारा, जी

× ममीरी-देहरादून आदि पहाड़ी स्थान पर होने वाले वृक्ष की जो ममीरी के नाम से मिलती है उसको ही हमने व्यवहार किया है पीले रंग की जड़ होती है और यह प्रयोग बना परीक्षा की है। प्रयोग अति उत्तम है। —सम्पादक

मिचलाना आदि में लाभ दायक है। +

६८—कशीस भस्म की विधि—३ दिन कशीस को नीबू के रस में खरल करके टिकिया बना सराव सम्पुट मे बन्द कर गजपुट मे फूक दें स्वांग शीतल होने पर निकाल लें कच्ची मालूम हो तब इसी प्रकार १ पुट और दें। लाल वर्ण की उत्तम भस्म बनेगी।

स्वा० कृष्णानन्द जी चक्रवर्ती

श्रीमान् आयु० कवि० लेखराज जी वर्णी

मूलचन्द खेरातीराम फ्री होस्पीटल
पालमपुर-कांगड़ा घाटी

—०—

आपका जन्म सम्वत् १९७५ वि० में मालीगंज (लुधियाना) निवासी कश्यप (सूद) गोत्र वर्णी परिवार के श्रीमान लाला काशीराम जी के यहाँ हुआ। आपने आयुर्वेदालंकार गुरुकुल विश्व विद्यालय हर-द्वार से, आयुर्वेदाचार्य अ० भा० वैद्य सम्मेलन की विद्या-पीठ से, आयुर्वेद-रत्न, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से और भिषगा-चार्य कलकत्ता से तथा हिन्दी प्रभाकर आदि अनेक परीक्षाऐं पास की हैं। अनेक स्वर्णपदक, प्रशंसापत्र, मानपत्र भी प्राप्त किये हैं। आप एक

+ हमने बनाया और अति उत्तम पाया।

—सम्पादक

प्रसिद्ध लेख, और अनुभवी चिकित्सक हैं। स्थानाभाव से हम आपका पूर्ण परिचय और आपकी आयुर्वेद के प्रति की गई सेवाओं का वर्णन करने में असमर्थ हैं।

गर्भाशय शोथ व शूल नाशक–

६६—सुपारी पाक (योगचिन्तामणि ग्रन्थ का) ४ माशे से ६ माशे
नाग भस्म (नम्बर १ मन्शिल द्वारा जारित) १ रत्ती से २ र०
कुक्कुटाण्डत्वक भस्म २ रत्ती से ४ र०
कपर्द भस्म (पीली कौड़ी की) २ रत्ती से ४ र०
वंग भस्म (हरताल द्वारा जारित) १ रत्ती २ रत्ती
प्रवाल भस्म (साबूत मूगा की कज्जली द्वारा जारित) २ र० ४ र०

व्यवहार विधि—सब को खरल में मिला २ पुड़िया बनालें एक पुड़िया प्रातः ७-८ बजे और एक पुड़िया सायं-काल ३-४ बजे मक्खन अथवा दूध की डन्डी मलाई के साथ मिलाकर चटावें। अत्यधिक श्राव की दशा में चावलों के माण्ड के साथ दी जाती है (चावलों के पानी के साथ) तथा अशोकारिष्ट महानिम्ब क्वाथ १-१ औंस दोनों को मिला २ मात्रा बनाकर एक एक मात्रा भोजन के एक एक घन्टे के बाद दोनों समय पिलावें। यदि गर्भाशय शूल अधिक हो तथा हृल्लास, हौल आदि अधिक तो इस अशोकारिष्ट महानिम्ब क्वाथ में ही ५ बूंद से १० बूंद तक टिंचर हायोसेभस अथवा जटामासी वारुणीदार (टिंचर वलरियान) ५ बूंद प्रति खुराक मिलाकर दी जाती हैं।

—हमने इस प्रकार १५३४ रोगियों की चिकित्सा की है शतशोनभूत है। इस प्रकार चिकित्सा करने से गर्भाशय शोथ, तज्जन्यव्रण अत्यधिक शूल (गर्भाशयशूल), श्वेत प्रदर अवश्य शान्ति हो जाते हैं और ३-४ दिन में रोगी को शान्ति मिल जाती है। ३-४ सप्ताह में रोग निर्मूल हो जाता है। अत्यधिक

कष्ट के लिये तथा शीघ्रता के लिये वाह्य स्थानिक चिकित्सा भी करनी चाहिये जैसे—

अशोक छाल	लोध	रसाञ्जन
कुटज	दूर्वा	मोच रस
खदिरसार	माजूफल	स्फटिका
उत्पल		मंजिष्ठा
धावक		मधुयष्टी

विधि—इनका क्वाथ बना उत्तर वस्ति देनी चाहिये। इनकी ही पोटली बना योनि मार्ग में रखनी चाहिये। अत्यधिक शूल हों तब क्वाथ में धत्तूर भी मिला देना चाहिये।

पथ्य—दूध, घी, लघुपाचन (भावप्रकाशे)।

अपथ्य—खटाई, तैल लाल मिर्च, उष्ण पदार्थ।

जलोदर नाशक—

७०—वज्रक्षार (वज्रक्षार चूर्ण नही सिर्फ क्षार मात्र) ६ रत्ती
योगराज गूगल (शांर्गधर संहिता का) २ रत्ती से ४ रत्ती तक
शु० शिलाजीत (अथवा चन्द्रप्रभावटी) ३ से ६ रत्ती
यवक्षार (असली होना चाहिये) ४ रत्ती
शोरक (कलमी सोरा) ४ रत्ती

विधि—इन सबको खरल कर २ मात्रा बनालें और पुनर्नवादि क्वाथ तथा पाषाणभेदादि क्वाथ (भैषज्य रत्नावली ग्रन्थ का) बना उसके साथ प्रातः ६-७ बजे और सायं काल ४-५ बजे (निराहार ही अर्थात् भोजन से तीन तीन घन्टे पहले) सेवन करावें और दोपहर के १२ बजे व रात्रि को ६ बजे निम्न प्रयोग सेवन करावे।

गौ मूत्र आध औंस	पुनर्नवारिष्ट आधा औंस
अभयारिष्ट आधा औंस	चन्दनासव आधा औंस

—सबको २ मात्रा कर सेवन करावें।

टिप्पणी—इस चिकित्सा के आरम्भ से पूर्व और प्रति तीसरे चौथे दिन इच्छाभेदी रस प्रातः काल एक मात्रा ठण्डे जल के साथ देते रहें। एक महीने इस ही क्रम से औषधियां सेवन करावें।

पथ्य—त्रिफला पानी से रात्रि को धोकर और पानी डाल भिगोदें। सुबह उसकी उस ही पानी में सबजी बना कर सेवन करें इससे यकृत शोथ भी घटती जायगी अथवा त्रिफला चूर्ण शहद के साथ दिन में ५–७ बार चाट सकते हैं। भोजन में नमक जितना भी कम हो सके सेवन करावें। इस प्रकार चिकित्सा करने से जलोदर रोग अवश्य नष्ट होजाता है। १३९ की चिकित्सा की गई उसमें ७ रोगी ही पूर्ण लाभ नहीं उठा सके बाकी सब अच्छे होगये। यकृत शोथ, पांडु, जलोदर रोग के समूलोन्मूलन को "वर्धमान पिप्पली" का प्रयोग करना अति उत्तम है। उसकी विधि निम्न प्रकार है—

विधि—प्रथम दिन ३ पिप्पली और एक सेर दूध एक सेर पानी डाल गरम करें, जब पानी जल जाय और दूध मात्र ही रह जाय तब छान कर उसमें मिश्री या बूरा डाल कर पिलावें। यह १ सेर दूध दिन में तीन चार बार करके पीना चाहिये एक साथ नहीं इसी प्रकार प्रति दिन बना कर सेवन करावें किन्तु प्रति दिन दो पिप्पली बढाता जाय जब ३१ पीपल होजांय तब फिर दो दो पिप्पली कम करता जाय इस तरह ३१ दिन सेवन करावें अन्त के दिनों में तीन तीन पिप्पली ही डालें उसके बाद ५-७ दिन एक एक ही पीपल डाले और फिर बन्द करदें। इसके सेवन से यकृत शोथ, पाण्डु, जलन्धर रोग समूल नष्ट होजाता है, किन्तु फिर भी इसके बाद १५–२० दिन निम्न प्रयोग प्रातः सायं सेवन करते रहें।

लोह भस्म २ रत्ती मांडूर भस्म २ रत्ती

अभ्रक १ रत्ती

—इसकी २ मात्रा बना प्रातः सायं मधु के साथ चाटें।

फल में—अनार, सेब, अंगूर दे सकते हैं तैल, खटाई, नमक, गरम पदार्थ नहीं दे। इस कल्प के करने से पुनः रोग नहीं होता। एलोपैथी से पानी निकाल देते है परन्तु फिर पानी भर जाता है और इस विधि से पानी भी निकल जाता है और बल भी आजाता है साथ ही पुनः रोग नही होता। ×

× हमने इस चिकित्सा क्रम का अनुभव नही किया है, हम तो जलोदर रोग में अन्न जल बन्द कर केवल दूध गाय का ही देते हैं दूध गरम किया हुआ मीठा शक्कर डाल कर देते हैं। रात्रि को एक बार आध सेर दूध का क्षीर पाक (बर्धमान पिप्पली की भांति) ही बनवा कर देते हैं।

औषधि में—प्रातः सायं नारायण चूर्ण, थूहर के दूध की भावना लगा हुआ और दो बार जलोदरारि रस तथा दो बार जलोदरारि रसायन देते हैं। पेट फूलने, अफरा होने पर सामुद्रादि चूर्ण दस्त कम होने पर इच्छाभेदी रस भी कभी कभी दे देते हैं और इसी विधि से हमने इस रोग में धन और यश भी उपार्जित किया है। —सम्पादक
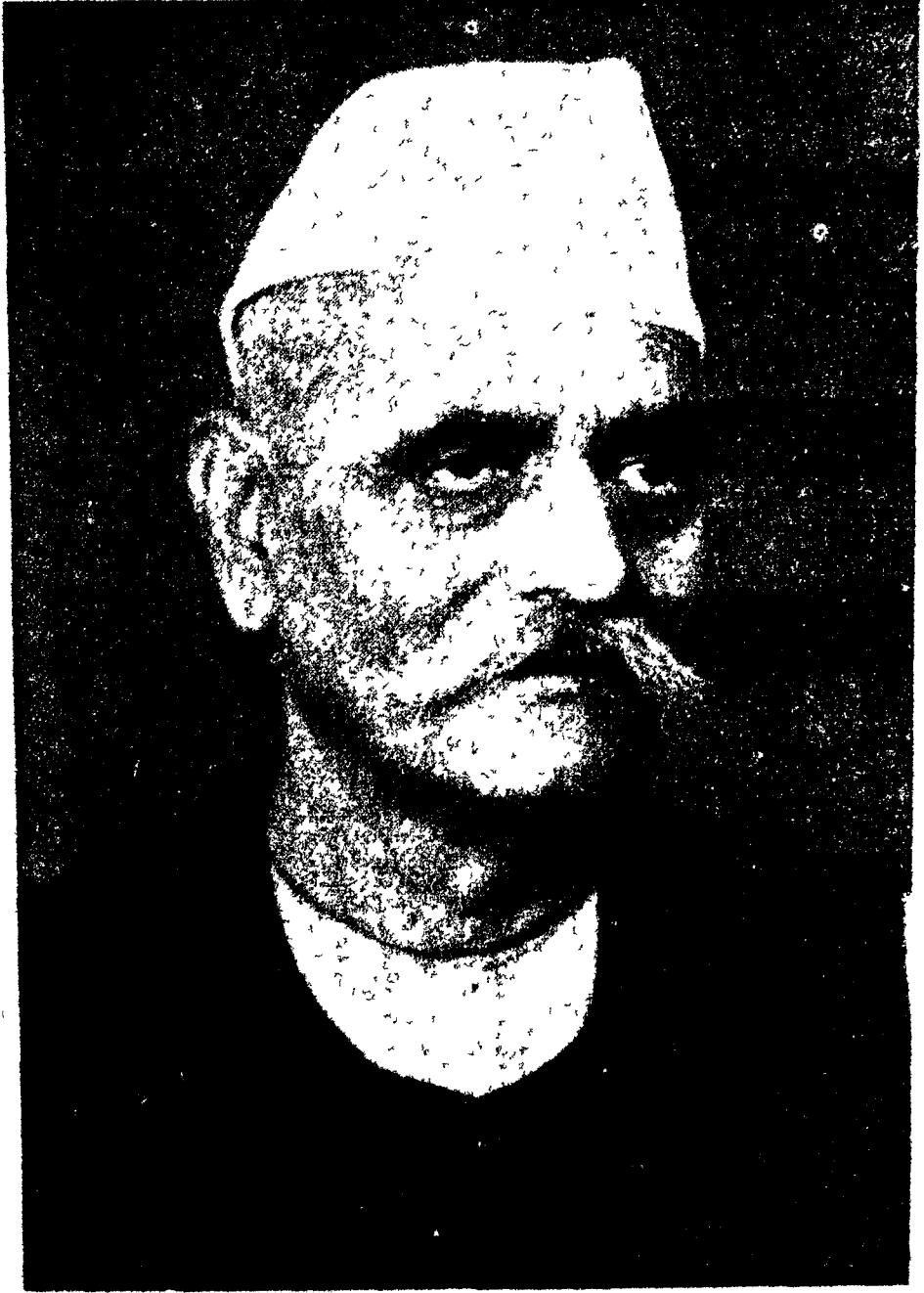
आयुर्वेद पंचानन पं० रघुवरदयाल जी भट्ट

नौघड़ा—कानपुर

कवि० श्री० डा० प्रेमलाल जी सहगल वैद्य शास्त्री

टी० बी० एण्ड मधुमेह मेटीलस आरोग्याश्रम

होशियारपुर (पंजाब)

—o—

आपकी आयु लगभग ३१ वर्ष की है। आप क्षत्रियवंश शिरोमणि श्रीमान् बा० प्यारेलाल जी सहगल के सुपुत्र हैं। आपने दयानन्द आयुर्वेद कॉलेज लाहौर से "वैद्य कविराज" और इन्दौर से "वैद्यशास्त्री" और यू० पी० से एम० ए० एम० एस० परीक्षायें उत्तीर्ण की है। आप एलोपैथी होमियोपैथी, आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र के ज्ञाता हैं। साथ ही आप हिन्दी संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी पांचों भाषाओं के जानकार हैं, आपको १० वर्ष चिकित्सा कार्य करते हो चुके हैं, और अनेक प्रशंसापत्र, पदक, प्राप्त किये हैं, क्षय, मधुमेह जैसे कठिन रोगों के अनुसन्धान और चिकित्सा कर यश प्राप्त किया है।

मधुमेह रिपु—

७१—स्वर्ण भस्म १ माशे — सत्व गिलोय ६ माशे

मुक्ता भस्म २ माशे — जामुन की गुठली की मींग ७ माशे

अफीम ३ माशे — गुड़मार ८ माशे

लोह भस्म ४ माशे — गूलर का घनसत्व १ तोले

विधि—जामुन की मींग और गुड़मार को कूट कपड़ छन करलें और गूलर का घन सत्व सूखा हो तब उसमें ही कपड़ छन कर मिला लें और एक खरल में प्रथम अफीम डाल बेल पत्र के स्वरस में मर्दन करें और फिर भस्म तथा गिलोय का सत्व और कपड़ छन चूर्ण मिला बेल पत्र के स्वरस में ही मर्दन कर चना बराबर गोली बना सुखा के रखलें।

उपयोग विधि--प्रातः और सायं एक एक गोली—बेल पत्र के स्वरस, बड़ की जटा के क्वाथ, गूलर के पत्तों के स्वरस, केला की पकी फली के गूदे इनमें से जो भी मिले उसी के साथ सेवन करावें। इसके सेवन से मधुमेह (डायबटीज) रोग दूर होजाता है स्त्रियों के सोम रोग में भी अधिक लाभ करता है।

वैद्य भूषण श्री० पं० चन्दूलाल जी शर्मा वैद्य

पं० चन्दूलाल लक्ष्मीचन्द जी फड़के

हैदराबाद सिन्ध

—:—
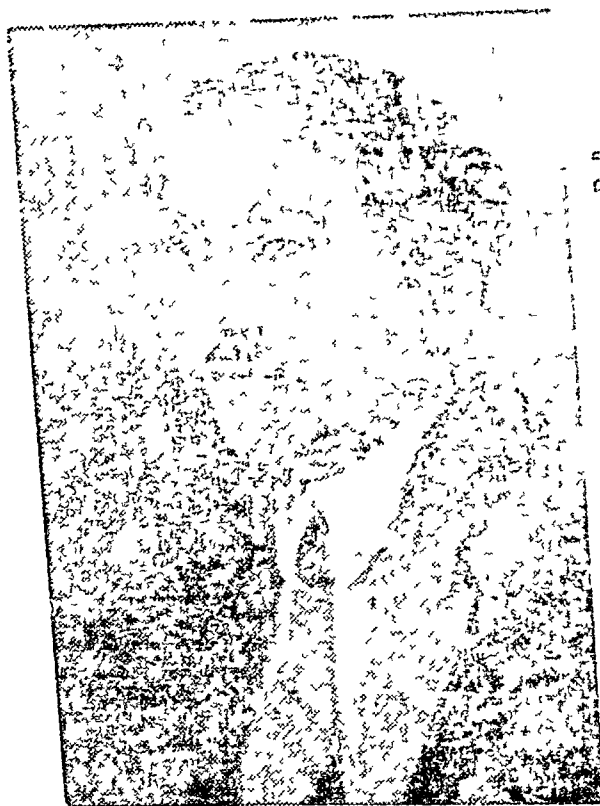
आपकी आयु लगभग २२ वर्ष की है। आप गुजराती ब्राह्मण परिवार में श्रीमान् पं० लक्ष्मीचन्द्र फड़के कच्छ (माडवी) निवासी के यहां हुआ। आपने अंग्रेजी में मैट्रिक और आयुर्वेद में वैद्य भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप मैट्रिक पास करते समय ही आयुर्वेद से प्रेम करते थे और इच्छा थी कि मैं वैद्य बनूंगा। अतः आपने आयुर्वेद पढ़ चिकित्सा कार्य कर अपनी अभिलाषा पूर्ण की है।

सन्निपात हर—

७२—शुद्ध आमलासार गंधक

शुद्ध वच्छ नाग

काली मिर्च

शुद्ध हिंगुलोत्थ पारद

शुद्ध वर्की हरताल

स्वर्ण माक्षिक भस्म

प्रत्येक सम भाग

विधि—प्रथम पारद; गंधक को कज्जली कर और हरताल शुद्ध मिला मर्दन करें वच्छनाग, काली मिर्च कूट कपड़-छन कर मिलावें और एक भावना अदरख के रस की देकर १-१ रत्ती की गोली बना सुखा कर रखलें।

सेवन विधि—एक गोली से दो गोली की मात्रा में शहद में मिला कर चटावें, अथवा तालू से लगावें। इस रस से सन्निपात (सरसाम) में जब रोगी का शरीर ठण्डा पड़ जाय मूर्छा (वेहोशी) हो जाय, नाड़ी की गति शिथिल होती जारही हो तब इसके व्यवहार से बड़ा लाभ होता है। =

= प्रयोग उत्तम होने से ही प्रकाशित किया गया है अन्यथा यह प्रयोग अन्य किसी जगह छपा हुआ हमने देखा है।

—सम्पादक

आयुर्वेदाचार्य श्री० पं० प्रभुदत्त जी शर्मा वैद्यरत्न

श्री नाथाणी कष्ट निवारण भण्डार

दूधवाखारा (बीकानेर स्टेट)

—*—
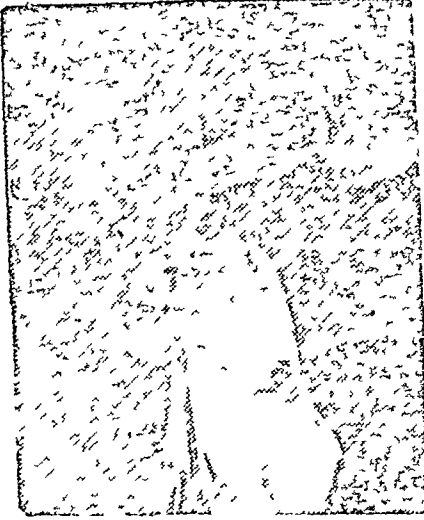
आपकी आयु लगभग ३४ वर्ष की होगी। आप लालासास जिला हिसार निवासी हैं। दो वर्ष से उक्त भंडार में प्रधान वैद्य के पद पर नियुक्त है ८ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर बड़ा अनुभव प्राप्त किया है।

अर्श और सोमल–

७३—बिना शोधन किया हुआ सोमल (श्वेत संखिया) खूब बारीक खरल कर कपड़ा में छान पुनः खरल कर शीशी में भर कर रखले।

उपयोग— बवासीर (मस्से) पहले बोरिक पाउडर के पानी से धोकर एक साफ रूई का फाहा लेकर उसके बीच में शतधौत गौ-घृत लगा दें और ४ रत्ती सोमल उसके बीच में रख मस्सों पर रख पट्टी बांध दें, यह पट्ठी १२ घंटे रहनी चाहिये। बीच में टट्टी जाना हो तब टट्टी के बाद पुनः बांध दे इस तरह ४ दिन बांधने से ही सब मस्से गिर जांयगे। वैद्य बन्धु व्यवहार कर धन, यश उपार्जित कर सकते है।

कुक्कर खांसी--

७४—ताजा अड़ूसे के पंचाङ्ग का स्वरस १ पाव

सांभर नमक ६ माशे   उत्तम मधु अथवा मिश्री १० तोला

—तीनों को एक शीशी में भर कर कार्क लगा धूप में दो घंटे रख देना चाहिये।

खुराक—दो वर्ष से आठ वर्ष की आयु तक दो तोला जल, २॥ तो० में मिला कुछ गरम कर पिलाना तीन बार दिन में ६ से १६ तक की आयु वालों को ४ तोला और १७ से ५० तक की आयु वालों को ६ तोला पिलाना चाहिये। इससे कुकर खांसी ४ महीने की दस दिन में नष्ट होजाती है।

चिकित्सक श्री० पं० शिवकुमार जी शास्त्री आयु०

रामजश हायर सेकण्डरी स्कूल
आनन्द पर्वत—देहली

—※—

आपका जन्म सन् १६१२ ई० में भदस्याना (मेरठ) निवासी श्री० पं० दुर्गादत्त जी शास्त्री, न्यायाचार्य, वैद्य, के यहां हुआ। आपके यहां परम्परागत चिकित्सा कार्य होता आया है। अ० भा० वैद्य-सम्मेलन के विद्यापीठ की आयुर्वेद विशारद और आयुर्वेदाचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। जिनके पुत्री ही होती है उनके पुत्र हो, ऐसा आपने आविष्कार किया है पर वैद्य-समाज में अभी प्रचलित नहीं हुआ आपको चाहिये कि वैद्य समाज को भेज कर अनुभव करावें।

श्लेष्मकेशरी तैल--

७५—कपूर देशी ५ तोला | स्प्रिट १० तोला
तैल अलसी कच्चा १० तोला | तैल तारपीन १० तोला
एमोनियां (नवसादर) | ५ तोला

विधि—प्रथम एक बोतल में स्प्रिट भर कर कपूर के छोटे २ टुकड़ा कर डालदें और कार्क लगा कर धूप में रख दें; जब कपूर गल जाय तब दोनों तैल डाल दें, फिर एमोनियां डाल हिला कर कार्क बन्द कर रखलें।

उपयोग विधि-इस तैल को बच्चे, बूढ़े, स्त्री सबको लगाया जा सकता है, तैल लगाने के बाद सफाई नहीं करनी चाहिये श्वसनक में विशेष लाभ करता है। श्वास, बातज शूल, कास तथा चोट लगने पर भी लाभ करता है। कृमि नाशक है।

हिस्टेरिया—

७६—उस्तलीब असली × एक रत्ती पानी गरम में घिस कर पिलाने में हिस्टेरिया के दौरे में अति लाभदायक है। बराबर पिलाने से मासिक धर्म ठीक होने लगता। और हिस्टेरिया नष्ट होती है।

× उस्तलीब असली लेना चाहिये, नकली न हो यह ध्यान रहे। यह हिस्टेरिया और पागल पन को भी लाभदायक है इसके साथ ही साथ सर्पगन्धा का प्रयोग भी करने से अति लाभ होता है।

—सम्पादक

कवि श्री पं० मृत्युञ्जयनाथ जी शर्मा शास्त्री

श्री धन्वन्तरि आयुर्वेद भवन,
पिठौरिया पोस्ट रांतु जिला रांची ।

—०—

आपकी की आयु २७-२८ वर्ष के लग-भग होगी आप श्रीमान् वैद्य पं० रामनाथ जी मिश्र के सुपुत्र हैं। आपने बिहार संस्कृत एसोसियेशन पटना से व्याकरण तथा आयुर्वेदशास्त्री एवं वेद, धर्मशास्त्र, कर्मकांड की परीक्षाऐं भी उत्तीर्ण की हैं। आप बंगाली और अंग्रेजी भाषा का भी अच्छा ज्ञान रखते हैं। ८ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के धर्मार्थ औषधालय में प्रधान चिकित्सक हैं तथा विद्वान लेखक भी हैं।

वड़वानल अर्क—

७७—नवसादर सोरा फिटकरी सेंधा नमक

—एक एक पाव चारों औषधिया लेकर ऊर्ध्वपातन यन्त्र द्वारा अर्क निकाल लें।

सेवन-विधि—२० बूंद अर्क १ तोले ठण्डे पानी में मिलाकर पिलाने से कठिन उदरशूल, सीहा, यकृत, मन्दाग्नि, वमन यह सब रोग नष्ट होते हैं।

ऊर्द्ध पातन यन्त्र की विधि—

एक मिट्टी की हांडी लेकर उसके ऊपर कपड़मिट्टी कर, सुखा दें और उसके भीतर १ चीनी का प्याला रख दे। प्याले के आस पास औषधियां कूटकर डाल दे और उस हांडी के ऊपर एक [illegible] और रख दे तथा ऊपर की हांडी में जल भर दे। सन्धि पर कपड़ मिट्टी कर अग्नि पर रख मध्य तीव्र अग्नि दे जब ऊपर का पानी खूब गरम होजाय तब उतार कर ठण्डा होने दे और सन्धि खोल चीनी के प्याले मेंसे अर्क निकाल शीशी में भर कार्क लगा रख लें।

प्रतिश्याय हर—

७८—एक खरल में आधा तोला कपूर डाले और थोड़ा तारपीन का तैल डाल मर्दन करे आध घण्टे बाद और तारपीन का तैल डाले। तारपीन का तैल २॥ तोले तक पड़ना चाहिये। फिर शीशी में भरकर धूप में १ दिन रक्खा रहने दे बाद को काम में लेना चाहिये।

उपयोग-विधि—इस तैल की नस्य लेने से तथा सूंघने से और शिर पर मलने से सभी प्रकार का प्रतिश्याय और दारुण शिर दर्द नष्ट हो जाता है। सहस्रों रोगियों पर अनुभव हो चुका है।

दाद खाज हर—

७६—विधि-कौड़िया लोहबान एक पाव लेकर पाताल यन्त्र द्वारा तैल निकाललें। एक पाव में लग-भग १ छटांक तैल निकलता है। यह तैल एक शीशी में भरकर रख लें।

उपयोग-विधि—रोगी को वाल्मीक (सांप के रहने के स्थान) की मिट्टी और गौमल (गोवर के कण्डा) की भस्म काली गाय के गोमूत्र में मिलाकर खुजली, दाद के स्थान पर लेप कर दें और धूप में बैठा दें, इस तरह दिन में तीन बार लेप करने के बाद निम्ब-पत्र के क्वथित जल द्वारा स्नान कराने के बाद उक्त तैल का अभ्यङ्ग करावे। इस प्रकार ३ दिन के उपयोग से ही पामा, दद्रु नष्ट हो जाता है। यह एक महात्मा जी का प्रसाद है।

वैद्यभूषण श्री पं० बिहारीलाल जी शर्मा मिश्र

मिश्रा आयुर्वेदीय दवाखाना

महाल, नागपुर।

—o—

आपका जन्म सम्वत् १९७५ वि० में गौड ब्राह्मणावशंज श्रीमान् पं० केदारमल जी शर्मा मिश्र के यहां हुआ। ८ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपने आयुर्वेद भिषक् आयुर्वेद विशारद वैद्य सम्मेलन की उत्तीर्ण की है। वैद्यालङ्कार, वैद्य भूषण उपाधि मिली हैं। आप अच्छे लेखक भी हैं। सरल स्व-भाव निराभिमानी एवं कृपालु वैद्य हैं।

करंजादि वटी—

८०—करंज (सागरगोटी) की गिरी १० तोला

पीपल वड़ी १० तोला, जीरा सफेद ५ तोला

—तीनों को खरल में कूट कपड़ा में छान ले, फिर एक पत्थर के साफ खरल मे बबूल की ताजी पत्ती ५ तोला डाल मर्दन करें जब खूब बारीक हो जाय तब कपड़छन चूर्ण मिला तथा थोड़ा जल डाल १ दिन अच्छी प्रकार मर्दन कर मटर बराबर गोली बना सुखा रखलें।

सेवन-विधि—ज्वर (बुखार) आने पर एक-एक गोली ताजा पानी से अथवा निम्न क्वाथ से दिन में ३ समय देने से ४-५ दिन में ज्वर, मलेरिया ज्वर, शीतज्वर, समूल नष्ट हो जाता है। क्षय की प्रथमावस्था में ज्वर को निकालने के लिये भी उपयोगी सिद्ध हुई है। +

शीत ज्वरारि क्वाथ-

८१—चिरायता पित्तपापड़ा सोंठ नागरमोंथा
गिलोय —प्रत्येक १-१ तोला

—सबको जोकुटकर ११ पुड़िया बनाले और १-१ पुड़िया का क्वाथ बनाकर प्रातः सायं दोनों समय उपरोक्त गोली के ऊपर सेवन करावे। क्वाथ—एक पुड़िया पाव भर पानी में औटावे जब चतुर्थांश रहे तब छानकर उपयोग करे। ×

+ ज्वर के वेग के पूर्व एक २ घण्टा के अन्तर से १-१ गोली देने से अर्थात् ३-४ गोली सेवन से उसी दिन जूड़ी का वेग रुक जाता है। प्रातः क्वाथ से बाद में गरम जल से देनी चाहिये।

—सम्पादक

× क्वाथ की ११ पुड़िया साधारणतया बनावे यदि एक ही समय अर्थात् प्रातः काल ही देना हो तब ५ पुड़िया बनावें।

—सम्पादक

आमांसहर—

८२—शु० रूमी हिंगुल १ तोला जायफल २ तोला

लवङ्ग ३ तोला शु० अहिफेन ४ तोला

मोचरस ५ तोला असली कूजा की मिश्री ७ तोला

—सबको पानी की सहायता से पत्थर के खरल में खूब घोटकर कर्कन्धु के समान गोली बना छाया में सुखा रख ले।

सेवन विधि—एक-एक गोली दिन रात में ३-४ वार पानी के साथ निगलवानी चाहिये। यह वटी अतिसार, प्रवाहिका, रक्तार्श, आमातिसार में अति उपयोगी है, इससे भयङ्कर शूल मय अतिसार, तीव्र पक्वातिसार और निराम संग्रहणी में विशेष लाभ होता है। अतिसार आदि के सब उपद्रव भी नष्ट हो जाते हैं अपूर्व औषधि है।

वैद्यभूषण श्री वै० माधवप्रसाद जी आयुर्वेदशास्त्री

अध्यक्ष—श्री माधव महौषधालय,
जूनीधान मण्डी सत्यनारायण जी का मन्दिर
जोधपुर (मारवाड़)

आपकी आयु लगभग २०-२१ वर्ष की होगी। आप गौड ब्राह्मण कुल भूषण हैं। आपने आयुर्वेद शास्त्री, वैद्यभूषण, प्रभाकर, साहित्यालंकार, साहित्यरत्न परीक्षाऐं उत्तीर्ण की हैं। आपने अपनी थोड़ी आयु मे ही शिक्षा और अनुभव प्राप्त किया है बड़े परिश्रमी और उद्योगशील हैं।

८३--सालिम मिश्री सफेद मूसली कहरवा सकाकुल

सोराञ्जन बीजवन्द --प्रत्येक २--२ तोला

तौदरी सुर्ख दालचीनी चोबचीनी गोखरू

तालमखाना कौंच के बीज वंशलोचन इलायची

प्रत्येक १-१ तोला

बैमन श्वेत बैमन सुर्ख पीपर जावित्री

जायफल केशर मोतियासीप चांदी वर्क

हरेक ६-६ माशा

स्वर्ण वर्क ३ माशे मिश्री ७ तोला

कस्तूरी अम्बर १॥-१॥ माशे

निर्माण विधि—सर्व प्रथम मोती सीप, केशर, कस्तूरी, अम्बर, स्वर्ण-वक, चांदी के वर्क और मिश्री को खरल करे। फिर अन्य सभी औषधियों को कूट कपड़छन कर काच की शीशी में मजबूत कार्क लगाकर रखले।

सेवन विधि--मात्र-आधा तोला चूर्ण एक बार में १ तोला मधु के साथ प्रातः सायं सेवन करावें, पश्चात् १-१ पाव धारोष्ण गौदुग्ध दोनों समय सेवन करावें। इस विधि से सेवन करने पर कैसा भी निर्बल क्यों न हो १५ दिवश के पश्चात् अपने शरीर की रङ्गत अवश्य बदल देगा, और स्वप्नदोष के लिये भी बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है।

दद्रु विनाशक---

८४--गन्धक कपड़ा धोने का साबुन २-२ तोला

पारद सोहागा नीलाथोथा मैनशिल नवसादर

सज्जीक्षार मुरदासींगी रसकपूर

हरेक १-१ तोला

निर्माण विधि—पहिले पारद और गन्धक की कज्जली बनाले। फिर क्रमशः सभी औषधियां मिलाकर पीस लें। पश्चात् उन सभी औषधियों को नीबू के रस में घोटे। इसके बाद बड़े बेर के समान टिकिया बनाकर छाया में सुखाकर रखले। जहां दाद हो पहिले उस स्थान पर नीबू के रस की ५ मिनट मालिश करे फिर उक्त टिकिया नीबू के रस में घिसकर दिन में तीन बार आवश्यकतानुसार लगावे तो कैसा भी दाद क्यों न हों एक सप्ताह में बिलकुल ठीक हो जायगा। साथ ही रक्तशोधक क्वाथ के सेवन से रोग शीघ्र नष्ट हो जाता है।

आयु० श्रीमान पं० देवकीनन्दनजी शर्मा वैद्य

जयपुर राजकीय आयुर्वेदीय औषधालय

पचेरी पोस्ट सिंघाना (जयपुर)

आपका जन्म सं० १६८२ वि० में ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान राजज्योतिषी पं० मांगीलाल जी जोशी के यहां हुआ। आपने जयपुरीय विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। इंडियन मेडीशन बोर्ड जयपुर के रजिस्टर्ड वैद्य हैं। आपने अपनी इस थोड़ी आयु में ही अनेक प्रशन्सा पत्र प्राप्त कर लिये हैं। आप होनहार वैद्य आप से आयुर्वेद के हित की बड़ी २ आशाएँ हैं।

मुखपाक—

८५—शुद्ध तुत्थ १ तोला गैरिक १ तोला

विधि—दोनों का चूर्ण कर रखलें इस औषधि में से २ रत्ती ले पावभर गरम जल में डाल दिन में १ वार गण्डूष (कुल्ले) करावे। इससे मुखपाक में होने वाले ओष्ठ (होट) जिह्वा, तालु आदि स्थानों की छोटी फुन्सियां जो असह्य पीड़ा करती है और बोला भी कठिनता से जाता है व खाना पीना भी कुछ नहीं भाता आदि सब उपद्रव १-२ दिन से दूर हो जाते है। ध्यान रहे कि इस में तुत्थ का प्रयोग है अतः गले के अन्दर दवा नहीं जानी चाहिये। गले के अन्दर जाने से वमन हो जाती है।

लगाने की औषधि—

शुद्ध तुत्थ १ तोला मधु ५ तोला

—दोनों अच्छी प्रकार मिला कर शीशी में रखलें इसकी फुरेरी जिह्वा आदि स्थानों पर लगा मुख नीचा कर देना चाहिये जिससे दूषित पानी निकल जावे दिन में दो वार लगाने से ही मुखपाक ठीक हो जाता है। यह औषधि भी गले के अन्दर नहीं जानी चाहिये।

शीतपित्त—

८६—राल का चूर्ण १ तोला मिश्री ४ तोला

विधि—मिला कर रखलें। इसमें से सवा सवा माशे दिन में चार वार जल के साथ खिलाने से १ वर्ष का शीतपित्त नष्ट हो जाता है। ७ दिन में ५ वर्ष का ११ दिन में १५ वर्ष का शीतपित्त शान्त हो जाता है। +

+ शीतपित्त, उदर्द आदि सब में लाभदायक है। —सम्पादक

श्रीमान् डाक्टर जयशंकर देवशंकर जी शर्मा

मोहता डिस्पेन्सरी मोहता चोक

वीकानेर (राजपूताना)

अपका जन्म सं० १९६१ वि० में श्रीमान् ब्राह्मण कुल में श्रीमान् पं० देव शंकर जी शर्मा के यहां हुआ। आपने आयुर्वेद भिषक् वैद्य सम्मेलन से और हिन्दी साहित्य सम्मेलन से वैद्य विशारद तथा एल० वी एम० वाय कौमक की परीक्षा पास की है। आप अच्छे लेखक भी हैं। मूत्रपरीक्षा, आयुर्वेद के एक हजार प्रयोग, सौन्दर्य साधना, आयुर्वेद निबन्धमाला आदि पुस्तकें भी लिखी हैं जो अप्रकाशित हैं और सम्पादक भी रह चुके हैं। रजिस्टर्ड वैद्य हैं।

क्षय, खांसी प्लूरिसी हर–

८७—इलायची छोटी १ तोला बन्सलोचन २ तोला

मिश्री २ तोला

विधि—तीनों को कूट पीस कपड़ा में छानलें। फिर उसमें सत्वगिलोय १ तोला, प्रवाल पिष्टी १ तोला मिला कर ७ तोला शुद्ध खूबकला और मिलाले।

सेवन विधि—चार चार माशे प्रातः, मध्यान्ह और सायं काल उत्तम मधु (शहद) मिला कर चटावें, ऊपर से बनफसा का अर्क अथवा बिना जलमिला बन्फसा का शरबत पिलावे। इसके सेवन से क्षयज खांसी, क्षयप्रतिरसी तथा सदैव बने रहने वाला ज्वर और निर्बलता सब नष्ट हो जाते हैं।

पथ्य में—जिनकी पाचन शक्ति ठीक हो ऐसे रोगी को पौष्टिक पदार्थ सेवन करावें।

खूबकला की शोधन विधि—खूबकला उत्तम प्रकार की ले साफ कर घीये (लौका) में भर ऊपर से कपड़ मिट्टी करदे। सूखने पर पुट पाक द्वारा भरता करले अथवा किसी महीन कपड़े की थैली में खूबकला भर २४ घण्टे तक बहते हुए जल में रख निकाले। अथवा खूबकला की थैली नल के नीचे लटका २४ घण्टे निरन्तर नल चलाता रहे। इस प्रकार शुद्ध कर छाया में सुखा रख लेना चाहिये।

श्रीमान् पं० मातादीन जी शर्मा आयुर्वेद शास्त्री

श्रीगोपाल आयुर्वेदिक औषधालय, आबू रोड

आपकी आयु लगभग ३५ वर्ष के है। आप गौड़ ब्रह्मण श्रीमान् पं० गोपाल जी शर्मा के सुपुत्र हैं। आपने आयुर्वेद शास्त्री परीक्षा पास की है, बम्बई बोर्ड के रजिस्टर्ड चिकित्सक है। १४—१५ वर्ष से चिकित्सा कर ख्याति और प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

गृहणीकुलान्तक—

८८—शुद्ध पारद ४ तोला — शुद्ध गंधक १० तोला
शुद्ध अफीम ४ तोला — कौड़ी भस्म ७ तोला
शुद्ध सींगिया विष १ तोला — सोंठ ३ तोला
काली मिर्च ३ तोला — पीपल छोटी ३ तोला
सुहागा २ तोला — शङ्ख भस्म ५ तोला
शुद्ध धतूरे के बीज ४० तोला — करंज छाल १० तोला
हींग भुनी ३ तोला — मोचरस ५ तोला
लौंग ३ तोला

विधि—पारद, गंधक, कौड़ी भस्म, और अफीम छोड़ कर शेष औषधियां कूट कपड़ा में छान रखले। फिर पारद, गंधक की कज्जली करें, और कज्जली होने पर अफीम तथा भस्म डाल मर्दन करें अब इसमें उपरोक्त कपड़-छन की हुई औषधियां डाल घोटे जब

विधि—तीनों को कूट पीस कपड़ा में छानलें। फिर उसमें सत्वगिलोय १ तोला, प्रवाल पिष्टी १ तोला मिला कर ७ तोला शुद्ध खूबकला और मिलाले।

सेवन विधि—चार चार माशे प्रातः, मध्यान्ह और सायं काल उत्तम मधु (शहद) मिला कर चटावें, ऊपर से बनफसा का अर्क अथवा बिना जलमिला बन्फसा का शरबत पिलावे। इसके सेवन से क्षयज खांसी, क्षयप्लूरिसी तथा सदैव बने रहने वाला ज्वर और निर्बलता सब नष्ट हो जाते हैं।

पथ्य में—जिनकी पाचन शक्ति ठीक हो ऐसे रोगी को पौष्टिक पदार्थ सेवन करावे।

खूबकला की शोधन विधि-खूबकला उत्तम प्रकार की ले साफ कर घीये (लौका) में भर ऊपर से कपड़ मिट्टी करदे। सूखने पर पुट पाक द्वारा भरता करले अथवा किसी महीन कपड़े की थैली में खूबकला भर २४ घण्टे तक बहते हुए जल में रख निकाले। अथवा खूबकला की थैली नल के नीचे लटका २४ घण्टे निरन्तर नल चलाता रहे। इस प्रकार शुद्ध कर छाया में सुखा रख लेना चाहिये।

श्रीमान् पं० मातादीन जी शर्मा आयुर्वेद शास्त्री

श्रीगोपाल आयुर्वेदिक औषधालय, आबू रोड

आपकी आयु लगभग ३५ वर्ष के है। आप गौड़ ब्रह्मण श्रीमान् पं० गोपाल जी शर्मा के सुपुत्र हैं। आपने आयुर्वेद शास्त्री परीक्षा पास की है, बम्बई बोर्ड के रजिस्टर्ड चिकित्सक है। १४—१५ वर्ष से चिकित्सा कर ख्याति और प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

गृहणीकुलान्तक–

दद—शुद्ध पारद ४ तोला
शुद्ध गंधक १० तोला
शुद्ध अफीम ४ तोला
कौड़ी भस्म ७ तोला
शुद्ध सींगिया विष १ तोला
सोंठ ३ तोला
काली मिर्च ३ तोला
पीपल छोटी ३ ताला
सुहागा २ तोला
शङ्ख भस्म ५ तोला
शुद्ध धतूरे के बीज ४० तोला
करंज छाल १० तोला
हींग भुनी ३ तोला
मोचरस ५ तोला
लौंग ३ तोला

विधि—पारद, गंधक, कौड़ी भस्म, और अफीम छोड़ कर शेष औषधियां कूट कपड़ा में छान रखले। फिर पारद, गंधक की कज्जली करें, और कज्जली होने पर अफीम तथा भस्म डाल मर्दन करें अब इसमें उपरोक्त कपड़-छन की हुई औषधियां डाल घोटे जब

सब काले रङ्ग की होजाय तब अदरख का रस इतना डाले कि लेहवत होजाय तब मर्दन कर खुश्क करले और शीशी में रखले।

सेवन विधि—मात्रा एक माशे दही में मिला कर दिन में तीन मा।
सेवन करावें।

पथ्य—छाछ ही दे। अन्न जल आदि कुछ भी न दे। ४० दिन के सेवन से ग्रहणी रोग नष्ट होजाता है।

गृहणी शार्दूल—

८६—शुद्ध पारद	शुद्ध गंधक	लोह भस्म
शुद्ध नौसादर	अभ्रक भस्म	भुना हींग
हल्दी	दारू हल्दी	कूट मोठा
दुधबच	मोंथा	पांचों नमक
बिडंग	सोंठ	मिर्च
पीपल	चित्रक छाल	अजमोद
अजवायन	गज पीपल	यवक्षार
सज्जीखार	शुद्ध सुहागा	श्वेत जीरा
हरड़	बहेड़ा	आमला

प्रत्येक १-१ तोला

पोस्त के डोडा ३ तोला भांग धुली २८ तोला

विधि—पारद, गंधक, भस्म छोड़ शेष सब औषधियां कूट कपड़ छन करले। फिर पारद गंधक की कज्जली करके भस्म मिला मर्दन करें फिर कपड़-छन चूर्ण भी मिला देवें और मर्दन कर शीशी में रखले।

सेवन विधि—२ रत्ती से ४ रत्ती तक शहद के साथ दिन में तीन वार सेवन करावें।

पथ्य में—दही मठा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दें। ४० दिन में संग्रहणी नष्ट होजाती है। =

श्रीमान् वैद्य भोजराजजी पाटील आयुर्वेद भिषक

रामकृष्ण आयुर्वेदिक औषधालय
नरखेड़ मुल्ताई जि० बेतूल

—+—

आपकी आयु लगभग २७ वर्ष की होगी। आप श्रीमान् वैद्य कृष्णराव तात्याजी पाटील के सुपुत्र हैं। आपने माननीय पंडित गोवर्धन जी शर्मा छाँगाणी नागपुर निवासी के आयुर्वेद विद्यालय में उन्ही के द्वारा शिक्षा प्राप्त की है। वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेद भिषक तथा होमियोपैथी की एच एम० बी० भी पास की। आपकी चिकित्सा और परिश्रम से प्रसन्न हो आपको वैद्य भूषण, भिषक भूषण आदि उपाधियां और प्रशंसापत्र भी प्राप्त हुये हैं।

= यह दोनों प्रयोग तक्र कल्प के लिये उत्तम है। तक्र गाय का जिसमें से घी ठीक प्रकार से निकाल लिया गया हो। तक्र में सेंधा नमक, जीरा, भुना और काली मिर्च डाल कर प्रयोग करना चाहिये।

—सम्पादक

शोथ रोग हर—

९०—पुनर्नवा (सांठ की जड़)　　नीम की छाल

पटोल पत्र　　सोंठ घारकी　　कुटकी

गिलोय　　दारू हल्दी　　प्रत्येक बीस बीस तोला

विधि—सब को कूट कर १४ सेर पानी में औटावें ३॥ सेर पानी शेष रहने पर छान कर औषधियां फेंक दें। अब क्वाथ को कलई दार कढ़ाई में डाल ३॥ सेर गौ मूत्र छना हुआ मिला कर फिर गरम करें जब गाढ़ा होजाय तब उसमें २५ तोला मांडूर भस्म नं० १ की मिला कर कुछ और गरम करें। गोली बनाने योग्य होने पर उतार लें शीतल होने पर झरबेरी के बेर के बराबर गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः सायं ऊपर की सातों औषधिया २-२ तोले ले क्वाथ बना १-१ तोले गौ मूत्र डाल कर गोली के ऊपर पिलावें। इसके सेवन से सब प्रकार की सूजन (शोथ रोग) नष्ट होजाती है। यदि चोट आदि से सूजन आई हो तब गोली जल के साथ सेवन करावें और सूजन के स्थान पर खाने तमाकू के बड़े २ पत्तों को लेकर उष्ण अण्डी का तैल सीधे बाजू पर लगा कर सैंधा नमक कपड़-छन किया हुआ थोड़ा २ उस तैल लगे पत्र पर डाल कर सूजन पर रख पट्टी बांध दें।

श्रीमान् वैद्यराज छगनलाल जी सी रायजी

प्रधान वैद्य श्री हिन्दूसभा धर्मार्थ औषधालय

अम्बा जी रोड–सूरत

—o—

आपकी आयु लगभग ५५ वर्ष की होगी। आप श्रीमान चुन्नीलाल जी रायजी के सुपुत्र हैं। आप ३०–३५ वर्ष से चिकित्सा कर रहे हैं। अनेक प्रशंसापत्र, मान पत्र प्राप्त कर चुके हैं। आप अपने प्रान्त के प्रसिद्ध वैद्यों में हैं। आप अर्श, नासूर, भगन्दर के विशेषज्ञ हैं। और आप अर्श, भगन्दर, नासूर चिकित्सा भी विद्यार्थियों को सिखाते हैं। जो इच्छुक हो वह लाभ उठावें

अर्श हर मरहम—

६१—तबकी हरताल ३ माशे फूल या रंगूनी कत्था ६ माशे

विधि–दोनों को खरल कर कपड़ छन कर उसमें यथोचित मात्रा में गोघृत अथवा शतधौतघृत मिला मरहम बनाले।

उपयोगविधि–इस मरहम को कांच नलका से मलद्वार में भर देना चाहिये। इससे मस्से सूख जातेहैं।

रक्तार्श हर—

६२—माजूफल १ तोला हीरा दक्खनी १ तोला

अफीम ६ माशे

विधि—सब को खरल कर मक्खन (नवनीत) मिला मरहम बना कर रखले गुदा में लगाने से ही रक्त बन्द हो जाता है।

रक्तार्शान्तक—

९३—नाग केशर (अहिकिञ्जल्क) १ तोला
फूली हुई फिटकरी (धात्वाम्ल) ६ माशे
हीरा दोक्खनी ३ माशे मिश्री ४ तोला

विधि—सबको कूट कपड-छन कर रखले। प्रातः काल मक्खन और इलायची के साथ सेवन कराने से रक्त बन्द होजाता है। *

भगन्दर और नाड़ी व्रण हर—

९४—नगोड़ (सिन्दुवार) के पत्तों का रस आधा सेर
गूगल ४ तोला राल १ तोला
बकायन के पत्तों का रस आधा सेर

विधि—इन सबको डाल ३॥ सेर तिल तैल में सिद्ध करले और उसमें एक औंस कार्बोलिक एसिड और ३॥ तोला कपूर मिला करके बन्द कर रखलें और थोड़े दिन बाद उपयोग करे।

उपयोग विधि—प्रथम भगन्दर अथवा नाड़ी व्रण का क्षार युक्त धागा व्रण में डालके मार्ग को खुला (चौड़ा) कर लेना चाहिये, उसके बाद उक्त तैल में बत्ती भिगो कर भर दे इससे भगन्दर और नाड़ीव्रण का घाव भर जाता है। यह सब प्रयोग ३० वर्ष के अनुभव किये हुये हैं। परीक्षा प्रार्थनीय है।

---

* मात्रा नहीं लिखी। ३ माशे से ६ माशे तक की मात्रा में सेवन कराने से रक्तार्श के रक्त को अवश्य रोकता है साथ ही ऊपर वाला मरहम लगाने से और इसे खाने से शीघ्र लाभ होता है।

—सम्पादक

एक सौ छः

आचार्य श्री० कवि० बैजनाथ जी अग्रवाल

श्री शंकर आयुर्वेदिक फार्मेसी,

गली लाला वाली, घण्टाघर के समीप, अमृतसर

—०—

आपका जन्म सम्वत् १९७२ वि० में अग्रवाल कुल भूषण श्रीमान ला० शंकरदास जी वैद्य के यहां हुआ। आपने लाहौर में मैट्रिक पास कर अमृतसर में वैद्यशास्त्री और बनारस से आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की। आपको १०-१२ वर्ष चिकित्सा करते होचुके हैं। पहिले आपने एक पत्र निकाला था और उसके सम्पादक भी रहे थे। यूनानी चिकित्सा के ज्ञाता भी हैं। योग्य और अनुभवी वैद्य हैं।

पारद भस्म–

९५—विधि–शुद्ध पारद(हिंगुलोत्थ पारद के मल गिर अग्नि दोष शमनार्थ त्रिफला क थ, अरनी के स्वरस, घृत कुमारी के रस की एक एक भावना और चित्रक काथ की २ भावना दे, पारद निकाल कपड़ा में छान लें) १ तोला लेकर कपरौटी की हुई आतशी शीशी में डालकर ऊपर से ५ तोला गन्धक का तेजाब (एसिड सलफ्यूरिक) डाले और शीशी को खुले मैदान में सिलगते हुए कोयलों पर रख दें जब धुआं निकलना बन्द हो जाय तब शीशी को उठाले और ठण्डा होने पर शीशी से श्वेत रङ्ग की पारद भस्म निकाल कर रखलें।

कविराज श्री यामिनीभूषण राय, कविराज सुरेन्द्रकुमारदास जी गुप्त काव्यतीर्थ कवि रत्न कलकत्ता से आयुर्वेद शिक्षा और अनुभव प्राप्त किया है कलकत्ते में चिकित्सा कार्य भी १०-१२ वर्ष किया है। बनारस से "चिकित्सा मणि" कलकत्ता से भिषक शास्त्री, उपाधि प्राप्त की हैं अनेक प्रशंसा पत्र, पदक आदि भी प्राप्त किये हैं, आपने वैद्यक पत्रों में आयुर्वेदिक लेख लिख ख्याति प्राप्त की है आप अच्छे लेखक हैं। आपने अनेक पुस्तके लिखी हैं जिनमे कुछ प्रकाशित हो चुकी हैं कुछ प्रकाशित होने को हैं, आपने अध्यापन कार्य भी चिकित्सा कार्य के साथ ही साथ निज रूप से किया है। आप योग्य विद्वान अनुभवी चिकित्सक हैं गृहणी रोग के सिद्ध हस्त चिकित्सक हैं।

गृहणी नाशक—

९७—बेलगिरी ५ तोला   आम की गुठली की मीग ५ तोला

काले जामुन की गुठली की मीग   ५ तोला

नाग केशर असली २॥ तोला   माजूफल २ तोला

शुद्ध स्वर्ण गैरिक   १ तोला

शुद्ध रसांजन सत्व १ तोला   स्फटिक भस्म १ तोला

भांग १ तोला   अनार की छाल २ तोला

जायफल भुना १ तोला   सोंफ १ तोला

अफीम ६ माशे   मिश्री २० तोला

कपूर ३ माशे

विधि—सब औषधियों को कूट पीस कर खरल में डाल बबूल की पत्ती के स्वरस की ७ भावना और आमले के स्वरस या क्वाथ की तीन भावना देकर छोटे बेर की बराबर गोली बना सुखा रखलें।

मात्रा—एक गोली से तीन गोली तक दिन में तीन बार सेवन करावें।

अनुपान—ईसबगोल का सत्व अथवा तुख्मलिङ्गा ३ माशे मिला जल के साथ या तक्र के साथ अथवा सौंफ के अर्क या चावल के पानी के साथ दें।

गुण—अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार, गृहणी आदि में सेवन करावें, रक्त प्रदर, रक्त पित्त, रक्तार्श, आदि अनेक रोग नाशक आमातिसार में प्रथम एरंड तैल २-३ दिन देकर फिर सेवन करावें तब अति शीघ्र लाभ होता है।

शूल नाशक—

६८—गोदन्ती हरताल २॥ तोला	* शुद्ध कुचला ६ माशे
अर्कमूलत्वक १ तोला	काली मिर्च १ तोला
शुद्ध सिंगरफ ६ माशे	शुद्ध अफीम ३ माशे

विधि—सबको कूट पीस छान भांग के क्वाथ की तीन भावना दे मटर बराबर गोली बना सुखा रखले।

सेवन विधि—एक से दो गोली तक गर्म दुग्ध या तुलसी की चाय अथवा गरम पानी के साथ देने से वात व्याधि की पीड़ा, शिर शूल, कर्ण शूल, उदर शूल, स्नायु शूल आदि नष्ट होजाते हैं। पसीना भी लाता है। गर्भिणी स्त्री और बालकों को सावधानी से अल्प मात्रा में देनी चाहिये।

---

* कुचला की शोधन विधि—कुचला को गौ मूत्र में भिगोदे। दूसरे दिन गौ मूत्र से निकाल नवीन गौ मूत्र में भिगो दे इस तरह ५-६ दिन भिगो कर चाकू से छील कर दो फाक कर बीच की हरी जिभी निकाल कर फेंक दें और बारीक कूट कर थोड़े घृत में भून कर और साफ कर रखलें। —सम्पादक

आयुर्वेदाचार्य श्री० पं० चंद्रशेखर जी जैन शास्त्री

लाखा भवन—जब्बलपुर सी० पी०

—※—

आपका जन्म जोंधरी (आगरा) निवासी पद्मावतीपुरवाल दिगम्बर जैन-श्रीमान् स्वर्गीय पं० नेकीराम जी जैन शास्त्री के यहां हुआ था। आपकी आयु लगभग ३१ वर्ष की होगी, आपने वैद्य भूषण, आयुर्वेदाचार्य, न्यायाचार्य, सिद्धान्त साहित्यायुर्वेद शास्त्री आदि परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। आपने अध्यापन कार्य, सम्पादन कार्य, चिकित्सा कार्य किया है, आप अच्छे लेखक और अनुभवी चिकित्सक हैं।

प्रमेहहारिणी बटी—

६६—१—मूली की जड़ का अर्क १ पाव अनार का रस
बिदारी कन्द का रस १ पाव

२—उत्तम खपरिया नौसादर ६ माशा केशर २ माशा
उत्तम फौलाद का बुरादा १ तोला शिलाजीत १ तोला

३—शतावर सालम पंजा वंशलोचन हल्दी
प्रत्येक १-१ तोला

४—चांदी के वर्क आवश्यकतानुसार

निर्माण विधि—नंबर एक की चीजों को छान कर तीन विभिन्न सफेद रङ्ग की शीशियों में रखें। ६ घंटे बाद सावधानी से ऊपर

का तरल भाग नितार ले, कुछ नीचे का भाग चाहे आजाय। किन्तु एक दम नीचे का भाग न आने दे। फिर इन तीनों निथरे हुये द्रवों को एक शीशी मे भर कर रखले।

बाद मे नं० २ की चीजें भी सावधानी से पीस कर उसी शीशी में डाल दें, शीशी मे मजबूत डाट लगादे, और ४० दिन तक रख छोड़े, प्रातः बोतल को हिलादे और दिन भर धूप में रखे। फिर एक कलईदार साफ कढ़ाई मे १॥ घंटे पकावें, आधे से कुछ अधिक द्रव के जल जाने पर नं० ३ की कपड़-छन औषधे कढ़ाई में डाल दे। थोड़े समय मे ही द्रव गाढ़ा होजायगा।

बाद मे एक माशे की गोली बना कर चांदी के वर्कों पर डालते जाय ताकि रुपहरी गोली हो जाय। बस, प्रयोग तैयार होगया।

इसकी मात्रा एक गोली है। प्रातः सायं दूध के साथ लेना चाहिये। साथ मे पथ्यापथ्य एवं आहार विहार पूरा ध्यान रखना चाहिये।

मैथुन, गरिष्ट अन्न; रात्रि जागरण, अश्लील उपन्यासादि पढ़ना, रद्द विचार, सिनेमा देखना, गुड़, तैल, खटाई इत्यादि निषिद्ध हैं।

आवश्यक सूचना—रोगी पहले शीतल चीनी को ताजे गौ दुग्ध से उचित मात्रा में देकर मूत्र विरेचन करा देना चाहिये, यदि कब्ज रहती हो तो योग्य औषधि से मल विरेचन भी करा देना उत्तम है, इससे औषधि का शीघ्र असर होगा।

गुण परिचय—यह औषधि एक स्थान से पेटेण्ट एवं रजिस्टर्ड है, उसका नाम यहां बदल दिया गया है। यह निम्न लिखित रोगो पर काम करती है।

१—प्रमेह पर—प्रारम्भ में हल्दी दारू हल्दी के काढ़े से दें।

२—शक्ति बढ़ाने के लिये–अध औटा दूध मिश्री मिला कर दें।
३—धातु क्षीणता पर–विदारी कंद के रस में मिश्री मिला कर दें।
४—मलावरोध के लिये–सिर्फ गरम दूध से दें।

ठंडाइयों की महारानी–

१००—शिंशपा पत्र (शीशम के पत्ते) –१ सेर

शतावर ६० तोला   बादाम की मिंगी ६० तोला

खसखस ३० तोला   सोंफ ३० तोला

धनियां २० तोला

भांग   काली मिर्च   शक्कर   लजवन्ती के बीज

प्रत्येक १०-१० तोला

इलायची छोटी   बड़ी इलायची के बीज   कासनी

प्रत्येक ५—५ तोले

—इनमें से प्रत्येक चीज को प्रमाण से कुछ अधिक लेकर फिर कूट पीस लें ताकि तोल में चीज ठीक बैठें। ध्यान रहे कि भांग को खूब धोकर फिर भून कर शुद्ध कर लेना चाहिये। बाद में इन सब चीजों को मिला लीजिये। फिर खरल में डाल कर घोट डालिये और कांच के पात्र (अमृतवान) में सुरक्षित रख लीजिये।

मात्रा—एक बार को ६ माशे है। आधा तोले ठंडाई लेकर पाव भर दूध या पाव भर पानी में डाल दीजिये। फिर रूमाल से छान डालिये। जो फोक सा रूमाल में रह जाय उसे खूब मसल-मसल कर रूमाल में दूध डाल कर छान डालिये। इस दूध या पानी में थोड़ी सी शक्कर भी मिला लीजिये। शक्कर की मात्रा आपकी अपनी रुचि के अनुरूप होनी चाहिये।

अब यह ठंडाई तैयार होगई। इसे जरा ठंडा करना हो तो एक दाना पिपरमेंट पीस कर और डालदें। वह उस में घुल जायगा

फिर ५ मिनट बाद इस ठंडाई को वैसे ही या चुस्की मे पी डालिये स्वर्गीय आनन्द आयगा।

यह प्रयोग धातु विकारों पर अच्छा काम करता है। मूत्र एवं मल का रेचक भी है कब्ज नहीं करता। हजारों रोगियो पर अनुभूत है। प्रदर पर भी उत्तम कार्य करता है। गर्मी के दिनों मे इनका अवश्य सेवन करना चाहिये।

नोट—जो सज्जन मेरी तरह 'भांग' काम मे न लेते हो उन्हें इस योग मे से भांग निकाल देनी चाहिये। नशा न होकर ठंडाई का वास्तविक लाभ उन्हें प्राप्त होगा। सुपरीक्षित है।

चिकित्सक श्रीमान् ठाकुर रामसिंह जी वैद्य विशारद

श्री शङ्कर भंडार औषधालय, गांधीगंज

जबलपुर सी० पी०
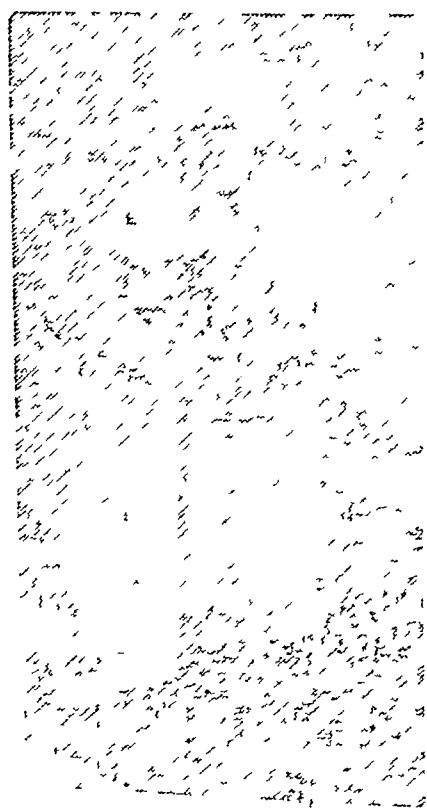
आपकी आयु लगभग ५० वर्ष की होगी। आप श्रीमान ठाकुर दृगपाल सिंह जी वर्मा के सुपुत्र हैं। आपने वैद्य भूषण उपाधि और वैद्य विशारद पास की है। आप २५ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। मृगी अर्श के आप विशेषज्ञ हैं। अ० भा० आयुर्वेद विद्या पीठ के परीक्षक भी रह चुके हैं। अनुभवी और उदार वैद्य हैं।

अपस्मार मृगी पर—

१०१—मकड़ी का सफेद जाला नग १ — काली मिर्च नग १
मक्खी नग १ — गुड़ ३ माशे

—सबको मिला गोली सी बना जल के साथ निगलवानी चाहिये रविवार और बुधवार को प्रातःकाल सेवन करावें। इससे अपस्मार (मृगी) रोग नष्ट होजाता है।

अर्श रोग पर—

१०२—गोखुरू ६ माशे — नीम की निबौरी ६ माशे
अनार दाना ६ माशे — त्रिफला १॥ तोले
सौंफ की जड़ ६ माशे — कासनी की जड़ ६ माशे
मूली के बीज ६ माशे — गुगल शुद्ध ६ माशे
इन्द्र जौ ६ माशे — वायविड़ंग ६ माशे
खुरासानी अजमायन ६ माशे — अजमोद ६ माशे
बाबूना ६ माशे — अमलतास का गूदा २ तोला
शहद ४ तोला — लहसन का रस १० तोला
मूली का रस १० तोला

विधि—सब काष्ठ औषधियां कपड़ छन कर खरल में डाल शहद लहसुन आदि का रस मिला मर्दन कर तीन तीन माशे की गोली बना सुखा कर रखले।

सेवन विधि—प्रातः सायं १-१ गोली जल के साथ सेवन करने से खूनी बादी दोनों प्रकार की बवासीर नष्ट हो जाती है। +

+ निबौरी की मींग निकाल लें। गूगल शुद्ध करले इस प्रयोग के साथ ही साथ मस्सों पर लगाने को अर्श हर मरहम भी प्रयोग करे।

—सम्पादक

नेत्र वैद्य श्रीमान् बाबा गुलाबचन्द जी श्रीवास्तव

ठठेरीबाज़ार हालिगंज,

लखनऊ
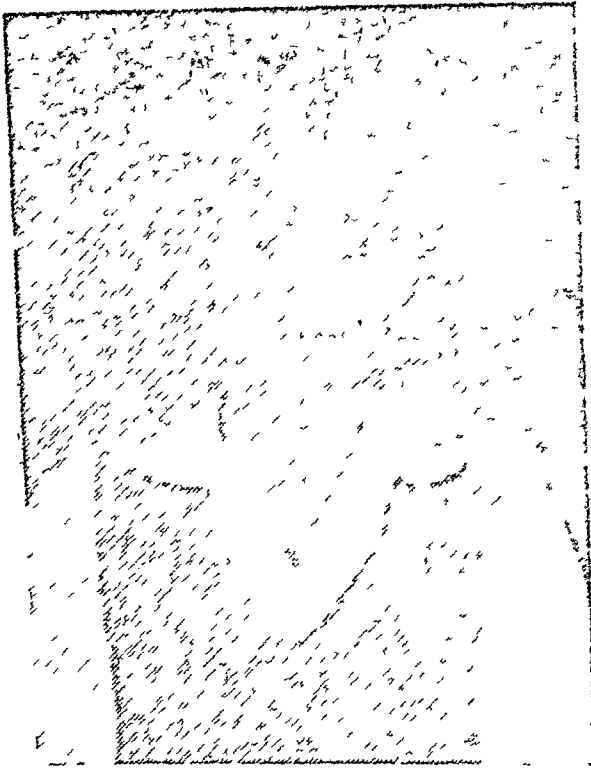
आपका जन्म सम्वत १९५२ वि० में कायस्थ कुल में श्रीमान बा० महावीर प्रसाद जी के यहां हुआ। आप खानदानी नेत्र चिकित्सक हैं। आपने बी० आई० एम० उपाधि प्राप्त की है। यू० पी० इन्डियन मेडीशन बार्ड के रजिस्टर्ड वैद्य हैं। आप की कार्य कुशलता से प्रसन्न हो, अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों ने प्रशंसा पत्र प्रदान किये हैं। अनेक संस्थाओं के आप मेम्बर हैं। आपने डाक्टरों के मुकाबिले में अनेक नेत्र रोगियों के नेत्रों का ओपरेशन कर अच्छे किये हैं। आप यूनानी और आयुर्वेद के सिद्धान्तों से नेत्र रोग की चिकित्सा करते हैं। बड़े प्रसिद्ध और अनुभवी क्रिया-कुशल नेत्र चिकित्सक हैं।

नेत्र रोग पर—

१०२—कैथ के पत्तों का स्वरस — अनार के पत्तों का स्वरस
जामुन के पत्तों का स्वरस — इमली के पत्तों का स्वरस
बबूल के पत्तों का स्वरस — अनार की कली

आमले के पत्तों का स्वरस गेंदा के पत्तों का स्वरस
नीबू के पत्तों का स्वरस नीम के पत्तों का स्वरस

हरेक २—२ तोला

पुरानी इमली का गूदा रसौत २॥—२॥ तोला
अफीम ३ माशे

विधि—एक लोहे की कढ़ाई में सब स्वरस डाले और शेष औषधिया भी कुचल कर डाल दे और मन्दाग्नि से गरम करे जब ३ छटांक स्वरस जल जाय तब उतार कर लोह खरल में डाल लोह मूसली से मर्दन करे। २५ घण्टे मर्दन करने से मरहम की शक्ल में हो जायगा तब चीनी के पात्र में रखलें।

उपयोग विधि—सुवह शाम जरा जरा सी मरहम आंख के अन्दर पुतली पर लगावें। इससे दु:खते नेत्र शीघ्र अच्छे हो जाते हैं और सबल वायु के रोगी को बड़ा ही लाभ इसके लगाने से होता है। परीक्षा प्रार्थनीय है।

नेत्र रोग पर—

१०४—जस्त को शुद्ध कर पुनः गला कर साफ करलें और उसे फूके तो जो लावा (फूला) निकले उसे रखले। यह लावा चार चार रत्ती प्रात: सायं आमले के स्वरस के साथ सेवन करने से सम्पूर्ण नेत्र रोगों में लाभ पहुचता है।

नेत्र पुष्प हर—

१०५—नौसादर की ६ माशे की एक डली को पीतल में रख जरा २ सा पानी डालता जाय और हाथ की गदेली (हथेली) से घिसता रहे। इससे पहले काला पानी होगा उसे बराबर घिसते रहने से नीला होजायगा और घिसते २ हरे रंग का फेन होजावेगा। फिर दो घण्टे बाद उसे एक कटोरे मे पोंछकर और थोड़ा पानी

डाल कर रखलें। थोड़ी देर में नीचे हरे रंग की दवा बैठ जायगी और नीला सा पानी ऊपर रह जायगा। उस नीले से पानी को निथार कर नीचे बैठी हुई हरे रंग की दवा चौड़े मुंह की शीशी में रखलें। सुबह शाम आंख के अन्दर फुली पर लगावे। इससे फुली नष्ट हो जाती है।

साहित्यायुर्वेद विशारद पं० रामचन्द्र जी प्रफुल्ल

बिड़ला मिल्स लि० पोस्ट बिड़ला लाइन्स
देहली

—o—
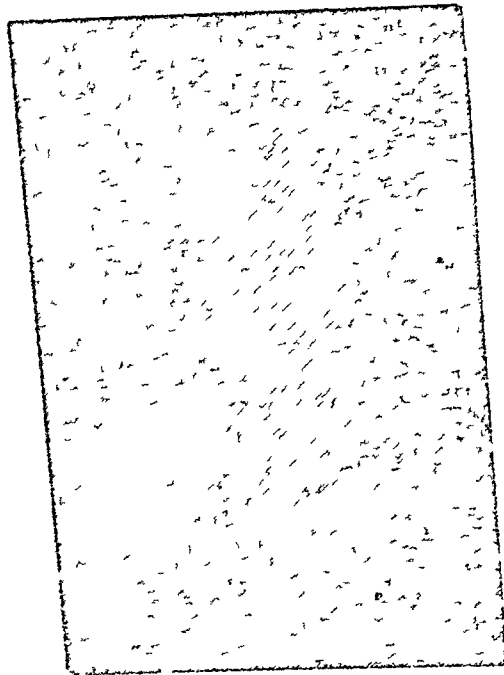
आपकी आयु लगभग ३६ वर्ष के होगी। आप श्रीमान् पं० पन्नालाल जी के सुपुत्र हैं। आपने इंटरमीजिएट और और साहित्यायुर्वेद विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप मे परोपकार का व्यसन सा है। इस से ही आपने सदैव से गरीबो को विना मूल्य औषधि और चिकित्सा कर यश पुण्य प्राप्त किया और अनेक कष्ट साध्य रोगियों को आराम कर ख्याति प्राप्त की और इसी भावनावश प्रायः धर्मार्थ औषधालय मे ही कार्य किया। आप अच्छे लेखक और कवि है। तथा अनेक संस्थाओ के पदाधिकारी भी है।

रक्त प्रदर पर—

१०६—खून खराबा १० तोला स्फटिक भस्म १॥ तोला

मिश्री १० तोला

विधि—सबको कूट पीस छान मिश्री मिला रखलें। प्रातः सायं एक एक पुड़िया जल (ठण्डे पानी) के साथ फंकावें और दोपहर तथा रात्रि को एक एक गोली प्रदरारि रस की सेवन करावें। इससे भयङ्कर प्रदर शान्ति होजाता है।। रोग शान्ति होने और रक्त स्राव बन्द होने के बाद निम्न प्रदर हर चूर्ण १५-२० दिन सेवन करा दिया जाय तब स्थाई लाभ होजाता है।

प्रदर हर चूर्ण—

१०७—पाढ़ल जामुन की गिरी आम की गिरी

पापाण भेद शुद्ध रसौत मोचरस

ल्हेसवा मजीठ कमलगट्टा की गिरी

नाग केशर अतीस नागर मोथा

बेल गिरी लोध सोना गेरू

कांयफल कुड़ा की छाल अनन्त मूल

धाय के फूल मुलेहठी अर्जुन की छाल

विधि—सब औषधियां समान भाग ले कूट कपड़-छन कर रखलें। प्रातः सायं ठण्डे पानी के साथ तीन तीन माशे की मात्रा से फकावें।

पथ्य—चावल, दाल आदि। गरम पदार्थ सेवन न करावें।

स्वर्गीय वैद्य पंचानन श्री० पं० मस्तरामजी तुकनेन

चरक फार्मेसी, चरक भवन, सुल्तान सिंह रोड

अमृतसर

—०—
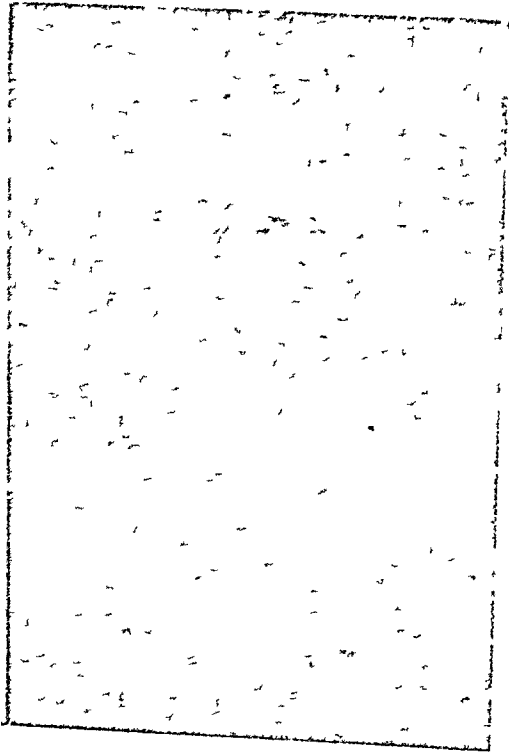
आपका जन्म सम्वत् १६५० वि० को ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान पंडित अचिन्त्यराम जी मौद्गल्य के यहां होशियारपुर में हुआ था। आप व्याकरण ने पंजाब यूनिवर्सिटी की शास्त्री परीक्षा पास की किन्तु आयुर्वेद की वैद्य परीक्षा ही पास की थी पर स्वाध्याय और चिकित्सा कार्य तथा अध्यापन कार्य करते हुये आयुर्वेद के अनुशीलन से आयुर्वेद में यथेष्ठ ज्ञान प्राप्त कर लिया तथा अ० भा० वैद्य सम्मेलन ने आपको वैद्य पचानन की उपाधि दी। आपने आचार्य, और चन्द्रोदय पत्र का सम्पादन भी किया। अनेक पुस्तको की रचना की। आप पजाब प्रान्त के माननीय विद्वान वैद्य है। आपकी योग्यता का वर्णन कर सके इतनी इस लेखनी मे शक्ति नहीं। आप का स्वर्गवास २२ जनवरी सन् १६४७ में हुआ। आपके स्वर्गवास से जो आयुर्वेद की क्षति हुई है उसे वैद्य समाज अच्छी प्रकार से जानता है।

श्वास कासान्तक—

१०८—मुक्ता (मोती) मूंगा वैडूर्य (लहसुनिया)
विल्लौर असली शङ्ख अञ्जन काला
पन्ना कांच पद्मराग (माणिक्य)
नीलम रजत लोह
गंधक ताम्र फिटकिरी
चन्दन आक की जड़ का छिलका
छोटी इलायची सैंधा नमक काला नमक
रक्त कमल केशर कसेरु जायफल
सन के बीज अपामार्ग तिण्डुल रायसन
जावित्री प्रत्येक समान भाग

बिधि—वांसारस धत्तूर रस सम्भालू रस
इनसे मर्दन कर शुष्क कर रखलें । +

गुण—श्वास, कांस, हिक्का, नाशक और बल वर्धक है । नेत्रों में लगाने से (अंजन करने से) तिमिर, कांच पुष्प, नीलिका, अर्म, अभिष्यन्द, कण्डू रोग नाशक है ।

+ मोती मूंगा आदि रत्न एवं लोह ताम्र आदि धातु उपधातु आदि की भस्म डालनी चाहिये । नेत्र रोग में पिष्टी बना कर डालनी चाहिये । काष्ठौषधि कूट कर कपड़-छन कर डालनी चाहिये । चंदन लाल डालना चाहिये । नेत्र रोग को बनाना हो तब भावना नहीं देनी चाहिये । खाने को बनाना हो तब एक एक रस की एक एक भावना देनी चाहिये । यह चरक संहिता गत श्वासाधिकार हर मुक्ताध-चूर्ण के समकक्ष ही है थोड़ा ही परिवर्तन है जो उक्त वैद्यराज के अनुभव का फल है । —सम्पादक

श्री० वैद्य आत्माराम जी श्रीवास्तव

कालवनगंज, [illegible]
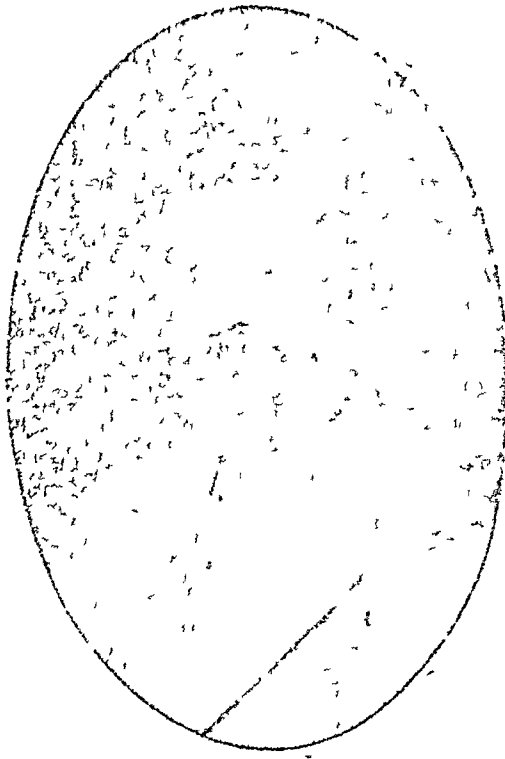
— —

आपकी आयु लगभग ४५ वर्ष की होगी। आपका [illegible] जाति भूषण श्री [illegible] जी श्रीवास्तव के ज्येष्ठ सुपुत्र हैं। आपके पिता-पितामह भी वैद्यक का कार्य करते थे उन से ही वैद्यक शिक्षा प्राप्त कर चिकित्सा करने लगे हैं। अनेक प्रशंसा पत्र भी मिले हैं

नासूर नाशक मरहम–

१११—बिल्ली की हड्डी महीन पीस कर कपड़ा मे छान कर इसमे थोड़ा सा गन्धक का तेजाब डाल कर खरल कर मरहम बना रखले।

व्यवहार विधि—रूई की बत्ती बना उस पर मरहम चुपड़ नासूर के छेद मे भर कर पट्टी बांधे इसी तरह से प्रति दिन बत्ती रक्खे। +

+ प्रथम नासूर को नीम के पानी से साफ कर बत्ती रख पट्टी बांधें। इससे मवाद निकल जाता है और छेद भी चौड़ा हो जाता है।

—सम्पादक

कण्ठमाला नाशक—

११२—सिङ्गरफ १ तोला — कवोला १ तोला

मुरदासङ्ग १ तोला — कत्था सफेद १ तोला

दाना इलायची छोटी १ तोला — हीरा कशीस १ तोला

गौ का घृत १० तोला

विधि—घृत छोड़ शेष औषधियों को कूट कर कपड़ा में छान कर घृत मिला तांबे की डेगची में रखे और जङ्गली कंडों की अग्नि पर रख नीम के डंडे के नीचे तांबे का पैसा लगा उससे ६ घन्टे घोटे। ठण्डा होने पर निकाल शीशी में रखलें।

व्यवहार विधि—कंठमाला पर लगावें और आतशक में एक रत्ती प्रातः काल खिलावें। *

यकृत प्लीहा हर—

११३—सोंठ २ तोला — जवाखार १ तोला

सज्जीखार १ तोला — सोरा कलमी १ तोला

नौसादर उड़ा १ तोला — सत्त गुर्च १ तोला

सुहागा भुना १ तोला

विधि—सबको कूट छान कर रखले। १॥ माशे चूर्ण भोजनोपरान्त आध-आध घण्टे बाद गरम पानी से दोनों समय दें। इससे यकृत व प्लीहा-वृद्धि अवश्य नष्ट होजाती है। उदर शूल में भी लाभदायक है। २५ वर्ष से प्रयोग कर रहा हूँ। कभी व्यर्थ नहीं गया है।

---

* अग्नि बहुत धीमी भूभल की तरह हो जिससे घृत अधिक न जलने पावे। मलहमवत् बना लें। कंठमाला जो फूटी न हो वहां मले और फूटी पर फाये पर लगावें। —सम्पादक

वैद्य भूषण पं० हरीशंकर जी पांडेय आ० वि०

हरि हरि श्री राष्ट्रीय औषधालय

पुरानी इटारसी सी० पी०

—*—
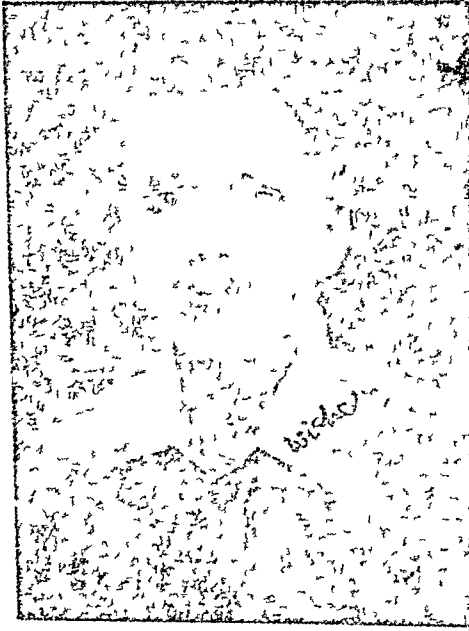
आपका जन्म कान्यकुब्ज ब्राह्मण पथरौटा ग्राम में श्रीमान पं० गोरेलाल जी पांडेय के गृह हुआ। आपने अंग्रेजी की मिडिल और व्याकरण की प्रथमा पास कर आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त की और वैद्य भूषण, आयुर्वेद उपाध्याय उत्तीर्ण कर चिकित्सा कार्य कर अनेक प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं।

श्वेत प्रदर पर अरिष्ट—

११४—चमेली के फूल १ पाव
गुलाब के फूल १ पाव
मोगरा के फूल १ पाव
गुड़ १ सेर
अशोक छाल १ सेर
पानी १६ सेर

विधि—अशोक छाल को कुचल कर पानी में औटावे जब ४. सेर पानी रह जाय तब छान कर एक चीनी या मिट्टी के घड़े में भर दे और शेष औषधि भी कुचल कर डाल मुख बन्द कर एक महीना रखने के पश्चात् कपड़ा मे छान बोतलों में भर कर रख लें।

सेवन विधि—मात्रा १ तोला से २ तोला तक जल मिला कर भोज-
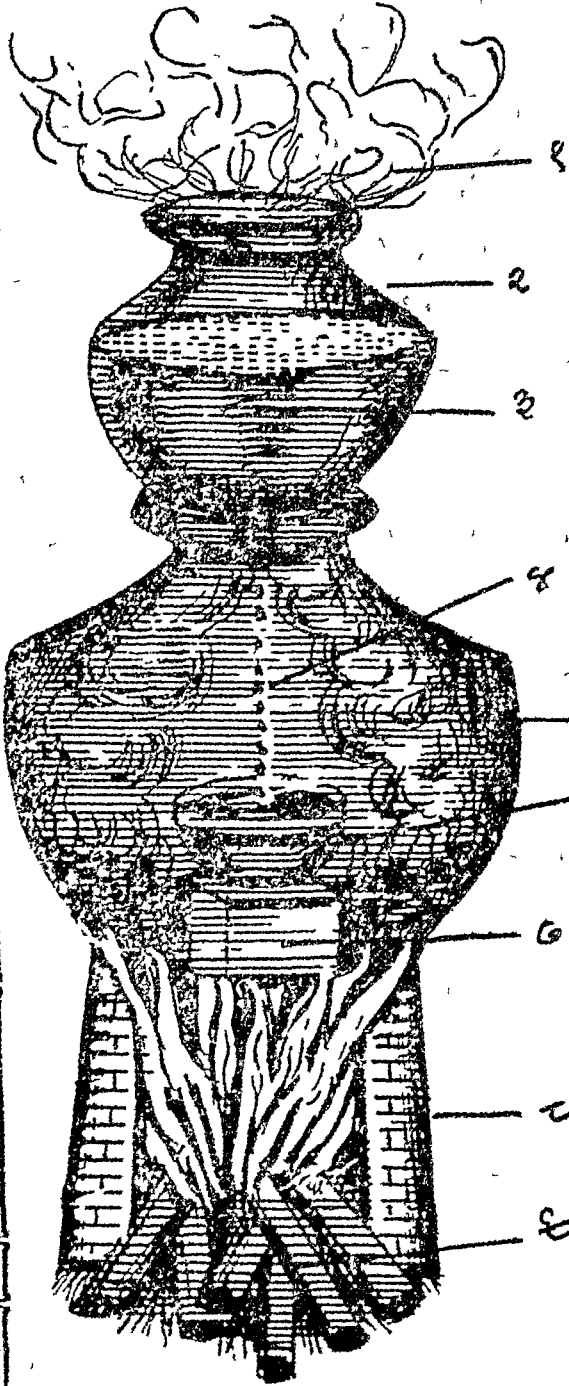
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१—पानी की भाप
२—हाँडी
३—पानी
४—टपकने वाला द्रव पदार्थ
५—मटका
६—खाली चीनी का प्याला
७—औषधियों के बीच में रक्खी ईंट
८—चूल्हा
९—जलती हुई लकड़ी

आकाश पातन यन्त्र

-नोपरान्त दोनों समय सेवन कराने से श्वेत प्रदर नष्ट हो जाता है। =

कन्डू हर-

११५—अशुद्ध पारा | गंधक लौनियां | स्याह जीरा
सफेद जीरा | आमिया हल्दी | काली मिर्च
सिन्दूर | मेनसिल | दारूहल्दी

विधि—समान भाग लें। प्रथम पारा गन्धक की कज्जली करें पश्चात् शेष औषधियां कूट छान कज्जली में मिला ३ दिन मर्दन कर शीशी में रखलें।

उपयोग-- १ तोला वैसलीन में दो माशे दवा खूब अच्छी तरह मिला कर शरीर पर मलें और निम्न औषधि सेवन करते रहें जिससे उदर साफ रहे तो अवश्य कन्डू (खुजली) दूर होती है। पकी हुई फुन्सी भी नष्ट होती है खाज खुजली के अतिरिक्त और भी रक्त विकार नष्ट होते हैं।

उदर शोधक-

११६—सोंफ | सनाय | शुद्ध गंधक
मुलहठी | देशी शकर (बूरा)

विधि—सबको कूट छान बूरा मिला रखलें। रात्रि को सोते समय ४ माशे चूर्ण गुनगुने पानी के साथ फांकने से प्रातः खुल कर साफ दस्त होजाता है।

= उपरोक्त अरिष्ट के सेवन काल में प्रातः और रात्रि को मधुकाद्यावलेह (भैषज्य रत्नावली पुस्तक का) दूध के साथ सेवन किया जाय तब अधिक लाभ करता है अन्यथा अशोकारिष्ट से न्यून गुण वाला ही है। —सम्पादक

वैद्य भूषण श्री० कुंवर उमरावसिंह जी कुशवाहा

अश्वनीकुमार आयुर्वेद औषधालय
माधौगढ़ जि० जालौन

—o—
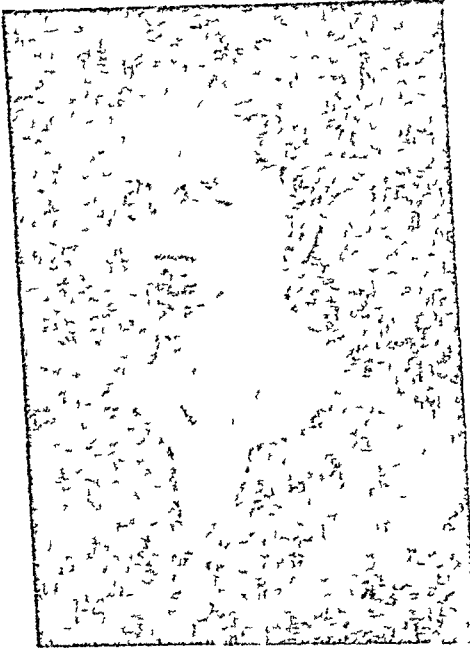
आपका जन्म क्षत्रिय कुलवतंश श्रीमान् कुंवर जुलाहल सिंह जी के यहां हुआ था। आपकी आयु २७ वर्ष की है। आपके यहां वैद्यक का कार्य परम्परागत से होता चला आरहा है। आपने वैद्य भूषण की परीक्षा झांसी से दी थी।

शूल हर--

११७—शुद्ध हिंगुल ७॥ माशे धतूरे के बीज शुद्ध ६॥ तोला
सोंठ २॥ तोला रेवन्द चीनी ५ तोला
गोंद बबूल १॥। तोला

विधि—प्रथम गोंद को साफ जल में घोल ले और हिंगुल को प्रथक रखें शेष औषधियों को कूट कपडा में छान कर रखलें फिर गोंद के घोल में हिंगुल मिला एक घण्टे मर्दन करे बाद में शेष औषधियां मिला एक दिल करदे और आधी आधी रत्ती की गोली बना सुखा कर रखलें।

व्यवहार विधि—मात्रा एक गोली से दो गोली तक।

अनुपान—गरम जल

गुण—शरीर गत प्रत्येक दर्द को बीस मिनट में बन्द कर देता है। ऐलोपैथी में एस्प्रीन से भी दर्द बन्द होजाता है पर वह हृदय को निर्बल बना देती है इसके सेवन से हृदय निर्बल नहीं होता जुकाम होने के तीसरे दिन शाम को १ मात्रा और चौथे दिन प्रातः १ मात्रा लेने से ही जुकाम के सब उपद्रव शान्ति हो जाता है। ज्वर को उस अवस्था में जब नाड़ी क्षीण होगई हो रोगी बोलने में असमर्थ हो तब २ से ४ गोली देने से ही लाभ हाता है। मुख बन्द हो तब रोगी का मुख खोल कर गोली मृत-संजीवनी सुरा या रैक्टीफाइड स्प्रीट में घोल कर देने से लाभ होता है।

कर्ण शूल हर--

११८—हींग ६ माशे	बच कड़वी ६ माशे
नागर मोथा ६ माशे	पीपल छोटी ६ माशे
सोंठ (नागर) ६ माशे	सेंधा नमक ६ माशे
लहसुन ६ माशे	तिल का तैल १५ तोले
आक के पके पत्तों का रस	१० तोले
पलास पत्र का रस	५ तोले

विधि—सम्पूर्ण औषधियों को कूट कर रस तैल युक्त सब को एक दिन रख दूसरे दिन कढ़ाई में डाल मन्द मन्द अग्नि दे तैल मात्र रहने पर छान कर शीशी में भर काक लगादें।

गुण—दो चार बूंद कान में डालने से कैसा ही कर्ण शूल हो बन्द होजाता है। ??

?? कर्ण श्राव में कम और शूल में कुछ अधिक लाभ करता है। —सम्पादक

आयुर्वेदरत्न श्रीमान् वैद्य प्रदीपनारायन आयु०वि०

श्रीयादव आयुर्वेदिक औषधालय

कुजापी—गया
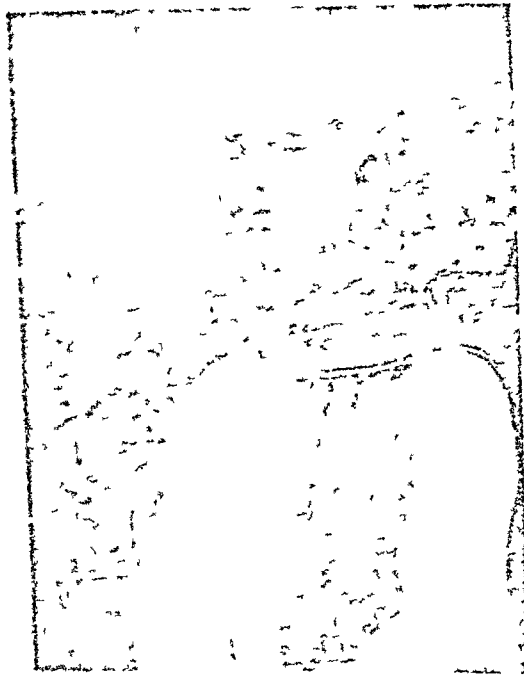
आपका जन्म सम्वत १९७२ वि० में यादव वंशीय श्रीमान् बा०-देवकरण जी यादव ग्राम घिन्धौर निवासी के यहां हुआ था। आपने अंग्रेजी मैट्रिक तक ही पढ़ कर संस्कृत का अध्ययन कर विधिवत आयुर्वेद पढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वैद्य विशारद और आयुर्वेदरत्न परीक्षा उत्तीर्ण की है आप स्वर्गीय श्रीमान् पं० सोमेश्वर जी मिश्र वैद्यराज जहानाबाद निवासी के शिष्य हैं। आपने बंगला साहित्य का भी अनुशीलन किया है। अनुभवी और ख्याति प्राप्त वैद्य हैं।

किरातारिष्ट—

१५६-चिरायता	यवातक्ता	कुटकी
नागरमोथा	स्वर्णपत्री	गुरुचि

नीम की छाल

विधि -सातों औषधियां एक एक सेर लेकर जौकुट कर ५६ सेर पानी में औटावें। जब १४ सेर जल रहे तब छान कर १० तोला लता करंज के बीज और १० तोला अतीसकड़वी कूट कपड़ा में छान मिला दें तथा ५ सेर मिश्री (खाँड) मिला कर मट्टी के पात्र में भर मुख बन्द कर जमीन में गाड़ दें जब १५ दिन हो जाय तब निकाल छान बोतल में भर कर रक्खें।

व्यवहार विधि–मात्रा १॥ तोले से २ तोले तक। अनुपान जल। प्रातः सायं। जीर्णज्वर तथा क्नीन से बिगड़ा ज्वर जिसमें सदैव थोड़ी ज्वर की उष्णता बनी रहती है बड़ा फायदा करता है। स्त्रियों का दूषित दूध भी इससे साफ हो जाता है।

मुखपाक हर—

१२०—स्फटिक भस्म ५ तोला + तुम्बरू ५ तोला
कपूर १ तोला पिपरमेन्टसत्व १ तोला
गेरिक शुद्ध १० तोला अश्वत्थ का कपड़ छन चूर्ण ५ तोला
सौभाग्य भस्म ५ तोला

विधि—सब औषधियों को खरल में खूब बारीक कर एवं मिश्रित कर बोतल में भर कर कार्क बन्द कर रखले। ६ माशे औषधि १ तोले गाय के घी में मिला कर अगुली अथवा फोहा से मुख में लगावें। बच्चों के मुख पाक में भी निसंकोच लगावें। २-३ दिन में मुखपाक नष्ट हो जाता है। यदि मलावरोध हो तब नाराचरस या इच्छाभेदी रस से २-३ दस्त भी करादें। मुखपाक की अव्यर्थ औषधि है।

+ स्फटिक भस्म-फिटकिरी भुनी। सौभाग्य भस्म-सुहागे का फूला, अश्वत्थ (पीपल वृक्ष) की छाल कपड़ छन की हुई।

—सम्पादक

आयु० श्री वैद्य केशरीमल जी जैन शास्त्री

प्रधान चिकित्सक—स० सि० कन्हैयालाल, गिरधारीलाल जैन धर्मार्थ औषधालय, कटनी सी० पी०

आपका जन्म सन १६२१ को परवाल जैन वंश में श्रीमान वैद्य पन्नालाल जी जैन के यहां हुआ। आपने साहित्य शास्त्री, न्याय तीर्थ, आयुर्वेद शास्त्री और अ० भा० वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेदाचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। अनेक प्रशंसा-पत्र प्राप्त किये है। अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी भी हैं विद्वान और अनुभवी वैद्य हैं। आप बड़े २ योगों से काम न लेकर चुटकुले अधिक प्रयोग करते हैं।

छाजन नाशक—

१२१—५ तोले कलमी शोरा को २॥ तोले मिट्टी के सफेद तैल मे खूब बारीक घोट कर रखलें।

उपयोग—छाजन को नीबू के रस से धोकर पोंछले उसके पश्चात् यह औषधि लगा धीरे २ मले। एक सप्ताह में ही छाजन को अत्यधिक लाभ होता है।

श्वास कासान्तक—

१२२—एलुआ और काला नमक दोनों को समान भाग लेकर एक

दिन पत्थर के खरल में खरल कर रख लें।

उपयोग—जिनको श्वास, काँस में अधिक कफ निकलता हो और खांसी व श्वास के कारण नींद भी नहीं आती उनको प्रातः सायं एक एक रत्ती मधु में चटावे। जिनको खुश्क खांसी और कफ रहित श्वास हो उनको १ तोले दूध की मलाई में एक रत्ती औषधि मिला चटावे। तीन चार खुराक में ही कफ निकलने लगेगा और श्वास खांसी शान्ति होगी। +

श्रीमान् ठाकुर माधोसिंह जी वैद्यराज

गणेश औषधालय, जालोन

०—०

आपकी आयु लगभग ६६-६७ वर्ष की होगी। आप श्री० ठाकुर गजराजसिंहजी के सुपुत्र हैं। आपने घर पर ही वैद्यों के सतसंग और स्वअध्ययन से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर अनेक गरीब रोगियों की चिकित्सा कर अनुभव प्राप्त किया है।

+ प्रयोग छोटे अवश्य हैं पर लाभकारी हैं। इसमें सन्देह नहीं। —सम्पादक

वातव्याधि पर वटी--

१२३--कुचला २० तोला लेकर गौमूत्र में भिगोदें। दूसरे दिन निकाल नवीन गोमूत्र डाल भिगोदे इस तरह चार दिन भिगोने के बाद चाकू से छील कर बीच से दो पल्ला करदे और उसके भीतर हरी सी जिभ्भी होती है। उसे निकाल दे फिर कूट कर बारीक कर थोड़ा गौ घृत डाल भूनले और पुनः कूट कपड़ा में छान लें। और १ तोले अफीम को १ छटांक पानी में डाल कर भिगो दे जब वह गल जाय तब कपड़ा में छानले और छने हुये अर्क को कुचला में डाल मर्दन करलें और १--१ रत्ती की गोली बना सुखाकर रखलें।

सेवन विधि—प्रातः सायं दूध के साथ निगले। ५-७ दिन बाद दो दो गोली फिर तीन तीन गोली तक सेवन करावे। इसस वात-व्याधि, नपुंसकता को लाभ होता है। और बल बढ़ता है घृत दूध अधिक सेवन करावे।

वातव्याधि नाशक तैल--

१२४--कुचला २ तोला

भिलावा २ तोला

तिल का तैल १० तोला

में पकावे जब जल जाय तब खरल मे डाल मर्दन करें और १० तोला मालकांगुनी का तैल मिला कर रखलें।

उपयोग–इसकी मालिश करने से वात जन्य दर्द, सूजन, नष्ट हो जाती है।

राजवैद्य श्री पं० प्रभूदयाल जी बाजपेयी वैद्य शास्त्री

जालौन शंकर फार्मेसी

जालौन

—०—
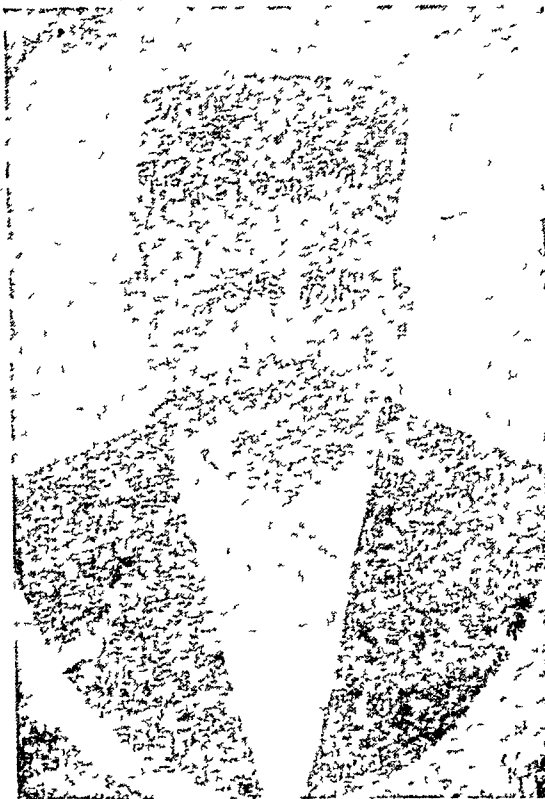
आपका जन्म सं० १९६३ वि० में श्रीमान् पं० मन्नूलाल बाजपेयी वैद्यराज के यहां हुआ। पिता जी से ही वैद्यक शिक्षा प्राप्त कर वैद्य शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। यू० पी० मैडीशन बोर्ड के रजिस्टर्ड वैद्य हैं।

बल वर्धक आसव—

१२५—सितावर	अकरकरा	बबूल की फ़ली
अजमायन	मदनमस्त	कोंच के बीज
बहेड़े का बकला	सोंफ	कटेली
ताल मखाने	पीपरामूल	सोआ के बीज
असगन्ध	इन्द्र जौ	उटंगन के बीज
निगुंण्डी	धाय के फूल	शलजम बीज
मूसरी सफेद	माजूफल	बीज बन्द
जवाखार	काकड़ा सिङ्गी	सोंठ
मोंथा	समुद्रफेन	हरड़ बड़ी

गोखुरू	आमला	जङ्गी हरड़
मोचरस	पीपल	मूसली स्याह
माल कागनी	ब्रह्मदण्डी	अतीस
कलोंजी	गाजर के वीज	ककड़ी के वीज
समुद्र सोख	तेजबल	सुपारी
लोहवान	लोध	घी ग्वार
लोंग	इलायची छोटी	दाल चीनी
केशर		प्रत्येक २५-२५ तोल
मुंडी ५ सेर	पानी १ मन	गुड़ १० सेर

विधि—सब औषधियों को कूट कर गुड़ पानी मिला मिट्टी के पात्र में भर कर मुख बन्द कर जमीन में गाढ़ दे। १४ दिन वाद निकाल भवका में अर्क खींच लें।

सेवन विधि—एक एक तोला पिलाने से अन्न का पाचन कर भूक लगा देता है। वीर्य विकार नष्ट कर चेहरे पर सुर्खी ला देता है। अनेक रोगों में लाभदायक है। बल बढ़ाने को प्रधान है।

नेत्र रोग हर सुरमा—

१२६—भीमसेनी कपूर १ तोला	कत्था सफेद २ तोला
इलायची छोटी १ तोला	शीतलचीनी १ तोला
हरड़ छोटी १ तोला	समुद्रफेन २ तोला
मिश्री २ तोला	अफीम ६ माशे
फिटकिरी १ तोला	जङ्गाल १ तोला
नीम की कोंपल ६ माशे	मोती असली ६ माशे
पठानी लोध १ तोले	सफेदा कासगरी १० तोला

गुलाव जल १ सेर

विधि—सब औषधियों को पीस छान कर गुलाब अर्क में घोल कर मोटे कपड़े से फूल की थाली में छान लें। थाली को कपड़ा से ढक कर छाया में रख दें जब अर्क सूख जाय औषधि भी खुश्क होजाय तब खरल में डाल घोट कर कपड़ा में छान कर रखलें।

उपयोग विधि—सुबह शाम सलाई से नेत्रों में लगावें, तो पानी का बहना, जाला, सुर्खी को दूर कर रोशनी बढ़ा देता है वैसे तो नेत्रों के समस्त रोगों में लाभकारी है। इसके लगाने से और नेत्र ज्योति वर्धक अवलेह के चाटने से अवश्य रोशनी बढ़ जाती है।

नेत्र ज्योति वर्धक अवलेह—

१२७—गुलाब के फूल ३ माशे — मोथा ६ माशे
लोंग ३ माशे — बालछड़ ३ माशे
तगर ३ माशे — ब्राह्मी २ माशे
इलायची बीज ४ माशे — मोती पिष्टी २ माशे
जायफल २ माशे — केशर २ माशे
जावित्री २ माशे — नोंनिया के बीज २ माशे
बिजौरे नीबू के बकला की सफेदी २ माशे — धनियां ६ माशे
बादरंज गोया ६ माशे — गाजवां ६ माशे
कहरवा २ माशे — प्रवाल पिष्टी २ माशे
आमला ४ तोले — मिश्री सब के बराबर

शहद मिश्री के बराबर

विधि—प्रथम आमले को पानी में एक दिन भिगोदे। पानी थोड़ा ही डाले जब मुलायम होजाय तब सिल लोढ़ी से बारीक पीसे। यदि अधिक गाढ़ा होने से नहीं पिसे तब दूध थोड़ा डालले उसके बाद मिश्री की चाशनी करे और उसमें वह आमला डालदे और थोड़ा पक जाने पर उतार कर शहद मिला दे तथा औषधियां

कूट कपड़छान कर मिलादे सब मिलने पर रखलें। ६-६ माशे प्रातः सायं सेवन करने से नेत्र की ज्योति बढ़ती है। बल वीर्य बढ़ता है।

काव्यतीर्थ पं० शङ्करदत्त जी शास्त्री भिषग्रत्न

चि० श्री प्रभूदयाल आयु० दातव्य औष० जि० नारनोल
माधौगढ़ पो० ५तनाली (पटियाला)

—o—

आपका जन्म स० १६६५ को काजड़ा पोस्ट सूरजगढ जि० जयपुर निवासी श्रीमान् पं० श्री गीगराज जी जोशी के यहां हुआ था। आपने काशी राजकीय व्याकरण की मध्यमा और साहित्य शास्त्रि परीक्षा पास की। कलकत्ता से काव्य तीर्थ और कविराज श्री ज्योतिमयसेन जी कविरंजन से आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त कर बङ्गीय भिषगरत्न की उपाधि प्राप्त की है आप मारवाड़ी आरोग्य-भवन जसीड़ा में प्रधान वैद्य रह थे। अब उपरोक्त औषधालय मे हैं आप ग्रंथ भी निर्माण कर रहे हैं जिसके हजार श्लोक बन भी चुके हैं। आप विद्वान और अनुभवी वैद्य हैं।

हृदय रोग पर—

१२८—प्रवाल स्वर्णायो घन गगन मुक्तांवर रसान्।
सु माणिक्यं गारुत्मत मृग मदौ शुक्ति करजः॥
शतावर्यास्तोये सविधिनतु संम्मद्य रचिता।
प्रमेहे हृत्कम्पादिपु परममोघाऽम्वरवटी॥ १॥

प्रवाल पिष्टी	स्वर्ण भस्म	भीमसेनी कपूर
लोह भस्म	मुक्तापिष्ठी	अभ्रक भस्म
अम्बर	चुन्नी भस्म	कस्तूरी
पन्ना भस्म	मुक्ता शुक्ति भस्म	

विधि—सब औषधियां तीन तीन माशे लें। शास्त्रानुकूल उपर्युक्त सब भस्में तैयार करलें या किसी उत्तम फार्मेसी से मंगालें। सब वस्तुओं को पत्थर के खरल में डाल सिनाबगी के स्वरस में, अर्जुन की छाल के स्वरस में प्रथक प्रथक मर्दन कर एक एक रत्ती की वटी बना कर सुखा कर रखलें।

सेवन विधि—एक एक वटी अर्जुन की छाल के चूर्ण और मधु के साथ सेवन करावे।

गुण— हृद रोग, हृद कम्प, प्रमेह, मधु मेह में राम बाण। इसके सेवन से हृद गति नियमित होजाती है। =

रक्त प्रदर हर चूर्ण—

१२६—पीपल की लाखा ३० तोला
माजूफल १० तोला
नाग केशर ५ तोला
पठानी लोध ५ तोला
खस ५ तोला
आंवला ५ तोला
अशोक छाल १० तोला

विधि—सब को कूट कर कपड़ा में छान रखलें।

मात्रा—६ माशे

= अनुपान में अर्जुन छाल १ माशे मधु ६ माशे लेना चाहिये हृदय रोग में उत्तम बल वर्धक। धनाढ्यों के सेवन योग्य, ब्लडप्रेशर के शान्ति होने पर इसका उपयोग अति लाभदायक है।

—सम्पादक

पश्चात करंजबीज की मींग नीम की छाल कपड़ छन कर डालकर पानी के योग से घोटे और ६ रत्ती की गोली बना रखलें।

अनुपान—दुग्ध के साथ एक एक वटी ज्वर आने के २ घण्टे और पूर्व दे। ज्वर के वेग के शान्ति होने पर भी प्रातः सायं २-४ दिन देते रहे इसके सेवन से बिषम ज्वर दूर होता है।

पुत्र दाता—

१३१—अश्वत्थ वृजयंच बराश्वगंधा—
चाम्पेयकं समामिदं विधिना विभूठर्यं।
वन्ध्याकृतेतु परमोत्तम पुत्रदाता
पालान्तिमेन शिशुना भिपना प्रदिष्टः ॥ १ ॥

पीपल की जड़ या, शतावरी, असगंध, नागकेशर ये सब चीजें समान भाग, और मिश्री सबके समान लेकर कूट छानकर ४० दिन तक रोगिनी को गौ दुग्ध के साथ खिलावे ईश्वरेच्छया सफल काम होगे अनुभूत है।

आयु० विशा० श्री पं० खेमराज जी शर्मा छांगाणी

श्री गोवर्धन आयुर्वेदिक औषधालय, आर्वी जिला वर्धा सी० पी०
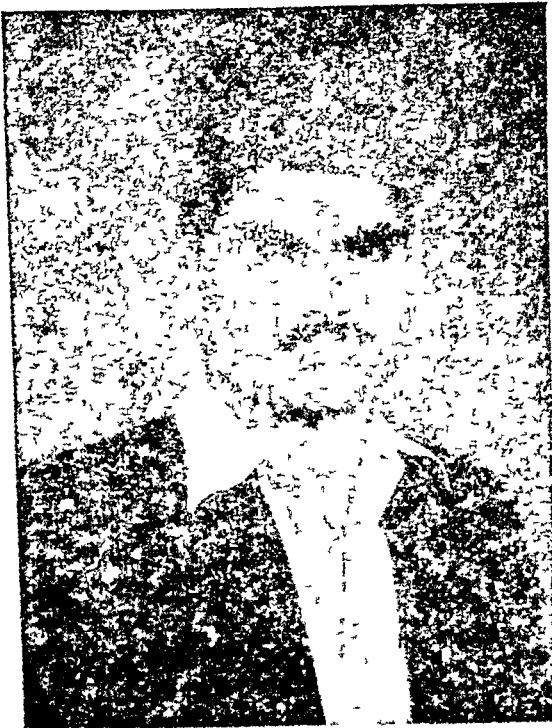
आप सी० पी० प्रान्त के ख्याति प्राप्त भिषककेशरी श्रीमान् पं० गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी के कनिष्ठभ्राता श्री पं० रामलाल जी वैद्यरत्न के सुपुत्र है। आपकी आयु लगभग २४ वर्ष की है। अ० भ० वैद्य सम्मेलन से आयुर्वेद विशारद और हिन्दी साहित्य सम्मेलन से वैद्य विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। ५ वर्ष से चिकित्सा कार्य्य कर रहे हैं। आप एक होन हार वैद्य हैं। आपसे वैद्य समाज और आयुर्वेद का हित साधन हो यही हमारी कामना है।

वैद्य पंचानन श्रीमान् पं० भवानीशंकर जी जोशी

अनोथोपकारक आयु० औषधालय

नीमचकेंट सी० आई

o—o

आपका जन्म श्रीमान् पंडित रामविलास जी वैद्यराज के यहां सम्वत् १६२६ मे हुआ। आप निर्णयसागरीय चण्ड मार्त्तण्ड ब्रह्मपक्षीय पंचांग के कर्त्ता है आपके पंचांग की बड़ी प्रसिद्ध है। आपने ग्वालियर के लश्कर शहर में ज्योतिष वैद्यक की शिक्षा प्राप्त की है। आ० भा० वैद्य सम्मेलन ने आपको आयुर्वेद पंचानन की उपाधि दी है यन्त्र चिन्तामणि आदि ३-४ आयुर्वेदिक और ज्योतिप की पुस्तके भी लिखी हैं। आप बड़े विद्वान मिलनसार और अनुभवी वैद्य हैं।

नपुंसकता पर तिला—

१३४--पीला सोमल ६माशे | पीली हरताल ६ माशे
मन्शिल ६ माशे | ×श्वेत चिरमू ६ माशे
जायफल ६ माशे | ० जयपाल की गिरी ६ माशे
कालाधतूरा ६ माशे | कुचला ६ माशे

×चोंटनी श्वेत ०जमालगोटा की मींग

अफीम ६ माशे | मीठा तेलिया ६ माशे
१ अर्क मूल ६ माशे | अकरकरा ६ माशे
मालकांगुनी के बीज | केंचुआ | बीरबहूटी
श्वेत करवीर मूल की छाल | —प्रत्येक १-१ तोला

विधि--सबको कूट पीस कर एक श्वेत वस्त्र में पोटली बना और २।। सेर दूध को गरम करे खूब गरम होने पर पोटली डाले और औटावें जब १। सेर दूध रह जाय तब उतार कर पोटली निकाल दूध से थोड़ा मठा (तक्र) डाल दही जमादे और दूसरे दिन मथकर लोनी निकाल और गरम कर घृत निकाल रखले और तक्र को जमीन में गाढ़दे--

व्यवहारविधि--

रात्रि को सोते समय १।। माशे घृत को इन्द्री पर धीरे २ मालिशकरे (ध्यान रहे कि सुपारी और सीवन पर न लगे) और बंगला पान गरम कर कच्चे धागे से बांध दे प्रातः काल खोल दे ठन्डे पानी से बचाव रक्खे इस प्रकार १५ दिन तिला लगाने से नपुंसकता नष्ट होजाती है । +

-१ आक की जड़

+ तिला का प्रयोग उत्तम है पर मूल्य अधिक लगता है घृत कम निकलता है। इसके साथ ही साथ पूर्ण चन्द्र रस मल्लचन्द्रोदय चन्द्रोदय गुटिका प्रभृति औषधियां भी सेवन कराते रहे तब विशेष लाभ रहता है।

सम्पादक—

आयुर्वेदाचार्य प्रो० माधवाचार्य जी कवले

प्रोफेसर एन्ड एक्जामिनर आर० एच० मेडीकल कालेज
भारत औषधि चिकित्सा भवन शनीपेठ घ० नं० आर ३८६
जलगांव (पूर्व खानदेश)

—*—

आपका जन्म १६६६ ई० में श्रीमान् बा० भगनराय जी खडुजी कवले देशमुख के यहां हुआ। आपने ढाका मेडीकल कालेज से आयुर्वेदाचार्य और ए. एल. एच. नेशनल होमियोपेथिक कालेज से एम. बी. एच. पास की है। आप प्रोफेसर रह चुके हैं अनेक प्रशंसा पत्र भी प्राप्त किये हैं। आपके अनेक विद्यार्थी वैद्य जिला बोर्ड में नौकरी कर यश प्राप्त कर रहे हैं अब आप एक विद्यालय स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। मृगी हिस्टेरिया के विशेषज्ञ हैं।

नासूर पर—

१३५—कड़वे नीम की हरी पत्ती	५ पत्ती
+ नागार्जुन बड़ी पत्ती का	६ पत्ती

+ नागार्जुन—दुग्ध से नागार्जुनी गौरचदुघी कहते हैं। यह २ प्रकार के होते हैं। बड़ी यह विशेषतः बगीचा तथा ठन्डी जगह में होती है छोटे २ बच्चे इसे तोड़ कर हाथों पर गोदते हैं। यह पारद बंधक है।

लेकर बकरी के ताजे पित्त मे लुगदी बनाकर नासूर के मुंहपर बांध दें। इस प्रकार ७ दिन दोनों समय नवीन प्रयोग बना बना कर बांधे। वैद्य जन रोगी से गोपनीय रखने के लिये कड़वे नीम की पत्ती सुखा कर कूट छान कर रखले और थोड़ी उसमें से भी देकर उपरोक्त प्रयोग मे डालने को कहदें। प्रार्थना है कि परीक्षा कर प्राणाचार्य में अपना अनुभव छपावें।

बलवर्धक—

१३६—ऊट कटियारी की जड़ की छाल सूखी	१० तोला
करवली की जड़ सूखी (अनन्त मूल)	१० तोला
असगंध	५ तोला
लोह भस्म	६ माशे
वगंभस्म	२ तोला

विधि—काष्टौषधि कूट कपड़ छन कर भस्मे मिला ३ दिन खरल में मर्दन कर शीशी में भरलें।

उपयोग—प्रातः सायं तीन तीन माशे धारोष्ण दुग्ध के में थोड़ी मिश्री मिला उसके साथ फांके। ७ दिन सेवन करने से ही लाभ मालूम होता है । १।-१॥ महीने सेवन से पूर्ण लाभ होजाता है। लालमिर्च, खटाई, चाय सेवन न करे ब्रह्मचर्य से रहे तब - निर्बलता नपुंसकता वीर्य विकार नष्ट हो कर रक्त बल कान्ति बढ़ती है।

वैद्यराज श्री पं० गंगादयालु जी शर्मा वैद्य

मरसा पोस्ट बघौली जिला हरदोई

—०—
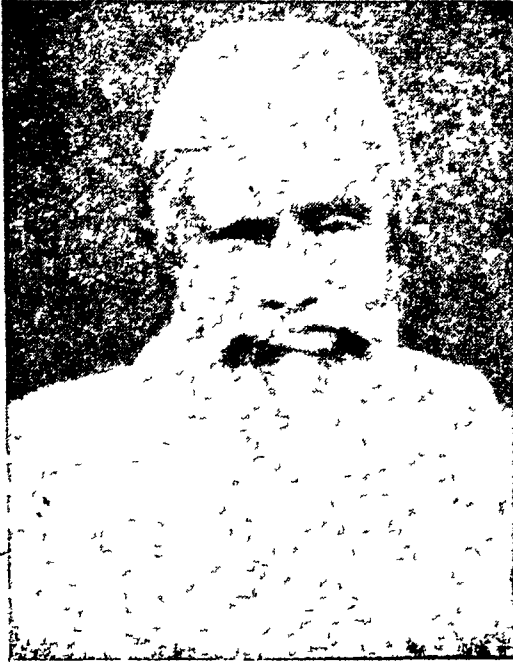
आपकी आयु लग-भग ५७ वर्ष की है। आप श्रीमान् पं० बालक राम जी शर्मा वैद्यराज के सुपुत्र है। आपने अपने घर ही व्याकरण पढ़ प्रथमा पास की और फिर आयुर्वेद पढ़ा, आपके यहां परम्परा से चिकित्सा कार्य होता आया है आप बड़े अनुभवी और सिद्ध वैद्य है। मिलनसार और सरल स्वभाव होने से सबके प्रिय पात्र हैं। अनेक प्रशंसा-पत्र भी मिले हैं ३० वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। वायु रोग के विशेषज्ञ हैं।

नेत्र रोग हर सुरमा—

१३४—शु० गन्धक भांगरे का का रस गौमूत्र

कुकुर भांगरे का रस नीम की पत्ती का रस

पुनर्नवा का रस त्रिफला क्वाथ बकरी का दूध

गौ का घी —प्रत्येक १० —१० तोला

शीशा २० तोला

विधि—शीसों को कढ़ाई में डाल गरम करें और, जब पिघल जाय तब प्रथम भांगरे के रस में बुझा दें इस प्रकार ७ बार बुझावे

और इसी प्रकार सब औषधियों के रस गौ मूत्र घृत में बुझावे उसके बाद साफ कर उसमें से थोड़ा शुद्ध शीशों लेकर एक सलाई बनाकर रखले शेष शीशों शुद्ध को कढ़ाई में डाल गरम करे जब पिघल जाय तब थोड़ी २ गन्धक डालता जाय और लोह की मूसली से घोटता जाय जब सब गन्धक पड़ जायगी तब उस शीशो की भस्म हो जायगी यदि मोटी ककड़ी सी रहे तब खरल में घोटने से या सिललोढ़ी से पीसने से बारीक हो जायगी तब कपड़ा से छान लें और उस शीशों की भस्म का दसवां हिस्सा उड़ाया हुआ कपूर मिला मर्दन कर शीशी में भरकर रखलें

व्यवहार-विधि—शुद्ध शीसा की सलाई से प्रातः सायं नेत्रो में लगावे किन्तु लगाने से १ घण्टा पूर्व निम्न "नेत्र रोग हर पोटली" से सेक भी करलें। मोतियाबिन्दु को छोड़कर और सब रोगों में लाभप्रद है। फुलो जो १ वर्ष की हो वह २-३ महीने धैर्य पूर्वक सेक और अंजन से नष्ट हो जाती है। इस अंजन से कफज खाँसी, श्वाँस, हृदय की निर्बलता में भी लाभ होता है। एक २ रत्ती यह सुरमा शहद अद्रक के स्वरस के साथ सेवन करावे।

नेत्र रोग हर पोटली—

१३८—लोध पठानी आमले सूखे पुनर्नवा
छोटी हरड़ —प्रत्येक १-१ तोला

विधि—चारों को कूट कपड़ा में छान थोड़े गौ घृत को मिला एक-एक तोले की पोटली बना ले और तवे पर रख गरम कर उससे नेत्रों का सेक करावें।

वात रोग हर तैल—

१३९—मालकांगुनी के बीज ८० तोला
मीठा तेलिया कुचला लोद्बान कोड़िया
एक सौ छियालीस

लौंग　　　　जायफल　　　　बादाम की मींग

प्रत्येक ५-५ तोला

विधि—प्रथम मालकाँगुनी को बारीक कूट लें पश्चात् सब औषधियां पृथक २ बारीक पीस कर मिला देनी चाहिये और एक आतशी शीशी में भर कर पाताल यन्त्र से तैल (तिला) निकाल लेना चाहिये ।

व्यवहार विधि —यह तैल सब प्रकार के वायु रोग में लगाते ही लाभ मालूम होता है। जहां दर्द अथवा सूजन हो वहाँ मालिश करनी चाहिये मालिश करते ही दर्द दूर हो जाता है। पक्षाघात में भी अधिक लाभदायक है, गठिया में तथा किसी भी प्रकार के वात के दर्द में तथा निमोनियाँ में छाती के दर्द को भी लाभ करता है। कमर दर्द को भी अति लाभदायक है। पेट के वायु-शूल और कफशूल मे १-२ बूंद बताशे में डालकर खिलाने से तत्काल शूल शान्त हो जाता है। वायु रोगों में भी १-२ बूंद प्रातः सायं सेवन कराने से लाभ होता है। नपुंसकता मे तिला के स्थान पर व्यवहार से अति लाभदायक है। अनुपान भेद से लगाने खाने से अनेक अनेक रोग नाशक है।

पाताल यन्त्र बिधि—

एक मिट्टी की नांद के पैंदे में बीच में एक ऐसा छेद करें कि आतशी शीशी की नाल निकल सके और उस छेद को छोड़ बाकी सब पैंदे पर कपड़मिट्टी कर सुखा ले और १ आतसी शीशी पर भी ५-७ कपरौटी कर सुखा लें। सूखने पर शीशी में औषधि भर दे और उसकी नाल खाली रक्खे उस नाल मुख में सींकें भर मुख सींकों से ही बन्द करदे पर सींक अधिक न लगावे जिससे तैल ही न निकल सके और इतनी ढीली भी न रक्खे कि उलटी करने

पर सींक और दवा ही निकल पड़े उसशीशी को नाद के मुख में छेद में उलटी रक्खे जिससे नाल बाहर निकल जाय और उसके शीशी के चारोतरफ एक टीन का नाल बड़ा खोलकर रखदें और बालू भर दें उसके बाद नांद में कण्डा भर आंच लगा दे और शीशी के नीचे एक प्याला रख दे। आंच से बालू और बालू मे शीशी गरम हो दवा से तैल निकल सीकों के सहारे प्याले मे आजावेगा जब तैल कम निकलने लगे या न निकले तब १ सींक निकाल देखे उसका ऊपर का सिरा जला हो तब समझ ले कि सब तैल निकल चुका यदि जला न हो तब अग्नि और लगावें। इस प्रकार तिला (तैल) निकालना चाहिये। इसे पाताल यन्त्र कहते हैं यह विधि लेखक की लिखी विधि में कुछ परिवर्तन कर सम्पादक ने लिख दी है।

जयपाल स्नेह—

१४०—पुष्ट (पके हुए) जमालगोटा के बीज ५ तोला लेकर छिलका दूर कर महीन कपड़ा मे बांध भैंस के गोबर में गाड़ दे दूसरे दिन पोटली निकाल नवीन गोबर मे गाढ़ दे इस प्रकार ३ दिन गोबर में रक्खें पश्चात् जमालगोटा की मींग निकाल साफ कर उसको चीर २ कर बीच में जो पतली पत्ती सी होती है उसे निकाल दें। पश्चात् दूध में पीस एक कोरी मट्टी की हांडी पर लेप कर दे जब सूखकर सफेद हो जाय तब निकाल लें यह शुद्ध जयपाल (जमालगोटा) है। उसको गुलाब जल में घोट पांच सेर दूध में मिला गरम करें और दही जमा दे दही जमने पर मथ कर नवनीत निकाल ले और नवनीत को गरम कर स्वच्छ घी निकाल थोड़ा सुगन्धी के लिये गुलाब केवड़ा इत्र = मिला शीशी

= नीबू का तैल उत्तम रहता है। —सम्पादक

में भर कर रखलें।

व्यवहार विधि—२ बूंद घृत एक बतासे में डाल खिलावे ऊपर से गुनगुना पानी पिलावें तो अच्छा विरेचन होता है उदर जलोदर में लाभदायक है।

विद्या भास्कर वैद्यराज रणवीरसिंह जी शास्त्री

इन्द्र आयुर्वेदिक औषधालय

नाई मंडी—आगरा

—*—

आपकी आयु लगभग ३० वर्ष की है आप क्षत्रिय राजपूत रावत खानदान के रत्न हैं। आप ठा० इन्द्रसिंह जी रावत ऊंचा कोट (गढ़वाल) निवासी के सुपुत्र हैं। आप गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर के स्नातक हैं और वहीं से विद्याभास्कर उपाधि प्राप्त की है। व्याकरण मध्यमा और नव्य व्याकरण शास्त्री है। वैद्य सम्मेलन के आयुर्वेदाचार्य हैं अनेक प्रशंसापत्र प्राप्तकर चुके हैं उदर सम्बन्धी रोगों के विशेष चिकित्सक हैं।
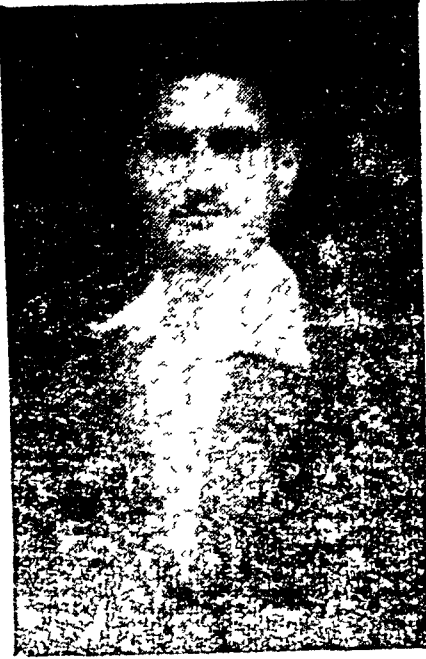
अर्कपुष्पादि वटी—

१४१—अर्क पुष्पहरे १॥ सेर काली मिर्च
जीरा काला जीरा सफेद लवंग
लाल मिर्च के छिलके पोदीना सूखा पीपल छोटी
हींग भुनी चित्रक छाल प्रत्येक १०-१० तोला

काला नमक	सैंधा नमक	प्रत्येक डेढ़-डेढ़ पाव
नीबू का सत्व (सामुद्रिक एसिड)		१० तोला

विधि—नवीन अर्क पुष्प वृन्त (डण्ठलों) को तोड़ कर पानी से धो कर फूलों को बारीक पीसलें शेष औषधियों को पृथक कूट कपड़ छन करले और पिसे हुए फूलों में मिला पीस कर गोली बनाने योग्य बना बेर की गुठली के बराबर गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—एक गोली से ४ गोली तक दिन मे कई बार गुनगुने पानी के साथ या वैसे ही चबालें स्वादिष्ट होती है। बालकों को आधी चौथाई दें। इससे पेट का दर्द, अजीर्ण, अरुचि, अफरा, आदि उदर सम्बन्धी सब ही रोगों में लाभदायक है। यह योग स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती जी से प्राप्त हुआ। हमारा सैकड़ों बार का परीक्षित है।

अम्लापगा गिरीन्द्ररस—

भंवराम्मीहि १ तो०
रसोत १ तो०

१४२—सोनागेरू	२ तोला	पीपल की लाख	१ तोला
फिटकिरी फूला	२ तोला	सेलखड़ी शुद्ध	१ तोला
वंसलोचन असली	१ तोला	प्रवाल भस्म	२ तोला
मुक्ताशुक्तिभस्म	१ तोला	जहरमोहरापिष्टी	१ तोला
अकीकपिष्टी	१ तोला	शीतल चीनी	२ तोला
पत्थर का दिल	२ तोला	श्वेतांजनभस्म	२ तोला
रस सिन्दूर	२ तोला	सत्व पिपरमेंट	१ तोला

विधि—सब चीजों को बारीक पीस कपड़ा में छान कर अर्क केवड़ा अर्क गुलाब, गेंदे के पत्तो का अर्क, अनार की पत्ती का अर्क, श्वेतचन्दन का काथ, अर्क बेदमुश्क सबकी पृथक २ एक एक भावना दे और चने बराबर गोली बना रखले।

गुण—

यह मेरा सिद्ध प्रयोग है कहीं से भी रक्त का श्राव हो आभ्यन्तर एवं वाह्य प्रयोग से शीघ्र ही लाभ होता है। भिन्न २ अनुभवों से, प्रदर, रक्तप्रदर, रक्तपित्त, रक्तप्रवाहिका, रक्तातिसार, पित्त-विकार, तृष्णा, हृदयरोग प्रमेह आदि अनेक रोगों पर लाभ प्रद है। +

आम कामेश्वर चूर्ण—

१४३—कुड़ा की छाल भुनो ३ पाव सोंठ भुनी १० तोला

चित्रकमूल छाल	१० तोला	पांचों निमक	१ पाव
सोंफ भुनी	१० तोला	वेलगिरी	५ तोला
पोस्त के डोड़े भुने	१० तोला	भांगभुनी	१ तोला
हींग भुनी	४ तोला	सफेद जीरा भुना	१० तोला
नागकेशर	१० तोला	हरड़ छोटी भुनी	१० तोला

विधि—जिनके आगे भुनी लिखा है उनको लोह पात्र या मट्टी के पात्र ईषत् भर्जित कर लेना चाहिये। जलने न पावे यह ध्यान रहे पुनः सब को कूट कपड़ छन कर रखले।

व्यवहार विधि—बालकों को १ माशे से २ माशे और युवाओं को २ माशे से ६ माशे तक पानी तक्र, निम्बु रस, शर्वत वेलगिरी आदि किसी के साथ सेवन करावें।

× प्रातः सायं एक एक गोली ताजे जल या साठी चावल के पानी के साथ सेवन करना चाहिये। आवश्यकता पर अधिक बार भी दे सकते हैं। रोगानुसार अनुपान के साथ व्यवहार करें लाभ अवश्य करता है। वाह्य रक्तश्राव पर हमने अनुभव नहीं किया है।

—सम्पादक

गुण—आमदोष के लिये प्रधान औषधि है। अतीसार प्रवाहिका संग्रहणी उदरशूल में भी लाभ दायक है। गर्भवती स्त्रियों को यह प्रयोग नहीं दें।

वैद्यभूषण पं० विश्रामानन्द जी शास्त्री

विश्राम रसशाला मदन झांपा रोड
बड़ौदा

—x—

आपका जन्म सन १९६८ में श्रीमान् पं० खेम जी भाई के यहां हुआ। आप अपने पिता जी के साथ अफ्रीका चले गये थे वहां शिक्षा प्राप्त करते रहे थे आपने संस्कृत की शास्त्री और आयुर्वेद की वैद्य भूषण, भिषक, वैद्यरत्न आर० ऐम० बी० आदि उपाधियां प्राप्त की और धर्मार्थ औषधालय खोल चिकित्सा कार्य कर अनुभव और यश प्राप्त किया। आप आरोग्य प्रचारक मंडल के मंत्री और अहमदाबाद वैद्य सभा के सदस्य हैं।

वातव्याधि हर रस—

१४४—शुद्ध बच्छनाग १ तोला
रसकपूर ६ माशे
चीते की छाल २ तोले
शुद्ध संखिया ३ माशे
रस सिन्दूर ३ तोले
लवंग २ तोले
केशर २ तोले

विधि—लवंग चित्रक केशर वच्छ नाग कूट कपड़ छन करलें एक खरल में प्रथम रस सिन्दूर डाल ग्वार पाठे के रस में मर्दन करें पश्चात संखिया, रस कपूर डाल मर्दन करें फिर कपड़छन दवा डाल मर्दन कर एक एक रत्ती की गोली बना सुखा रखलें।

उपयोग विधि—एक एक वटी प्रातः सायं दूध के साथ निगलने से वात व्याधि जन्य दर्द शोथ नष्ट होता है।

आमातिसार नाशक—

१४५—रार सफेद ४ तोले भुनी हींग १ तोला
अफीम शु० १ तोले अतीस २ तोले
मरोडफली २ तोले शुद्ध धतूरे के बीज १ तोले

विधि—अदरख के रस में गोली एक एक रत्ती की बनावें प्रातः सायं एक एक गोली इसबगोल की भुसी के चुआव में देने से आमातिसार, मरोड़ा, ऐंठन और दर्द बन्द होजाता है।

काव्यतीर्थ पं० शिवनाथ जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

बुरहानपुर सी० पी०

आपका जन्म सन् १६०८ में हुआ, आप औदीच्य टोलकिया ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान् पं० वैजनाथ जी वैद्यराज के सुपुत्र हैं, आपके यहां चिकित्सा कार्य परम्परा से चला आता है। आपने बम्बई में वसनजीमन जी संस्कृत कालेज से साहित्य, व्याकरण, न्याय की शिक्षा प्राप्त कर कलकत्ता की काव्यतीर्थ, आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली की आचार्य धन्वन्तरि पास की है, आप बड़े योग्य और प्रतिष्ठित वैद्य हैं, अनेक सभा सोसाइटियों के पदाधिकारी एवं म्युनिसिपल कमेटी के वाईस प्रेसीडेण्ट भी रह चुके हैं।

वात-व्याधि हर वटी—

१४६—शुद्ध कुचला काली मिर्च प्रत्येक ५-५ तोला

सोंठ	१ तोला	सुरंजान सीरी	२ तोला
असगन्ध	२ तोला	विधारा	३ तोला
कस्तूरी	१ माशे	अफीम शुद्ध	१ तोला

विधि—प्रथम कुचला को ११ दिन गौमूत्र में भिगो दें (गौमूत्र रोजाना बदलना चाहिये) बाद को चाकू से छील और बीच से दो परत अलग कर उसमें लगी जीभ (पत्ता) निकाल दें और कूट कर सुखा लें फिर थोड़े घृत में भून कर अफीम, कस्तूरी अलग कर शेष सब औषधियां मिला कूट कपड़ छन करलें और १ खरल में प्रथम कस्तूरी डाल थोड़ा पान का स्वरस डाल मर्दन करें जब अच्छी प्रकार घुट जाय तब अफीम शुद्ध करके डालें और पुनः पान का स्वरस डाल मर्दन करें जब कस्तूरी अफीम अच्छी तरह घुट जाय तब शेष औषधि कपड़ छन की हुई मिला पान का स्वरस डाल १ दिन मर्दन कर बाजरे के बराबर गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—प्रातः सायं अथवा आवश्यकता के समय एक-एक गोली गरम पानी के साथ खिलाने से बात व्याधि जन्य कष्ट दूर होते हैं। दर्द शीघ्र बन्द होता है प्रसूति स्त्रियों को भी लाभप्रद वे।

श्रीमान् वैद्य पं० विट्ठलराम हीरालाल जी त्रिवेदी

आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि रामगंज, खंडवा सी० पी०

—:—
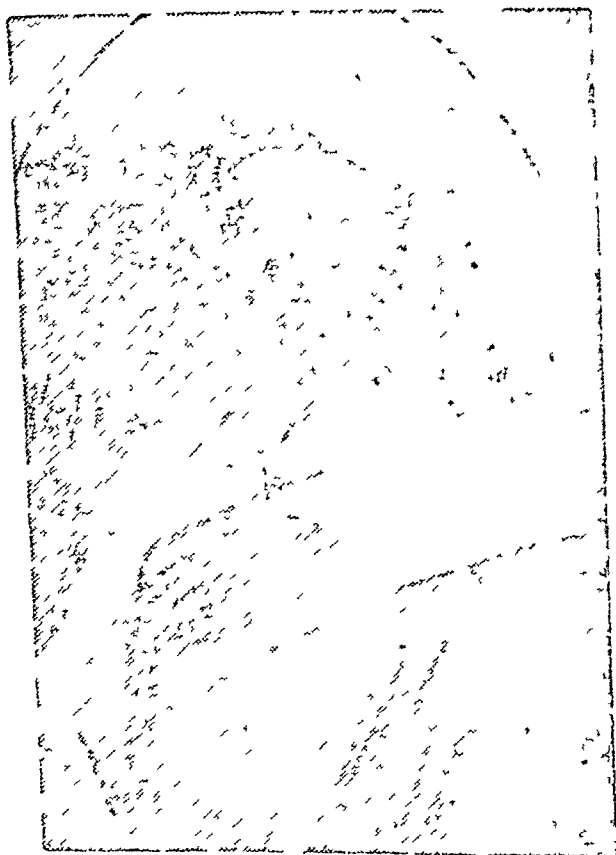
आपका जन्म सन् १६०५ में गुजराती श्रीमाली ब्राह्मण कुल में हुआ, आप बुरहानपुर निवासी पं० हीरालाल जी त्रिवेदी के पुत्र हैं। आपने संस्कृत याज्ञिक विषय और वेदाध्ययन कर देहली के तिब्बिया कालेज से आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि की उपाधि प्राप्त की। ११ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आप प्रसिद्ध और अनुभवी वैद्य है। ग्रहणी मन्दाग्नि रोग में आप की अधिक ख्याति है।

ग्रहणी रोग हर—

१४७—शु० पारा शु० गन्धक प्रत्येक २-२ तोला
सोंठ धार की पीपल छोटी काली मिर्च
अजमोद प्रत्येक १॥-१॥ तोला सुहागा भुना १। तो०
जीरा सफेद २ तोला तालीस पत्र १ तोला
जायफल १ तोला भांग धुली १५॥ तोला

विधि—पारद, गन्धक की कज्जली करलें और शेष औषधियों को कूट कपड़ छन कर अलग रखलें, कज्जली खरल में डाल थोड़ा कपड़ चूर्ण उसमें डाल घोटे जब वह स्याह हो जाय तब पुनः थोड़ा चूर्ण डालें और घोटे इस तरह थोड़ा २ डालते रहें और घोटते रहें जब सब काला चूर्ण होजाय तब पुनः छान कर शीशी में रखलें।

सेवन-विधि-प्रातः सायं चार-चार रत्ती तक्र (छाछ) के साथ फकावें तक्र गौ का हो और उसमें काला नमक, जीरा भुना, सेंधा नमक डाल कर पिलावें, पथ्य में भी अधिकतर तक्र ही दें, इससे ग्रहणी रोग नष्ट हो जाता है पुराने दस्त बन्द हो जाते हैं।

चिकित्सक श्रीमान् वैद्य खटाऊ प्राग जी ठक्कुर

आयुर्वेदिक औषधालय कोजा चोरा पो० आसंबिया

जिला मांडवी (कच्छ)

—*—

आपका जन्म सम्वत् १६३६ वि० में श्रीमान् प्राग जी ठक्कुर के यहां हुआ, आपने वैद्यक अपने दादा जी से ही पढ़ी और उनके साथ चिकित्सा कर अनुभव प्राप्त किया, आप बम्बई के मेडिशन बोर्ड से रजिस्टर्ड चिकित्सक हैं, रतलाम के राजवैद्य ब्रह्मचारी गौरीशंकर जी महाराज से भी शिक्षा और अनुभव प्राप्त किया।

त्रैलोक्य मोहन रस—

१४८—शुद्ध पारद   शुद्ध गन्धक   वङ्ग भस्म
शिलाजीत शुद्ध   मोती भस्म

—सब समान भाग लेकर पाषाणभेद के क्वाथ, घीग्वार का रस, मुलहठी का क्वाथ, नीम गिलोय का क्वाथ, त्रिफला का क्वाथ की

पृथक् २ भावना दे खुश्क कर कपरौटी की हुई आतशी शीशी में भर वालुका यन्त्र में रख मन्द २ अग्नि पर पकावे ठण्डा होने पर निकाल कर रख ले। इस त्रैलोक्य मोहन रस को एक रत्ती की मात्रा से चोबचीनी के चूर्ण के साथ सेवन कराने से सब प्रकार के प्रमेह और धातु विकार दूर होते हैं। यह रस रसप्रदीप का है शास्त्रीय होने पर भी मेरा विशेष अनुभूत है इसीलिये प्रकाशित कर रहा हूँ।

विद्या विनोद पं० पूर्णानन्द जी शास्त्री जोशी

प्रधानचिकित्सक श्री सार्वजनिक औषधालय श्रीमाधोपुर (जयपुरस्टेट)

आपकी आयु लगभग ४० वर्ष की है राखोली निवासी श्रीमान् पं० प्रेमसुख जी जोशी के सुपुत्र हैं। आपने व्याकरण तीर्थ ज्योतिष शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य आदि परीक्षाएं उत्तीर्ण की है। आप बड़े उद्योगी और मिलनसार हैं आप अपने प्रान्त में बड़े प्रसिद्ध वैद्य हैं। वैद्य सम्मेलन आदि वैद्यक संस्थायें आपके उद्योग से अच्छा कार्य कर रहे हैं।

आप अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी हैं।

पामा हर—

१४६—डंडा गंधक १ तोले नीला थोथा ६ माशे

कबीला ५ तोले अढार के बीज (प्रयन्नाट बीज) ३ तोले

—चारों को अलग २ कपड़ छन चूर्ण कर उन सब को खरल में डाल गिरी का तैल इतना डाले कि घोटते २ मरहम बन जाय।

उपयोग—मरहम बनने पर रखले और शरीर पर मालिश कर ७ घण्टे बैठे रहे उसके बाद कारबोलिक या नीम के साबुन से स्नान करले। ५-७ दिन में ही खाज खुजली जाती रहती है दाद को भी लाभप्रद है।

रक्तप्रदर—

१५०—+शुद्ध गेरू ३ माशे शु० सफेद राल ३ माशे

दोनों को पीस छान रखले। तीन तीन माशे प्रातः सायं चावलों के पानी के साथ फंकाने से रक्त प्रदर ३-४ दिन में नष्ट हो जाता है।

शुद्ध—सोनागेरू घी में सेक कर दूध की भावना देने से शुद्ध हो जाती है। पथ्य में गरम पदार्थ नहीं देने चाहिये।

वैद्यभूषण रामखिलावनलाल जी वर्मा वैद्य

गोंडपारा, बिलासपुर सी० पी०

o—o

आपका जन्म सम्वत् १९१९ वि० में श्रीमान् ठा० प्रभूदयालु जी के यहां हुआ। आपने बनारस की आयुर्वेद भूषण तथा वैद्य सम्मेलन की भिषगवर परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप ६२ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं, आप बड़े अनुभवी चिकित्सक हैं।

सन्निपात पर कालारिरस—

१५१—शु० पारा १ तोला
शु० सिंगी मोहरा २२ माशे
पीपर छोटी ४० माशे
शु० धतूरे के बीज १३ माशे
जायफल १० माशे
शु० गंधक २० माशे
काली मिर्च २० माशे
लोंग १६ माशे
शु० सुहागा २० माशे
अकरकरा १२ माशे

विधि—पारा, गंधक, की कजली कर बाकी औषधि कूट छान कर मिला दें और तीन दिन अदरख के रस की भावना दें और ३ दिन नीबू के रस की भावना दें और बेला के रस की १

भावना देकर एक एक रत्ती की गोली बना सुखा रखले।

सेवनविधि—वायु और सन्निपात के रोगियों को अदरख के रस ६ माशे में १ गोली मिला कर दें दिन में ४ गोली तक दे सकते हैं। अर्थात् ४ मात्रा दे सकते हैं। जलअर्द्धावशेष दें।

उकवत (पामा विचर्चिका)—

१५२—एक बांस को फाड़ कर छोटे २ टुकड़े करीब ४ अंगुल के कर एक हांडी में भरदें। हांडी का मुख बन्द कर सन्धि रोध करदें और पेंदे में सूजे से छेद करदे अर्थात् पातालयन्त्र बिधि से तैल निकाल लें। भैंसे के गोबर से धोकर इसके लगाने से उकवत (पामा विचर्चिका, दाद,) को लाभ करता है।

आयुर्वेद भूषण श्री० वैद्य गंगाराम जी साहू

गोडगारा, बिलासपुर सी० पी०
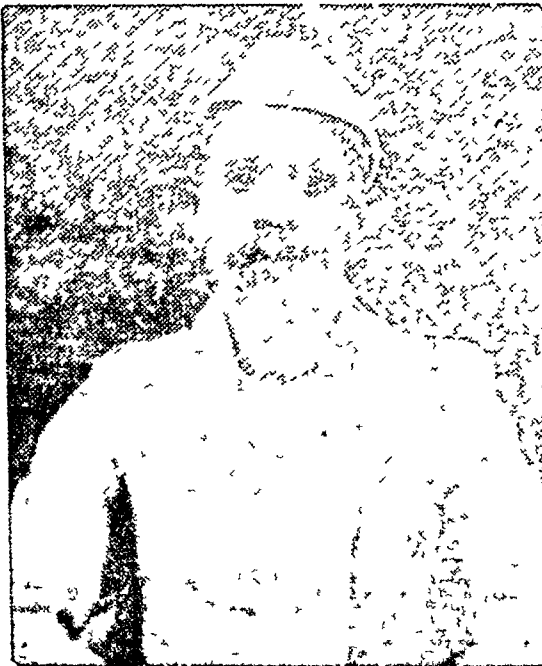
आपका जन्म सम्वत् १९७३ वि० में श्रीमान् लाला उदेराम जी साहू के यहां हुआ। आपने बनारस से आयुर्वेदभूषण की उपाधि प्राप्त की है। कार्य क्रिया कुशल और अनुभवी वैद्य हैं।

आंत्रवृद्धि पर—

१५३—अफीम २ माशे गन्दा बैरोजा ६ माशे
कौड़िया लोहबान ४ माशे माजूफल ६ माशे

विधि—अफीम गन्दाबैरोजा को मिला कपड़े की पट्टी पर लगा ऊपर से लोहबान माजूफल कपड़ छन चूर्ण कर बुरक दें और अण्डकोष पर सरसों या बाबूना का तैल लगा कर ऊपर से पट्टी बांध दें। १२ घण्टे के बाद पट्टी बदलनी चाहिये ७ दिन में आंत उतरना बन्द हो जाता है। बालकों की आंत उतरने पर ही हमने विशेषता से व्यवहार किया है।

बालरोग हर रस -

१५४—शु० गन्धक शु० पारद प्रत्येक ४ ४ माशे
स्वर्ण माक्षिक भस्म २ माशे

विधि—सब औषधियां लोह खरल में डाल कज्जली बनाले फिर भांगरा और सम्हालू के रस में घोल कर सरसों के बराबर गोली बना सुखा रखले।

सेवन विधि—मात्रा-१ गोली से ३ गोली तक। माता के दूध के साथ प्रातः सायं देने से बालकों का सन्निपात, भूतज्वर, जीर्णज्वर, खाँसी, शूल रोग नष्ट होते हैं।

श्रीमान् पं० काशीप्रसाद जी मिश्र वैद्य शास्त्री

अध्यक्ष आयुर्वेदिक सेवा सदन

नवाबगंज जिला उन्नाव

—※—

आप की आयु लगभग ५० वर्ष की है। आपका जन्म श्रीमान् पं० गृर्य्यवली मिश्र के यहां हुआ। आपने राजवैद्य ठा० मेडईसिह जी आयुर्वेदाचार्य से विधिवत आयुर्वेद पढ़ा है और २८ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर अनुभव प्राप्त किया है। गरीब रोगियों की निशुल्क चिकित्सा बड़े प्रेम से करते है।

स्वप्न दोष—

१५५—कपूर देशी, अहिफेन, कुकुटांण्डत्वक भस्म (मुर्गी के अंडे के छिलके की भस्म) तीनों औषधियों को सामान भाग लेकर बड़े गोखरू के अष्टमांश क्वाथ में एक पहर खरल कर दो दो रत्ती की गोली बना छाया मे सुखा ले।

सेवनविधि—एक एक गोली प्रातः और रात्रि को सोते समय गुन गुने दूध मिश्री मिले के साथ सेवन करें। इसके सेवन से स्वप्न दोष अवश्य दूर होजाता है। अम्ल, कटु, उष्ण पदार्थ नहीं खाने चाहिये। सोते समय ठन्डे जल से हाथ पैर मुख धो कर और अपने इष्ट देव का नाम लेते हुए सोना चाहिये।

नामर्दी नाशक-

१५६—अमृता सत्व, रेगामाही, कुक्कुटाण्ड भस्म समान भाग ले कौंच की जड़ के अष्टमांश क्वाथ के साथ मर्दन कर चार चार रत्ती की गोली बना सुखा रखले।

सेवनविधि-एक गोली प्रातः और एक गोली रात्रि को एक एक प्याले चाय के साथ सेवन करावे इसके सेवन से नपुंसकता दूर होती है। शीघ्र पतन नष्ट होता है बल बढ़ता है।

वैद्य शास्त्री जुगलकिशोर जी शास्त्री

किशोर आयुर्वेदिक औषधालय
मुन्नालाल स्ट्रीट परेट, कानपुर

—०—

आपका जन्म सन १९०३ ई० को गढ़ीवाल श्रीवास्तव कायस्थ कुल भूषण लाला राममोहन लाल जी के यहां हुआ था। आपने संस्कृत की शास्त्री परीक्षा दी श्री प० जगन्नाथ जी आयुर्वेदाचार्य द्वारा आयुर्वेद विद्यालय मे अध्ययन कर वैद्य भूषण, वैद्यशास्त्री की परीक्षाये दी थी। पांच वर्ष दिगम्बर जैन धर्मार्थ औषधालय कानपुर में कार्य कर निज औषधालय खोल चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपने अनेक उच्च अधिकारियों की चिकित्सा कर सफलता प्राप्त की है। साथ ही अनेक प्रशंसा पत्र भी प्राप्त किये हैं।

श्लीपद हर-

१५७-विधि-सिहोरे की छाल को कुचलकर सोलह गुने पानी में पकावें जब चतुर्थांश रहे तब मथ कर छानले और पुनः कढ़ाई
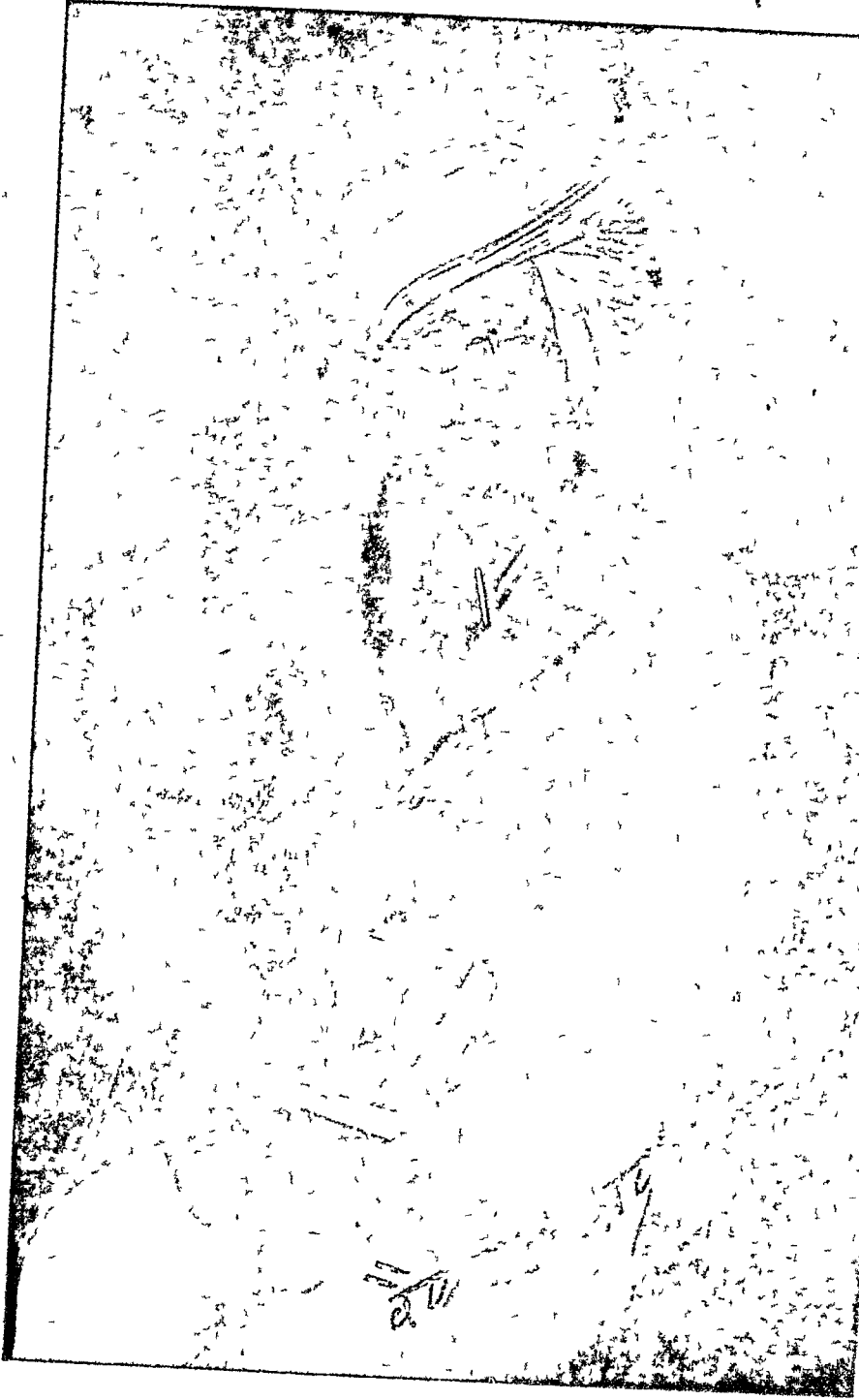
आयुर्वेदाचार्य श्री० साधुसिंह जी कछवाहा
देश हितकारक औषधालय, कन्नौज ।

में डाल पकावें । जब लेहवत् गाढ़ा हो जाय तब उतार कर ठन्डा करे और गोली बनाने योग्य होने पर रीठा की बराबर गोली बना सुखा रखले ।

सेवनबिधि-एक एक गोली प्रातः और सायं काल—सिहोरे की छाल १ तोला को कुचल कर ३० तोला पानी में पकावे जब ७॥ तोला पानी रहे तब छान कर १ तोला काली गाय के मूत्र को पिला गोली के ऊपर पिलाना चाहिये । इसके सेवन से एलोपैथिक में फायलोरिया जो कि आयुर्वेद में श्लीपद के अन्तर्गत है दूर हो जाता है । ३-४ सप्ताह सेवन से ही रोगी स्वस्थ हो जाता है ।

पथ्य में—सभी प्रकार की दाल, दही, चावल, मठा, केला मूली लौका आदि नहीं खाना चाहिये । भोजन के समय पानी बिल-कुल नहीं पीना चाहिये । भोजनोपरान्त एक घण्टे बाद पानी पीना चाहिये । सायं काल का भोजन सूर्यास्त से पहले कर लेना चाहिये । सूर्यास्त के बाद भोजन और पानी भी नहीं पीना चाहिये । खाने के लिये—गेंहू का दलिया हरी-तरकारियां के साथ खाना चाहिये । खरबूजा, पपीता, मोस-म्मी भी सेवन कर सकते हैं । दस्त प्रति दिन साफ होता रहना चाहिये । यदि कोष्ठ बद्धता हो तब प्रति दिन एनिमा लेते रहना चाहिये । अथवा सोते समय पेराफीन लिकिड आधी छटांक पीना चाहिये ।

यक्ष्मा हर-

१५८—स्वर्ण भस्म ६ माशे | मोती भस्म ६ माशे
सत्व गिलोय ६ माशे | वंसलोचन असली ६ माशे
छोटी इलाइची के बीज ६ माशे | पित्तपापड़ा ६ माशे
निबौली का गूदा ६ माशे | अजमायन ६ माशे
चिरायता ६ माशे

विधि—वनौषधियों को पृथक २ कूट कपड़ा में छान कर ६ माशे तोल कर लेना चाहिये। सबको खरल में डाल मर्दन कर २१ रत्ती तुलसीदल और २ तोला मिश्री मिला कर खूब मर्दन कर रख लेना चाहिये।

सेवनविधि—प्रातः सायं तीन तीन माशे औषधि लाल बकरी के दूध के साथ पकाना चाहिये। १५ दिन सेवन से ही यक्ष्मा रोगी जो कि प्रथमावस्था का हो उसे खूब लाभ मालुम हो जाता है। धीरे २ रोग निर्मूल हो जाता है।

आयु० शास्त्री श्री वैद्य लादूराम जी विरक्त

हनुमान विजय फार्मेसी, कैरू (जोधपुर) मारवाड़
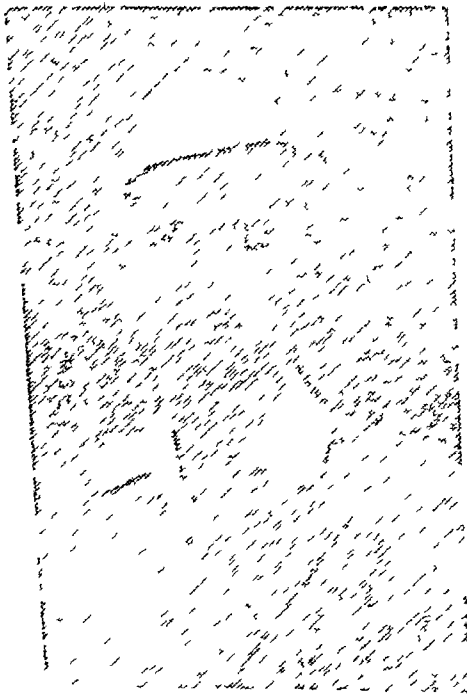
आपकी आयु २२-२३ वर्ष की होगी। आप साधु सम्प्रदाय के हैं। २ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपने आयुर्वेद-शास्त्री काव्यतीर्थ वैद्यरत्न परीक्षा उत्तीर्ण की हैं। आप होनहार वैद्य हैं।

गरमी से गठिया होने पर—

१५६—रसकपूर	शु० पारा	काली मिर्च
शीतल मिर्च	पाषाण भेद	छोटी इलायची

वड़ी इलायची	अजमोद	लवंग
खुरासानी अजमायन		प्रत्येक १-१ तोला

शु० भिलावा २।। तोला पीपरा मूल २ तोला

विधि—प्रथम रस कपूर शु० पारद खरल में डाल मर्दन करें और शेष सब सब औषधियों को कूट कपड़ छन कर उसी खरल में डाल मर्दन कर शीशी में रखले।

उपयोग—प्रातःकाल १ तोला+ औषधि जल के साथ फंकादें। १४ दिन में ही रोगी को लाभ हो जाता है। पथ्य में नमक नही दें खटाई आदि भी नहीं सेवन करें। चना, गेहूँ, घी, मिश्री, फल सेवन करे।

वातविकार-

१६०—चोवचीनी	४० तोला	दालचीनी	६ माशे
वंशलोचन	अकरकरा	लवंग	जावित्री
पीपर	सोंठ	सफेद मूसली	जायफल

प्रत्येक ६-६ माशे

विधि—सव औषधियों को कूट कपड़ा में छान ४५ तोला मिश्री पीस कर मिला कर रखलें। प्रातः १ तोला गौ दुग्ध के साथ लेने से सारी हड्डियों की पीड़ा, हाथ पैरों का दर्द और सरग चलती हो वह सब ठीक होजाती है। पथ्य अच्छी प्रकार करें। खटाई, तैल, गुड़, लहसन आदि नहीं सेवन करने चाहिये।

+ १ तोला की मात्रा अधिक समझ ३ माशे सेवन कराई गई और लाभप्रद हुई।

श्री० पं० रामरतन जी दीक्षित आयुर्वेद शास्त्री

दीक्षित आयुर्वेदीय औषधालय विलासपुर (रामपुर स्टेट)
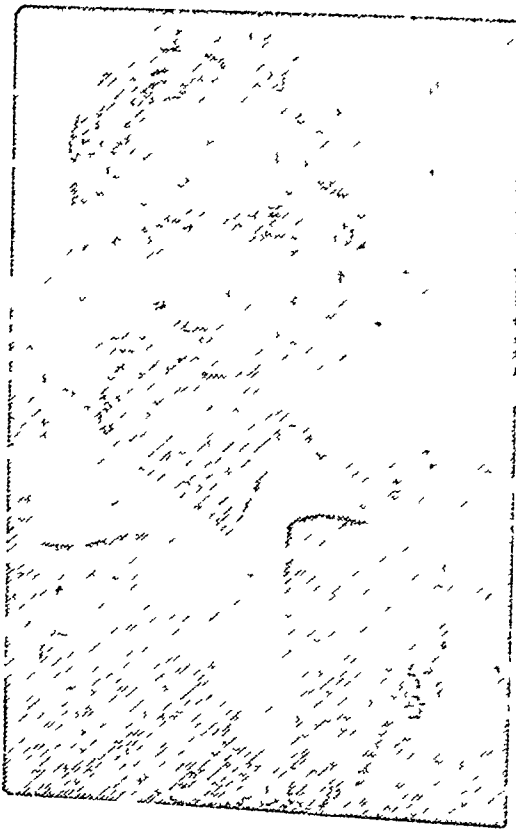
आप ब्राह्मण कुल के श्री० प० रामनारायण जी वैद्य के पुत्र है। आपकी आयु २४ वर्ष के लगभग है आपने अपने पिताजी से अनुभव और (पीलीभीत, ललितहरि) आयुर्वेदिक कालेज से आयुर्वेद शास्त्री की उपाधि प्राप्त की है। आप उद्योगशील और अनुभवी वैद्य है।

कासान्तकावलेह—

१६१—सत्त मुलहठी पोस्त दाना लहसोड़े
बंसलोचन असली —प्रत्येक ४-४ तोला
शकरतिगाल कालीमिर्च सुहागा भुना २-२ तोला
गोंद बबूल १ तोला दालचीनी ६ माशा
बादाम की मींग १६ तोला मुनक्का ८ तोला
पीपल छोटी ६ तोला मिश्री २ सेर
अड़ूसे के पत्तों का स्वरस १ सेर

विधि—बादाम, मुनक्का को सिल लोढी से अच्छी प्रकार पीस बारीक कर अलग रखलें। बाकी सब औषधियो को कपड़छन कर

अलग रखलें अडूसे के स्वरस में मिश्री डाल चासनी करें और उसमें ही बादाम मुनक्का डाले और उतार कर पिसी हुई जो कपड़छन की औषधियां हैं मिला रखलें ।

उपयोग—प्रातः सायं और जब खांसी उठे उस समय ६ माशे से १ तोला तक धीरे २ चटावें यह खुश्क खांसी के लिये अति लाभदायक है, क्षय कास में भी अधिक लाभ करता है साधारणतः सभी खांसियों में लाभदायक है, रक्त पित्त नाशक भी है ।

वैद्यराज श्रीमान् पं० हरिप्रपन्न जी तिवारी

लोक हितकारी राम रसायनशाला, मेरठ

—०—
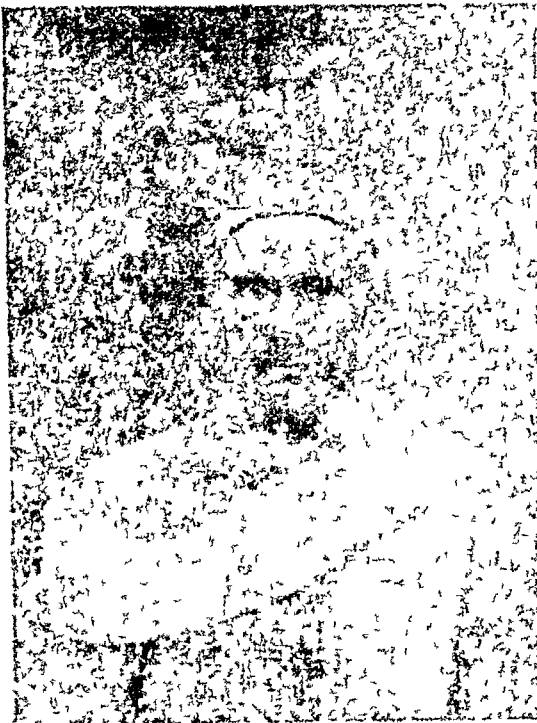
आपकी आयु लगभग ६० वर्ष वर्ष की होगी । आप पहले धन्वन्तरि औषधालय विजयगढ़ में रसायनशाला विभाग के इन्चार्ज थे अब आप उक्त मेरठ की रसायनशाला के इन्चार्ज हैं । अनुभवी विद्वान वैद्य हैं ।

रक्त स्तम्भक अवलेह—

१६१—लोध गेरू रक्त चन्दन बीजाबोल
फूल प्रयंगु अतीस —प्रत्येक १-१ तोला

जातीफलादि वटी-

१६४—जायफल १। तोले — छोटी इलाइची के बीज २॥ तोले
झरबेर के बेर की मींग — ५ तोले
मोरपंख के चन्दा की भस्म — १ तोले
नीबू के वल्कल की राख काली — २॥ तोले
वंसलोचन — २॥ तोले
कमलगट्टा की मींग — २॥ तोले
अनार की कली या फूल — २॥ तोले
जामुन की गुठली की मींग — १। तोले
बेल का गूदा १। तोले — मूर्वा १। तोले
कुड़े की छाल २ तोले — अतीस कड़वी २ तोले
इन्द्रायन २तोले — सुगन्धवाला १। तोले
नागर मोंथा १॥ तोले — सोंफ १॥ तोले
आमकी गुठली की मींग २॥ तोले — कपूर ६ माशे
अजमायन का सत्व ३ माशे — पिपरमेंट ३ माशे
मिश्री ५ तोला — अफीम शुद्ध १ तोले

विधि -पिपरमेंट, कपूर सत्व, अजमायन एक शीशी मे भर कर धूप में रखदे अफीम मिश्री छोड़ सब औषधियां कूट कपड़ छन कर लें। एक खरल में अफीम डाल अनार दाने का रस डाल घोटे जब खूब घुट जाय तब मिश्री डाल घोटे बाद को सब औषधियां और कपूर पिपरमेंट सत्व अजमायन का अर्क डालें और अनार के रस में घोट मूंग बराबर की गोली बना रखलें।

सेवनविधि—विसूचिका में एक एक गोली घण्टे घण्टे बाद सोंफ के अर्क अथवा मधु के साथ देने से लाभ होता है। अतीसार संग्रहणी में मठा (तक्र) में जीरा भुना डाल कर उसके साथ देने से

आराम होता है प्रातः सायं सेवन करावे। २–३ मात्रा में ही शहद के साथ देने से उलटी छर्दी बन्द हो जाती है, किसी प्रकार की हानि नहीं करती बालकों और गर्भवती स्त्रियों को भी दे सकते हैं।

वातव्याधि नाशक तिला—

१६५—त्रिकुटा २ तोला — मालकांगुनी ५ तोला

त्रिफला २ तोला — जावित्री ३ तोला

जायफल ३ तोला — दालचीनी १॥ तोला

बड़ी कटेरी के फूल २ तोला

सफेद कन्नेर की जड़ २ तोला

कलिहारी २ तोला — सफेद संखिया २ तोला

वत्सनाभ काला ३ तोला — अफीम २ तोला

कुचला १० तोला — भिलावा ३ तोला

जमालगोटा की मींगी ३ तोला

करंज की मींग ३ तोला

घुंगची (चोटनी) सफेद २ तोला

घुंगची (चोटनी) लाल २ तोला

धतूरे के बीज ४ तोला — लोहबान ३ तोले

गूगल २॥ तोला — सफेद सरसों ३ तोला

राई ३ तोला — रक्त सरसों ३ तोला

केशर १ तोला — चर्बी रीछ २ तोला

आक का दूध ३ तोला — चर्बी शेर २ तोला

विधि—संखिया, अफीम, केशर, चर्बी रीछ और शेर की, आक का दूध इनको निकाल बाकी सब औषधियां कूट कर पाताल यन्त्र से तैल (तिला) निकालले फिर उस तिला में संखिया अफीम

केशर, चर्बी और आक का दूध घोट कर शीशी में रखलें।

व्यवहारविधि—सब प्रकार के दर्दों में इसकी मालिश करने से दर्द दूर हो जाता है। निमोनिया का दर्द भी जाता रहता है। नपुंसकता में भी इन्द्री पर मलने से लाभ होता है।

कविराजश्रीमान् वैद्य लक्ष्मीनारायण जी नेगी वर्मा

वैद्य वाचस्पति एम० ए० एम० एस०

वृशाहर स्टेट (शिमला)

—o—
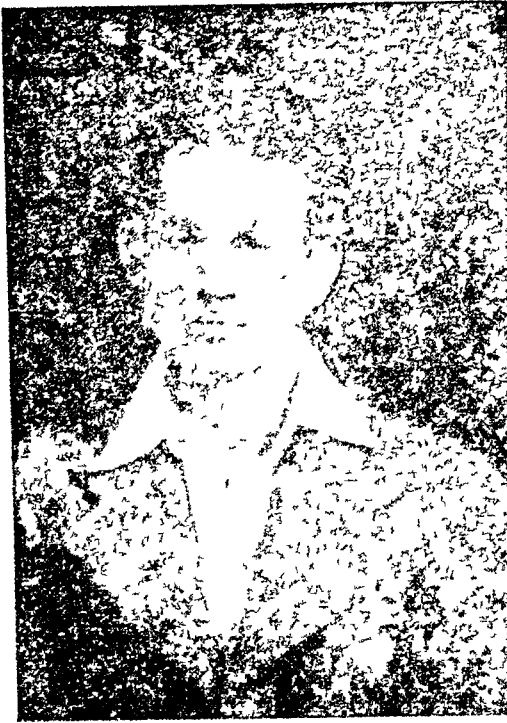
अपका जन्म सं० १९५४ वि० मे राजपूत खानदान के श्रीमान् वैद्यराज आगरजीत नेगी क यहा हुआ। आपने मैट्रिक परीक्षा पास कर ४ वर्ष तक सिविल हस्पताल मे काम सीखते रहे उसके बाद श्रीमद्दयानन्द महाविद्यालय लाहौर मे कविराज तथा वैद्य वाचस्पति परीक्षायें पास की है, कलकत्ता के रीगल कालेज से एम० ए० एच० एस० परीक्षा भी पास कर चिकित्सा कार्य करना आरम्भ किया और अनेक प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं।

उदर रोगान्तक वटी—

१६६—बड़ी हरड़ का बकल १ तोला   आंमले १ तोला
सुहागा भुना १ तोला   काला नमक १ तोला

अजमोद १ तोला	[illegible] १ तोला
जीराश्वेत भुना १ तोला	[illegible] १ तोला
सोफ १ तोला	[illegible] १ तोला
सोंठ ८ माशे	छोटी इलायची [illegible] ८ माशे
निसोथ ८ माशे	[illegible] ८ माशे
लवंग ६ माशे	काली मिर्च ६ माशे
दालचीनी ६ माशे	[illegible] ६ माशे
रूमी मस्तगी ४ माशा	बड़ी इलायची [illegible] ४ माशे

शुद्ध हींग भुनी ४ माशे

विधि—सबको कूट कपड़छन कर १२ कागजी नींबू के रस में घोंट कर मटर बराबर गोली बना सुखा रखले । व्यवहार—एक दो गोली प्रातः व सायं सोते समय सोफ के अर्क के साथ सेवन करने से उदर शूल व अध्यमान नष्ट होता है। मन्दाग्नि, अजीर्ण मे गरम पानी के साथ, गुल्म म अदरख के रस के साथ, अतीसार में शर्बत अंजबार के साथ, ग्रहणी प्रवाहिका में तक्र के साथ देने से लाभ होता है ।

नयनामृत विन्दु-

१६७—

कपूर ३ माशा	रसौंत शुद्ध ३ माशा
जस्त का फूला ३ माशा	ममीरा ३ माशा
फिटकिरी का फूला ६ माशा	कलमी शोरा ६ माशा
सुरमा ६ माशा	सुहागा का फूला ६ माशा

अर्क गुलाब ४ औंस

विधि—सब औषधियों को कूट छान अर्क गुलाब मिला ४८ घण्टे कार्क बन्द कर रक्खा रहने दे, फिर नितार छान कर रखले. नेत्र रोगों मे दो दो बूंद प्रातः सायं नेत्रों में डाले, इससे नेत्रादिबिन्दु धुन्ध जाला लाली फूली परवाल आदि सब ही रोगों से लाभ होता है ।

श्रीमान् पं० ठाकुरप्रसाद जी मिश्र आयुर्वेदाचार्य

शुकरौली जिला देवरिया

—o—

आपका जन्म सम्बत् १९७४ वैसाख मास में सरयूपारिण ब्राह्मण कुल के श्रीमान् पंडित रामसूचित जी मिश्र के यहा हुआ, आपने व्याकरण की मध्यमा उत्तीर्ण की है आपने वैद्यराज कन्हैयाप्रसाद जी से आयुर्वेद विधिवत् पढ़कर आयुर्वेदाचार्य परीक्षा भी उत्तीर्ण की है, आप प्राय: धर्मार्थ ही चिकित्सा करते है और अपने इलाके में वड़े प्रसिद्ध है। आपके द्वारा आयुर्वेद का खूव प्रचार हो रहा है। अनेक प्रशंसापत्र आपको बिना मांगे ही मिले हैं।

विशूचिका पर रस—

१६८—कपूर हिंगुल (मकसूदावादी) अहिफेन

तीनों १–१ तोला

विधि—पहले हिगुल को कागजी नीवू के रस में ३६ घण्टे खरल करके छाया में सुखा ले और उसमें ही अफीम डाल जल के साथ मर्दन करे जब दोनों एक दिल हो जाय तव कपूर डालकर खरल करे और मूंग वरावर गोली वना सुखा रखलें।

सेवन-विधि—हैजा होते ही एक गोली ठण्डे जल में निगलवा दे यदि गोली नही पचे तब दूसरी गोली पानी में घोलकर पिला दे गोली पचते ही कै दस्त बन्द हो जाते हैं। यदि आवश्यक हो तब १-२ घण्टे बाद १ गोली पुनः दें इससे वमन अतिसार बन्द हो जाता है। +

घाव का मरहम—

१६६—पारा तुत्थ (नीलाथोथा) १॥-१॥ माशे

करायल (राल) ६ माशे

विधि—प्रथम राल और तुत्थ को लोहे की चिकनी कढाई में डाल लोह मूसल या हथौड़ी से खूब खरल करे १२ घण्टे खरल करना चाहिये, उसके बाद पारा उसमें डालकर पारे के ऊपर कमया (मकोय) के पत्तों का रस १-३ बूंद डाले इससे पारा मरा सा हो जाता है भागने लायक नही रहता पश्चात खरल करे जब तीनो औषधियां मिल जाय पारा नही दीखे तब उसमें ३० तोला सरसों का तैल ले और थोड़ा तैल डाल घोटे फिर थोड़ा पानी डाल हाथ से फेंटे जब वह पानी मिल जाय तब थोड़ा पानी और डाल दे जब पानी उसमें नही मिले तब तैल और डालकर फेटे इस प्रकार ३-४ वार से सब तैल डाले और जितना पानी लग जाय डालता रहे फिर उसे १२१ बार बासी पानी से धोले। इस मरहम को कपड़े पर लगा कर घाव पर लगाने से पहले उस घाव का मवाद आदि साफ कर घाव को लाल कर देता है चिन्ता न करें उसके बाद धीरे २ घाव भर जाता है लगाते ही ठण्डक पड़ जाती है, यह सब प्रकार के घाव को उत्तम है।

+ विशूचिका की पहली अवस्था में लाभ करती है। —सम्पादक

आयुर्वेद विशारद श्रीमान् पं० मदनलाल जी शास्त्री

एल० एच० एम० एस० साहित्य रत्न

शर्मन फार्मेसी गिरदीगेट (जोधपुर)

—+—
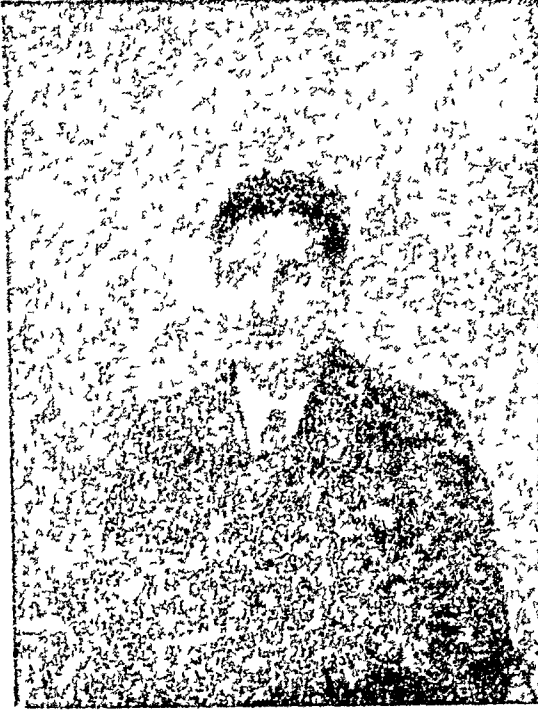
आपकी आयु लगभग ४५-४६ वर्ष की होगी। आपने आयुर्वेद विशारद, साहित्यरत्न एल० एच० एम० एस आदि की परीक्षायें पास की हैं। आप २२ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं, और अच्छा अनुभव प्राप्त किया है। आप हिन्दी मे लब्ध प्रतिष्ठित लेखक भी हैं। आपने कई पुस्तकें भी लिखी हैं।

उपदंश पर—

१७ —सौंफ १ तोला
उन्नाव १ तोला
काली मिर्च ६ माशा
सरफोका १० तोला
चन्दन सफेद १ तोला
त्रिफला १॥ तोला
उसबा २ तोला
धाय के फूल २ तोला
नीम की जड़ ३ तोला
मुलहटी ६ माशा
जुलाफा हरड़ ३ माशा
चिरायता ३ तोला
मुण्डी २ तोला
गुलाब के फूल २ तोला
छोटी हरड ६ माशा
सनाय २ तोला
शाहतरा ३ तोला
मजीठ १ तोला

चोबचीनी ३ तोला

विधि—सबको कूट छानकर ४ तोला बादाम रोगन मिलावे, उसके पश्चात शहद डाले (शहद इतना डाले कि चाटने योग्य हो जाय)

मात्रा-१ तोला प्रातः सायं—गर्म जल या दूध के साथ इसके सेवन से उपदंश और उपदंश जन्य विष नष्ट हो जाता है। इसके साथ ही मरहम लगाने से जल्दी लाभ होता है।

उपदंश हर मरहम—

१७१—सफेद कत्था ३ माशा | मुरदासन १ माशा
कौड़ी भस्म १ माशा | कपूर १ माशा
रसकपूर १ माशा | जस्त का मैल १ माशा
फिटकरी का फूला १ माशा | इलायची के बीज ३ माशा
संगजराहत ३ माशा | कबाबचीनी १ माशा

विधि—सबको कूट कपड़ा से छान १०८ दफे के धोये घृत में मिला कर उपदंश जन्य घावों पर लगाना चाहिये। इससे उपदंश के घाव शीघ्र आराम होते हैं।

सुजाक पर—

१७२—सोनागेरू ४ तोला | संगजराहत २ तोला
फिटकिरी का फूला ६ माशा

विधि—सबको कूट कपड़ छान कर रखले।

मात्रा—एक-एक तोला प्रातः दूध की लस्सी के साथ और शाम को पानी के साथ २१ दिन फाकने से कैसा हो सुजाक हो अवश्य नष्ट हो जाता है, यदि निम्न पिचकारी भी लगाई जाय तब शीघ्र लाभ होता।

सुजाक हर पिचकारी—

१७३—नीला थोथा ६ माशा | कलमी सोरा ६ माशा
सफेद कत्था ६ माशा | अफीम १ रत्ती

विधि—सबको १ सेर पानी में डाल गरम करे जब आधा पानी रह जाय तब छान कर ठन्डा कर बोतल मे भरलें।

उपयोग—पिचकारी में भर कर इन्द्री से लगादे-दिन में दो बार।

श्रीमान् वैद्य जियालाल-जी जैन

जे० एल० जैन औषधालय
कुरावली छोटी
पोस्ट-घिरौर (मैनपुरी)

—०—

आप की आयु अनुमान ३३-३४ वर्ष की होगी। आपका जन्म पटेलवाल वैश्य दि० जैन कुल में श्री० वैद्य लालताप्रसाद जी के यहां हुआ। आपके पितामह के समय से धर्मार्थ औषधालय चला आ रहा है। इस समय आप उसे चला रहे हैं। आपने श्रीमान् पं० सागर चन्द्र जी राज वैद्य मैनपुरी से वैद्यक शिक्षा पाई है तथा सम्मेलन की परीक्षा भी दी है, अनुभवी वैद्य हैं।

शिरो वल्लभ तैल—

१७४—पानड़ी ३॥ तोला
सुगन्ध कोकिला ३॥ तोला
कपूर कचरी ३॥ तोला
जायफल ३॥ तोला
जावित्री ३॥ तोला
शिलारस ३॥ तोला
लोहबान १५ तोला
इलाइची १५ तोला

तगर १५ तोला	छबीला १५ तोला
नागर मोथा १५ तोला	लौंग १५ तोला
बालछड़ १५ तोला	कपूर ४ तोला
केशर १॥ तोला	कस्तूरी ३ मासे
तिल तैल ३ सेर	काले तिल १५ सेर

विधि—कपूर, केशर, कस्तूरी, तैल, तिल छोड़ शेष औषधि कूट छान कर तैल में डाल बर्तन में भर मुख बन्द कर २१ दिन रक्खा रहने दे उसके बाद तिल मिला कर कोल्हू से तेल निकलवा कर उसमें केशर कपूर कस्तूरी मिला कर बोतलों में भर रखलें।

उपयोग—यह तैल शिर के बालों को पकने से रोकता है। सुगन्धित है तथा शिर को बल देता है। शिरो रोग में भी लाभदायक है।

उत्तम बाम—

१७५—पिपरमेंट १ तोला, कपूर १ तोला शीशी में भर कार्क कड़ी लगा कर धूप में रक्खे जब तरल हो जाय तब अलग रखले।

लौंग का तैल ३ माशा	दालचीनी का तैल ३ माशा
लोहबान का तैल ३ माशा	जायफल का तैल ३ माशा
इलायची का तैल ३ माशा	यूकोलिप्टिस का तैल ३ माशा

ले एक शीशी में भर कर कड़ी कार्क लगा अलग रखले। गौ का घृत ५ तोला तामचीनी के पात्र में गरम करे और उसमें मोम देशी तोले ३ के छोटे २ टुकड़े कर डाल दे जब पिघल जाय तब ४ तोला बादाम रोगन असली डाल उतार ले और छानले अब दोनों शीशीयों की दवा मिला ठन्डी कर शीशी में भर कर रखले। यह बाम सब प्रकार के शिर दर्द और शरीर के दर्द में लगाने से दर्द बन्द कर देता है। फोड़ा फुन्सी खुजली में लाभ प्रद है।

चिकित्सक श्री० पं० गणेशदेव जी आर्य

वैद्य शास्त्री वैदिक रसायनशाला

विहारा शरीफ (पटना)

—o—

आपकी आयु २७ वर्ष के अनुमान है, आपके पिता जी का शुभ नाम श्री० सुन्दर भगत जी है। आपने काशी निवासी रसायन शास्त्री श्री श्यामसुन्दराचार्य जी से पढ़ कर वैद्य शास्त्री की परीक्षा पास की और जनता से अनेक प्रशंसा पत्र भी प्राप्त किये हैं आप एक नवीन आविष्कार के प्रयत्न में है।

आप अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी हैं।

हनुस्तम्भ—

१७६—सन्निपात में जब रोगी की अवस्था खराब हो दांती मिच जाती है और वह खोलने से भी नहीं खुलती ऐसी अवस्था मे वैद्य औषधि भी सेवन नहीं करा सकता, उस समय यही आवश्यक होता है कि मुख खुले और औषधि सेवन कराई जाय ऐसी अवस्था को भी हनुस्तम्भ कहते हैं। यहा मुख खुलने की ही विधि के उपाय जो अनुभूत हैं लिखे जाते हैं।

१—लायकर एमोनियां कोटिस+ नामक औषधि की शीशी को काग खोल रोगी के नाक से लगादें तो रोगी मुख खोल देता है।

२—उत्तम बांसमती चावल एक चीनी के प्याले में रख इनको सफेद फूल वाले आक के दूध से भिगो कर तर करलें और रखदें, जब खुश्क हो जाय तब पुनः आक के दूध में तर कर खुश्क करलें इस प्रकार ७ भावना लगा खुश्क कर कूट कपड़छन कर रखलें जब आवश्यकता हो तब टुकड़ा नर का (नर की अथवा नलीदार पोली कागज की बत्ती) पर ले उसमें १-२ रत्ती भर रोगी के नाक में लगा फूंक दे-थोड़ी देर बाद छींक आकर रोगी का मुख खुल जाता है।

३—यदि उपरोक्त दोनों उपायों से भी नहीं खुले तब उसकी दोनों कनपटियों, ललाट कंठ पर वृहत विषगर्भ तैल खूब गरम कर गरम गरम ही की मालिश करावे तथा हाथ पैर के तलुओं में भी मालिश करावें और फिर बालू की पोटली बना गरम २ सेक करे तो अवश्य मुख खुल जाता है।

+ "लायकर एमोनिया कोटिस" एलोपैथी औषधि है उसकी जगह चूना (कलई) बिना बुझा और नवसादर समान भाग लें थोड़ा पानी डाल सुंघाने से भी उपरोक्त औषधि के समान ही प्रभाव होता है।—

—सम्पादक

चिकित्सक श्रीमान पं० रूपकिशोर जी शर्मा वैद्य

मोहल्ला मिचान काशीपुर
जिला नैनीताल

—०—

आपका जन्म सं० १९४४ में ब्राह्मण कुल में श्रीमान् राज वैद्य उमरावदत्त जी शर्मा के यहां हुआ, बनवारीलाल आयुर्वेद विद्यालय देहली के आप स्नातक हैं, आपने वहां की परीक्षा पास कर स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया। मुरादाबाद निवासी श्री० वैद्य राज हरिनाथ जी सांख्य-तीर्थ से अनुभव प्राप्त किया अनेक धनाढ्य और डिपटी तहसीलदार आदि उच्च अधिकारियों से भी प्रशंसा पत्र प्राप्त किये। आप विद्वान अनुभवी क्रिया कुशल वैद्य हैं।

संग्रणी पर—

१७७—शु० पारद	शु० गंधक	शु० हिंगुल
सुहागे की खील	सोंठ	काली मिर्च
पीपल छोटी	जायफल	लोंग
तेजपात	छोटी इलायची के बीज	चित्रकमूल
नागर मोथा	गज पीपल	सुगन्धबाला
अभ्रक भस्म	धाय के फूल	अतीस

एक सौ तिरासी

सहजने का गोंद   मोचरस   अफीम

विधि—सब औषधियां समान भाग ले। भस्म, अफीम पारद, गंधक, हिंगुल को छोड़ बाकी दवा कूट कपड़ छान करले। एक खरल में पारद गंधक डाल कज्जली करे फिर हिंगुल डाल घोटे उसके बाद अफीम और भस्म डाल घोटे उसके बाद बाकी औषधि का चूर्ण थोड़ा २ डालते जाय और घोटते जाय जब सब चूर्ण मिल जाय तब निकाल शीशी में भर कर रक्खें।

सेवन विधि—यह रस १ माशे मिश्री १ माशे मिला जल के साथ या सौंफ के अर्क के साथ फांके। यह रस प्रातः सायं सेवन करावे तो संग्रहणी, पुराना अतीसार नष्ट हो जाता है।

वात व्याधि पर रस—

१७८—रस सिंदूर १ तोला   अभ्रक भस्म १। तोला
लोह भस्म आधा तोला   स्वर्ण भस्म ३॥ माशे

विधि—सब को ग्वार पाठे के रस से मर्दन कर एक एक रत्ती की गोली बना सुखा रखले।

सेवन विधि—मधु अथवा पान के रस के साथ प्रातः सायं सेवन करने से कफ और पित्त युक्त वायु का नाश होता है, वात व्याधि की अव्यर्थ औषधि है साथ ही हृल्लास, जीमिचलाना अरुचि, दाह, वमन, भ्रम, शिरोग्रह, कर्णनाद, गूंगापन, बहरापन आदि अनेक रोगों में रोगानुसार अनुपान के साथ देने से लाभ होता है।

वैद्य विशारद श्री० पं० हरिनारायण जी शास्त्री

मंडल औषधालय वाका काओ बिल्डिंग

ताजमाला फूलगली भोलेश्वर

बम्बई नं० २

—०—
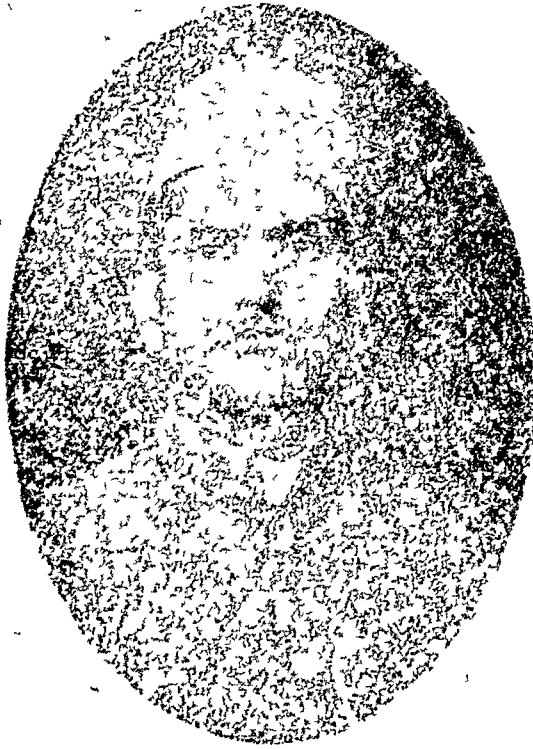
आपकी आयु लगभग ३१-३२ वर्ष होगी, आप गौड़ ब्राह्मण श्रीमान् पं० गंगाबक्स जी शास्त्री के सुपुत्र है, आपने वैद्य सम्मेलन की वैद्य-विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप श्रीमाननीय यादव जी त्रिविक्रम जी आचार्य के शिष्य है, आप बम्बई आयुर्वेद विद्यालय के स्नातक हैं, दातव्य चिकित्सालय के चिकित्सक है।

धातु विकार हर वटी—

१७६—अकरकरा १ तोला	सोंठ १ तोल
काली मिर्च १ तोला	शीतलचीनी १ तोला
केशर १ तोला	छोटी पीपल १ तोला
इलायची छोटी १ तोला	नाग केशर १ तोला
शु० धतूरे के बीज	१ तोला
श्वेत चन्दन १ तोला	लौंग १ तोला
जायफल १ तोला	वंग भस्म १ तोला

अर्श नाशक—

१८०—निबोली की मींग ६ तोला
बकायन के फल की मींग ६ तोला
शु० रसौत १८ तोला

विधि—खरल में तीनों औषधियाँ डाल मूली के स्वरस में मर्दन कर चने बराबर गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—प्रातः और सायं काल एक एक गोली जल के साथ अथवा दोषानुसार अनुपान के साथ सेवन करावें। रक्तार्श में विशेष लाभकारी है। वातार्श में भी लाभ देना है इसके सेवन काल में निम्न लेप भी कराते रहना चाहिये।

अर्श नाशक लेप--

विधि—निबोली, बकायन की मींग समान भाग ले और मूली के स्वरस में लेप बना मस्सों पर लगावें।

उदर रोग पर—

१८१—शु० हिंगुल	शु० जयपाल	सोंठ
खील सुहागा	सेंधानमक	वायविडंग
काली मिर्च	हल्दी	शु० हीरा हींग
	चित्रक छाल	

विधि—सब को कूट कपड़ा में छान हिंगुल जयपाल डाल खरल करें और पानी के योग से जब गोली बनने योग्य हो जाय तब दो दो रत्ती की गोली बनालें। 'मर्दनं गुण वर्द्धनं' के अनुसार जितना भी अधिक मर्दन करेंगे उतना ही अधिक गुण भी होगा।

सेवन विधि--एक एक गोली प्रातः सायं ताजे जल के साथ निगलनी चाहिये, जल ३-४ घूंट ही लेना यथेष्ट है. उदर रोग और विशेष कर जलोदर पर बडी लाभ दायक है। रोगानुसार अन्न-पान और पथ्य वैद्य स्वयं निर्णय करलें।

राज्यवैद्य श्री० पं० रामप्रसाद जी शर्मा शास्त्री

रेलवेरोड अलीगढ़

—+—
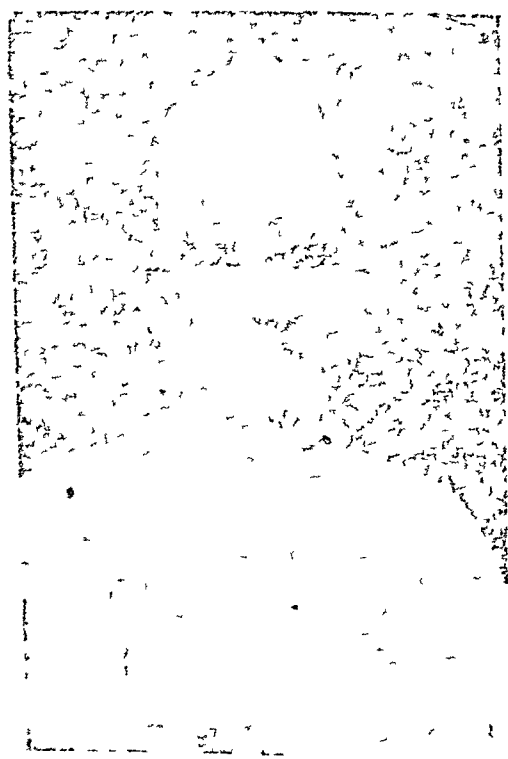
आपकी आयु ४६ वर्ष की है। आप ब्राह्मण कुल भूषण श्री० पं० छेदालाल जी मिश्र वैद्य ल्होसरा निवासी के सुपुत्र हैं आपने व्याकरण की काशी की शास्त्री परीक्षा और आयुर्वेद में आपने जयपुर की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा पास की है। अचागढ नरेश के राजवैद्य और उनके कालेज के प्रिंसिपल आप रह चुके हैं। अनेक पुस्तकों की टीका की है, अब आप सरकारी औषधि निर्माण निरीक्षण और चिकित्सक है, अनेक पदक प्रशंसा पत्र प्राप्त कर चुके हैं विद्वान अनुभवी और क्रिया कुशल वैद्य है।

रजप्रवर्त्तकारिष्ट—

१८८—कलोजी २० तोला

कवीला २० तोला

गाजर के बीज २० तोला

मूली के बीज २० तोला

एक सौ अठासी

रेमतचीनी १० तोला	इन्द्रायन की जड़ २० तोला
सज्जीलोटिका ७५ तोला	काला निमक ५ तोला
एलुआ ७२ तोला	राई ६ तोला
हींग १ तोला	गजपीपल ३० तोला
धाय के फूल २० तोला	गुड़ ५ सेर

विधि—सब औषधियों को जोकुट करले और गुड़ धाय के फूल को अलग रखलें, जोकुट की हुई औषधि में से १ सेर पृथक करदे बाकी सब औषधि को १ मन पानी में औटाव। जब १। सेर पानी रहे तब छान ले और उसमें गुड़ धाय के फूल जोकुट बची औषधि डाल मिट्टी के घड़ा में रख मुख बन्द कर १ महीने जमीन मे गाढ़ दे फिर निकाल छान कर बोतलो मे भर लें,

उपयोग—आधी आधी छटांक दिन में तीन बार पिलाने से रुका हुआ आर्तव खुल जाता है।

धर्मशास्त्री पं० प्रेमचन्द्र जी जैन आयुर्वेदविशारद

स० सि० जैन धर्मार्थ औषधालय
कटनी सी० पी०

—o—

आपका जन्म सम्वत् १९८१ वि० में परवाल जैन वंश भू० श्रीमान् छोटेलाल जी के यहां हुआ। आपने व्याकरण की मध्यमा और आ० भा वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेद विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है, साथ ही धर्मशास्त्री आदि धार्मिक परीक्षायें भी पास की हैं।

नेत्र रोग हर-

१८३—नहाने का उतम साबुन (हमाम) ८॥ तोले को लोहे की कढ़ाई से छोटे २ टुकड़े करके डालदे और लोह मूगल से घोटे जब साबुन पानी की तरह हो जाय तब १॥ तोले नीलाथोथा डाल कर खूब घोटे। जब खूब घुट जाय तब ५ तोले गार सफेद थोड़ी डाल कर घोटे जब सब राल पड़ जाय और सुरमा काला बन जाय तथा घोटते २ सूख भी जाय तब निकाल शीशी में भर कर रखले।

उपयोग विधि— शीशे धातु की सलाई से सुबह शाम नेत्रो में लगाने से आंख की फूली, जाला, राहे नष्ट हो जाते है आंखो की खुजली रतोंध में भी लाभ कारी है। सुरमा ४ वर्ष से छोटे बालक के नहीं लगावे यह सुरमा बहुत लगता है यदि इस सुरमा के लगाने बाद निम्न अर्क भी डाले तो बड़ा लाभ और शान्तिमिलती है।

नेत्र रोग हर अर्क-

१८४—लाल फिटकरी

पिपरमट — १ तोला

— २ रत्ती

कपूर १ माशे

गुलाबजल २० तोला

विधि-प्रथम लाल फिटकरी को कूट कपड़ा में छानले और एक शीशी में कपूर पिपरमेंट डाल हिलावे जब वह पानी हो जाय तब लाल फिटकरी और गुलाबजल डाल कर १ दिन रक्खा रहनेदे फिर निंतार छान कर रखलें।

—२-३ बूंद आंखो मे डालने से दुखती आंख ठीक हो जाती हैं दर्द तत्काल शान्त होता है ठन्डक पड़ जाती है। ऊपर के सुरमा लगाने पर जो कष्ट होता है इसके डालने से शान्त हो जाता है।

दन्त रोग हर—

१८५—बादाम के छिलका आध सेर को मट्टी के पात्र से भर मुख बन्द कर ५ सेर कन्डों की अग्नि दे जब स्वांग शीतल हो जाय तब निकाल लें। और खरल में डाल नीबू के रस की भावना दे अनन्तर —

शुद्ध नीलाथोथा	५ तोले
शुद्ध की हुई फिटकरी	५ तोले
हल्दी	२ तोले

—कूट कपड़ छन कर मिला कर ३-४ नीबू के रस की भावना दे खुश्क कर रखले।

उपयोग विधि—दातो के सभी रोगों में मंजन करने से लाभ होता है। नित्य लगाते रहन से दन्त रोग नहीं होते।

साहित्याचार्य पं० रामेश्वर जी शर्मा आयुर्वेदालं०

प्रिन्सिपल रामानुज संस्कृत कालेज

डीडवाना (मारवाड़)

—०—
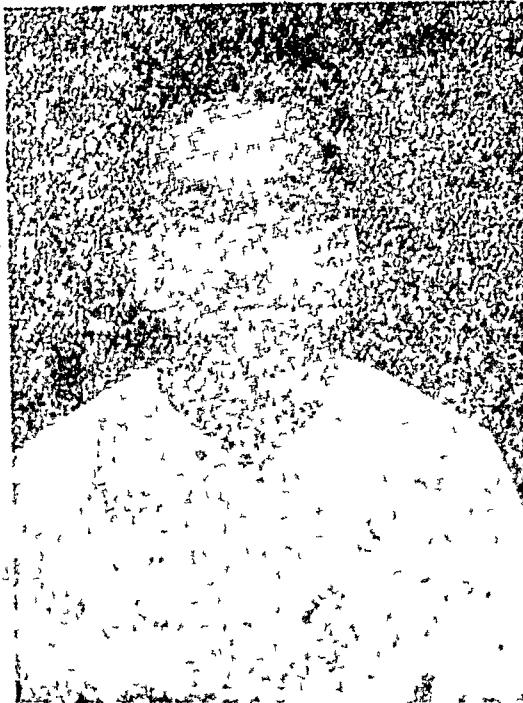
आपका जन्म लक्ष्मणगढ़ (सीकर) में श्रीमान पं० घन-श्याम चन्द्र जी शास्त्री के यहां सम्वत १९६६ वि० में हुआ। आपने पंजाब की शास्त्री अ० भा० वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेदाचार्य, जयपुर की आयुर्वेदोपाध्याय एन० आर० एस कालेज रामगढ़ की आयुर्वेदाचार्य, अयोध्या की वैद्य भास्कर आदि अनेक परीक्षायें

पास की है साथ ही अनेक उपाधियां, प्रशंसापत्र मान पत्र आदि भी प्राप्त किये हैं। अब आप रामानुज संस्कृत कालेज डीवाना के प्रिन्सिपल और श्री वेंकटेश आयुर्वेद चिकित्सालय के प्रधान चिकित्सक हैं।

विशूचिका पर—

१८६—शु० भल्लातक को इलायची के रस में घोट कर एक रत्ती की गोली बनावे और उल्टी और दस्तों में घन्टे घन्टे बाद केवल गरम जल के साथ देने से २-३ मात्रा में लाभ हो जाता है।

वृक्क (गुर्दा) विकार में—

१८७—राई कलमी शोरा यवक्षार

—समान भाग ले कपड़ छन कर रखलें। २ माशे की मात्रा में जल के साथ देने से वृक्क (गुर्दा) के सभी विकार दूर हो जाते हैं।

वैद्यराज श्री० पं० योगेश्वर प्रसाद जी शर्मा

विल्डपाल अध्यक्ष श्री राष्ट्रीय औषधालय
कोटा बाग नैनीताल यू० पी०

—o—

आपका जन्म ब्राह्मणकुल में और विल्डपाल खानदान में सम्वत १९६७ वि० में हुआ, आपके यहां परम्परागत चिकित्सा व्यवसाय होता आया है आपकी शिक्षा आपके स्वर्गीय चाचा श्रीमान पं० सदानन्द वैद्य राज जी के द्वारा हुई है। आपके प्रयत्न से २-३ औषधालय चल रहे हैं। महिला समाज के प्रमुख चिकित्सक हैं

अनुभवी चिकित्सक हैं।

मलावरोध नाशक चूर्ण—

१८८—सनाय ५ तोला   गुलाब के फूल २॥ तोला

सौंफ   ६ माशे

कालादाना भुना   २॥ तोला

विधि—प्रथम कालादाना लोह पात्र में डाल अग्नि पर रक्खें जब वह भुन जाय उतार लें (जले नहीं यह ध्यान रहे) उसके बाद सबको खरल में कूट चलनी से छान कर रखलें।

मात्रा—६ मासे से दो तोले तक, अनुपान—गरम जल। इसके सेवन से जरा भी ग्लानि नहीं होती है तथा कुछ भी उपद्रव नहीं करता दस्त साफ उतरता है, गोपनीय प्रयोग है।

विशूचिका नाशक अरिष्ट—

१८९—लालमिर्च (दिल्ली वाली)   ४ सेर

धनियां ८ तोला   सौंफ ८ तोला

अर्क पिपरमेंट   २ तोला

विधि—अर्क पिपरमेंट छोड़ बाकी तीनो औषधियां कूट कर चोगुने पानी में पकावे जब जल आधा रह जाय तब उतार कर छानलें और २॥ सेर मिश्री मिला खूब हाथों से मले और मिट्टी के बासन में भर कर पृथ्वी में गाढ दे और १ महीने बाद निकाल कर नवीन कपड़े मे छान कर १ घण्टे रक्खा रहने दे बाद का नितार कर २ तोला अर्क पिपरमेंट (पिपरमेंट आयल) डाल कर बोतलो में भर कर रखलें।

सेवन विधि—मात्रा ३ माशे से १ तोला तक विशूचिका (हैजा) में पिलावें, एक एक घन्टे बाद २-३ मात्रा देने से ही लाभ होता है।

प्रदरारि चूर्ण-

१६०—मूंगे की भेगनी ५ तोला

वसलोचन असली ८ तोला

छोटी इलायची ५ तोला

नागकेसर २ तोला

शु० सोना गेरु १ तोला

व्यवहार विधि—सबको कूट छान कर रखले। ४ मासे चूर्ण धारोष्ण मिश्री युक्त दूध पाव भर के साथ फकावे, श्वेत प्रदर के लिये अव्यर्थ प्रयोग है।

आयुर्वेद विशारद पी० एन० पं० वी० एस० एस० ए०
इन्चार्ज डि० बो० आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी
दमोह पोस्ट सोहगांव
(बालाघाट सी पी)

—o—

नरसिंहपुर सी० पी० निवासी श्रीमान् पं० रामप्रसाद जी प्रोहित वैद्यराज के जेष्ठ पुत्र हैं। आपकी आयु लगभग ३१ वर्ष की है, मैट्रिक पास कर आप बुन्देलखंड आयुर्वेदिक कालेज झांसी में आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त करने चले गये और वहा पांच वर्ष रह कर आयुर्वेद विशारद पास कर सन् १९४१ मे स्वतन्त्र चिकित्सालय खोल चिकित्सा करने लगे, आप का पूरा नाम वैद्य

प्रेमनारायन पंडित है, आप योग्य मिलनसार वैद्य हैं। जड़ी बूटी से आपकी विशेष रुचि है।

कम्पवायु पर—

१६१—इस रोग में माल कांगुनी का तैल बड़ा ही उपयोगी है इसका ही सेवन और इसका ही मर्दन अति उत्तम है। यदि माल कागुनी तैल का २ शीशी का इन्ट्रावेनस इंजेक्शन ७ बार दिन से दिया जाय और प्रातः साय दो रत्ती कज्जली और १ रत्ती शुद्ध कुचला मिला कर दिया जाय तब १ महीने मे कम्पवायु नष्ट हो जाती है। वृद्धावस्था में जब कम्प वायु हो तब भी लाभ होता है।

शूलनाशक तैल—

१६२—सरसों का तैल — २० तोला
आयल विन्टर ग्रिन (चाय का तैल) — १० बूंद
कारबोलिक आयल ५ बूंद — अफीम २ माशा
कुचला २ माशा — सींगिया विष २ माशा
कपूर ६ माशा — धतूरे के फल और पत्तों क रस २॥ तोला
अजमायन का फूल ६ माशा — पिपरमेंट ६ माशा

विधि—धतूरे के रस में अफीम कुचला सींगिया विष का मर्दन कर और छान कर सरसों के तैल में मिला शीशी में भरले और शेष सब औषधि डाल खूब हिला कर १० दिन रक्खा रहने दे पश्चात व्यवहार करें।

गुण—यह तैल सब प्रकार के दर्द को लाभदायक है। निमोनियां, पसली का दर्द, गठिया आदि रोगों पर रामबाण है।+

+कम्प वायु की चिकित्सा की परीक्षा नहीं कर सके पर ढंग उत्तम है। शूल नाशक तैल उत्तम है पर अधिक दिन रहने से बिगड़ जाता है। अतः धतूरे का रस अफीम मिलाले और कुचला सींगिया बिष कपड़ छन कर मिलावे और थोड़ा तैल डाल गरम करे जब पानी (रस) जल जाय तब शेष तैल मिला कर रक्खे

—सम्पादक

चिकि० पं० चन्द्रशेखर जी व्यास आयु० विशा०

प्रधान चिकित्सक श्री गणपति आयुर्वेद दातव्य

चिकित्सालय चूरु (बीकानेर स्टेट)

—×—

आपने पुष्करणा ब्राह्मण कुल में श्री० पं० श्रीधर जी शर्मा व्यास के यहां जन्म लिया है, आयु ३२ वर्ष के लगभग है। आयुर्वेद विशारद देहली से पास की है, इस समय उक्त धर्मार्थ औषधालय के प्रधान चिकित्सक हैं। आप ग्रहणी के विशेषज्ञ हैं, साथ ही अपने क्षेत्र में बड़े प्रसिद्ध वैद्य हैं अनेक प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं। आप सत्यनारायण आयुर्वेद दातव्य औषधालय रंगून में भी प्रधान चिकित्सक रह चुके हैं, श्रीधरआयु० भवन के अध्यक्ष हैं और वहां आप शरणार्थीयों को मुफ्त दवा देते हैं।

पासाहर अर्क—

१६३—चिरायता १ सेर	कुटकी आध सेर
त्रिफला १। सेर	उन्नाव आध सेर
गोरखमुंडी आध सेर	उशबा आध सेर
नीलोफर पावभर	पानी ३२ सेर

विधि—औषधियों को जव कुट कर पानी में १ दिन भिगो दूसरे दिन भवका यन्त्र द्वारा २१-२२ बोतल अर्क निकाल लें।

मात्रा—२॥ से ५ तोले तक, प्रातः सायं शहद मिला कर पीना चाहिये, इसके पीने से और निम्न पासाहर तैल के लगाने से पामा (खुजली खाज) अवश्य नष्ट हो जाती है, आज कल वर

घर यह रोग हो रहा है। इसके प्रयोग से ६६ प्रति शत रोगी लाभ प्राप्त करते हैं औषधि सेवन से पूर्व ३-४ दस्त भी करादें।

पामाहर तैल—

१६४—पारा १ तोला
अशुद्ध गंधक १ तोला
दारूहल्दी १ तोला
हल्दी १ तोला
मिर्च काली १ तोला
सिन्दूर १ तोला
नीला थोथा ६ माशा
जीरा सफेद १ तोला
जीरा स्याह १ तोला
मन्शिल ६ माशे

शुद्ध घी ८ तोले

विधि—पहले पारद गंधक की कज्जली बनावें फिर सब औषधियों को कूट कपड़ छन कर चूर्ण बना कज्जली में घृत मिला मर्दन कर मरहम बना रख लें।

उपयोग—इसका उबटना करने से पामा रोग नष्ट हो जाता है। नेत्रों से न लगे यह ध्यान रक्खे।

कविराज पं० जगदीशचन्द्र जी वैद्य वाचस्पति

नालागढ़ स्टेट जिला शिमला
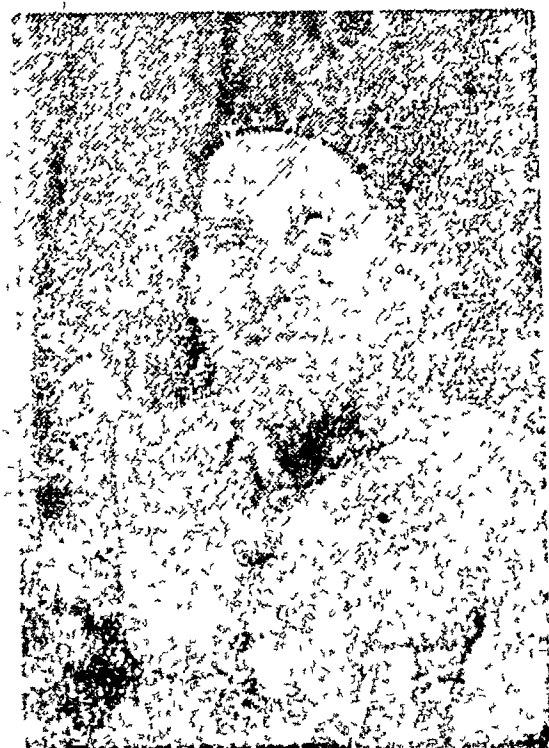
आपकी आयु ३१ वर्ष की है। आप ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान पं० शिवशंकरदास वैद्य के सुपुत्र हैं। आपने अंग्रेजी में मैट्रिक पास कर डी० ए० वी० आयुर्वेदिक कालेज लाहौर से कविराज, वैद्य वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की है, महाराजा नालागढ़ नरेश से सन्मान सूचक प्रशंसा पत्र भी प्राप्त किया है तथा अन्य अनेक प्रशंसा

पत्र आदि भी प्राप्त हुए हैं। प्रस्तुत रोग के आप विशेषज्ञ हैं।

देशी कुनीन—

१६५—करंज बीज की गिरी — बुरादा रक्त चन्दन

कुटकी

—यह तीनों औषधियां समान भाग ले कूट कपड़ छन करलें और नीबू के रस की दो भावना दे खुश्क कर रखलें। इसका वर्ण किर-मिची रंग का होगा।

सेवन विधि—मात्रा २ रत्ती से ४ रत्ती, बालकों को आधी रत्ती से १ रत्ती शर्बत सन्दल तथा शर्बत बनफसा में मिला कर, २-३ मात्रा ज्वर चढ़ने से पूर्व ही सेवन करा देने से मलेरिया (विषम ज्वर) का वेग नहीं होता, कुनेन के समान रोकने वाली दवा है, भोजन में केवल दूध या दूध चावल।

स्वर्ण वटी—

१६६—स्वर्ण वर्क १ माशे — कस्तूरी २ माशे

मोती ३ माशे — वर्क चांदी ४ माशे

केशर मोंगरा ४ माशे — छोटी इलायची ५ माशे

जायफल ६ माशे — वंशलोचन ७ माशे

विधि—काष्ठ औषधियों को कपड़ छन कर केशर कस्तूरी वर्क और मोती पृथक मर्दन कर सब को मिला ७ रोज तक बकरी दूध से खरल करें पश्चात ३ दिन पान के स्वरस में मर्दन कर जंगली बेर के बराबर गोली बना छाया में सुखा रखले।

सेवन विधि—जब गर्भणी को प्रसव की पीड़ा होती हो और बालक नहीं होता हो ऐसी अवस्था में जब घर वाले और गर्भणी बेचैन होते हैं उस समय १ या दो गोली चाय या गरम दूध के साथ

देने से १५ से ३० मिनट तक में बच्चा हो जाता है। × सन्निपात की उस अवस्था में जब रोगी अधिक प्रलाप करता हो नींद न आती हो तब यह गोली पान के स्वरस के साथ देने से बड़ा लाभ दिखाती है। आन्त्रिक ज्वर मे स्वेद अधिक आता हो तब भी विशेष लाभ करती है।

आयुर्वेदाचार्य पं० विश्वम्भर नाथ जी त्रिपाठी

आर० डी० गवर्नमेंट आयुर्वेदिक चिकित्सालय
स्टेट करदहा जिला उन्नाव

o—o

आपका जन्म गौड़ ब्राह्मण तिवाड़ी वंश में श्रीमान असिस्टेन्ट सर्जन पं० शम्भू नाथ जी त्रिवेदी मैडीकल आफिसर के यहां हुआ था। आपने व्याकरण की मध्यमा और आयुर्वेद की ललितहरि आयुर्वेद कालेज पीलीभीत से वैद्य भूषण की उपाधि और वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा पास की है।

उन्फुल्लिका नाशक–

१६७—अतीस कड़ुआ १ तोला	काकड़ासिगी १ तोला
नागर मोथा १ तोला	छोटी पीपल १ तोला
सुहागा खील ४ तोला	उसारे रेमन १ तोले

+ गोली देने के साथ ही साथ अपामार्ग की जड़ भी कमर से बाँध दी जाय तब विशेष लाभ होता है।

—सम्पादक

व्यवहारविधि—इसको काड़ छान कर रक्खें। मात्रा—१ रत्ती १ वर्ष के बालक के लिये। ३-४ मात्रा माता के दूध में। छोटे बालक को कम मात्रा दें बड़े को अधिक दें। इससे वमन या दस्त द्वारा फेफड़े का कफ निकल जाता है और बालकों की पसली चलना बन्द हो जाना है तथा उन्कुलिका (हब्बाडब्बा) वाल निमोनियां में अति लाभदायक है। बड़े बालकों को शहद में दें। फेफड़े पर तिल तैल तारपीन का तैल समान भाग मिला कर मालिश कर रुई से सेक देना चाहिये।

महिला-चिकित्सक कमलादेवी आ० उपाध्याय

महिला महौषधालय सरदार मार्केट
जोधपुर (मारवाड़)

—*—
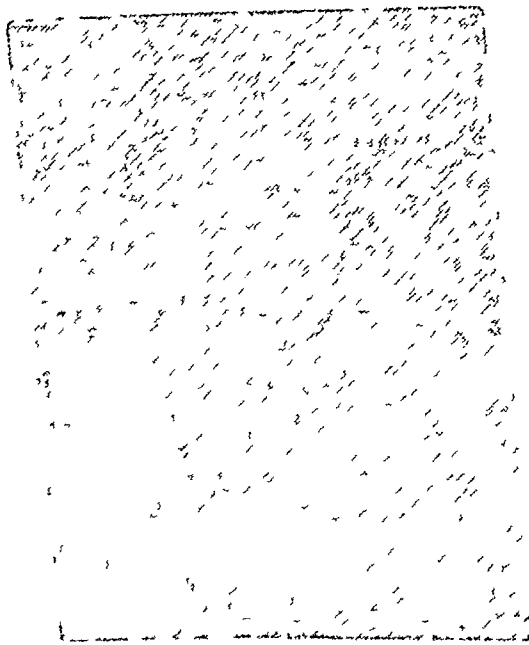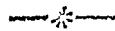
आपकी आयु लगभग २५ वर्ष की है। आपने उपाध्याय परीक्षा उत्तीर्ण की है, ५ वर्ष से निशुल्क चिकित्सा कर महिला समाज मे प्रसिद्ध प्राप्त की है प्रदर प्रसूत रोगादि में विशेष अनुभव रखती हैं। आपने स्त्री समाज की चिकित्सा कर आयुर्वेद का खूब प्रचार किया है। साथ ही आशा है कि आप अच्छी प्रसिद्ध एवं महिला चिकित्सक का पद प्राप्त करेंगी।

बोमों
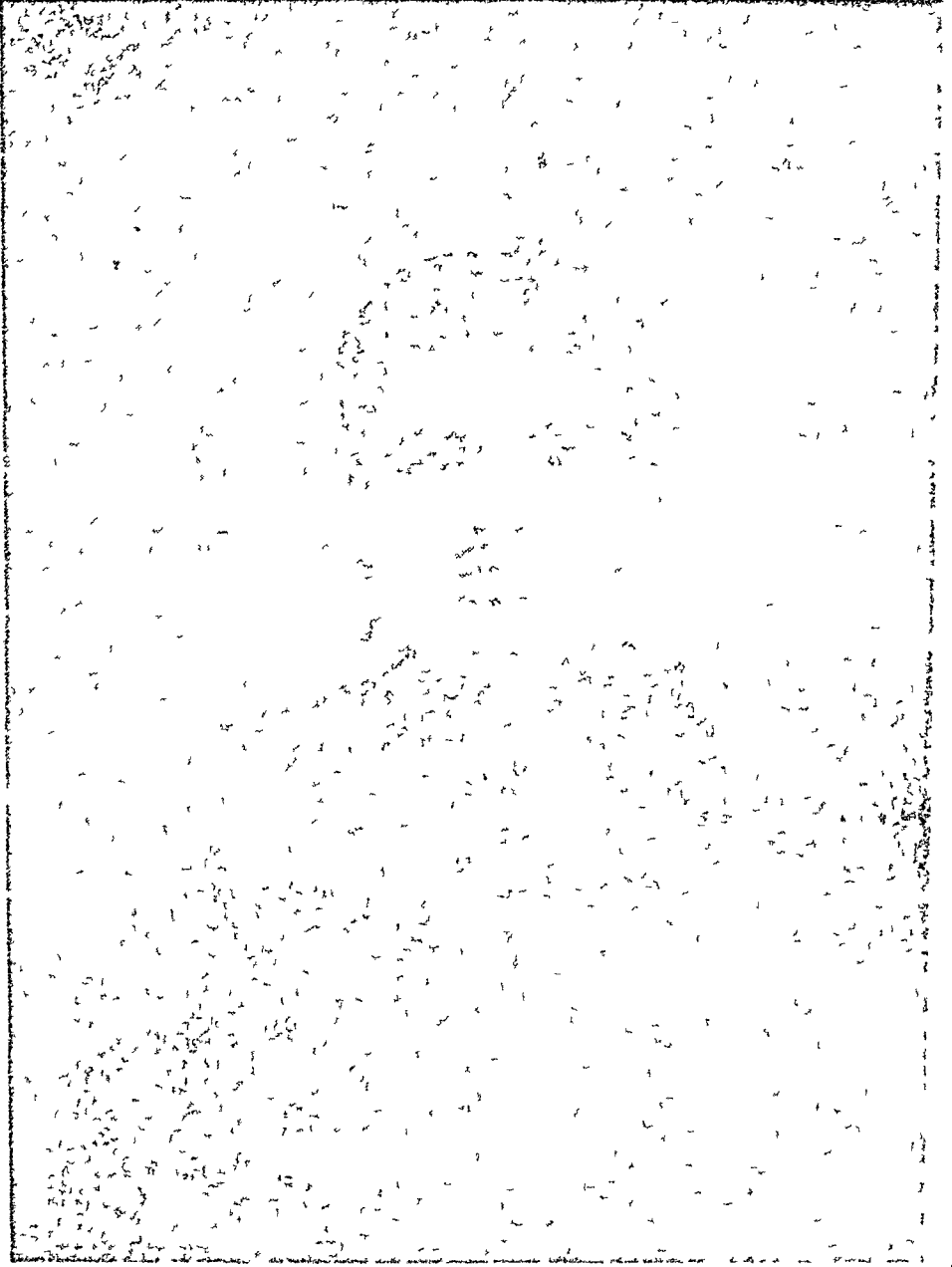
कविराज पं० धर्मदत्त जी चौधरी

खन्ना जिला लुधियाना।

श्वेत प्रदर हर—

१६८—माजूफल ४ तोला उरद १॥ सेर

—एक बड़े बर्तन में उरदों और माजूफलों को डाल कर उसमें इतना पानी डालो जिससे उरद पक जाय जब अच्छी तरह उरद पक जाय तब कढ़ाई चूल्हे से नीचे उतार दो। ठंडा होने पर माजूफल को निकाल लो और उरदों को फेंक दो माजूफलों को तीन दिनों तक छांह में सूखने दो। सुखने पर पीस कर शीशी में भर कर रखलो।

मात्रा—४-४ रत्ती दवाई सबेरे शाम शहद या मक्खन के साथ मिला कर लेवे। इससे श्वेतप्रदर शीघ्र शान्त होता है।

उदररोग हर—

१६६—अदरख का रस २ छटांक नीबू का रस २ छटांक
घीग्वार का रस १ छ० जामुन का सिरका १ छ०
काली मिर्च, छोटी पीपर, लोंग
सोंठ, सुहागे की खील वायविडंग
अजमोद भारंगी चित्रक
जीरा सफेद जीरा काला पीपरा मूल

प्रत्येक १-१ तोला

हींग भुनी हुई ६ माशे काला नमक ४ तोला

विधि—इन सब औषधियों को कूट कपड़ छन कर उपरोक्त अर्कों में मिला कर २४ घण्टे धूप में रखे।

मात्रा—पूरी खुराक १ तो० जल के साथ इसके सेवन से पेट का दर्द, अफरा, मलावरोध आदि नष्ट हो जाते हैं।

श्रीमान पं० चन्द्रशेखर जी त्रिपाठी आयु० विशारद

कालपी जिला जालौन यू० पी०
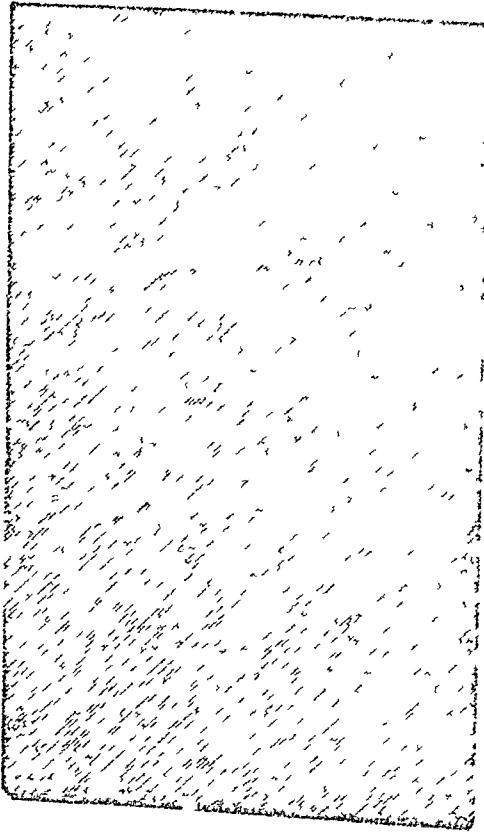
आपका जन्म सम्वत् १९७० विक्रमी में खांडेपुर (कानपुर निवासी पं० शिवशंकर जी त्रिपाठी वैद्य शास्त्री के यहां हुआ। आपके यहां परम्परागत वैद्यक व्यवसाय होता आया है। आपने आयुर्वेद विशारद परीक्षा पास की है। आप बड़े मिलनसार और जन प्रिय हैं आपके उद्योग से तहसील वैद्य परिषद की स्थापना हुई है। आप रजिस्टर्ड वैद्य हैं।

शक्तिवर्धक—

२००—गोखरू (गुरु चौमुख) २ तोले
विधारा २॥ तोले
शकाकुल मिश्री २ तोले
बहमन सुर्ख २ तोले
सुरंजान मीठा २ तोले
गगेरन की जड़ की छाल २ तोले
शितावर २ तोले
तालमखाना २ तोले
सालिम पंजा २ तोले
बहमन सफेद २ तोले
केवाच के बीज शुद्ध २ तोले
प्रवाल पिष्टी १ तोला
मिश्री २० तोला

विधि—सबको कूट कपड़ छन कर प्रवाल पिष्टी और मिश्री मिला कर घोट कर रखले।

मात्रा—६ माशे प्रातः सायं दूध के साथ। बल वीर्य को बढ़ाने वाली और प्रमेह को दूर करने वाली है। बाजीकरण के लिये घुली भांग २ तोले और मिला लेनी चाहिये।

नपुंसकता हर लेप—

२०१—रस कपूर लोहबान मुरदाशंख १-१ तोले घी ५ तोले

विधि—घृत छोड़ शेष औषधियों को कूट कपड़ा में छान, पत्थर के खरल में डाले और घृत मिला १ दिन मर्दन कर रखले।

उपयोग—५० दिन शिश्नेन्द्रिय की मालिश करने से नपुंसकता दूर हो जाती है।

आयुर्वेद शिरोमणि वैद्य विष्णुस्वरूप जी

दी बिसन फार्मेसी, विष्णु निवास, धौलपुर राज्य

आपकी आयु लगभग ५६ वर्ष की होगी। आपका जन्म आयुर्वेद चिकित्सक मणि स्व० वैद्यराज बिहारीलाल जी के यहां हुआ। आप विद्वान अनुभवी चिकित्सक हैं। धौलपुर के गणमान वैद्यों में से हैं।

मोतीझला पर—

२०२—हुल हुल

हार सिंगार के पत्ता — २० तोला

पटोलपत्र २० तोला — २० तोला

गिलोय — स्याहतरा २० तोला

२० तोला

विधि—सबको कूट कर ३२ गुणे पानी में क्वाथ करना चाहिये जब चौथाई शेष रहे तब उतार छान नितार कर पुनः साफ कड़ाई में डाल गरम करें जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब उतार कर चना बराबर गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—एक एक गोली दिन में ३ बार निम्न क्वाथ के साथ सेवन करावें।

क्वाथ विधि—हार सिंगार के पत्ता ११ नग को कुचलकर २० तोला पानी में क्वाथ करें जब ५ तोला शेष रहे तब उतार छान ६ माशे शहद मिला शीशी में भर और ३ मात्रा के निशान लगा कर रखलें और दिन भर में ३ मात्रा गोली के साथ सेवन करावें। इसके सेवन से कुपित मोतीझला तथा जीर्ण ज्वर भी नष्ट हो जाता है।

मासिक धर्म पर—

२०३—हीरा कशीस — बीजाबोल — मुरमकी

विधि—तीनो औषधियां समान भाग ले कूट कपड़ छन करलें और घीकुवार के रस से गोली चना बराबर बना सुखा रखले।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक एक गोली जल के साथ निगलवा देने से मासिक धर्म के समय अधिक रक्त आना बन्द हो जाता है।

श्रीमान वैद्यराज रघुवरदयाल जी गुप्त

मुहम्मदी जिला खीरी

—०—
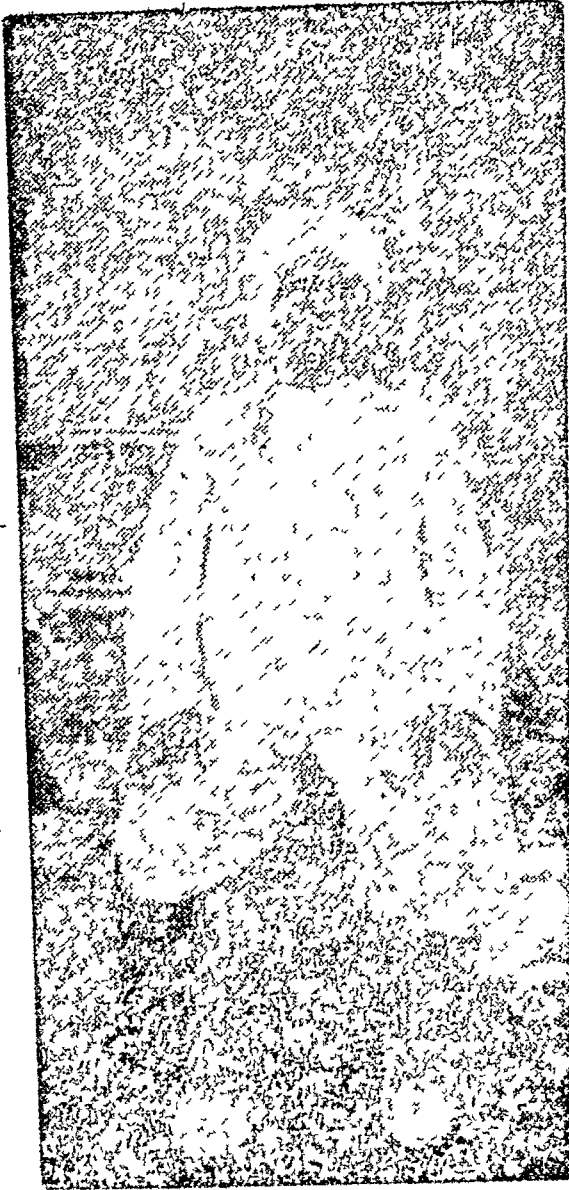
आपकी आयु लगभग ६७ वर्ष की होगी। आपने देहली की वैद्यराज परीक्षा उत्तीर्ण की है। ४० वर्ष के लगभग चिकित्सा करते हो चुके हैं। आप अनुभवी और सिद्धहस्त चिकित्सक हैं। अपने प्रान्त में प्रसिद्ध हैं।

अग्नि दग्ध पर—

२०४—इलायची सफेद के बीज ३ माशे

रस कपूर ३ माशे कपूर ३ माशे

सफेदा कास्तकारी ३ माशे

कमी मस्तंगी   ३ माशे

विधि—प्रथम सब औषधियों को कूट पीस कर कपड़ छन कर रक्खें और भेड़ का घृत ऽ।। गाय का घृत सौ बार धुला हुआ ५ तोला एक खरल में कपड़ छन चूर्ण और धुला गाय का घृत मिला कर मर्दन करें जब रवा न रहे तब भेड़ का घृत मिला कर मर्दन कर रखले

उपयोग—अग्नि के जले स्थान के बराबर कपड़ा ले उस पर यह मर-हम का मोटा लेप कर चुपका दें इस तरह लगाते रहने से १५ दिन में ठीक हो जाता है। विशेषता यह है कि खाल ज्यों की त्यों हो जायगी, दाग नहीं पड़ेगा।

चिकित्सक श्रीमान वैद्य गंगाराम जी वार्ष्णेय

देशी मेडीशन रसाईंग कम्पनी

पटियाली गंगा जिला एटा

—o—
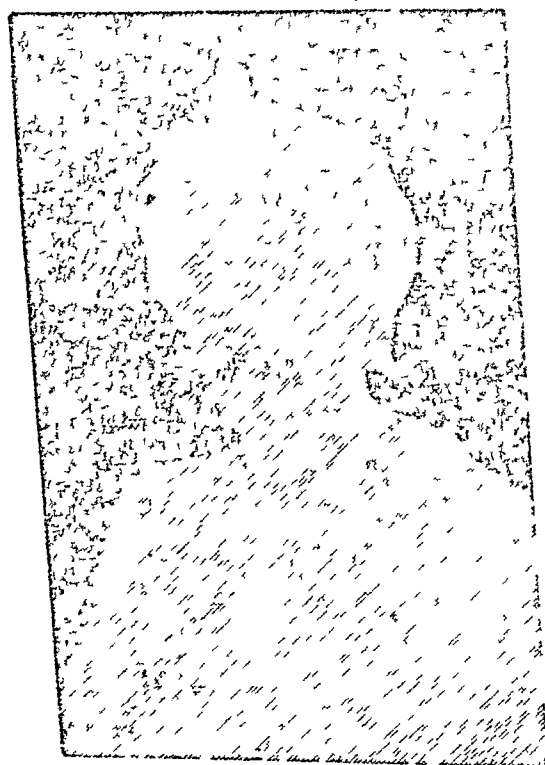
आपकी आयु लगभग ५२ वर्ष की होगी। आपने वैद्य भिषक परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप २५-३० वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। यू० पी० इन्डियन मेडीशन बोर्ड के रजि० वैद्य हैं। आप अनेक संस्थाओं के सदस्य हैं, तथा अनुभवी वैद्य हैं।

श्वेत कुष्ठ हर लेप--

२०५—चित्रक छाल — २ तोला
घुंघची (चोंटनी) — १ तोला
बावची ३ तोला — जंगली अंजीर १ तोला
गौ मूत्र — १० तोला

विधि—सबको कूट कपड़ा में छान गौ मूत्र डाल मर्दन करें जब सब गौ मूत्र सूख जाय और मरहम बन जाय तब निकाल रखलें।

उपयोग—श्वेत दागों पर लेप करे कुछ समय बाद उस जगह छाला पड़ जायगा तब दवा लगाना बन्द कर सूई से उस छाले को फोड़ मवाद पानी निकाल दे और नीम का तैल लगाते रहे इससे घाव भर कर खुरंट पड़ जायगा। और खुरंट उचलने पर वह जगह साफ होगी। श्वेत दाग नहीं होगा। ×

चर्म रोग हर-

२०६—कूठ — कबीला
काला जीरी — मुर्दाशंख

प्रत्येक एक-एक तोला

नीला थोथा — १ माशे

विधि—सबको कूट कपड़ छन कर खरल में डाल थोड़ा तैल डाल घोटते जाय जब रवा न रहे मरहम सदृश्य बन जाय तब रखलें।

× इसके साथ ही साथ श्वेत कुष्टारि अवलेह और क्वाथ का सेवन करते रहने से स्थाई लाभ होता है। —सम्पादक

उपयोग—संक्रामक छूतदार फोड़ा फुन्सी अथवा हाथ पैं होने वाली छोटी २ फुन्सी, बालकों के शिर में होने वाली फुन्सी फोड़ों के लिये अति उत्तम है । ४

नेत्र बिन्दु-

१०७—घीग्वार का रस — २॥ तोला
नीम के पत्तों का स्वरस — १॥ तोला
अफीम ०॥ रत्ती — फिटकरी ६ माशा

विधि—फिटकरी पीस शीशी में भरदें अफीम, नीम के स्वरस में घोट उसे भी भरदें तथा घीग्वार का रस भी भर कर २ दिन रक्खे बाद नितार छान शीशी में रख ले ।

उपयोग—दो दो बूंद दिन रात में ३-४ बार आंख में डालने से आंख का लाली, करकरापन, सूजन सब ३ दिन में ही दूर हो जाती है ।

आयु० भूषण वै० रामलाल जी वर्मा

गोड़पारा बिलासपुर सी० पी०

आपका जन्म सम्वत १९७६ वि० में क्षत्री वंश-भूषण श्री ठा० शिवनाथ सिंह जी के यहां हुआ । आपने बना-रस से आयुर्वेद-भूषण परीक्षा पास की है । आप सं० १९९६ से स चिकित्सा कार्य कर रहे हैं । आप अनुभवी चिकित्सक हैं ।

वातहर तैल—

२०८—सोंठ १० तोला — उत्तम तमाखू १० तोला
छोटी पीपल ५ तोला — भांग (बिजिया) ५ तोला
हींग १ तोला — अफ़ीम २ तोला
कुचला १ तोला — काली मिर्च १ तोला

विधि—सब औषधियों को चूर्ण कर तिल तेल १ सेर सरसों का तैल १ सेर मे मिला कर मन्द आंच में पकावें जब दबाऐं जल जायं तब छान कर रखले। वात जन्य दर्दों मे मालिश करने से दर्द दूर हो जाता है।

वात रोग हर वटी—

१०६—एक मट्टी की हांडी लेकर उसके पेंदे में आधा सेर धतूरे के फलों को रक्खो, फलों के ऊपर आधा सेर सोंठ साबूत ही रखदो और सोंठ के ऊपर आधा सेर अजमायन रक्खो, अजमायन के ऊपर पुनः आध सेर धतूरे के फल रखो और जो जगह खाली रहे उसमें गले तक पानी भरदो फिर ढक्कन लगा मुख बन्द कर दो और अग्नि पर रख मन्दाग्नि से ८ घन्टे पकाओ बाद में सोंठ मात्र निकाल बाकी चीजें फेंक दो और सोंठ को छाया में सुखा लो सूखने पर कूट कपड़ छन कर खरल में डाल सहजने के रस की तीन भावना देकर तीन तीन रत्ती की गोली बना कर सुखा रखलो।

उपयोग विधि—सुबह, शाम को एक दो गोली गरम दूध के साथ सेवन कराने से वात व्याधि अर्थात् वात रोग नष्ट होते हैं।

श्वास रोगान्तक—

११०—अभ्रक सहस्रपुटी — १ तोला

सिद्ध मकरध्वज	६ मासे
लोह सहस्र पुटी	१ तोला
मुलहठी का सत्व असली	१ तोला

विधि—सबको खरल में डाल ८ घन्टे मर्दन कर शीशी में भर कर रखलें।

उपयोग—दो दो रत्ती शहद के साथ दें।

कविराज श्रीमान पं० विद्याविलास जी शुक्ल

श्री दुर्गा आरोग्य मन्दिर
सीतावर्डी-नागपुर

—o—
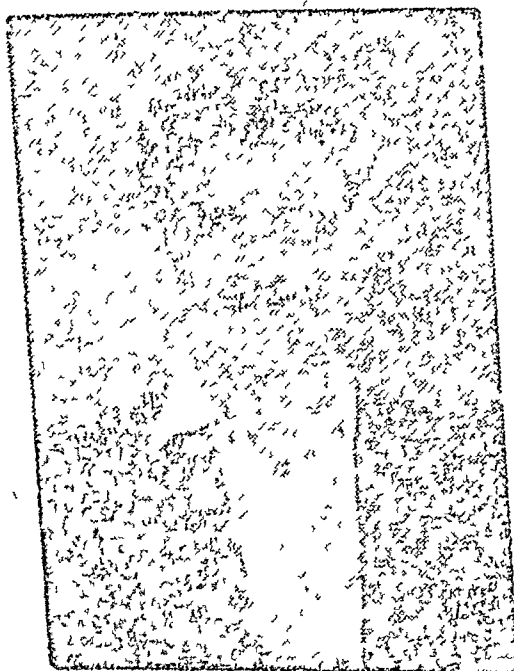
आपका जन्म १६१६ मे श्रीमान् पंडित कन्हैयालाल जी शुक्ल शास्त्री के यहां हुआ। आप मराठी, अंग्रेजी संस्कृत, हिन्दी इन चार भाषा के पंडित हैं। आपने अपने पिता जी से व्याकरण, काव्य, धर्मशास्त्र पढ़ कर आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त कर अ० भा० वैद्य सम्मेलन की भिषक, विशारद, और आचार्य परीक्षा क्रमशः उत्तीर्ण की है। विदर्भ मध्यप्रान्तीय स्थानिक स्वराज्य आयुर्वेद मंडल की स्थापना आपके ही प्रयत्न से हुई है। आप आयुर्वेद का प्रचार और वैद्यो के संगठन मे सदैव प्रयत्न शील रहते हैं।

बाल रोग पर-

२११—प्रवाल पिष्टी	१ तोला
शु० सिगरफ	१ तोला
सुहागे का फूला	१ तोला
सफेद मिर्च	२ तोला
केशर	२ तोला

विधि—सब औषधियों को खरल कर वायविडंग के क्वाथ में मर्दन कर आधी आधी रत्ती की गोली बना सुखा कर रखलें।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक एक गोली माता के दूध के साथ देने से बालकों का सूखा रोग और उसके उपद्रव जैसे कांस, श्वास, कृमि, मन्दाग्नि, वमन, अतीसार आदि सब नष्ट होकर बालक हृष्ट पुष्ट हो जाता है।

स्तन (दूध) शुद्ध कारक-

२१२—गिलोय	अनन्तमूल	सतावर
अखरोट	कमलगट्टा	असगंध
चिरायता		दर्भमूल

विधि—सब समान भाग लेकर कूट कपड़ छन करलें। १ से २ मासे प्रातः सायं गौ दुग्ध के साथ देने से स्तन (दुग्ध) शुद्ध हो जाता है और बढ़ भी जाता है।

आयुर्वेद भूषण श्रीमान पं० उत्तमचन्द जी जैन

महावीर आयुर्वेदिक फार्मेसी, पिंडरई
(मंडला) सी० पी०

—*—

आपकी आयु लगभग ३१-३२ वर्ष की होगी। दिगम्बर जैन गोयल जाति भूषण श्रीमान् बा० कुन्दनलाल जी जैन के सुपुत्र है। आप की जन्म भूमि कदवां जिला सागर की है। आपने अनेक स्थानों पर रह कर आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की है तथा आपने अनेक प्रशंसा पत्र और आयुर्वेद भूषण, वैद्यरत्न, आदि उपाधियां प्राप्त की है। अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी भी हैं। गरीब छात्रों को छात्र वृत्ति देते हैं और गरीबों की निशुल्क चिकित्सा करते हैं।

वीर्य विकार—

२१२—असगंध सतावर विजया
वंसलोचन कौंच बीज कौंच की जड़
वबूल का गोंद ईसवगोल की भुसी
नाग केशर
प्रत्येक २॥—२॥ तोला
त्रिफला
७॥ तोला

दो सौ बारह

मिश्री १५ तोला

विधि और उपयोग—सबको कूट कपड़ छन कर मिश्री पीस कर मिलादें और शीशी में रखलें। प्रातः और रात्रि को तीन तीन माशे दवा फाक ऊपर से दूध पीवें। इससे सब प्रकार के वीर्य विकार नष्ट हो बल बढ़ता है।

सुजाक नाशक—

२१४—कलमी सोरा २॥ तोला, चन्दन सफेद २॥ तोला
शीतल चीनी २॥ तोला, आंबा हल्दी २॥ तोला
घृत कुमारी रस ४० तोला

विधि—सबको कूट कपड़ छन कर घृत कुमारी का रस मिला शीशी में भर काक लगा कर ७ दिन धूप में रक्खें बाद में छान कर दूसरी शीशी में रखलें। प्रातः सायं रात्रि (तीन बार) एक तोला सेवन करने से सुजाक रोग अवश्य नष्ट हो जाता है।+

आयुर्वेदाचार्य श्रीमान पं० ब्रह्मदत्त जी शर्मा शास्त्री

गवर्निङ्ग डायरेक्टर नवशक्ति आयुर्वेदालय लि. भुसावल जी. आई. पी.

आपका जन्म गाजीपुर (अलीगढ़) निवासी द्विज-श्रेष्ठ श्रीमान पंडित प्रभू-दयाल जी के यहां सम्वत १९६८ वि० में हुआ। आपने व्या-करण मध्यमा, साहि-त्य शास्त्री और जयपुर की आयुर्वेदा-चार्य परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। वैद्य सम्मेलन की भी आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है।

आपने भूतपाईश्वर पनवेल पारितोषिक प्राप्त किया है। आपने, वर्ष जैन धर्मार्थ औषधालय में प्रधान चिकित्सक का कार्य किया है और अब उपरोक्त लिमिटेड कम्पनी खड़ी कर कार्य कर रहे हैं। आप अच्छे लेखक और वक्ता भी हैं। आपने सम्पादन कार्य और अध्यापन कार्य भी किया है। आप विद्वान अनुभवी और क्रिया कुशल वैद्य हैं। स्थानाभाव से विशेष विवरण देने में असमर्थ हैं।

रक्तातिसारी—

१६५—शंख भस्म २ तोला

बेलगिरी ६ माशे

इन्द्र जौ २ तोला

नख वाला ६ माशे

नागर मोथा ६ माशे

मिश्री

धाय के फूल ६ माशे

धनिया ६ माशे

लोध ६ माशे

सौंफ ६ माशे

सोंठ ६ माशे

४ तोला

विधि और उपयोग—सब औषधियों को कूट कपड़ छन कर, शंख भस्म और मिश्री मिला मर्दन कर रखलें। १ माशे से ३ माशे शहद और शीतोष्ण जल के साथ दिन २ से ४ बार तक सेवन करावें। आव खून पेचिस के दस्तों में अति लाभदायक है।

वात नाशक तैल—

१६६—तिल का तैल

वत्सनाभ ६ माशे

भिलावा

आक के पत्तों का रस

कपूर ६ माशे

ऽ१ सेर

कुचला २॥ तोला

४० नग

ऽ२ सेर

विधि और उपयोग-तिल-तैल में वत्सनाभ, कुचला और भिलावा तीनों को कल्क की भांति डाल गरम करे बाद में आक के पत्तों का रस डाल तैल सिद्ध कर छान ले और कपूर मिला रखलें। यह सन्धि वात, कटिशूल, पार्श्वशूल आदि वात वेदना में बहुत गुण कारी है।

श्रीमती विदुषी सरस्वती देवी जी वैद्य विशारदा

राजस्थान महिला चिकित्सालय, बीकानेर

(राजपूताना)

—o—

आपका जन्म सम्वत १६८४ वि० में श्रीमान पं० कुन्दनलाल जी शर्मा श्री मालीब्राह्मण के यहां हुआ। प्रयाग महिला विद्यापीठ की विदुषी परीक्षा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वैद्य विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप लेखक भी है, आपके पति श्री पं० जयशंकर जी शर्मा वैद्यराज हैं उनके सहयोग से आपने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। इण्डियन मेडीशन बोर्ड जयपुर से रजिस्टर भी है। अभी आपकी आयु ही क्या है आगे आपसे हमें आयुर्वेद के हित की बड़ी आशायें हैं।

अत्यार्त्तव--

२१७—घी में भुना हुआ सरम: गेरू एक तोला और आग पर फुलाई हुई फिटकरी १० तोला ले खरल में डाल आमले के स्वरस की सात भावना दें और खुश्क कर शीशी में रखलें।

उपयोग—शीतल जल के साथ १ माशे से २ माशे तक फकावें। चार चार घन्टे के अन्तर से दें।

पथ्य में—लघु भोजन लवण, एवं विदाही पादार्थ नहीं खाने चाहिये। पूर्ण विश्राम आवश्यक है।

श्वेत प्रदर--

२१८—पलास पापड़ा	५ तोला
फिटकरी श्वेत भुनी	६ माशे
केशू फूला	५ तोला
टंकण का फूला	६ माशे

विधि—प्रथम पलास पापड़ा केशू फूला कूट कपड़ छन कर फिटकरी टंकण मिला मर्दन कर रखले। तीन तीन माशे प्रातः सायं। सुपाच्य और लघु भोजन ले ब्रह्मचर्य से रहे। सिनेमा नाटक उपन्यास से बचे +

+ पलाश पापड़ा पानी में भिगो छिलका उतार कर सुखालो। केशूफूला से ढाक के फूल और टंकण से सुहागा लें। सुहागा और फिटकिरी का फूला कर डालें -

—लेखक

श्रीमान् कविराज उमंगलाल जी आर्य

पीड़ाहर आर्य औषधालय, भोजपुर

(बिजनौर)

—o—
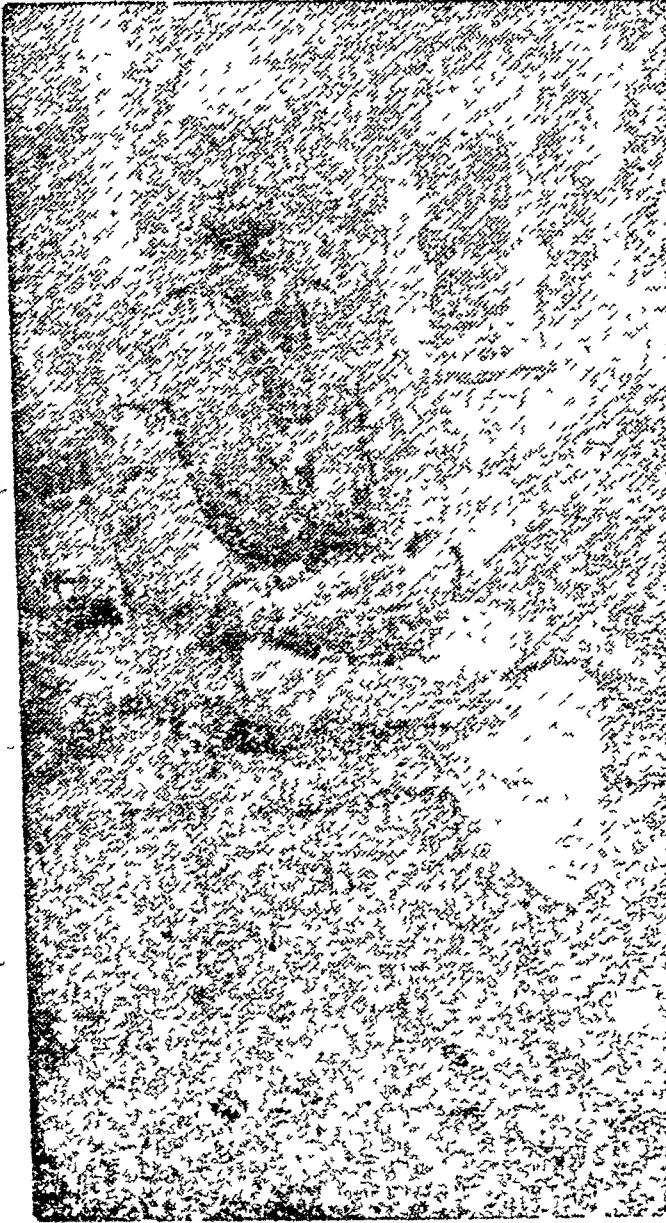
आपका जन्म सन् १९१०ई. में भोजपुर निवासी श्रीमान् वैद्य मुकन्दराम जी आर्य के यहां हुआ। हिन्दी उर्दू का मिडिल पास कर आप बाबा काली कमली वालों के विद्यालय में श्रीमान् प्रोफसर पं० बालकराम जी शुक्ल शास्त्री द्वारा शिक्षा प्राप्त कर अ० भा० वैद्य सम्मेलन की भिषक् और वैद्य-भूषण एवं कविराज परीक्षायें भी उत्तीर्ण की।

यू० पी० इन्डियन मैडीशन्न बोर्ड के रजिस्टर वैद्य हैं।

ज्वर शमन–

२१६—अग्नि पर फुलाई फिटकरी, नौसादर, अतीस, कालीमिर्च सोना गेरू समान भाग ले कूट छान कर पुनः खरल में मर्दन कर शीशी में भर कर रखले।

सेवन विधि—ज्वर, रक्तपित्त, कामला, तिल्ली रोग में प्रातः सायं अथवा ज्वर के वेग के पूर्व दो रत्ती से ८ रत्ती तक मधु अथवा गरम जल के साथ सेवन करावें। न्युमोनिया की प्रथमावस्था में भी अति लाभदायक है।

विशूचिका शमन—

२२०—अर्क मूल त्वक, काली मिर्च समान भाग ले खरल कर छान ले। यदि अर्कमूल त्वक नहीं न मिले तब काली मिर्च ही खरल कर छान लें और पुनः दोनों को खरल में डाल जल के द्वारा मर्दन कर मूंग बराबर गोली बना सुखा ले।

सेवन विधि—प्रत्येक दस्त और कै के बाद एक गोली अर्क पोदीना अर्क गुलाब के साथ सेवन कराने से विशूचिका नष्ट हो जाती है।

कविराज श्रीमान प्रभाकर जी मोहगांवकर

C/o प्रभाकर राजेश्वर जी मोहगांवकर
बरुड़ ता० मोर्शी जि० अमरावती
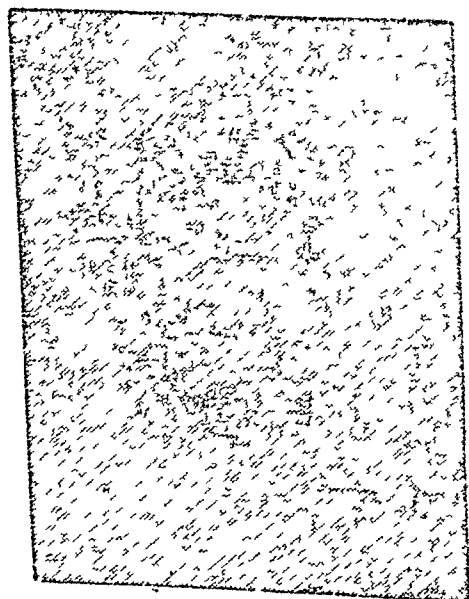
आपका जन्म सम्वत् १६४३ वि० में मोहगांव जि० छिंदवाड़ा निवासी श्रीमान वैद्य राजेश्वर जी के यहां हुआ। आपने माननीय वै० एन० एम० पराजपे शास्त्री और डा. जी. के. हरदास जी से आयुर्वेद और ऐलोपैथी की शिक्षा प्राप्त की आप बड़े योग्य मिलनसार वैद्य हैं। आप प्रा०

आयुर्वेद महा मंडल के सदस्य भी हैं।

बाल रोग हर—

२२१—काकड़ासिंगी १ तोला नागर मोथा १ तोला

अतीस १ तोला पीपल छोटी १ तोला

विधि —चारों औषधियां कूट कपड़ छन कर इनमें ही इन चारों के ही क्वाथों की प्रथक २ भावना दे पश्चात् निम्न औषधियां मिलावें।

जहर मोहरा भस्म	१ तोला
मोती भस्म	६ माशे
केशर	१ माशे
कस्तूरी	६ माशे
दरयाई नारियल	१ तोला

— सबको खरल करलें और ऊपर की औषधियों में मिला पान के रस मे गोली मटर बराबर बना कर सुखालें।

सेवन विधि—यह औषधि बालकों के हर प्रकार के रोग में अनुपान भेद से दी जाती है और अति लाभ करती है। ज्वर में माता के दूध के साथ। अतीसार में बेल के शर्बत या मधु के साथ। अजीर्ण में—सुहागे के फूला १ रत्ती में १ गोली मिला माता के दूध या मधु के साथ सेवन करावें और धनुषटंकार में भी इसी प्रकार सेवन करावें। स्थानाभाव से अन्य अनुपान नहीं लिखे वैद्य रोगानुसार अनुपान की योजना करलें।

वैद्य शास्त्री श्रीमान् पं० सूरजमल जी जोशी जैन

श्री दिगम्बर जैन आयुर्वेदिक औषधालय
मक्सीपार्श्वनाथ नमकी (उज्जैन)
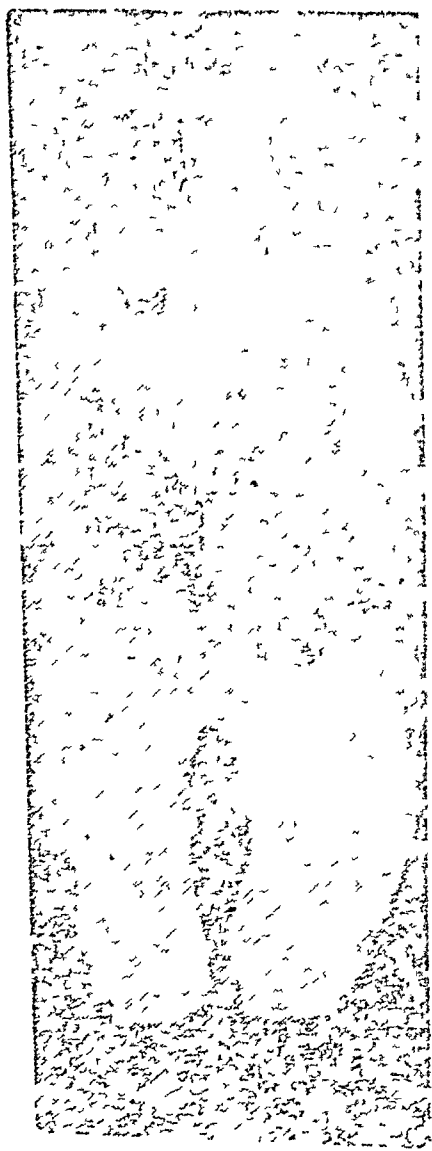
आपकी आयु अनुमान २६-३० वर्ष की होगी। आपका जन्म दिगम्बर जैन वैश्य कुल के श्रीमान् हकीम नथमल जी जोशी के यहां हुआ। आप खानदानी वैद्य हैं। वैद्य शास्त्री की परीक्षा पास की है। आप अनुभवी चिकित्सक हैं।

फोड़ा फुन्सी पर—

२०२—राल सुहागा गंधक

तीनों चीजों को बराबर लेकर कूट कर कपड़ से छान कर जाड़ों में दूना घृत और गरमियों मे ड्योढ़ा घृत मिला कढाई में डाल

अग्नि पर रख मन्दाग्नि से गरम कर एक जीव कर ले और कढ़ाई को अग्नि से उतार जल डाल दे ठण्डा होने पर जल नितार कर सबको मर्दन कर मलहम बना रख लें। इसके लगाने से फोड़ा फुंसियों को आराम हो जाता है।

घबराहट हर—

२२३—नारियल की जटा ५ तोला
कमलगट्टा की गिरी हरी जीभ निकली हुई ११ तोला
इलायची हरी १ तोला

—तीनों को निधूम जलाकर असली वंशलोचन १ तोला मिलाकर कपड़ छन कर रखलें।

सेवन विधि—दो रत्ती से ४ रत्ती तक मुनक्का में मिलाकर देना चाहिये। इसके सेवन से बुखार की घबराहट वमन नष्ट हो जाती है।

आयुर्वेदविशारद श्री वै० बिक्कनलाल जी गुप्त

मालब जिला गुड़गांवा
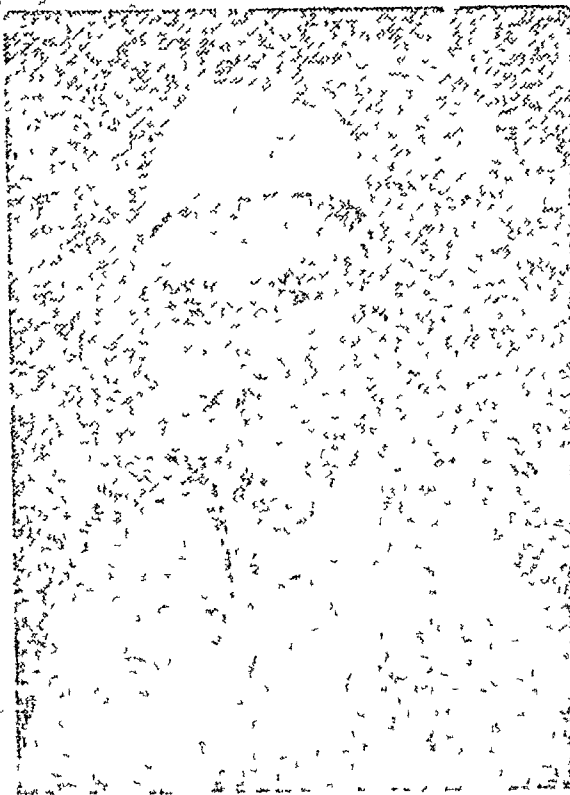
आपका जन्म सं० १९६८ वि० में वैश्याग्रवाल कुल भूषण श्रीमान् लाला खुशालीराम जी के यहां हुआ था। आपने श्री० वैद्य बृजलाल जी से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त कर अयुर्वेद विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है।

// गर्भदाता प्रयोग—

२२४—नागकेशर पीपल की जटा इलायची छोटी

प्रत्येक १-१ तोला

मिश्री ३ तोला

प्रयोग विधि—सबको कूट छानकर रख लें। मात्रा—६ माशे प्रातः-
काल (एक ही समय) बछड़े वाली गौ के धारोष्ण दूध के साथ
ऋतु स्नान के बाद ५ दिन सेवन करने के बाद पुरुष सहवास
करे (पांच दिन ब्रह्मचर्य से रहे) इस प्रकार ३-४ महीने ऋतु-
स्नान के बाद सेवन करने से अवश्य गर्भ धारण होगा।

// रजप्रवर्तक प्रयोग—

१२५—जोंक जो जल में रहने वाला कीड़ा होता है, जिससे रक्त
मोचन करते हैं, उसको लेकर बीच से काट दें। मुख की तरफ
का हिस्सा गुड़ में मिलाकर देने से मासिकधर्म खुलकर आता
है। गर्भवती को दिया जाय तब गर्भ गिर जाता है और पीछे
के हिस्से को गुड़ में मिलाकर देने से मासिकधर्म रुक जाता है।
परीक्षा प्रार्थनीय है।

भिषकरत्न श्री पं० रामसुन्दर जी खड्डर शास्त्री

सट्टमह पोस्ट लिलवानी जिला होशिंगाबाद ।

—o—
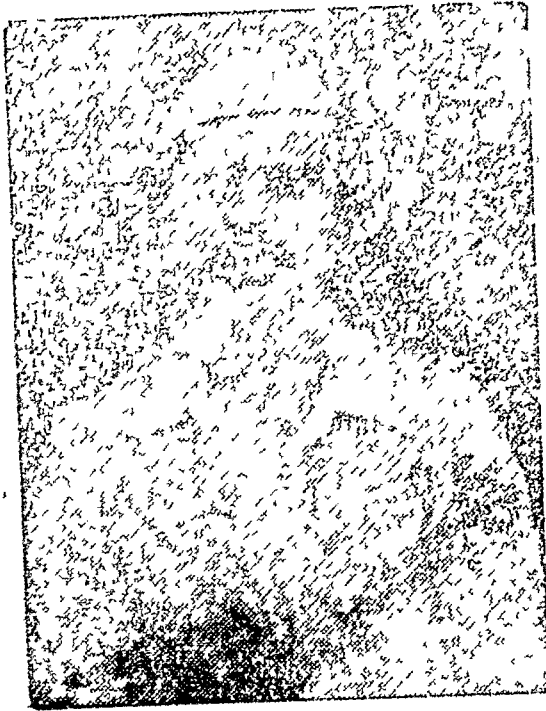
आपका जन्म सं० १६८० वि से ब्राह्मण परिवार के श्री० पं० लक्ष्मीप्रसाद जी खड्डर के यहां हुआ । आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वैद्य-विशारद, आयुर्वेदरत्न परीक्षा उत्तीर्ण की है । आपको चिकित्सा करते ५-७ वर्ष हो चुके है, इस ही छोटे समय में आपने इंजेक्शन विधि और चिकित्सा विधि का अच्छा अनुभव प्राप्त किया है ।

मन्थर ज्वर—

२२६—हींग बिना भुनी — शिलाजीत शुद्ध — लोंग

कछवा की खोपड़ी — बड़ी इलायची के दाने

नारियल की जटा — तुलसी पत्र — पाषाणभेद

खसखस के दाने

विधि—सब समान भाग ले कूट कपड़ छनकर गोबर के रस की ३ भावना दे गोली एक २ रत्ती की बना छाया में सुखा रख ले ।

सेवन विधि—गरम जल अथवा गोबर के स्वरस में दिन रात में ४-५ बार सेवन करावें । उपद्रव सहित मंथर ज्वर नष्ट हो

जाता है। +

बालकों का डब्बा रोग—

२२७—केशर असली गौलोचन असली कंजा की मींग
कस्तूरी उत्तम सोमनाथी ताम्र भस्म भुना सुहागा

विधि—समान भाग ले पान के स्वरस में गोली बाजरे के बराबर बना छाया में सुखा रख ले।

सेवन विधि—माता के दूध के साथ अथवा पान के स्वरस और अदरख के रस के साथ भी दे सकते हैं, इससे बालकों की सरदी, खासी, पसली चलना (डब्बा रोग) शान्ति हो जाता है। इसके साथ निम्न लेप भी करे तब विशेष लाभ होता है।

बालकों के डब्बा रोग पर लेप—

२२८—एलुआ केशर कायफल काली जीरी
अरण्ड की जड़ बारहसिंगा के सींग —६-६ माशे
अफीम १ माशे अलसी १ तोला
सोंठ आमा हल्दी वच्छनाग २-२ माशे

विधि—सबको कूट छानकर रख लें।

उपयोग— आवश्यकतानुसार थोड़ा सा लेकर गोमूत्र में पीसकर गरम कर छाती पसली पर लेप करें और अग्नि से थोड़ा सेक दे। इससे पसली का दर्द, निमोनियां, बच्चों का डब्बा रोग नष्ट होता है।

+ गोली चार २ रत्ती की बनावे १ रत्ती खुराक कम है। उपद्रव में २-४ बार अन्यथा प्रातः सायं दे। —सम्पादक

श्रीमान् वैद्य एस० के० नफीर आयुर्वेद भिषक्

गव्हान जिला अमरावती

—०—
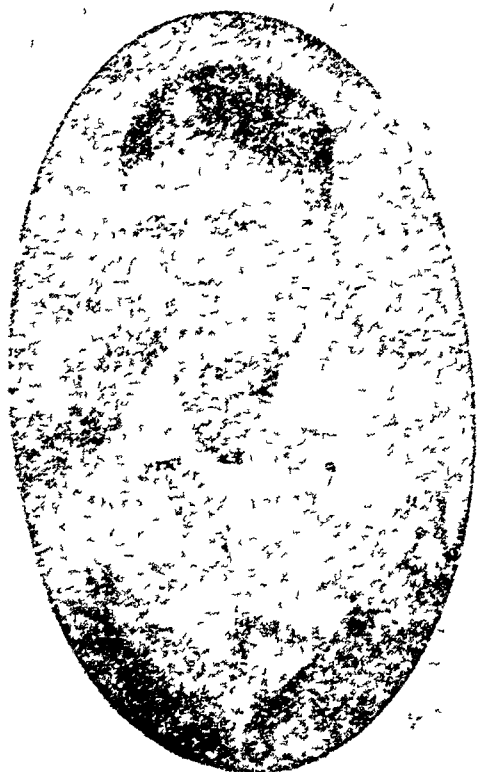
आपका जन्म सन् १६२१ ई० में श्रीमान् एम० के० अमीर के यहां हुआ। अपने अ० भा० वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेद भिषक् परीक्षा पास की है। साथ ही एच० आई० एम० एस० आई० टी० सी० पी० पास की है। आप दश वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं और बड़े उत्साही वैद्य हैं।

मूत्राशय की पथरी के लिये—

२२६—नदी, तलाबों में जाल के मुताबिक जो हरे रंग का शैवाल होती है, उसको लाकर धूप में सुखालें सूखने पर कुटवा कर कपड़ छन कर रखलें।

उपयोग—प्रातः सायं दो दो माशे चूर्ण ठन्डे जल के साथ फकावें। ७ दिन के अन्दर ही पथरी कट कर मूत्र के मार्ग से निकल जायगी। यह प्रयोग मेरा सेकड़ों वार का परीक्षित है भगवान साक्षी हैं।

शीत पित्त पर—

२३०—सोंठ गेरू सूखे आमले

दो सौ पचास

—समान भाग ले कूट छान कर रक्खें। दो दो मासे औषधि तुलसी पत्र के स्वरस में एक एक घण्टे बाद सेवन करावें और शरीर पर तुलसीपत्र का ही स्वरस मलें तो शीत पित्त रोग शान्ति हो जाता है। परीक्षा प्रार्थनीय है ×

श्री० अम्बिकादेवी जी शुक्ल आयुर्वेद-भिषक

मदन झापारोड बड़ोदा स्टेट

—+—
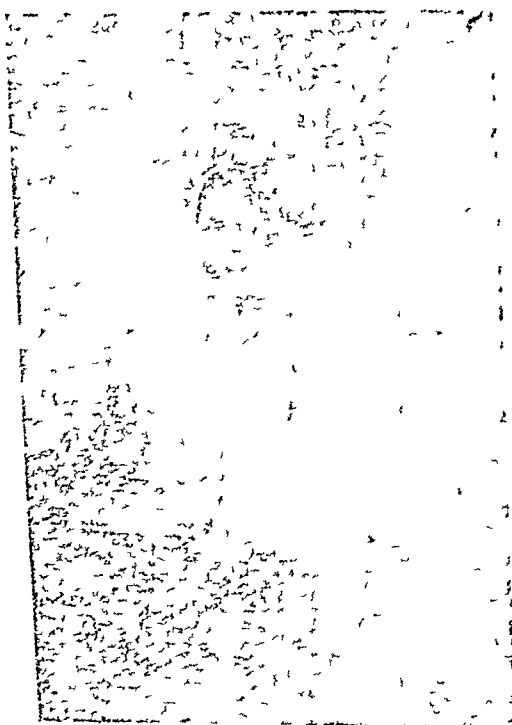
श्रीमती जी का जन्म सन् १६१८ ई० में चॉदुर बाजार (अमरावती) में श्रीमान् रामनाथ जी भट्ट के यहां हुआ। आपने मराठीभाषा पढ़ आयुर्वेद का अध्ययन अपने पति श्रीमान् वैद्यराज मुरलीधर जी शुक्ल से कर अ० भा० वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेद-भिषक् परीक्षा पास की चिकित्सा कार्य अपने पति महोदय के सहयोग से कर रही हैं। आप एक सुयोग्य शीलगुण सम्पन्न प्रतिभाशाली महिला है।

× शीत पित्त के रोगी को ३-४ मात्रा से अधिक सेवन न करावें। प्रथम १-२ दस्त करा कर प्रयोग कराना उत्तम रहता है ।

—सम्पादक

बाल रोग पर–

२३१—जांबु की छाल का स्वरस — १० तोला
नागर पान का स्वरस — १० तोला
अडूसे का स्वरस — १० तोला
करेले के पान का स्वरस — १० तोला
घोड़े की लीद का स्वरस — १० तोले
गौलोचन असली — १ तोला

विधि—पांचो स्वरस एक कलईदार कढाई में डाल कर मन्दाग्नि से गरम करें, जब खोवा सा बनजाय तब उतार कर उसमें गौलोचन कपड़ छन कर डाले और घोट कर एक एक रत्ती की गोली बनालें। प्रातः सायं एक एक गोली माता के दूध साथ देने से बालकों के श्वास, खांसी, पसली का रोग, पेट आवमान आदि रोग पर रामबाण है।

स्त्री रोग पर–

२३२—पारद गंधक के योग से बनी रौप्य भस्म — १ तोला
गौदन्ती भस्म — ५ तोला

—दोनों को १० तोले गुलाब के हरे फूलों के साथ ६ घण्टे घोट कर ३–३ रत्ती की गोली बना सुखा रखलें। प्रयोग छोटा सा है, पर है चमत्कारिक। एक बार बना कर देखिये। प्रातः सायं एक एक गोली सेवन कराने से स्त्रियों का श्वेत व रक्त प्रदर और ऋतु दोष नष्ट हो वन्ध्यत्व दोष भी मिटा कर पुत्र प्राप्त करता है।

वै० वि० श्री० पं० राधाचरण जी द्विवेदी वैद्य

कल्याण आयुर्वेदिक औषधालय

लेवा पोस्ट रगौल जिला हमीरपुर

—+—
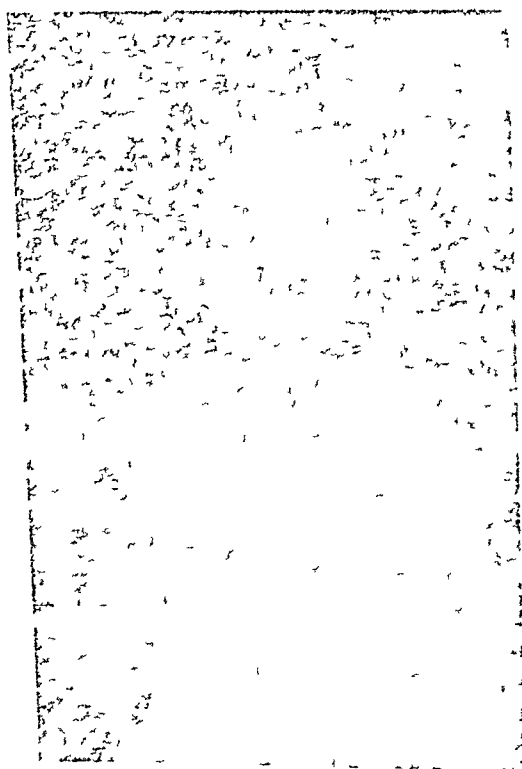
आपका जन्म वैसाख सम्वत १९६२ में श्रीमान पंडित प्रयागदत्त जी द्विवेदी के यहां हुआ। आपने वैद्य विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप अपने प्रान्त के अच्छे अनुभवी वैद्यों में हैं। आपने अनेक प्रसंशापत्र भी प्राप्त किये हैं। आयुर्वेद के प्रचार में आप प्रयत्न शील रहते हैं।

मलेरिया पर—

२३३—कन्जा की मींग १ तोला फिटकिरी का फूला १ तोला

पीपल छोटी ६ माशे गौदन्ती भस्म ६ माशे

तुलसीपत्र का स्वरस ५ तोला

विधि—सब औषधियां कूट छान कर गौदन्ती भस्म मिला तुलसीपत्र के स्वरस में मर्दन करे जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब एक एक रत्ती की गोली बना सुखा रखले।

सेवनविधि—ज्वर के वेग से ४ घण्टे पूर्व से एक एक गोली गरम पानी से एक एक घण्टे बाद देते रहें जब तक कि ज्वर जूड़ी

न आवे यदि आ जावे तब देना बन्द करदे। इस प्रकार २-३ दिन देने से मलेरिया ज्वर नहीं आता।

मलेरिया पर बूंटी-

२३४—तिजारी अर्थात् एक दिन छोड़ कर तीसरे दिन आने वाली जूड़ी के लिये जब जूड़ी खूब चढ़ आवे तब श्वेतपुनर्नवा (न मिले तब लालपुनर्नवा ही लेले) की जड़ उखाड़ कर वैद्य अपने हाथ में लेलें। रोगी को खड़ा कर उसके पीछे एक आदमी बैठ रोगी के घुटुआ (घुटने) दोनों पकड़ले और वैद्य रोगी को जड़ी दिखावे और रोगी से पूछे कि यह क्या है। रोगी कहे जंगल की जड़ी है। इस तरह तीन या चार बार पूंछे और रोगी कहे तब तिजारी घुटने से ऊपर को चढेगी फिर रोगी कहे वहां से पकड़े और वैद्य रोगी से इसी प्रकार प्रश्न करे और रोगी वही उत्तर दे। इस प्रकार नीचे का हिस्सा ठीक होता आवेगा तिजारी ऊपर तक चढ़ती जायगी जब शिर तक कहने और बूटी दिखाने से तिजारी उतर जायगी और फिर नहीं आवेगी। ध्यान रहे कि तिजारी उतार ने से पूर्व रोगी से एक गरीका गोला लेलेवे और उतर ने पर हनुमान जी के मन्दिर में हनुमान जी को बलि रूप में समिर्पित करदें। तिजारी खूब चढ़ने पर उतारे अन्यथा पुनः आजावेगी। वैद्य परीक्षा करें और प्राणाचार्य में छपावें।

चि० पं० मुरलीधर जी शुक्ल वैद्यराज

श्रीगणेश औषधालय सदन कांपारोट

बड़ौदा स्टेट
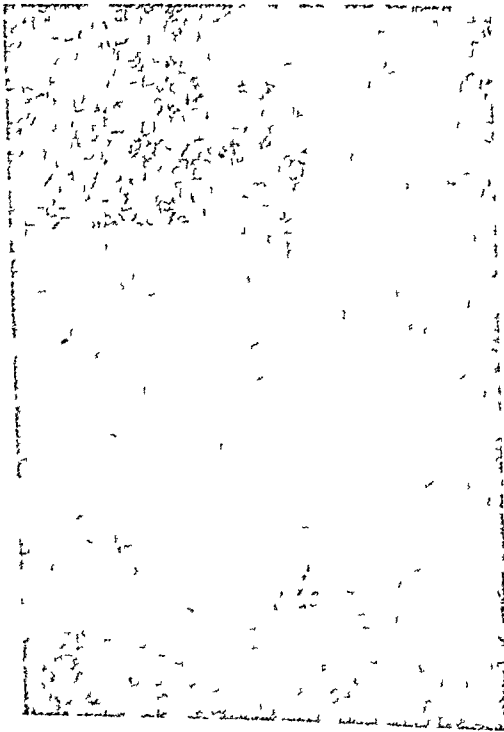
आपका जन्म सन १९०८ ई० में बादला तहसील (मालवा प्रदेश) में श्रीमान पं० शिवशंकर जी शुक्ल के यहां हुआ। गुजरात के लुणावाड़ा राजकीय सज्जन कुंवर संस्कृत पाठशाला से वेद, काव्य, कर्मकान्ड, संस्कृत का अभ्यास कर हरद्वार में श्री० पं० पोतीराम जी की पाठशाला में श्री नौबतराम जी आयुर्वेदाचार्य के पास रहकर आयुर्वेद का अध्ययन और अनुभव प्राप्त किया। उसके बाद चिकित्सा कार्य कर प्रतिष्ठा, प्रसिद्ध और अनेक प्रशंसा पत्र प्राप्त किये ।

जयपुर—

२३५—वैद्य अपने रोगी की आयुर्वेदिक संपूर्ण चतुष्पाद युक्त चिकित्सा करते हुये इस महामृत्युन्जय मंत्र का निम्न विधि से सवालक्ष जप ४२ दिनमें पूर्ण करे ।

इस मंत्रका एक सहस्र जप प्रातः काल में करे जप पूर्ण होने पर निम्न लिखित द्रव्यो से १०८ आहुती से हवन करे हवन पूरा होने पर कमरे के द्वार पांच मिनट के लिये बन्द करदे जिस

से हवन का धूम्र रोगी के श्वास प्रश्वास द्वारा शरीर में जाकर रोगोत्पादक कारणों को नष्ट करदे इसके बाद शान्ती पाठ एवं स्वस्ती पुण्याह वाचन के मन्त्रों से पंचपल्लवोंद्वारा रोगी के शरीर पर मार्जन करे इसी प्रकार मध्यान काल एवं सायकाल में भी एक सहस्र जप हवन एवं मार्जन होना चाहिये, इस प्रयोग के लिये एक स्वतन्त्र हवादार स्वच्छ स्थान निर्माण होना चाहिये, उस स्थान में रोगी भी रह सके और मन्त्र का उच्चार शुद्ध स्वर में होना चाहिये जिससे रोगी एकाग्र हो श्रवण तथा मनन कर आत्मबल व आरोग्यता प्राप्त कर सके।

हवन द्रव्य की समिधा नीचे मुजिब होना चाहिये (ईंधन) अर्क, पलास, उदम्बर, खैर, बिल्व, दूर्वा, पीपल, बड़ की ही लकड़ियों का उपयोग करें।

हवन द्रव्य-

श्वेत चन्दन	रक्त चन्दन	अगर	तगर	पतंग
देवदारु	धूप सरल	कपूर काचली		कमल काकड़ी
शिलारस	कपूर	लोंग	एलाइची	कंकोल
सुगन्धवाला	मोथा		लोयमान	लाख
नख	राल	बादाम	पिस्ता	खोपरा
द्राक्षा	साखर			—प्रत्येक २–२ तोला
जव	तिल			२५–२५ तोला
घी	गुग्गुल			५०–५० तोला

—इन सब द्रव्यों को शुद्ध कर एक पात्र में मिश्रण करे, इसकी आधा २ तोले की आहुती तीनों काल देकर तीनों काल प्रथक एक २ माला का हवन करे।

खाने की औषधि—

खाने की औषधि नीचे लिखे अनुसार तैयार करें।

अष्ट संस्कारित पारद	१ तोला
आमलासार गन्धक	२ तोला

—दोनों को १२ घण्टा घोटकर कजली बनावे, उसके बाद आधा तोला स्वर्ण भस्म, १ तोला रजत भस्म, १ तोला सेंधा नमक मिलावें। बाद सात भावना अडूसे के स्वरस की, सात भावना भृङ्गराज रस की एवं सात भावना बिल्व पत्र के स्वरस की देवे, और एक भावना अर्क दुग्ध की देकर खूब घोटे- सूखने पर उसमें ११ तोला शुद्ध गुग्गुल मिलाकर खूब कूटकर नरम होने पर आधे २ माशे की गोली बनावें। रोगी की अवस्था व शक्ति का विचार कर प्रातः सायं एक-एक गोली खिलावें।

अनुपान—पाव भर बकरी के दूध को गरम कर उसमें शक्कर आधा घी आधा तोला मिर्च नग ७ से ११ तक मिलाकर पिलादे, इस प्रकार ४२ दिन औषधी के साथ उपरोक्त महामृत्युंजय के प्रयोग से राज रोग भाग जाता है। आहार विहार शास्त्रोक्त ही चालू रक्खे।

उपदंश पर—

२३६—अढ़ाई तोला नीम की छाल को जवकुट करके एक कलईदार पतीली में १० तोला पानी डाल उबाले उस उबलते हुए पानी मे उपरोक्त छाल डालकर नीचे उतार ढक देवे, रात्री भर रहने देवे. प्रातः ३ रत्ती पारा गन्धक की कज्जली मधु में चाटकर उपरोक्त नीम का पांच तोला पानी पी जावे, ऐसा दोनों समय २१ दिन करे।

पथ्य—चने की रोटी घी के साथ सेवन करे, अन्य कुछ भी पदार्थ न खाय, ऐसा करने से उपदंश एवं सुजाक दोनों समूल भाग जाते हैं।

श्री० कवि० पं० व्यासनारायण जी शुक्ल आयु०

चिकित्सक डि० कौ० दातव्य औषधालय नादा
गोमुख (नागपुर)

—०—
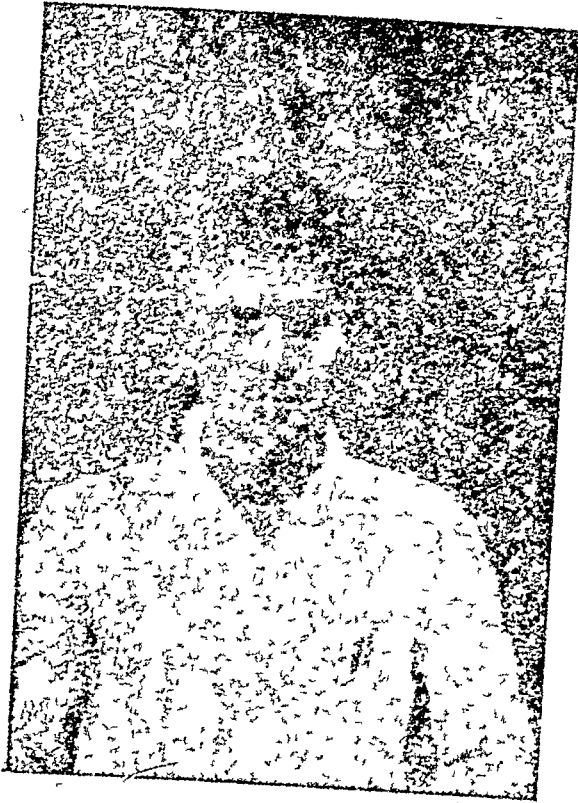
आपकी आयु लगभग २५ वर्ष की है। आपने प्रथम मराठी और अंग्रेजी का अध्यन किया इस के बाद श्री० वैद्यराज पं० कन्हईप्रसाद जी शुक्ल शास्त्री जो कि आपके पूज्य पिता है उन से संस्कृत का अध्यन किया उसके पश्चात् अष्टाङ्ग आयुर्वेद विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की साथ ही अ० भा० वैद्य सम्मेलन की तीनों परीक्षाएं आयुर्वेदाचार्य तक पास की तथा अनुभव प्राप्त के लिये आपको देहली आदि स्थानों में भी रहना पड़ा तथा डि० कौ० के मकर धोकड़ा के औषधालय में और अब नांदा गोमुख के औषधालय में चिकित्सक भी रहे और हैं। आप विदर्भ मध्य प्रान्तीय स्थानिक स्वराज्य आयुर्वेद मंडल के प्रधान मंत्री है। आयुर्वेद के प्रचार और वैद्यों के संगठन के लिये आन्दोलन करते रहते हैं।

विशूचिकान्तक—

२३७—मयूर पंख के चंदवे की भस्म — १ तोला
पीपल वृक्ष की अधजली भस्म — १ तोला

	१ तोला
जटामांसी की भस्म	१ तोला
मक्के के भुट्टे के दट्टे की भस्म	४ तोला
शु० गंधक	

विधि—शुद्ध गंधक को बारीक खरल कर उसमें [illegible] कपड़ा में छान कर मिला मर्दन कर रक्खें।

उपयोग—चार २ रत्ती औषधि शहद के साथ [illegible] घन्टे बाद देते रहें। जब तक कि [illegible] रेचन बन्द न हो बराबर देते रहे।

पथ्यसें—अन्न, दूध आदि खाद्य पदार्थ नहीं देने चाहिये सिर्फ १/४ शेष (एक सेर १ पाव) उबाला हुआ जल ही देते रहना चाहिये। ध्यान रहे कि रुग्ण के मल, वमन के बन्द बराबर बदलते रहें। प्रार्थना है कि वैद्य इसका अवश्य अनुभव करें और अपना अनुभव प्राणाचार्य में छपावें और देखे कि यह प्रयोग कितना उत्तम है। डाक्टरों के लवण जल प्रयोग से भी उत्तम है।

सूचना—किसी औषधि विक्रेता को हमारा प्रयोग बना पेटेन्ट कर विक्री नहीं करना चाहिये।

प्रदर नाशक—

२३८—रसाजन २० तोला	अडूसा २० तोला
नागर मोथा २० तोला	दारु हल्दी
चिरायता २० तोला	बेलगिरी २० तोला
भिलावा की मिंगी	२० तोला
जल ७ सेर	शहद ३५ सेर
गुड़	१॥ तोला

विधि—प्रथम नम्बर ७ औषधियों को कूट कर जल डाल औटावें जब १॥। सेर जल शेष रहे सब छान कर उसमें शहद गुड़ डाल कर हंडी में मुख बन्द कर १५ दिन रख दे पश्चात

छान कर २० तोला संजीवनी सुरा डाल कर रख लें।

प्रयोग—प्रातः सायं एक एक तोला अरिष्ट और एक एक तोला पानी मिला कर सेवन कराने से श्वेत और रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

कविराज श्री० पं० परमेश्वर प्रसाद जी आयु०

राजगढ़ पोस्ट सादुलपुर
(बीकानेर)

—o—

आपका जन्म संवत् १९-६५ वि० में गौड़ ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान पं० श्रीराम जी वैद्य के यहां हुआ था। आप राजस्थान ऋषि कुल ब्रह्मचर्य आश्रम रतनगढ़ के स्नातक हैं। आ० भा० आ० विद्यापीठ की आपने आयुर्वेदाचार्य परीक्षा पास की है। आपने धर्मार्थ औषधलयों में चिकित्सक कार्य कर तथा अपने पिता से अनुभव प्राप्त किया है आप श्री सर्वजन हितैषी दातव्य औषधालय के प्रधान चिकित्सक हैं आप अपने क्षेत्र में बड़े प्रसिद्ध और अनुभवी वैद्य गिने जाते हैं।

जीर्ण ज्वर पर—

२३६—लूनकला पाव भर लेकर बारीक स्वच्छ कपड़े में रख पोटली बांध नदी या कूप में लटकादें २ दिन रात्रि रहने से चौथे दिन

मल कर छाया में सुखा दें और चूर्ण कर शीशी में भर कर रखलें।

उपयोग—नीम गिलोय ६ माशे कासनी ६ माशे को सिल लोढ़े से खूब बारीक पीस दवाई की तरह ✗॥= डेठ पाव पानी में छान लें और फिर इसे पित्तल या कांसे के कटोरे में डाल कर निधूम अंगारों पर रख गरम करें और गरम होने से काला काला मेल ऊपर आजायगा उसे निकाल कर फेंक दें और कटोरा उतार कर ठन्डा कर छान कर रखले और इसमें २ तोले सर्वत विजूरी मिलाकर पहले ६ माशा खूब कला चूर्ण फांक ऊपर से यह औषधि पिलावें। यह प्रयोग ४० दिन का है इसके सेवन से जीर्ण ज्वर, धातुगत ज्वर, रक्तगत ज्वर, अवश्य नष्ट हो जाता है ×

पथ्य—चावल, मूंग की दाल, गेंहू की रोटी हलके शाक।

अपथ्य—घृत व गरिष्ट भोजन।

सर्वत विजूरी—

नं०—कासनी के बीज — १॥ तोला

खरबूजे के बीजों की गिरी — १॥ तोला

ककड़ी के बीजों की गिरी — १॥ तोला

—कासनी की जड़ की छाल २ तोला सब को यवकुट कर १ सेर पानी में अंगीठी पर चढ़ावें और जब आधा पानी रहे तब छान कर [illegible] पानी मिला अग्नि पर रख सर्वत की चासनी बना [illegible] ठन्डा कर रखले। यही सर्वत विजूरी है।

× [illegible] तैल लगाते रहें। प्रातः सायं उपरोक्त प्रयोग का [illegible] तथा [illegible] मास [illegible] रात्रि को देते रहें तब [illegible] हो जाता है।

—सम्पादक
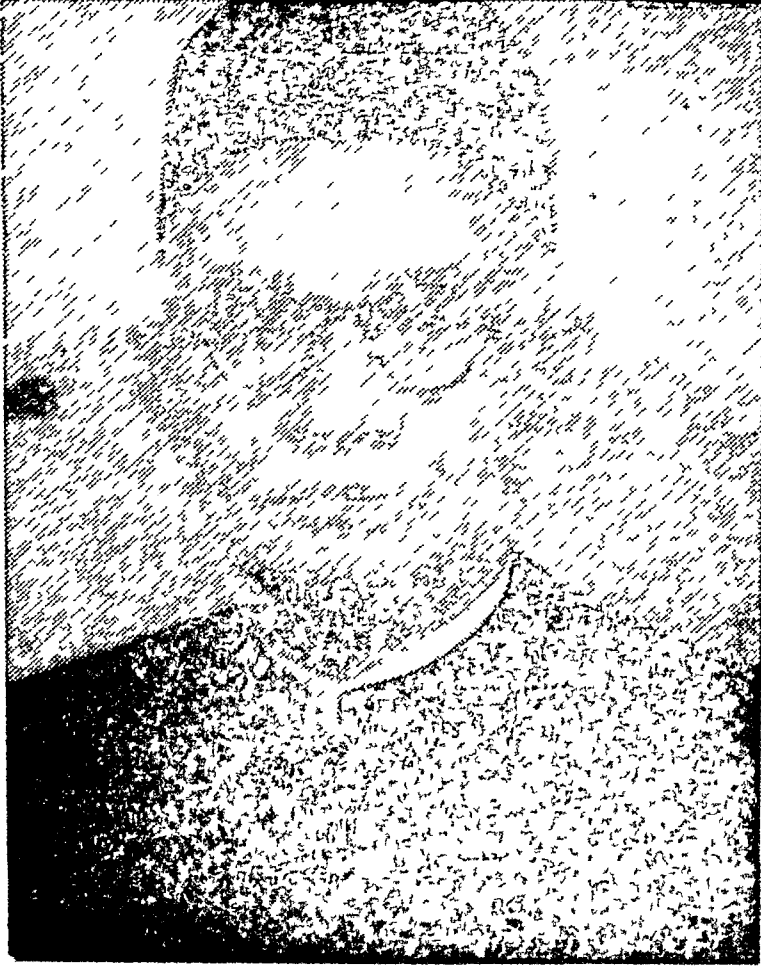
चिकित्सक वै० खटाऊ प्राग जी ठक्कुर

कोजा चोरा पोस्ट आसंबिया (कच्छ)

रक्त पित्त पर—

२४१—आंवले का मुरब्बा
बड़ी हरड़ का मुरब्बा
वंशलोचन असली
मुलहठी का सत्व असली
मुक्ता पिष्टी ६ माशे
चांदी के वर्क नग १००
सेब का मुरब्बा
गुलकन्द २०-२० तोला
छोटी इलायची के दाने
१—१ तोला
सोने के वर्क २५ नग
फिटकिरी का फूला ६ माशे

शहद ४० तोला

विधि—काष्ठादि औषधियां कूट कपड़ा में छान ले मुरब्बा सिल लोढ़ी मे पीस लें और काष्टादि दवा मिला दें फिर मुक्तापिष्टी चांदी सोने के वर्क और शहद मिला रखलें।

उपयोग—छः छः माशे प्रातः सायं चटाने से रक्त पित्त रक्त प्रदर दाह, तृष्णा, श्वास, कास, प्रतिश्याय जनित कास गले की रुकावट आदि सब सब नष्ट हो जाते हैं।

वैद्यशास्त्री अमरसिंह जी वर्मा

पूरनपुर, फरुखाबाद
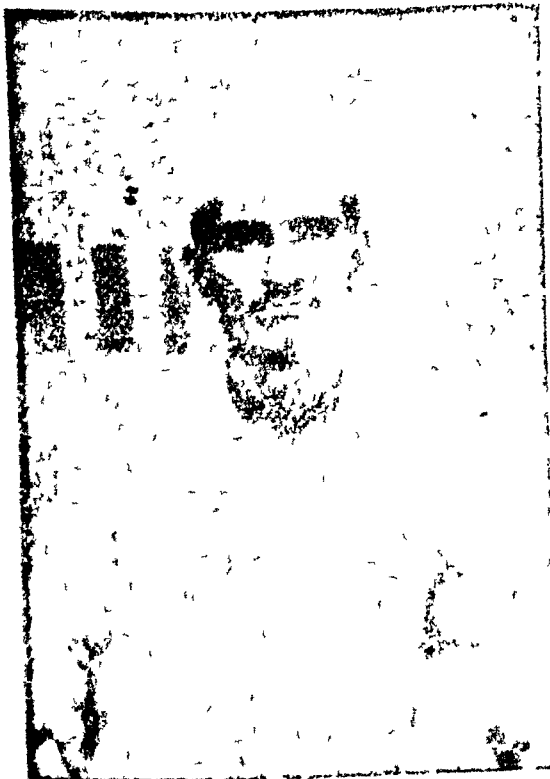
आपका जन्म सन् १६१३ ई० से राजपूत खानदान के श्र० बा० चेतरामसिंह जी राजपूत के यहां हुआ। आपने व्याकरण की शास्त्री परीक्षा पास कर आयुर्वेद पढ़ा और वैद्य शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। विद्वत्परिषद आगरा होमयोपैथिक कालेज बनारस से भी पदक प्रशंसापत्र उपाधि प्राप्त की। चिकित्सा में आपने डाक्टरों का मुकाबिला किया और उनके छोड़े हुए रोगियो

को आरोग्य किया इसलिये अपने प्रदेश में आपने प्रसिद्ध प्राप्त की, आप सिद्ध हस्त चिकित्सक और मिलनसार होने से जनप्रिय हो गये हैं ।

धातु विकार पर-

४२—कालीमिर्च दालचीनी सोंठ कतीरा
गोंद बबूल जावित्री तेजपात —प्रत्येक १॥-१॥ तोला
केशर १ तोला मिश्री ४ तोला अफीम ३ माशे
हब्बे बलसां मुरमरो अकरकरा ख्वसूस
कपूर कचरी जुन्देबेदस्तर जन्दबार दुरूबज
मस्तंगी अगर कल्मी —प्रत्येक ७-७ माशे
तज तुख्म खीरा कायफल लोंग
पीपल छोटी पाषाणभेद —पत्येक १०-१० माशे

विधि—मिश्री और अफीम छोड़ बाकी सब ओषधियां कूट कपड़ा में छान लें, मिश्री पीस छान कर मिला ले और अफीम गुलाब जल में घोट उसमें सब ओषधि मिलाकर चार २ रत्ती की गोली बना सुखा रख लें ।

सेवनविधि—एक-एक गोली सुबह और रात को सोते समय गाय के दूध मे मिश्री मिला उसके साथ निगलनी चाहिये । यदि गाय का दूध न मिले तब भैस या बकरी का भी दूध ले सकते हैं । तैल, खटाई, मछली, शराब, लाल मिर्च आदि सेवन नही करे, ब्रह्मचर्य से रहे, इसके सेवन से वीर्य शुद्ध होता है, पुष्ट होता है, बढ़ता है, स्तम्भन शक्ति भी बढ़ती है, बल, स्फूर्ति भी देता है।

राजवैद्य पं० लायकराम जी शर्मा वैद्य

श्री स्वतन्त्रानन्दौपधालय चौरोली पोस्ट मोरह (बुलन्दशहर)

आपकी आयु ४५ वर्ष के लगभग है। आप श्रीमान् पं० रघुवीरशरण जी वैद्य के सुपुत्र है। आप यू० पी० इंडियन मेडीशन बोर्ड से रजिस्टर्ड हैं। आपने अपनी चिकित्सा की प्रशंसा में अनेक प्रशंसापत्र भी प्राप्त किये हैं। आपका उपनाम श्री स्वतन्त्रानन्द जी शर्मा है । १६-२० वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे है, आपका जन्म ब्रह्मपुर कल्लूपुरा पोस्ट भाभर में हुआ था। अब आप चौरोली चिकित्सा काय कर रहे हैं।

रक्त प्रदर नाशक—

२४३—दोनों मूसली चुनियां गोंद स्वर्ण गेरिक
शतावर नागकेशर असली संगजराहत बोल
प्रत्येक १-१ तोला

दम्बुल अखवेन ६ माशे

—सबको कूट कपड़ा में छान कर गुलाब जल में घोट एक २ माशे की गोली बनावें। प्रातः और रात्रि को दो दो गोली गौ के दूध के साथ निगलवादें। दूध कच्चा ही लें मिश्री मिलाकर पर

दो पहर और सायंकाल भी दो दो गोली गुलाब जल के साथ दें। इस तरह ४ मात्रा चार समय सेवन कराने से स्त्रियों का रक्त-प्रदर २-३ दिन में ही बन्द हो जाता है।

कविराज वैद्य हिमालयेश्वरानन्द जी वैद्यभूषण

हिमालय आरोग्य मन्दिर १४/२८६ पेरसाटोल

काठमान्डु-नेपाल

—+—
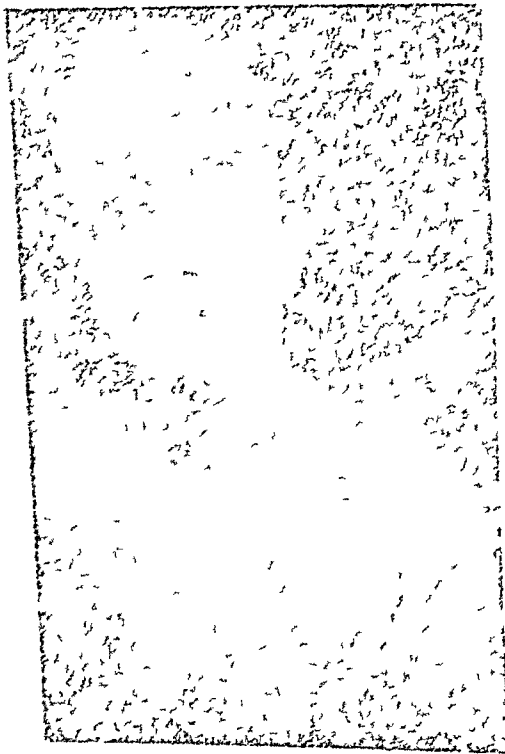
आपकी आयु लगभग २५ वर्ष की है आप श्रीमान् डा० विश्वेश्वरानन्द जी वैद्य के सुपुत्र है। नेपाल सरकारी आयुर्वेद विद्यालय में वैद्यभूषण (६ वर्ष का कोर्स) पास की. वीर हॉस्पिटल में सर्जरी का और वैक्सीनेशन का तथा प्रिंस होमियो कालेज से इंजेक्शन का सर्टीफिकेट प्राप्त किया है। वैद्यक का कार्य परम्परा से चला आता है, आप अनुभवी वैद्य हैं।

सुजाक हर बटी—

२४४—शीतल चीनी यवक्षार गोखरू चूर्ण

कल्मी शोरा शु० फिटकरी ईसबगोल चूर्ण

गुडूची चूर्ण श्री खण्ड (चन्दन) चूर्ण

प्रत्येक १—१ तोला

विधि—सबको मिलाकर २ माशे से ४ माशे तक तण्डूलोदक में चीनी मिलाकर दिन में तीन बार सेवन कराने से सर्व प्रकार के गिनोरिया, मूत्र कृच्छ्र, उपदंश रोग नाश होते हैं। मेरा शतशोनुभूत है।

यदि मूत्र नलिका में घाव, फोड़ा, फुंसी हैं तो त्रिफला निम्ब पत्र के क्वाथ से उत्तर वस्ति दें।

हिमालय वटी—

२४५—सिद्ध मकरध्वज १ माशे

स्वर्णवंग	१॥ माशे	अभ्रक भस्म नं० १	२ माशे
शुद्ध कुचिला	२॥ माशे	शुद्ध शिलाजीत	३ माशे
शुद्ध अहिफेन	३॥ माशे	जहर मोहरा खताई	४ माशे
प्रवाल भस्म	४॥ माशे	अकरकरा चूर्ण	५ माशे
जायफल चूर्ण	५॥ माशे	* कपिकच्छू बीज चूर्ण	६ माशे
गुडूची सत्व	६॥ माशे	+ अश्वगन्ध चूर्ण	७ माशे

जल कमल का केशर ८ माशे

विधि—पहले काष्ठौषधियों को कूट कपड़ छनकर शेष औषधियों में मिलावें। फिर आमला, शतावर, धतूरे के रस में १-१ दिन भावना देकर १-१ रत्ती की गोली बना लें।

सेवन-विधि—मात्रा-२ गोली। अनुपान—घृत और शहद बाद में चीनी मिला हुआ दूध पीवें। सेवन काल—प्रातः और सायं।

गुण—१० दिन सेवन करने से षण्डत्व नाश होकर स्त्री सम्भोग करने की शक्ति प्राप्त होती है। २१ दिन सेवन करने से पुरुषों का धातु सम्बन्धी रोग नष्ट होता है। इसमें संदेह नहीं।

---

* कपि कच्छू बीज चूर्ण (कौंच के बीज का चूर्ण)

\+ अश्वगन्ध (असगंध) चूर्ण

आयुर्वेदाचार्य श्री पं० जिनेश्वरदास जी जैन शा०
जैन औषधालय भीलवाड़ा (मेवाड़)

—०—

आपका जन्म सं० १९५९ में श्री दिगम्बर जैन मन्दाके-लग्न कच्छुनात्यन्तगत चन्द्रवंश में करहल निवासी श्रीमान माखनलाल जी के यहां हुआ। आपने व्याकरण की मध्यमा, आयुर्वेद की विशारद परीक्षा पास कर चिकित्सा कार्य किया। आप ने आयुर्वेद-शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य परीक्षायें भी चिकित्सा कार्य करते हुए उत्तीर्ण की। आप वड़े उद्योगी और सिद्ध हस्त चिकित्सक है।

धातु वर्धक—

२४६—छुहारे नग ७ अफीम ७ माशे
शु० शिलाजीत ६ माशे स्वर्ण वंग १॥ माशे
त्रिवग भस्म १॥ माशे

विधि—छुहारों की गुठली निकाल एक एक छुहारे में एक एक माशे अफीम और जितना वड़ का दूध आ सके उतना दूध भर कर मुख बन्द कर आटा लगा आंच पर मन्दाग्नि से सेक ले जब आटा लाल हो जाय तब निकाल कर आटा अलग कर छुहारे खरल में डाल मर्दन करें और ७ पुट सतावर के रस के, ७ पुट

सेमर के रस के दें पश्चात शेष तीनों औषधि मिला मर्दन कर मटर बराबर गोली बना कर सुखा लें।

सेवन विधि—प्रातः और रात्रि को एक एक गोली दूध के साथ लेने से धातु की निर्बलता, हीनता, स्वप्न प्रमेह दूर होते हैं। ×

श्वेत प्रदर हर वर्ती

*२४७—माजूफल — १ तोला

धावड़ा के फूल — १ तोला

विधि—दोनों को पाव भर पानी में पीस गरम करो जब ५ तोले शेष रहे तब ६ माशे फिटकरी खोल, ६ माशे पुरानी ऊन की राख मिला कर घोट लो और मलमल के टुकड़ा भिगोकर सुखा लो और सुखने पर कैंची से काट काट कर छोटे २ टुकड़े करलो इन टुकड़ों को रात्रि को सोते समय योनि मार्ग में रख लेने से श्वेत प्रदर और सोम रोग (पानी जाना) बन्द हो जाता है। *

बाल वायु विकार पर—

२४८—बच्चे के जन्म से ही कटे हुए नाल पर जरा सी कस्तूरी पानी

× यह प्रयोग कब्ज करता है दस्त को रोकता है जिनको पाचन शक्ति बलवान हो उन को लाभदायक है।

—सम्पादक

* प्रयोग उत्तम हैं साथ ही साथ खाने की औषधियां भी दी जांय तब विशेष लाभ प्रद रहता है। हमने धात्री घृत खाने को और यह पिचु धारण को दिया और लाभ कारी पाया।

—सम्पादक

से पिस (घोट) लेकर देने से बालकों को जो वायु रोग होते हैं वही नहीं होते। अनेक बालक धनुष्टंकार आदि वायु रोग से जो अकाल मृत्यु प्राप्त करते हैं वह इस उपाय से बच जाते हैं। =

आयुर्वेद विशारद श्री० पं० लोकचन्द्र जी जैन

सर्व हितैषी औषधालय

कटनी सी० पी०

—o—
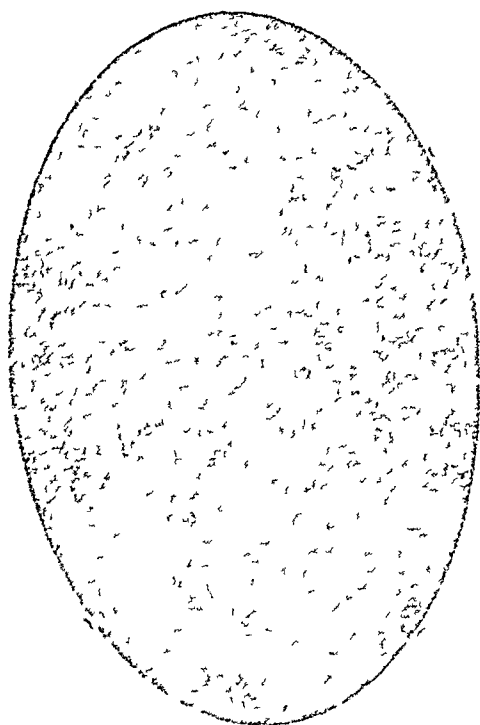
आपका जन्म तारादेही जिला सागर सी० पी० में जैन कुल में हुआ। आपकी आयु ३६ वर्ष की है। आप कानपुर निवासी वैद्यराज कन्हीयालाल जी जैन, कविराज पं० बाबूलाल जी जैन कलकत्ता से अनुभव और आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया तथा अ० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ की विशारद काशी विद्वत सम्मेलन की शास्त्री आचार्य परीक्षायें की और धर्मार्थ औषधा-

---

= बच्चे के जन्म से ही काकजिह्वा (कौआ की जीभ) मधुमें चटा दे तब बाल मृत्यु नहीं होती। जिन स्त्रियों को मृत-वत्सा रोग होता है उनके बालक इस उपाय से बच जाते हैं। कौआ की जीभ पहले ही प्राप्त कर सुखा कर रख लेनी चाहिये। १ रत्ती की मात्रा मे १ ही बार देनी चाहिये। —सम्पादक

लय में चिकित्सा कर अनुभव प्राप्त किया है।

विषम ज्वर हर वटी—

२४६—करंज की मींग	५ तोला
जीरा सफेद किंचित भुना	२॥ तोला
बबूल की ताजी पत्ती (डण्ठल रहित)	२॥ तोला
पीपरामूल	५ तोला
मेंहदी के बीज	५ तोला
चक्रमर्द (पवार के बीज)	५ तोला
गौदन्ती हरताल भस्म	२॥ तोला

विधि—सब औषधियाँ कूट छानकर हरताल भस्म मिला, हेमधोरी (सत्यानाशी) के रस से ३ भावना दे, चना बराबर गोली बना सुखा कर रखले।

व्यवहार विधि—एक से ४ गोली तक गरम पानी के साथ ज्वर के वेग से पूर्व ही दे, ज्वर आने पर नहीं। तुलसीपत्र, काली मिर्च, काला जीरा को पानी में पीस छान गरम कर इसके साथ भी गोली दे सकते हैं। ज्वर आने के चार घन्टे पूर्व से एक एक घन्टे बाद एक एक गोली देने से मलेरिया ज्वर १-२ दिन में ही रुक जाता है। *

---

* प्रयोग उत्तम है। गर्भवती स्त्रियों को नहीं देना चाहिये।

—सम्पादक

वैद्य शास्त्री श्री० अमरसिंह जी वैद्य

खालसा अमृत औषधालय अर्कमन्द

पटियाला स्टेट

—०—

आपकी आयु ४४ वर्ष की है। आप निम्बर सूर्य वंशी हैं। आपके पिता श्रीमान सरदार [illegible] जी हैं। आपने सम्मेलन की वैद्य शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपने पुस्तकें भी लिखी हैं जो अभी छपी नहीं हैं।

प्राणेश्वरी मरहम–

२५०—गन्धा बैरोजा	२ तोला
संखिया श्वेत	१ तोला
नीला थोथा	६ माशे

विधि–प्रथम संखिया व नीलाथोथा को खरल में घोटकर बारीक करलें पश्चात गन्धा बैरोजा मिला घोट कर मरहम बन होने पर चौड़े मुख की शीशी में रखलें।

व्यवहार—जितना चौड़ा लाहोरी शोर * फोड़ा हो उतना ही कपड़े का टुकड़ा काट मलहम लगा फोड़े पर चिपका दें। अगर फोड़ा सख्त चमड़ी का हो तब २ फाये अन्यथा १ फाये में ही आराम हो जाता है।

---

* लाहौर शोर फोड़ा यह प्रायः लाहोर में ही होता है इसमें से बहुत से डोरा के समान सूत से निकलते हैं, इसे वहां लाहौर शोर फोड़ा कहते हैं क्या यह स्नायु (नारू) फोड़ा तो नहीं है।

—सम्पादक

ठीक होने की पहचान—फोड़ा वाला भाग मुलायम होकर उभर आवे तब दवा लगाना बन्द करदे, धोना नहीं चाहिये इसी तरह रहने दें हां, ऊपर घी चुपड़ दें, चार रोज के बाद फोड़े के ऊपर से छिलके से बनकर उतरेंगे बाद भी १ बार दिन में घी अवश्य लगाते रहें। इस प्रकार १० दिन मे फोड़ा का नाम भी नहीं रहेगा

कविराज श्रीमान पं० आनन्द जी शर्मा शास्त्री

कौशिक फार्मेसी घट्टी पोस्ट सपरून
पटियाला स्टेट

—:—
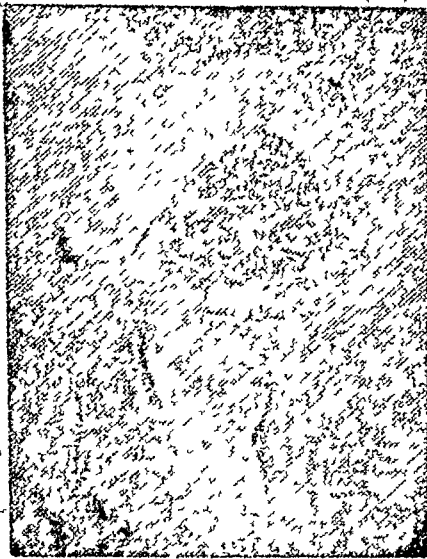
आपकी आयु लगभग २७ वर्ष की है। आपने कविराज, आयुर्वेद शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य परीक्षा पास की है। होमयोपैथिक की एम० बी० बी० भी पास की है। आप पं० बनीराम जी शर्मा उपाध्याय के सुपुत्र है। उद्योगशील और मिलनसार हैं।

रक्त प्रदर हर—

२५१—नाग केशर पहाड़ी १ तोला
आवले ४ तोले सोंठ १ तोला
सोंफ १ तोला ऊन की राख ४ तोला
चूहे की मेंगनी १० तोले मिश्री २५ तोले

विधि—सब को साफ कर कूट कपड़ा में छान भेड़ की ऊन की राख

और मिश्री मिला रखले।

सेवन विधि—मात्रा ६ माशे। प्रातः सायं धारोष्ण दुग्ध मिश्री मिले हुए के साथ फकाने से कैसा ही रक्त प्रदर हो अवश्य ठीक हो जाता है।

ज्वर हर—

२५२—शु० संखिया १ तोला शु० हिंगुल ५ तोला
सफेद कत्था २ तोला
करंजवे की गिरी ५ तोला

विधि—सब औषधियों को पृथक २ पीस छान एक पत्थर के खरल में डाले और एक एक या दो दो पान डालते जायं जब ४०० चार सौ पान घुट जाय तब राई के बराबर गोली बना सुखाकर रखले।

सेवन विधि—अजवायन का चूर्ण २ माशे मिश्री पिसी १ माशे में २ गोली मिला जल के साथ फकावे। १ मात्रा प्रातः और १ मात्रा ज्वर चढ़ने से १ घण्टे पूर्व सेवन करावे, जिस ज्वर के चढ़ने का समय न हो उसमें १ मात्रा ज्वर उतरने पर और १ मात्रा ४-५ घण्टे बाद सेवन करावे। इससे द्वितीयक ज्वर, तृतीयक ज्वर, चातुर्थक ज्वर, प्रसूत ज्वर अवश्य शान्त हो जाता है। सन्निपात में भी हम व्यवहार करते हैं।

भिषगाचार्य गोविन्दप्रसाद हरिदास आयुर्वेदरत्न

गोमतीपुर आयुर्वेदिक हाल, अहमदाबाद

o—o

आप वैद्य हरिदास जी के सुपुत्र हैं। आपने भिषगाचार्य और आयुर्वेदरत्न उपाधि प्राप्त की हैं। पिता जी की कृपा से अच्छा अनुभव प्राप्त कर लिया है।

मलेरिया पर—

२५३—समुद्रफल कालीमिर्च गेरू

विधि—मसाले आग ले और नीबू के रस में बांट कर झड़बेर के बराबर गोली बनायें। ज्वर आने के पूर्व २ मात्रा गरम पानी के साथ देने से ज्वर का वेग रुक जाता है।

विषमुष्टि भस्म—

२५४—कुचला का शोधन कर सम्पुट में बन्द कर लघु पुट की अग्नि दें। स्वांग शीतल होने पर पीस छान कर रख ले। वायु विकार, उदरशूल, जीर्ण ज्वर, में अति लाभदायक है। मधु या गरम पानी के साथ सेवन करावें।

चिकित्सक पं० धर्मवीर जी वैद्यशास्त्री

आर्य आयुर्वेदिक फार्मेसी, नरेला (देहली)

—०—
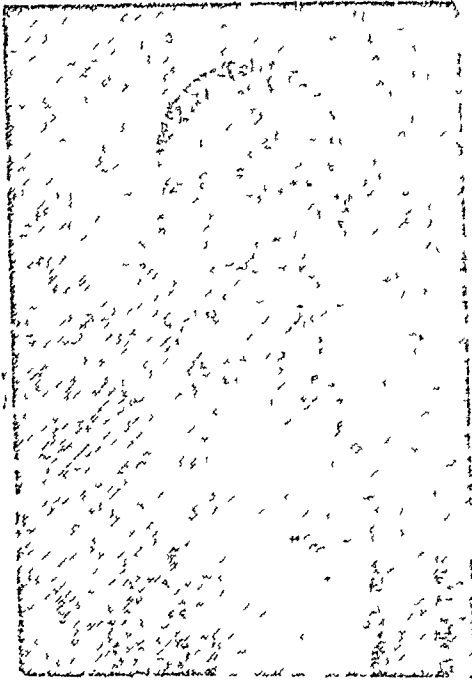
आपकी आयु लगभग २८-२९ वर्ष की होगी। आपका जन्म [illegible] जिला रोहतक निवासी श्रीमान् पं० प्रभूदयाल जी आर्य के यहां हुआ। आपने आयुर्वेद की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की है और अब चिकित्सा कार्य बड़ी सफलता से कर रहे हैं। राजनैतिक क्षेत्र में भी आप कार्य कर चुके हैं।

ज्वर—

२५५—धनिया २ तोला — करंज की गिरी ३ तोला

सत्व नीबू ६ माशे — शक्कर (खांड) ६ माशे

विधि—धनिया और करंजगिरी को कूट तथा कपड़ा में छान खरल में डालें पश्चात् नीबू का सत्व डाल मर्दन करें जब खूब बारीक हो जाय तब शक्कर डाल मर्दन कर शीशी में रख ले।

सेवन विधि-प्रातः सायं दो-दो माशे ताजा जल के साथ देने से ज्वर शान्ति हो जाता है। चढ़े हुए ज्वर में दो-दो घण्टे बाद दो-दो माशे गरम जल के साथ देने से ज्वर उतर जाता है।

विशूचिका—

२५६—भीमसेनी कपूर ६ माशे शुद्ध अफीम १ तोला
शुद्ध सिंगरफ १ तोला

विधि—तीनों को अदरख के रस के साथ मर्दन कर बाजरे के बराबर गोली बना सुखा रख लें। एक से दो गोली तक अर्क गुलाब अर्क पोदीना अर्क सोंफ अथवा जल के साथ देने से हैजा (विशूचिका) रोग शान्त हो जाता है। परीक्षा प्रार्थनीय है।

श्रीमान् पं० रामसनेहीलाल जी वैद्यरत्न

फतेपुर ककी पोस्ट नसीरपुर जिला मैनपुरी

आपकी आयु लगभग ३०-३१ वर्ष की होगी। आपका जन्म ब्राह्मण परिवार में श्रीमान् पं० रुकमसिंह जी के यहां हुआ। आपने हि० सा० सम्मेलन की वैद्यरत्न परीक्षा उत्तीर्ण की है। ६ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। अनुभवी वैद्य हैं।

२५७—लाल फिटकिरी को लेकर किसी मट्टी के पात्र में डाल अग्नि पर रक्खे और फिटकिरी से आधे वजन में ग्वारपाठे का रस डाल अग्नि दें जब रस जल जाय और फिटकिरी का फूला हो जाय तब उतार कर काली मर्चों के रस में घोट कर मटर बराबर गोली बना लें।

सेवन विधि—गरम पानी के साथ ज्वर के वेग से २ घण्टे पहले ३ घण्टे के अन्तर से २ गोली दें। इससे तिजारी चौथैया ज्वर शान्त हो जाता है। वेग बन्द होने पर ५-७ दिन प्रातः सायं देते रहने से पुनः आने का भय नहीं रहता।

श्रीमान् वैद्यराज हुक्मचन्द जी जोशी

रेलवे रोड बंगामण्डी, जालन्धर

—o—
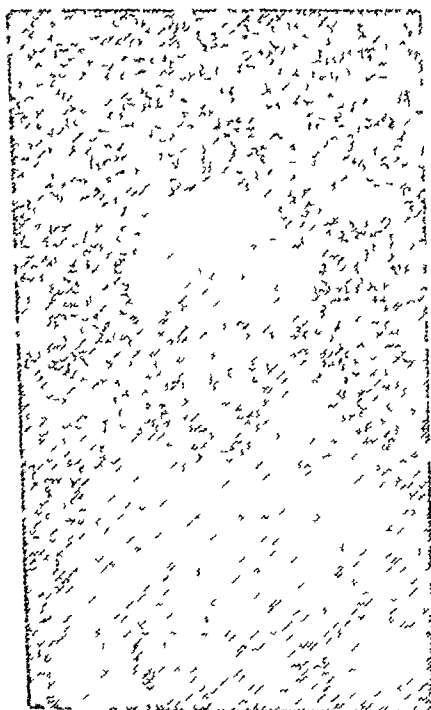
आपकी आयु लगभग ४६ वर्ष की होगी। आप ब्राह्मण वंशज श्रीमान् पं० केसोराम जी जोशी के सुपुत्र हैं। आपने शोधन विधि और भस्म परीक्षा विधि बड़े अनुसन्धान से प्राप्त की है। अनेक बार आप आयुर्वेद महारथियों से मिले हैं और सम्मेलनों में पधारे हैं पर यह विधियां प्रकट करने का अवसर ही नहीं मिल सका, उसका विवरण तो हम स्थानाभाव से यहां नहीं दे सके हैं। बंग, नाग, यशद आदि शोधन से घट जाते हैं और आपकी विधि से घटते नहीं यही विशेषता आपके शोधन में है।

शोधन विधि–

बंग, यशद, नाग जिसका शोधन करना हो उसे कड़ाई में डाल अग्नि पर रख दे, जब धातु पिघलने लगे तब एक सेर धातु हो तो आध पाव सरसों का तैल अथवा गरी का तैल डाल हिलाते रहना चाहिये (तैल के स्थान पर घृत डालने से अधिक गुणप्रद बनती है) । इससे धातु घटती नहीं है तथा जल्दी गल भी जाती है और गुण भी बढ़ जाता है। जब धातु गल जाय तब जिस पदार्थ में शोधन करना हो वह धातु से अठ गुनी ले मट्टी के पात्र में भर उसमें गली हुई धातु पतली धार से डाले। जब दूसरी बार शोधन करे तब धातु गलते ही पुनः तैल डालना चाहिये। यदि कढ़ाई में आग लग जाय तब घबड़ाने की बात नहीं ढक देने से अग्नि शान्त हो जाती है । इस विधि से धातु कम नहीं होती और उछलती भी नहीं है।

भस्म परीक्षा विधि–

नाग, बंग, जस्त गलने वाली औषधियों की भस्म से तिगुना गौ का घृत मिला कपड़ मिट्टी किये हुये मिट्टी के पात्र में डाल अग्नि पर रख दें। यदि पात्र में अग्नि लग जाय तब उतार कर पुनः घृत डाल रक्खें तेज अग्नि दें। इससे कच्ची भस्म होने पर पुनः जीवित हो उसके कण दीखने लगेंगे। न गलने वाली धातु की भस्म जैसे चांदी, सोना, तांबा लोह आदि उनकी भी इसी प्रकार परीक्षा करें । अग्नि पर रखने के बाद हिलाते रहें। कच्ची भस्म बैठ जाती है और ठीक भस्म घृत में मिल जाती। चांदी सोना वगैरह के तो कण भी दीखने लगते हैं। मृत पंचक से भी धातु कच्ची होने पर जीवित हो जाती है।

अपने सैकड़ों ग्राहकों, परिचितों एवं प्रेमियों के

अतीव आग्रह पर

प्रयोग मणिमाला

का द्वितीय खण्ड

शीघ्र ही प्रकाशित करने का विचार है।

नमूना आपके हाथ में है

आप अपना, अपने इष्ट मित्रों परिचितों एवं प्रेमियों का पता हमें तुरन्त लिखें और यदि सम्भव हो तो फोटो, प्रयोग और संक्षिप्त परिचय हमें भिजवा दें। आप जितनी शीघ्र परिचय आदि भेज देंगे उतनी ही शीघ्र पुस्तक प्रकाशित होगी। कृपया शीघ्रता करें।

प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ (अलीगढ़)

आयुर्वेदाचार्य पं० देवेन्द्रदत्त जी कौशिक

लोकहितकारी रामरसायनशाला, मेरठ ।

श्री धन्वन्तरये नमः

प्रयोग मणि माला

(उत्तरार्ध)

—o—

चिकित्सक--श्री० ठा० चूल्हनसिंह जी वर्मा वैद्यराज

श्री विश्वेश्वर औषधालय, नौवागढ़ी

तिनमुहानी, गया।
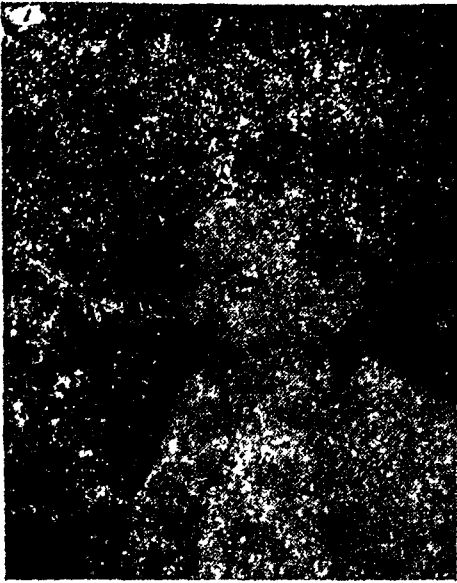
आपकी आयु लगभग ४८ वर्ष की है। आप क्षत्री राजपूत कुल के श्रीमान ठाकुर कुलदीपसिंह जी वर्मा के सुपुत्र हैं। आपने स्वर्गीय पं० विश्वेश्वर शर्मा वैद्यराज से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की और उनसे ही रस चिकित्सक, वैद्यराज की उपाधि प्राप्त की। अण्डवृद्धि, और बालशोष के विशेषज्ञ हैं।

प्रयोग नं० १ - अण्डवृद्धि पर रसायन--

नाग भस्म शतपुटी (पीपल वृक्ष के पत्तों के रस में १०० बार बुझाई और कुमारी के रस से १०० बार खरल कर फूंकी हुई) — १ तोला

वंसलोचन दानेदार चीनी — २-२ तोला

—मिलाकर ६ घण्टे पक्के खरल में खरल कर रख लें।

व्यवहार विधि—मात्रा ५ रत्ती, अनुपान-खोवादार पेड़ा या दूध के साथ। जाड़े के दिनों में प्रति दिन १ खुराक १६ दिन तक बाद

को १ दिन छोड़कर अर्थात तीसरे दिन सेवन करे और गर्मियों के दिनों में २ दिन छोड़कर अर्थात चौथे दिन सेवन करें। पथ्य में दूध घी विशेष, अपथ्य–दही, शर्बत, तरबूज, ठण्डी वस्तु नहीं खानी चाहिये। पाचन विकार मालूम होने पर औषधि बन्द कर कोई पाचक चूर्ण सेवन करे ठीक होने पर पुनः सेवन करें।

गुण—१६ खुराक सेवन से फोतों में सिकुड़ाहट मालूम होती है। ८० खुराक दवा के सेवन से आराम होजाता है। किसी को और भी अधिक दिन सेवन करनी होती है, पर यह निश्चय है कि अण्डवृद्धि अवश्य शान्ति हो अण्ड पूर्ववत हो जाता है।

प्रयोग नं २–फौलाद भस्म–

शुद्ध फौलाद का चूर्ण	५ तोला
नौसादर देशी शुद्ध गंधक आमलासार	२–२॥ तोला

—सबको कुमारी के रस में खरल कर छोटी २ टिकिया बनाले और सराव सम्पुट में बन्द कर पांच सेर उपलों की आग दें। इसी तरह ७ अग्नि देने से फौलाद भस्म हो जाता है। × खरल कर रख लें। (एक पुट ग्वारपाठे का लगा कर रक्खें)

व्यवहार विधि—खुराक–१ से २ रत्ती तक, अनुपान–एक चुटकी (आसानी से जितनी चुटकी में आवे उतनी) फिटकिरी की खील मिलाकर खिला दे ऊपर से दही १० तोला पिला दे। दूसरे दिन फिटकिरी की खील २ चुटकी, तीसरे दिन तीन चुटकी इस तरह अनुपान में फिटकिरी खील बढ़ाता जाय, तीसरे दिन से बढ़ाना बन्द कर तीन २ चुटकी ही दे। ७ दिन में ही कमलवाय रोग चाहे वह स्याह हो, जर्द हो, एक महीने का रोग एक सप्ताह में, और पुराना हो तब दो सप्ताह में नष्ट हो जाता है।

× भस्म हो जाने पर पानी में डाल नौसादर का अंश निकाल कर घीग्वार के रस में रखना उचित है।

—सम्पादक

आयुर्वेदाचार्य श्री० पं० देवेन्द्रदत्त जी कौशिक

लोक हितकारी राम रसायन शाला

मेरठ यू० पी०

—o—

आप यू० पी० प्रान्त मेरठ के सु प्रसिद्ध, स्वर्गीय श्रीमान् पं० रामसहाय जी शर्मा वैद्य शास्त्री के सुपुत्र हैं। आप युवावस्था के उद्योगशील और मिलन सार वैद्य हैं आपने ए० एण्ड० यू० तिब्बी कालेज देहली से आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि और वैद्य सम्मेलन की विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है।

प्रयोग नं० १—अर्श (बवासीर) पर—

अहिफेन	१ तोला
नीला थोथा	६ माशे
रसौत	१ तोला
तैल मरसों का	१ तोला

विधि—अहिफेन और नीला थोथा घरल में डाल थोड़ा जल मिला मर्दन करे फिर तैल में डाल मर्दन कर एक पात्र में रख गरम करे जब जल का अंश सब जल जाय तब अग्नि से उतार कर रखले।

गुण और व्यवहार विधि—शौच के उपरान्त मस्सों पर लगावे। इसके व्यवहार से बिना कष्ट के अर्श के मस्से नष्ट होजाते हैं।

प्रयोग नं० २-अर्शहर गोली—

शु० रसौत	मांतल
हारसिङ्गार के बीज	प्रत्येक १-१ तोला

विधि—मूली के रस में बेर बराबर गोली बना सुखा रखलें। प्रातः सायं पानी के साथ एक एक गोली खिलावें और ऊपर का तैल लगावें। अर्श को आराम होजाता है मस्से गिर जाते हैं।

वैद्यराज श्री० बा० दलजीत सिंह जी भिषग्रत्न

चुनार आयुर्वेदीय औषधालय, रायपुरी

पोस्ट चुनार जि० मिर्जापुर

—o—

आप की आयु लगभग ४० वर्ष के होगी! आप क्षत्रिय वंश भूषण श्रीमान जमींदार महावीर प्रसाद सिंह जी रईस के सुपुत्र हैं। आपका संस्कृत कार्यालय अयोध्या से भिषग्रत्न की उपाधि और अ० भा० वैद्य सम्मेलन से स्वर्ण पदक तथा सार्टीफिकेट मिले हैं। आपने आयुर्वेदीय विश्व कोष लिख वैद्य समाज का बड़ा उपकार किया है, तथा और भी अनेक पुस्तकें यूनानी व वैद्यक की लिख आयुर्वेद साहित्य की वृद्धि की है।

प्रयोग नं० १—केशरञ्जन—

केशर	अहिफेन	१॥–१॥ माशे
जंगार	काला सुरमा	समुद्र भाग
लौंग	सोना मक्खी	रूपा मक्खी
हरा कांच		प्रत्येक ३–३ माशे
यशद भस्म		५ तोला

विधि—समस्त द्रव्यों को सुरमा की भांति बारीक पीस (महीन खरल) कर रखले।

व्यवहार विधि—एक सलाई प्रति दिन लगाया करें यदि रोगी की बुरी हालत हो तो पलकों को उलट कर सलाई कुवरों पर मले।

गुण—नेत्र व्रण, शुक्र (फूली) रोहे के लिये अति गुणकारी है। काष्टिक आदि से उत्तम है।

प्रयोग नं० २--जवाहर मोहरा--

जहर मोहरा खताई		१॥ तोला
अवधि मोती	कहरुवा शमई	प्रवाल मूल
लाजवर्द मग्तूल (धोया हुआ)	रक्त माणिक	नीलवर्ण माणिक
पीत वर्ण माणिक	हरा यशब	पन्ना
लाल अकीक	चांदी के वरक	मस्तङ्गी

प्रत्येक ७-७ माशे

सोने के वरक	जद्वार खताई	दरियाई नारियल
मकोय	कस्तूरी	मोमियाई (सत शिलाजीत)

प्रत्येक ३-३ माशा

—अर्क गुलाब में दो सप्ताह खरल करके सुरक्षित रखें।

मात्रा और अनुपान---२ चावल जवाहर मोहरा, ५ माशे खमीरा गाजवान जवाहरवाला या ५ माशे लुबूब कबीर या १ तोला खमीरा गाजवान सादा के साथ उपयोग करें। वादी और अम्ल पदार्थ से परहेज करें।

गुण तथा उपयोग---यह निर्बलता को दूर करता है तथा हृदय, मस्तिष्क और यकृत अर्थात् उत्तमाङ्गों को शक्ति एवं पुष्टि प्रदान करता है। विशेष उपयोग-यह प्राकृत शरीरोष्मा का पोषक है।

वक्तव्य---जनाब मसीहुल्मुल्क हकीम अजमल खाॅ महाशय के खानदान की प्रधानतम महौषधि है। यह अद्भुत एवं चमत्कृत द्रव्यों में से है और आसन्न मृत्यु रोगी पर भी अपना आश्चर्यजनक प्रभाव प्रदर्शित करता है। +

+ मस्तगी, मकोय, दरियाई नारियल प्रथक कूट छान कर मिलानी चाहिये, बाकी जहर मोहरा खताई, अकीक, मुक्ता प्रवाल, पन्ना वगैरह भी प्रथक २ घोट कर पिष्टी बना कर डालने चाहिये।

—सम्पादक

कवि० श्री० पं० चन्द्रशेखर जी बहुगुणा आयु० शा०

वाईस प्रिन्सिपल–आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज

करोल बाग–देहली

—०—

आपका जन्म सं० १९५५ वि० में ब्राह्मण कुल भूषण श्री० वैद्यराज पं० पतिराम जी बहुगुणा के यहां हुआ। आपने व्याकरण की शास्त्री और आयुर्वेद की आयुर्वेद शास्त्री परीक्षायें उत्तीर्ण की है। आपको स्वर्ण पदक, रौप्य पदक, मान पत्र एवं प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए हैं। इस समय आप सहायक प्रिन्सिपल के पद पर कार्य कर रहे हैं।

प्रयोग नं० १–फिरङ्गारि

+ शुद्ध रस कपूर	१ तोला
सफेद कत्था	६ माशे
छोटी इलायची	६ माशे
लोंग	२० नग
शीतल चीनी	३० दाने

विधि—बकरी के दूध में ७ दिन तक घोट कर मटर के समान गोली बनावें।

+ मेथिलिटैड स्परिट द्वारा उड़ाया हुआ। —लेखक

—रस कपूर बाजार से लेकर मेथिलिटैड स्प्रिट में खरलकर और डमरू यन्त्र से जौहर उड़ाले ऊपर के पात्र में लगा हुआ संग्रह करे। ऊपर के पात्र को पानी से तर रक्खे या भीगा कपड़ा डाल दें।

—सम्पादक

सेवन विधि—आम के अचार में ७ दिन खिलाना चाहिये। गोली को आम के अचार में लपेट कर निगल जाना चाहिये दांतों से नहीं लगे। ७ दिन में ही आतशक ठीक होजायगी।

नोट—इसमे किसी को दस्त हो जाते हैं तब चिन्ता नहीं करें यदि दस्तों में खून आने लगे तो गोली २-४ दिन बन्द रखनी चाहिये और खून बन्द होने पर पुनः खिलाना चाहिये। किसी २ को गले में दर्द होने लगता है तब भी २-३ दिन बन्द रख पुनः खिलानी चाहिये ७ गोली या १४ गोली से ही रोग नष्ट होजाता है।

प्रयोग नं० २—लाल गुड़ा—०

रस सिंदूर	सुहागा खील	सोंठ
काली मिर्च	पीपल छोटी	नीम की छाल
सफेद सरसों	सिंगरफ शुद्ध	इन्द्र जौ
नागर मोथा	लाल चन्दन	कुटकी

विधि—समान भाग लें। काष्टौषधि कूट कपड़ छन कर रस सिंदूर सिंगरफ खरल में डाल मर्दन करे। जब रवा न रहे तब कपड़ छन औषधि डाल मर्दन कर रखले।

गुण—बच्चों और गर्भिणी के ज्वरादि के लिये × उत्तम प्रयोग है तथा रोगों में निर्भय होकर प्रयोग किया जा सकता है। अनुपान भेद से अन्य कई रोग भी नष्ट होते हैं।

× पारद वाली औषधियां गर्भिणी के लिये उपयुक्त नहीं। कभी कभी पारद मिश्रित औषधियों से गर्भ पात, या गर्भश्राव होजाता है इस लिये गर्भिणी को देते समय पाठक ध्यान रक्खें। —सम्पादक

वैद्यराज श्री० पं० रामचन्द्र जी शास्त्री

यू० पी० फार्मेसी, कनवरीगञ्ज रोड
अलीगढ़

—o—

आपका जन्म विजयगढ़ के समीप बाग के गांव में नाह्मण कुल भूषण श्रीमान् पं० सीताराम जी शर्मा वैद्यराज के यहां हुआ। आपकी आयु अनुमान ४० वर्ष की होगी। आपने संस्कृत और वैद्यक में अच्छी योग्यता प्राप्त की है अनुभवी और विद्वान वैद्य हैं। अलीगढ़ प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के प्रधान मन्त्री हैं।

प्रयोग नं १—कण्ठमाला रोग पर—

काशगरी सफेदा ६ माशे सिन्दूर असली १ तोला
सरसों का तेल ५ तोला

विधि—ऊपर की तीनों औषधियां लोहे की कढ़ाई में डालकर मन्दाग्नि से जोश दें और फोग उतार लें इस प्रकार तीन बार जोश देने से मरहम जैसी हो जाती है तब रख लें।

व्यवहार विधि—सर्व प्रथम रोगी को एक आसन पर बिठला कर दही चार सेर में २ तोला श्वेत मल्ल पीसकर डाले और उसके सामने रख दें और रोगी से कहें कि फेन की तरह दोनो हाथों से उसे मले और इतना मले कि रोगी के शरीर से पसीना आने लगे (सिर्फ हाथ के तल भाग से मलना चाहिये) स्वेद आ जाने पर हाथ कपड़े से पोंछ ले धोवे नहीं। दही को जमीन में गाढ़ दे। इसके दूसरे दिन से मरहम लगाना आरम्भ करे। और कांचनार गूगल खाने को दें तथा दो रत्ती मालती वसन्त भी नित्य दे। इस तरह प्रयोग करने से कितनी ही फूटी हुई कण्ठमाला हो शीघ्र ही अच्छी हो जाती है।

यह मरहम किसी भी प्रकार के फोड़े और नासूर को भी (जिसको असाध्य कहकर त्याग दिया हो) आराम कर देती है।

स्वा० श्री० पं० कृष्णलाल जी वैद्यरत्न

रामकृष्ण औषधालय, मिलौनीगंज, जबलपुर।

आपकी आयु लग-भग ४० वर्ष की होगी। आप गोस्वामी श्रीमान् पं० चन्द्रलाल जी वैद्यराज के सुपुत्र हैं। आपने बृन्दावन में व्याकरण और जबलपुर में आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की अनुभव पिता जी से प्राप्त किया है। ग्रहणी, मोती ज्वर के विशेषज्ञ हैं।

प्रयोग नं० १—संग्रहणी नाशक कल्प—

मकरध्वज	कस्तूरी	गोलोचन
छोटी इलायची के बीज		—चारों १॥–१॥ माशे
केशर	अफीम	३–३ माशे
फिटकिरी		६ रत्ती

विधि—सब औषधियों को गुलाब जल में पीस चना बराबर गोली बना सुखा रख लें।

सेवन विधि—एक एक गोली दिन में तीन बार। रोग बढ़ा हुआ हो, दस्त अधिक हों तब दिन भर में ६ गोली तक दे सकते हैं। पथ्य में दूध ही दें। ×

× पथ्य में, दूध गौ का गरम किया हुआ छटांक सेर की चीनी या मिश्री डालकर दें। गोली भी दूध के साथ ही दें। इससे दूध ३ सेर से ५ सेर तक पच जाता है। अन्न जल नहीं दें।

—सम्पादक

प्रयोग नं० २—बाल मोती झरा (मन्थर ज्वर) नाशक—

मोती अजमाइन ३—३ माशे

मूङ्गा लौंग रुद्राक्ष संजीवनी वटी शंखनाभि

कालीमिर्च जीरा सफेद छोटी इलायची

प्रत्येक ६—६ माशे

सोने के वर्क १ माशे चांदी के वर्क २ माशे

तुलसी पत्र भारङ्गी काकड़ासिंगी

मुलहठी —प्रत्येक १—१ तोला

विधि—प्रथम मोती गुलाब जल में घोट ले, फिर मूङ्गा डाल मर्दन करे उसके बाद संजीवनी डाल पान के स्वरस में मर्दन करें, और फिर तुलसी पत्र हरे डाल घोटें फिर चांदी सोने के वर्क डाल घोटे शंखनाभि पान के रस में पीसकर डाले शेष कूट कपड़ छन कर डाल पान के स्वरस में घोटकर खुश्क कर रखले।

सेवन-विधि—प्रातः सायं पान के रस के साथ सेवन करावे। मात्रा २॥ वर्ष के नीचे के बालकों को २-२ रत्ती और २॥ वर्ष से ऊपर वाले बालकों को ४-४ रत्ती दे। इससे दोषी ज्वर, मन्थर ज्वर नष्ट हो जाता है। यदि बालक को दस्त भी हों तब जयपाल, अतीस, बेलगिरी के योग से दें। यदि कब्ज हो तब काला नमक और हरड़ के योग से दें। ×

× यह योग जिस समय मोती झरा निकले उस समय देने से मोती झरा अच्छी तरह निकल आता है हम ने उस समय जब कि १०।१५ दाने ही निकले थे इसे दो दो रत्ती और असली केशर एक एक रत्ती मिला कर गरम पानी के साथ सेवन कराया उस से शीघ्र ही मोती झरा निकल आया। जब मोती झरा निकल चुका तब हमने इस ही औषधि को ही दो दो रत्ती शहद में चटाया उस से शीघ्र ढल कर फुंसी सी उतर गई

—सम्पादक

चिकित्सक--श्री० वैद्य इन्द्रमणि जी जैन

इन्द्र औषधालय कनवरीगंज रोड

अलीगढ़

आपकी आयु ४५ वर्ष की है आप जैसवाल जैन जाति भूषण श्रीमान पं० वृन्दावनदास जी जैन के सुपुत्र हैं। आपने विधिवत् आयुर्वेद शास्त्र का अध्ययन किया है। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। अनेक प्रशंसापत्र राजा, जज्ज कलेक्टर, सिविल सर्जन आदि के प्राप्त किये हैं। जाति भूषण उपाधि और पदक भी प्राप्त किये हैं। अनेक वैद्यक सभा संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सभापति भी रहे हैं।

प्रयोग नं० १ बाल शोष पर—

स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म, मुक्ता पिष्टी, प्रवाल पिष्टी ये १-१ माशे
केशर, मूर्वा, जायफल दुधवच, छुहारा, कमलगट्टा की मींग,
शुद्ध हिंगुल प्रत्येक ३-३ माशे

विधि—काष्ठौषधि को कूट कपड़ छन कर लें। प्रथम खरल में शुद्ध हिंगुल डाल खरल करें, जब रवा न रहे तब भस्म पिष्टी डालें, और बाद को कपड़ छन चूर्ण डाल कर गिलोय तुलसीदल देशी पान के अर्क में एक-एक भावना दे मूङ्ग बराबर गोली बना सुखाकर रख लें।

सेवन-विधि—प्रातः सायं १—१ गोली माता के दूध के साथ दें, यदि माता का दूध नहीं पीता हो तब गो दुग्ध के साथ दें। इसके सेवन से बालशोष (सूखा) रोग नष्ट हो जाता है, और बाल शोष के उपद्रव भी शांति हो जाते हैं।

आयुर्वेद विशा० श्री० उदयलाल जी महात्मा जैन

श्री महावीर आयुर्वेदिक चिकित्सालय

देवगढ़ (मेवाड़)

—०—

आपका जन्म सं० १९६१ में देवगढ़ ग्राम निवासी श्रीमान् कुलगुरु नाथूलाल जी महात्मा के यहां हुआ। आपने वैद्य विशारद एवं आयुर्वेद भिषक परीक्षा की है। हिं० सा० स० की आयुर्वेद रत्न परीक्षा पास की है। अयोध्या से वैद्य धुरीण की उपाधि मिली है।

प्रयोग नं० १—नहरुवा पर—

ईसव गोल	कलिहारी	सिंदूर	पियाज
देशी साबुन	बच्छनाग		प्रत्येक ५—५ तोला
हींग	अफीम	कपूर	प्रत्येक १—१ तोला

उपयोग विधि—सब औषधियों का कूट पीस छान कर रखले और जब नहरुवे की भयङ्कर पीड़ा और स्थान २ पर निकलता पकता और फूटता है नाड़ी व्रण का सा रूप लेलेता है उस समय उक्त औषधि १ या २ तोले ले २० तोले पानी डाल कर पुल्टिस बना किसी हरे पत्ते में रख बांध दें। इस प्रकार बांधते रहने से नहरुवे नष्ट होजाते हैं।

योग नं० २– नेत्रांजन–

समुद्रफेन	७ तोला	फिटकरी	१ तोला
बहेड़े की गिरी	१ तो०	भीमसेनी कपूर	२ तो०
शुद्ध कृष्णाञ्जन			१ तोला

विधि—पहले समुद्र फेन को नीबू के रस में गलावे और खरल में डाल मक्खन के समान हो तब तक घोटे बाद में शेष औषधियां कपड़ छन कर डाल १२ घन्टे निरन्तर घोट कर रखलें। यह सुरमा नेत्रों की लाली और जल गिरने पर तथा रतोंध को लाभ कारक है।

चिकित्सक--श्री वै० अम्बाप्रसाद जी बारोट

श्री चरक चिकित्सालय
धन्वन्तरि रोड, बड़ौदा
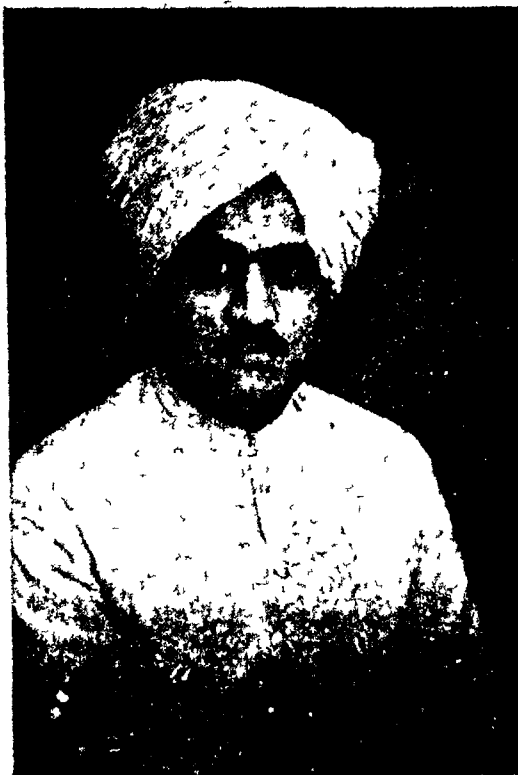
आपका जन्म सं १९६५ वि. में कपोल वैश्य जाति के बारोट वंश के श्रीमान् खंडेराव जी वैद्य के यहां हुआ था अपने पिता जी से ही आयुर्वेद पढ़ा और अनुभव प्राप्त किया। आप स्टेट वैद्य मण्डल के मन्त्री और मेडिकल कौंसिल के सदस्य हैं। वात-व्याधि, क्षय-रोग में आपकी प्रसिद्धि है।

प्रयोग नं० १-क्षय रोग हर गोलियां

शृङ्ग भस्म	जहरमोहरा पिष्टी	कहरवा पिष्टी

अकीक पिष्टी प्रवाल पिष्टी अभ्रक भस्म

गोदन्ती हरताल भस्म + आयडोफार्म

विधि—सब समान भाग लें, अर्क दुग्ध में घोट कर चने बराबर गोली बना सुखा रख लें।

उपयोग-विधि—सुबह दोपहर और शाम को एक-एक गोली अजा दुग्ध के साथ देनी चाहिये। पथ्य में अन्न बिलकुल नहीं देना चाहिये। गोली लेने के आध घण्टे बाद तुलसी पत्र, मधु, मक्खन मिश्री (खडी शकर) सफेद मरीच ३ नग मिलाकर दे। यह प्रयोग एक मास सेवन का है। क्षय रोग के लिये अनुभूत और अक्सीर है।

प्रयोग नं० २ वात व्याधि हरि ताम्र भस्म

शुद्ध ताम्र के पत्ते		१ तोला
अजमायन		१० तोला
नीलाथोथा	शुद्ध गंधक	३-३ तोला

विधि—एक मट्टी का सराव ले उसमें प्रथम ४ तोला अजमायन रक्खे और उसके ऊपर १॥ तोला गंधक रक्खे और गंधक के ऊपर १॥ तोला नीलाथोथा रक्खे और फिर ताम्रपत्र रख दे और ताम्रपत्र के ऊपर गंधक फिर नीलाथोथा फिर अजमायन जो शेष है रख दे और फिर ग्वारपाठा का रस जितना आवे डालकर ऊपर दूसरा सराव रख कपड़ मिट्टी कर गजपुट में फूंक दे स्वांग शीतल होने पर कपड़ मिट्टी हटा सराव खोलकर पत्ते निकाल लेना फिर उन पत्तों को दूध में दोलायन्त्र करना जब तक नीला दूध होता रहे तब तक उबालना बाद से निकाल पीसकर रख लेना।

+ आयडोफोर्म के स्थान मे हमने तो गुलाबी फिटकिरी का फूला लिया और उत्तम पाया।

—सम्पादक

सेवन-विधि—एक बाल (१ माशे) सोंठ के चूर्ण के साथ एक या आधी रत्ती भस्म मिला फांक ऊपर से १ तोला तिल का तैल या घृत पिलाने से पक्षाघात, आध्मान, उदावर्त, अर्दित के लिये बड़ा उत्तम है।

किसी २ रोगी को औषधि सेवन के बाद जी घबड़ाता है और वमन भी हो जाती है यदि ऐसा हो तब चिन्ता नहीं करे वमन होने से भी लाभ ही होता है। ×

× श्वास रोग में प्रथम बहुत पतली मूङ्ग की दाल भर पेट खिलाने के बाद इस औषधि को २ रत्ती की मात्रा से सोंठ के चूर्ण के साथ सेवन कराने से बड़ा लाभ होता है। प्रायः ५० प्रतिशत रोगियों को वमन हो जाती हैं। —सम्पादक

—o—

कविराज श्री ओम्प्रकाश जी वैद्यवाचस्पति

प्रकाश औषधालय मिन्टोरोड, जोधपुर

आपकी आयु २८ वर्ष के लगभग है। आपका जन्म श्री० लाला गौरीशङ्कर जी आर्य के यहां हुआ था। आपने एफ० ए० और हिंदी प्रभाकर परीक्षा दी दयानन्द आयुर्वेद कालेज लाहौर में वैद्यक शिक्षा प्राप्त कर वैद्य कविराज वैद्य वाचस्पति की परीक्षा पास की है साथ ही अ० भा० वैद्य सम्मेलन से स्वर्ण पदक प्रशंशपत्र भी प्राप्त किया है।

योग नं० १—श्वित्र (फूल वहरी) नाशक—

शुद्ध गन्धक	४ तोला	वाकुची चूर्ण	६ तोला
कपर्द भस्म			४ तोला

व्यवहार विधि—सब को खरल कर शीशी में भर कर रखले और ३॥ माशे यह चूर्ण मधु के साथ सायं ४ बजे चाटना चाहिये और प्रति दिन प्रातःकाल निम्न कटि स्नान करना चाहिये।

पथ्य—में नमक नहीं खाना चाहिये। चने की रोटी घी शक्कर से खानी चाहिये कभी २ गेहूं की रोटी भी शाकादि से खा सकते हैं।

अपथ्य—कफ वर्धक पदार्थ विशेषतः दही।

कटि स्नान विधि—जल चिकित्सा वाले लुईकूने के सिद्धांतानुसार वना हुआ टव लें शाम के समय १५ इन्द्रवारुणी फल (तुम्मे) लेकर चाकू से छोटे २ टुकड़े कर उस टव में डाल इतना पानी डाले कि जिससे आसानी स कटि स्नान हो सके रात भर पानी और फल पड़े रहने दें दूसरे दिन ८-६ वजे प्रातः अपने सभी कपड़े उतार उसमें कटि स्नानार्थ वैठ जावे और उस जल को उदर और पृष्ठ प्रदेश पर भी डाले इस प्रकार उस मे वैठे २ जब रोगी के मुख में कड़ुवापन अनुभव होने लगे तब उठ कर तौलिये से भली प्रकार शरीर पोंछ वस्त्र धारण कर लेने चाहिये। इस प्रकार प्रति दिन स्नान करे और उस पानी में पांच पांच फल इन्द्रायन के वढ़ाते आवें आठवे दिन ५० होजायंगे अब लगातार ८ दिन पचास पचास फल ही डाले इसके पश्चात् प्रति दिन पांच पांच फल कम करते जावे और १५ फलों पर आने पर कोर्स समाप्त कर देना चाहिये। १५दिन विलम्ब देकर (१५ दिन स्नान न कर) पुनः उसी प्रकार कटि स्नान करें कोर्स समाप्त होने पर १५ दिन फिर विश्राम कर तीसरी वार कटि स्नान आरम्भ करें।

और कोर्स समाप्त होने पर रोगी निरोग होजायगा ※

प्रयोग नं २– पूयमेह हर–

लोहवान   चन्दन का तैल

व्यवहार विधि—प्रथम लोहवान को पीस छान ले फिर उसमें असली चन्दन का तैल इतना मिलावें कि लेहो सी बन जाय। इसको १ या १॥ माशे कैचटों (केपशूल) में भर कर कच्चे दूध के साथ प्रातः सायं रोगी को निगलवा दे वेग अधिक हो तब १ मात्रा दोपहर को शर्वत वजूरी के साथ दे सकते हैं। पहले ही दिन मे पेशाव की जलन मिट जाती है २-४ दिन में पीव आना भी बन्द होजाता है औषधि सेवन काल में रोगी को नमक नहीं खाना चाहिये। ×

※ प्रायः आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वानों का मत है कि श्वित्र (फूल बहरी) नया २ हो थोड़ा २ घेरे हुये हो तथा एक ही अङ्ग में हो तब वह सुख साध्य है। यदि दो अङ्गों पर हो अधिक काल की हो अधिक स्थान घेरे हुये हो तो वह कष्ट साध्य है। यदि सर्वाङ्गीण हो तो असाध्य है। असाध्य को छोड़ कष्ट साध्य तो अवश्य ही जाता रहता है भगवान की कृपा हो रोगी पथ्य सेवी हो धार्मिक हो तब असाध्य भी जाता रहना है। —लेखक

× औषधि कैचट में बन्द कर देनी चाहिये अन्यथा वमन होने का भय है। —लेखक

—लोहवान कौड़िया लेना चाहिये तथा चन्दन का तल का अर्थ है मैसूरी सन्दल का तैल। दोपहर को शर्वत वजूरी में मिला कर देने से भी वमन हो जाती है अतः केपशूल में ही देना चाहिये। —सम्पादक

आयुर्वेदाचार्य श्री पं. सीतावर जी पन्त

कैलाश आयुर्वेदिक फार्मेसी

नैनीताल

आपका जन्म अल्मोड़ा प्रान्तान्तर्गत दन्य ग्राम में श्री मान पं० केशवदेव जी पन्त शास्त्री के घर में हुआ आपने बिहार विश्वविद्यालय की मध्यमा और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आयुर्वेदाचार्य परीक्षा सन् १६२६ में पास की है। आप अपने प्रान्त के सिद्ध हस्त चिकित्सक हैं और देश प्रेमी हैं। आप अपने यहां काम आने वाली सब ही औषधियां अपनी हल्द्वानी की प्रयोगशाला में बनाते है। यू० पी० वैद्य सम्मेलन बुलन्दशहर के सभापति और प्रसिद्ध विद्वान् हैं।

प्रयोग नं० १ शूल नाशक अव्यर्थ योग

शुद्ध अफीम	शुद्ध कपूर	शंख भस्म
अजमायन	सोंठ	शुद्ध हिंगुल

प्रत्येक १-१ तोला

विधि—काष्ठ औषधियां कपड़ छनकर शेष औषधियों के साथ खरल में डाल भांग ६ माशे के पानी में घोंट कर गोली २-२ रत्ती की बना सुखा ले।

सेवन-विधि—गरम पानी के साथ एक-एक गोली जब तक शूल बन्द

+ न हो तब तक देते रहें शूल बन्द होने पर नहीं देनी चाहिये।

गुण—इसके सेवन से कैसा ही शूल हो मार्फिया इंजेक्शन की भांति बन्द हो जाता है। वायुशूल, पित्तशूल, पथरी का शूल (दर्द गुर्दा) आन्त्रिकशूल, आन्त्रपुच्छशूल, प्रवाहिका शूल सब ही शान्ति हो जाते हैं।

प्रयोग नं० २-शूल नाशक द्वितीय योग-

सर्पगन्धा की जड़ का चूर्ण सीप भस्म १-१ तोला
अर्जुन चूर्ण ६ माशे

विधि—पानी में घोट कर ६ रत्ती की गोली बना सुखा रख लेनी चाहिये। सुबह शाम गरम पानी से सेवन करावे। एलोपैथी में ब्रोमाईट व आइडाइड दो औषधियां तुरन्त लाभ पहुंचाने वाली बहुत पहले से निकली हैं। ब्रोमाईड नींद लाने के लिये नाड़ी मण्डल की उत्तेजना को शांति करने के लिये और मस्तिष्क शूल के लिये बहुत उपयुक्त सिद्ध हुए है। जिन रोगों में एलोपैथिक ब्रोमाईड को देते हैं उनहीं रोगों में वैद्यबन्धु उपरोक्त प्रयोग दे सकते हैं यह हृदय को भी निर्बल नहीं करती और लाभ भी यथेष्ट करती है। *

+ तेज शूल हो रोगी बैचैन हो तब १५-१५ मिनट पर और साधारण में आध-आध घन्टे में देना। —सम्पादक

* सर्पगन्धा नींद लाने वाली और रक्त चाप को दूर करने वाली बनोपधि है इसके संयोग से बना यह प्रयोग भी नींद लाने वाला और शूल नाशक है। हमने अनेक बार व्यवहार कर देखा है कि एस्प्रीन से जो हृदय निर्बल होता है उसे हानियां होती हैं, वह इससे नहीं होती इसमें हम ३ माशे मुक्ता पिष्टी और ३ माशे अकीक पिष्टी भी डालते हैं। —सम्पादक

वैद्य भूषण श्री० सन्त इन्दरसिंह जी साधु

अमृतसर (पंजाब)

आपकी आयु ५५ वर्ष के लग भग है। आप माननीय स्वामी रामचरनदास जी महाराज वैद्यराज के शिष्य हैं। आपने रायल आयुर्वेदिक कालेज लाहौर से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की है। अनेक स्थानों में भ्रमण कर देश का उपकार किया है।

प्रयोग नं० १-नासूर (नाड़ी व्रण) पर वटी

रस कपूर सफेद मिर्च खुर्द इलायची के बीच
बड़ी इलायची के बीच —चारो १-१ तोला
लाल मिर्च के बीज ६ तोला
लौंग टोपी वाला × सफेद चिटा जीरा २--२ तोला
आक की जड़ की छाल ५ सेर

विधि—आक की जड़ की छाल छोड़ शेष सातों औषधियां कूटकर कपड़ा मे छानकर रख लें। आक की जड़ की छाल ताजी ले पानी में धोकर २० सेर पानी में औटावें, जब १५ सेर रहे तब मल-मल कर कपड़ा में छान ले और पुनः कढ़ाई मे डाल

× सफेद जीरा जो खाने का होता है। —सम्पादक

औटावें जब एक सेर जल रह जाय तब उतार कर खरल में डाल सातों छनी औषधियां भी डाल खरल करें जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब दो दो रत्ती की गोली बना सुखा रख लें।

प्रयोग-विधि—एक या दो गोली खिला ऊपर से दूध पिलावें। अथवा घृत के साथ दें। प्रातः और सायं मोंठ, मसूर की दाल, घी डालकर खानी चाहिये। गेहूं की रोटी खावें, सौंफ के अर्क के साथ भी दे सकते हैं। इसके सेवन करने से ही नासूर जाता रहता है, यदि निम्न मरहम भी लगाते रहें तब और भी जल्दी आराम होता है।

प्रयोग नं० २-भगन्दर पर मलहम

नीम की नरम पत्ती	×थोम की गंठिया		१०-१० तोला
कास्तगरी सोडा	सफेदा	राल	सिंदूर
	प्रत्येक ५-५ तोला		
रस कपूर का जौहर			५ माशे
तैल सरसों			४० तोला

विधि—नीम की पत्तियां साफ कर ले और थोम की गंठियों को छील कर साफ कर ले। पृथक २ इनको पीसकर टिकिया बना लें। सरसों का तैल कढ़ाई में डाल गरम करें मध्यम अग्नि से जब तैल की झाग जल जाय तो प्रथम नीम की और थोम की गंठियां डाल गरम करें जब जल जाय तो गंठियों को चीमटे से निचोड़ कर फेंक दें बाद कास्तगिरी सोड़ा और सफेदा सिंदूर राल इनको क्रम से तैल में डाले और लोहे के मूसल से घोटता जाय और जिस वक्त गाढ़ी हो जाय तो नीचे उतार रस कपूर जौहर डाल मूसल से मिला रख ले।

× थोम की गंठिया लहसन को कहते हैं।

व्यवहार-विधि—नीम के काढ़े से [illegible] पहिले घाव को धोवे और फाये पर मरहम लगा घाव पर चुपका दे, इससे भगन्दर, नासूर, बिगड़े हुए व्रण, दाद, चम्बल सबको लाभ करती है। हाथ को साबुन से धोकर तब नेत्र आदि से लगावें, कारण जहरीली है। =

= इसकी प्राप्ति की बड़ी आख्यायिकाएं लेखक ने लिखी हैं, पर स्थानाभाव से नहीं दे सके क्षमा प्रार्थी हैं। मरहम लाभप्रद अवश्य है।

—सम्पादक

वै० भूषण श्री० पं० कालीचरण जी भट्ट

मुआविछिया जिला मंडला सी० पी०

आपकी आयु लगभग ६० वर्ष की है। आपका जन्म ब्रह्मभट्ट परिवार में श्रीमान् वैद्य माधवराव भट्ट के यहां हुआ। आपने वैद्य भूषण परीक्षा पास की है। कांग्रेस कमेटी के प्रेसीडेन्ट हैं।

प्रयोग नं० १—केश कल्प

एक मोटे और हरे सेमल (शाल्मलि) के वृक्ष को जिसके फूल आने मे १-१॥ महोना की देर हो उसके तने (अड्कवार) में एक

ऐसा छेद (गढा) करे जिसमें ३-४ सेर से भी अधिक भिलाए आजावें छेद करने पर पके हुए मोटे और पुष्ट भिलावे ३-४ सेर लेकर उस छेद (गढ़ा) में भरदें और सेमल की लकड़ी की हरी डाट (कार्क) लगा कर छेद को बन्द करदे और ऊपर से मिट्टी जो पेड़ की जड़ के पास हो थोपदें (लगादें) जिससे सन्धि न रहे और कार्क निकलने न सके फिर जब १-१॥ महीने में उसके ऊपर जो फूल आवे उसकी यह परीक्षा करे कि फूल की धारी यानी जो पतली २ नसें हैं वह काली होगई हैं और फूल भी कालिमा लिये होगया है। यदि फूल में कालिमा न हो और फूल की नसें काली न हुई हों तब वह प्रयोग व्यर्थ गया समझलें; यदि सिद्ध हुआ है तब उसके फूलों को संग्रह कर छाया में सुखा इमामदस्ते में कूट कपड़ा में छान शीशी में भर मजबूत कार्क लगा कर रखले और ६ माशे चूर्ण फूलों का ६ माशे शकर मिला पाव भर दूध के साथ प्रातः सायं फकावें, वली पलित नष्ट होजाते हैं बाल काले निकलते हैं और काले ही रहते हैं जो सफेद निकले हुये हों उन्हें कटादें

प्रयोग नं० २ स्वप्न दोष हर ठन्डाई

चिरोंजी	बीज कद्दू	खसखस
सोंफ	काशनी	प्रत्येक ३–३ माशे
शंख पुष्पी ६ माशे		ब्राह्मी ६ माशे
बादाम		नग ५

विधि—एक सेर पानी में ठन्डाई की तरह पीस छान कर उसमें एक पाव दूध तथा शकर मिला लीजिये, १-१॥ गिलास एक समय में सुबह शाम, गरमी के दिनों में पिलाने से १५–२० दिन में ही स्वप्न प्रमेह नष्ट हो जाता है बल वीर्यवर्धक और स्मरण शक्ति को बढ़ा कर शान्ति रखता है

और विदारी कन्द के स्वरस में मर्दन कर मटर बराबर गोली बना सुखा कर रखलें।

सेवन विधि—एक एक गोली प्रातः और सायंकाल खिला ऊपर से दूध गरम किया हुआ मिश्री मिला कर पिलावें, इससे नपुंसकता नष्ट होजाती है बल, वीर्य, स्तम्भन बढ़ जाता है। गुड़, तैल, लालमिर्च, खटाई गरम मसाले आदि सेवन नहीं करने चाहिये।

प्रयोग नं० २ प्रदर नाशक

माई छोटी	माई बड़ी	बीज बन्द
ताल मखाना	रूमी मस्तङ्गी	प्रत्येक ४-४ माशे
इमली के बीज	मोचरस	सेलखड़ी
बबूल का गोंद	सालिम मिश्री	असगन्ध
माजूफल		विदारी कन्द

प्रत्येक १-१ तोला

मिश्री ३ तोला १० माशे   वर्क चांदी ११ नग

उपयोग विधि—सब को कूट कपड़ छन कर वर्क चांदी के मिला रखलें। ६ माशे से ६ माशे तक साठी चावल को कच्चे दूध में धोकर और शर्बत शहतूत २॥ तोले मिला कर फकावें अथवा धारोष्ण दुग्ध या चावल के धोवन के साथ दें। श्वेत-रक्त प्रदर को नष्ट करने वाला है।

× धारोष्णदुग्ध—एक बर्तन के मुख पर कपड़ा बाँध उस पर मिश्री पीस कर रख गाय का दोहन करे और कपड़ा हटा फौरन पीजावे हवा न लगे इस दुग्ध को ही धारोष्णदुग्ध कहते हैं। चावल का धोवन—साठी चावल ५ तोले को पावभर पानी में भिगोदें और मलकर कपड़ा में छान ले यही छना पानी चावल का धोवन कहाता है सुबह भिगोवे वह शाम को लें और साम को भिगोवे वह सुबह मल छान कर लें   —सम्पादक

राजवैद्य स्वर्गीय पं० वेनीराम जी आयु० मार्तण्ड

वैद्य अम्बालाल जी जोषी, मोहन आयु० औषधालय मुगलपुरा जोधपुर

—:—

आपका जन्म सं० १६२० वि० में और मृत्यु सं० १६६८ में हुई। आप दधीच ब्राह्मण कुल में श्री० पं० शिवबल्लभ जी वैद्यराज के यहां जन्म लिया था। आपने आयुर्वेद पिता जी से ही पढ़ा था। आपको राजवैद्य की उपाधि राज्य की तरफ से और आयुर्वेद मार्तण्ड की उपाधि भारतीय विद्वत परिषद अजमेर से मिली थी आप विद्वान् और अनुभवी वैद्य थे।

प्रयोग नं० १—श्वेत-मल्ल भस्म—

२॥ तोला डली रूप शुद्ध खनिज श्वेत मल्ल को एक बैंगन में टांकी लगा कर रख दे। फिर उसी बैंगन के टुकड़े से मुख बन्द कर तीन लड़ा मलमल का कपड़ा लपेट कपर-मिट्टी कर पुट पाक करे। (जले हुए कपड़ो की निर्धूम राख में) जब बैंगन गल कर जलने लगे तब निकाल ले. फिर धीरज से उसमें से डली निकाल के आक के दूध में डाल दे और ७ दिन पर्यन्त रखा रहने दे, ध्यान रहे डली अर्क दुग्ध में सदैव डूबी रहनी चाहिए उघड़ जाने पर नया दुग्ध डालदे। फिर एक मिट्टी के सरांव में तीन आने भर सिन्दूर नीचे बिछा ऊपर से डली को रख लगभग ऽ।~ पाव सिंदूर इस प्रकार दवा दे कि डली पूर्णतया ढक जाय इस बड़े सराव को तीक्ष्णाग्नि पर चढ़ादे और ध्यान

रखे कि सिंदूर तिड़क न जाय, दरार पर नया सिंदूर लगादे, लगभग ३ घन्टे की अग्नि से भस्म तैयार होजायगी। परीक्षार्थ उक्त भस्म को निर्धूम अङ्गारे पर डाल कर देखे धूम्र युत हो तो फिर अग्नि दे। औषधि तैयार है।

मात्रा—आधे से २ चावल तक बलाबल देख कर तत्तद्रोग पर अनुपान से देने से समस्त वात और कफ रोगों को जीते।

कुछ अनुभूत अनुपान नीचे दिये जाते हैं

१—नागवल्लरी के पान के स्वरस में देने से शहद तथा अद्रक स्वरस सम भाग की गरम चासनी में देने से जीर्ण और दुर्जेय कास व विशेष कर श्वास में अत्यन्त लाभप्रद है।

२—मुनक्का (दाख) के बीज निकाल कर उसके अन्दर दवा बन्द कर निगलने से भीषण वात रक्त कुष्ठ तथा पामा इत्यादि चर्म रोग समूल नाश होते हैं।

३—विरोंजा के सत्व २ रत्ती में आधा चावल बराबर डाल कर ठंडे पानी में सेवन करने से उपदंश, फिरङ्ग, प्रभृति रोगों में अच्छा काम करता है।

प्रयोग नं० २ रक्त विकारान्तक पर्पटी

शुद्ध पारद	१ तोला	शुद्ध गन्धक आमलासार	६ तोला
सोरा कलमी	२ तोला	स्वर्ण गैरिक	२ तोला
सर्ज (राल)	२ तोला	स्फटिक	२ तोला
शुद्ध मल्ल	४ रत्ती	शुद्ध अहिफेन	२ माशे

बनावट—पहले शुद्ध पारद तथा मल्ल श्वेत को मर्दन करे (२ घन्टे तक) फिर गन्धक मिला कर ३ दिन पर्यन्त घोटे कज्जली तैयार होने पर शोरा, गैरिक, सर्ज रस और स्फटिक डाल कर एक जीव हो जाने तक मर्दन करता रहे एक अलग खरल में विशुद्ध अहिफेन का चूर्ण कर रख छोड़े फिर एक लोहे की कड़ाही में थोड़ा सा घृत

लगा कर उक्त मर्दित द्रव्यों को डाल कर निधूंम अङ्गारों पर रख गला कर अहिफेन का प्रक्षेप दे। लोहे की शलाका से चला कर भैंस के गोबर पर एक कदली पात रख कर पर्पटी ढाल दे। ठन्डी होने पर पर्पटी को निकाल काम मे लावे।

मात्रा—आधे माशे से २ माशे तक वलोवल देख कर दें।

गुण—८ रत्ती पर्पटी का चूर्ण १ तोले शक्कर के साथ सेवन करने से रक्त विकार, खून की खुश्की, खुजली आदि रोगों पर अपना प्रभाव दिखाता है।

—*—

आयुर्वेदाचार्य पं० रामस्वरूप जी शर्मा

गोपाल आयुर्वेद भवन, उखलाना
पो० हरदुआगंज जि० अलीगढ़

आपका जन्म सं० १६४६ वि० ब्राह्मण कुल भू० श्रीमान् प० नाथूराम जी शर्मा के यहां हुआ था। आपने खुरजा से व्याकरण मध्यमा के २ खंड उत्तीर्ण कर देहली के वनवारी लाल आयुर्वेद विद्यालय से वैद्य परीक्षा और जयपुर से आयुर्वेदाचार्य परीक्षा दी और और जयपुर स्वामी जी की सेवा में रह अनुभव प्राप्त किया आपने एक गोपाल आयुर्वेद विद्यालय भी खोल रक्खा है वहां के विद्यार्थी जयपुर या देहली भी परीक्षा दिया करते हैं। आप बड़े सिद्ध हस्त चिकित्सक हैं।

वैद्यशास्त्री पं० रामचन्द्र जी शर्मा
कनवरीगञ्ज रोड अलीगढ़ ।

प्रयोग नं० १–विषम ज्वर हर वटी–

कालमेघ घन सत्व — चिरायता घन सत्व

गुड़ूची घन सत्व — अभ्रक भस्म

लाल फिटकरी का फूला — लोह भस्म — करंज मींग

प्रत्येक १-१ तोला

शु० मीठा तेलिया ६ माशे — रस सिंदूर ६ माशे

तुलसी पत्र — ५ तोला

विधि—सब औषधियों को अच्छी तरह खरल करके नीम के पत्र के रस में घोटे और चना बराबर की गोली बनाले।

सेवन विधि—१-१ गोली ३ बार जल अथवा सुदर्शन अर्क के साथ दें इससे मलेरिया ज्वर, प्लीहा, यकृत विकार के साथ दूर होता है।

प्रयोग नं० २–यक्ष्मा नाशक–

मुक्ता पंचामृत (यो. र.) २ तोले — स्वर्ण भस्म ३ माशे

रस सिंदूर षड् गुणबलिजारित १ तो० — लोह भस्म ६ माशे

अभ्रक भस्म सहस्र पुटी १ तोला — रौप्य भस्म ६ माशे

छिलका कुक्कुटांड भस्म ६ माशे — खर्पर भस्म ६ माशे

प्रवाल भस्म १ तोले — शृङ्ग भस्म ६ माशे

विधि—सब को खूब खरल कर केकड़ा के मांस रस, सितावर के स्वरस अथवा क्वाथ गुड़ूची स्वरस से ३-३ दिन मर्दन कर रखलें। मात्रा २ रत्ती दूध के साथ दें। क्षय की प्रथम और द्वितीय अवस्था में अति लाभदायक है।

आयु० भू० वैद्य रामकिशन जी गुप्त 'दीन' आ० विशा०

रामकिशन आयुर्वेदिक चिकित्सालय
कोसी कलां जिला मथुरा

—:—

आपका जन्म सं० १६८० वि० में श्रीमान् वैद्य श्रीचन्द्र जी गुप्त के यहां हुआ। आपने आयुर्वेद विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है आप चिकित्सा कार्य करते हुए परीक्षाएं देने का विचार रखते हैं और वैद्य भूषण, कविरत्न, उपाधि भी प्राप्त की हैं।

प्रयोग नं० १—शोथ हर—

रेवन्द चीनी	सोंठ	काली मिर्च
पीपल छोटी	अजमोद	स्वर्ण माक्षिक भस्म

व्यवहार विधि— काष्ठौषधि को कूट कपड़छन कर भस्म मिला मर्दन कर रखले सब औषधियां बराबर लें। मात्रा १ माशा।

सेवन विधि—प्रातः सायं मध्यान एक-एक माशे औषधि शहद में चटावें ७ दिन चटाने से कैसा ही शोथ हो अवश्य नष्ट हो

जायगा। ×

प्रयोग नं० २—नस्य नकसीर—

निर्माण विधि—काले रङ्ग की बकरी की पूंछ (दुम) के नीचे के बाल १ तोला गुलाबी फिटकिरी १ तोला दोनों को एक सराब में रख ऊपर से घोड़े की लीद का स्वरस इतना डालें कि जिसमें अच्छी तरह से तर (भीज) हो जाय। फिर दूसरा सराव ढक सन्धि बन्द कर कपड़ मिट्टी करें। ५ सेर उपलों में फूंक दें। स्वांग शीतल होने पर निकाल खरल कर शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—उपरोक्त दवा करने से पहले काली बकरी के बालों की रोगी की नासिका के नीचे अग्नि पर डाल धूनी दें। बाद में रोगी को चित्त (सीधा) लिटा कर उपरोक्त निर्माण नस्य को सुघाएं। ऐसा दिन में दो बार करें, और धूनी देना नहीं भूलें।

गुण—नकसीर (Seuvry or epistaxii) जिसमें कि रक्त में तेजी आजाने से नाक की भीतरी रगें खुल जाती हैं और पतला पतला खून निकलने लगता है, पित्त की अधिकता होती है। ज्वर आदि में भी नाक से खून गिरने लगता है, ऐसी अवस्था में यह प्रयोग तीर की तरह सत्वर काम देता है।

× ऊपर की औषधि प्रातः सायं पुनर्नवादि काथ के साथ देने से अति लाभ करती है बिना काथ कम। —सम्पादक

पुनर्नवादि काथ—पुनर्नवा, नीम, पटोल पत्र, सोंठ, कुटकी, गिलोय, हरदार, हरड़ समान भाग। गौ मूत्र डाल कर।

वैद्य भूषण श्री० रामचन्द्र जी जैन

मड़ाना-कोटा स्टेट

—:—

आपकी आयु ३१ वर्ष की होगी। आप श्रीमान लाला फुन्दीलाल जी जैन के सुपुत्र हैं आपने आगरे और ललितपुर से आयुर्वेद विशारद एवं वैद्य भूषण उपाधि प्राप्त की है।

प्रयोग नं० १—निमोनिया पर—

मकरध्वज	१ तोला	अभ्रक भस्म	१ तोला
जायफल	३ माशे	माणिक्य रस	१ तोला
स्वर्ण माक्षिक भस्म	३ माशे	जावित्री	३ माशे
वंश लोचन	—		३ माशे

विधि—सब को पान के रस में खरल कर उरद बराबर गोली बनाले एक एक गोली पान केरस केसाथ दें। निमोनियां की ऐसी अवस्था में जब रोगी की नाड़ी कमजोर होगई हो, अथवा तीव्र ज्वर हो देने से लाभ होता है। साथ ही निम्न-लिखित पसली शूल पर तैल छपा हुआ है उसे बना कर और मोंम मिला कर पलस्तर (प्लास्टर) भी कर देना चाहिये।

प्रयोग नं० २—पशुली शूल पर तैल—

सींगिया विष	५ तोला	संखिया सफेद	४ तोला
लोंग	२ तोला	अजवाइन खुरासानी	३ तोला
बीज धतूरा	३ तोला	जायफल	२ तोला
सेंधा नमक	५ तोला	सोंठ	३ तोला
पीपरा मूल	३ तोला	अफीम	२ तोला
सफेद घोंघची	३ तोला	गुल बाबूना	२ तोला
सुरंजान कड़वी	२ तोला	गौ मूत्र	१ सेर
तेल सरसों			१ सेर

विधि—सब औषधियों को कूट गौ मूत्र डाल खूब बारीक पीस शेष बचा गौ मूत्र और तैल मिला मन्दाग्नि पर पकावे जब गौ मूत्र जल जाय तैल मात्र शेष रह जाय तब छान कर रखलें।

उपयोग—निमोनियां में जब पसली में दर्द हो तब इस तैल की मालिश करे अथवा ५ तोले तैल में १ तोले मोम मिला गरम कर कपड़ा पर लगा पलस्तर की तरह लगादे और बोतल में गरम पानी कर सेकदें तो अवश्य शांत होजाता है। बात रोग में जहां दर्द हो वहां भी मालिश से लाभ होता है। +

+ निमोनियां रोग में एक बात का प्रत्येक चिकित्सक को ध्यान रखना चाहिये कि रोगी का कफ निकलता रहे यदि कफ खुश्क हो तब तर कर अथवा जिस उपाय से कफ निकलने लगे वही उपाय करे पर यह भी ध्यान रहे कि कफ निकालने वाली औषधि या उपाय ऐसा न हो कि दोषों को बढ़ादे। —सम्पादक

वैद्यरत्न श्री० पं० रघुवीरशरण जी शर्मा वै०

आयुर्वेदिक रसायन शाला

बुलन्दशहर

—:—
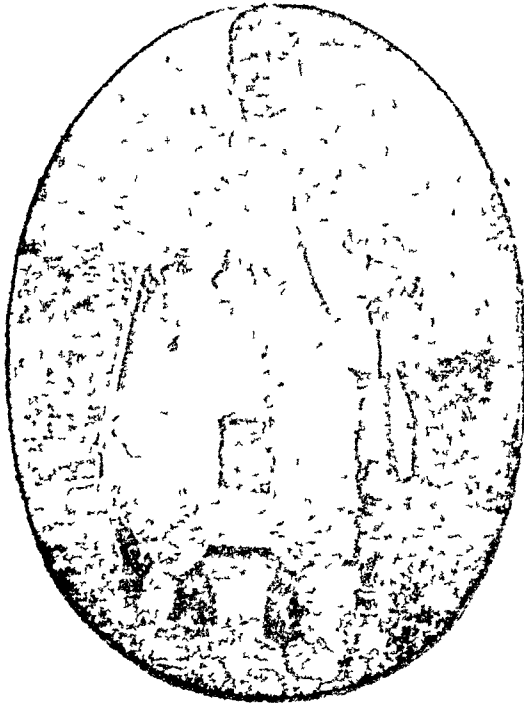
आपका जन्म सं० १९६० वि० में ज्वार रैरा ग्राम में श्रीमान् पं० भवानी प्रसाद जी शर्मा के यहां हुआ। आपने व्याकरण मध्यमा और देहली की वैद्य परीक्षा पास की है आपने रसायन शास्त्री पं० श्यामसुन्दराचार्य वैश्य के पास रह आयुर्वेद रसायन की शिक्षा प्राप्त कर उनसे ही वैद्य रत्न की उपाधि प्राप्त की। आप ने वैद्यक पत्रों में अनेक लेख लिखे है। प्रशंसा पत्र पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं।

प्रयोग नं० १—गर्भ पात पर—

गोखुरू छोटे
अरण्ड की जड़ की छाल
कांस की जड़
कुशा की जड़

—समान भाग लेकर और जौ कुट कर रखले।

उपयोग विधि—रात्रि को सोते समय इस दवा की १ तोले की साफ कपड़ा में पोटली वना एक कढ़ाई मे डाल दे और उसमें आध सेर

दूध और आध सेर पानी डाल औटावें जब पानी जल जाय दूध मात्र शेष रह जाय तब पोटली निकाल कर फेंक दें और दूध को छान कर मिश्री मिला कर ठन्डा करके पिलादें * यह गर्भ स्थिति के एक महीने बाद से अन्त तक देते रहें तब गर्भपात गर्भश्राव नहीं होता यह निश्चित है।

प्रयोग नं० २–रक्त प्रदर नाशक–

पठानी लोध ५ तोला समुद्र-सोख ५ तोला

—इन दोनों को कूट कपड़ा में छान कर रखलें।

उपयोग विधि—२ तोले साठी चावल को जल में पीने योग्य पतले पकाओ और उपरोक्त चूर्ण ६ माशे फंका ऊपर से यह पिलाओ प्रातः काल दिन में एक ही समय। जब अन्य मूल्यवान योग से रक्त बन्द नहीं होता तब इससे होजाता है रक्त प्रदर को अव्यर्थ है।

---

* रोगी को विश्वास के लिये अपने आप से मुक्ता शुक्ति पिष्टी अथवा गिलोय का सत्व १-१ रत्ती की पुड़िया बना कर देदे और कह दे कि इसे फांक ऊपर से पिलावें। अथवा कल्कुलहज्र (पत्थर का दिल) जिसका वर्णन प्राणाचार्य भाग १ अङ्क ३ में प्रकाशित हुआ है उसको पीस कर पिष्टी बना कर रखलें और इस की एक मात्रा एक रत्ती की शर्बत अनार में चटा ऊपर से पिलावें तो और भी उत्तम।

—सम्पादक

श्री० पं० रामस्वरूप जी शर्मा गौड़ वै० शास्त्री

आरोग्य सिंधु औषधालय, फिरोजाबाद

—※—
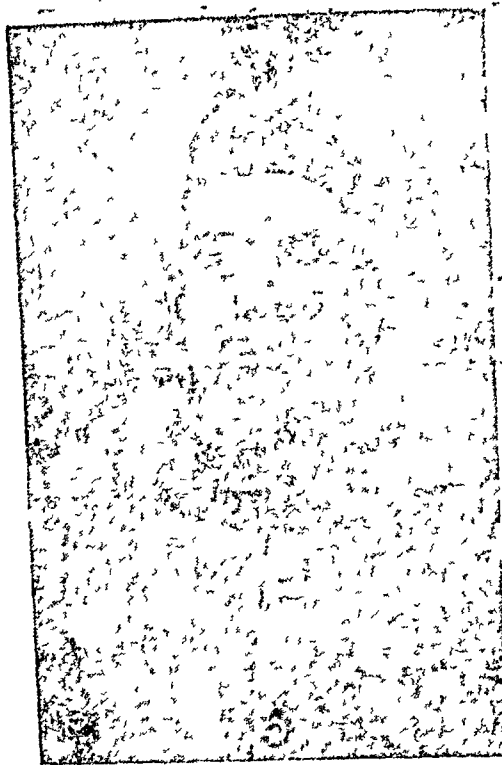
आपका जन्म सं० १९६४ वि० में गौड़ ब्राह्मण कुल के श्रीमान् पं० लक्ष्मीनारायण जी शर्मा वैद्यराज के यहां हुआ था। आपने व्याकरण की प्रथमा और और आयुर्वेद की वैद्य शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की है, आप अपने पिता जी के अनुभव को लेकर चिकित्सा कार्य में दक्ष हो चुके हैं।

प्रयोग नं० १ -लाल जीवन--

गोलोचन-	३ माशे	एलुआ	६ माशे
उसारे रहसान-	१ तोले	केशर	१ तोले
कटेरी का जीरा-	१ तोले	यव क्षार	१ तोले
सत्यानाशी के बीज			१ तोले

विधि—सब को कूट छान कर अदरख के रस में मर्दन कर बाजरे बराबर गोली बना सुखा रख ले।

सेवन विधि—१-१ वटी दो-दो घन्टे के अन्तर से सेंहुड़ के पत्तों को गरम कर रस निकाल कर १ माशे, शहद १ माशे मिला कर चटावें। बच्चों का डब्बा (पसली चलना) खांसी, श्वास, सर्दी विबंध को दूर कर मल द्वारा वायु को निकाल साफ कर देता है।

ज्यो० शा० श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी झा आयु०

श्री भुवनेश्वरी औषधालय मधुवनी ज़िला दरभंगा।

—*—

आपकी आयु ४४ वर्ष की है। आप मैथिल ब्राह्मण-कुल भूषण श्रीमान् पं० मुरलीधर जी झा के सुपुत्र हैं, आपने ज्योतिष की शास्त्री बनारस से और आयुर्वेदाचार्य विहार संस्कृत एसोसियेशन से तथा वेदान्त साहित्यालङ्कार आदि अनेक परीक्षाएं दी हैं। चन्द्रधारी संस्कृत कालेज के अध्यापक और विहार संस्कृत एसोसियेशन के परीक्षक भी रह चुके हैं।

प्रयोग नं० १--नपुंसकता के लिये--

शुद्ध श्वेत सोमल १ तोला शुद्ध रूमी सिंगरफ २ तोला

—दोनों को एकत्र खरल में डाल खरल करे खूब बारीक चूर्ण हो जाने पर १० तोले धतूरे के बीज का रस डाल कर खरल करे जब रस सूख जाय तब ५ तोले अकवन (आक) का दूध डाल कर इतना खरल करे कि टिकिया बनने योग्य हो जाय तब पतली टिकिया बना छाया में सुखा कर २० तोले नक छिकनी की लुगदी में रख निर्वात स्थान में ४ सेर जङ्गली कन्डों में रख फूंक दे स्वांग शीतल होने पर टिकिया निकाल खरल में डाल ५ तोले छोटी इलायची के दाने मिला खूब खरल करे और उसमें थोड़ी २ उत्तम दर्जे की ब्रांडी सुरा डालते जांय जब १ बोतल ब्रांडी सूख जाय तब अच्छी

कस्तूरी ३ माशे
केशर आधा तोला
चांदी के वर्क ३ माशे
जुन्दवेदस्तर १ तोले
सोने के वर्क १ माशे

—मिला कर एक रत्ती की गोली बना छाया में सुखा रखलें।

सेवन विधि—प्रातः और रात्रि को १-१ गोली १-१ छटांक मलाई में लपेट कर खानी चाहिये। ऊपर से एक सेर दूध गरम किया हुआ मिश्री मिला कर पीवे-यदि गर ी न करे तब २ गोली की मात्रा कर सकते हैं। प्रबल रोग में ४० दिन के सेवन से नपुंसकता रोग नष्ट हो जाता है निम्न तिला भी लगावें।

तिला—

श्वेत संखिया १ ताले
धतूरे का रस ५ तोले

—दोनों को खरल में डाल जब तक खरल करे कि रस सूख फिर १० तोले कुंकुटाण्ड का पित्ता थोड़ा २ डाल कर घोटे और फिर ५ तोले अकवन का दूध डाल खरल करे सूख जाने पर कुचला के बीज के बीच का पित्ता आधा तोला लवङ्ग का तैल ५ तोले मिला कर खूब घोटे बाद चीनी के प्याले मे रख कड़ी धूप मे टेढ़ा कर रख दें जो तैल उसमे निकले उसमे जुन्दवेदस्तर १ तोला, वीर वहूटी ताजा एक तोला मिला कर खूब खरल करे फिर ५ तोले माल कांगनी का तल मिला शीशी मे रख ले।

उपयोग विधि—५-६ बूंद लिंग की सुपारी और सीवन को बचा कर नस में उंगली से मल कर सुखा दे और पान गरम कर ऊपर से बांध फिर लङ्गोट लगाले। स्नान छोड़ दे गरम पानी से रही जाय फुन्सी होजाय तो शत धौत घृत (१०० बार पानी से धुला घृत) लगावें। तिला २१ दिन तक लगावे।

चिकित्सक श्री० शिवकुमार जी गुप्त वैद्यराज

श्री शिव चिकित्सालय, रावतपाड़ा—आगरा

आपकी आयु ४० वर्ष की है। आपके पिता श्रीमान् अ.वाल कुल भूषण केदारनाथ जी गुप्त वैद्य भूषण थे। आप आगरे के प्रतिष्ठित वैद्यों में हैं आपके यहां परम्परागत चिकित्सा कार्य होता आया है आपनें आदर्श आयुर्वेद विद्यालय सरस्वती भवन में वैद्यक शिक्षा प्राप्त की है।

प्रयोग नं० १—व्रण हर—

तैल तिल का ४० तोला　　　काशगरी सफेदा २० तोला

नीम की लकड़ी

विधि— काशगरी सफेदा जो फूला हुआ हलकी जात का हो लेकर खूब बारीक चलनी में छान कर प्रथक रख लेना। एक लोहे की कढ़ाई में तैल को डाल गरम करना जब तैल खूब पक जाय तब उसमें उपरोक्त सफेदा मिला कर नीम की लकड़ी (सोटा) जो आदमी के पोंचे (कलाई) के समान मोटा और ३ फीट लम्बा हो तथा ताजा कटा हुआ हो अर्थात् उसी दिन नीम के वृक्ष से कटवा कर मंगाया गया हो उससे कढ़ाई मे पड़े तैल और सफेदा को खूब घोटता रहे (मर्दन करता रहे) कढ़ाई के नीचे अग्नि मन्द २ लगती रहे। जब घोटते २ एक तार की चासनी के समान गाढ़ी और लसदार होजाय तब कढ़ाई को अग्नि से उतार लें। यह अग्नि पर पतली ही रहती है पर ठन्डी होने पर मरहम की तरह गाढ़ी होजाती है।

व्यवहार—फाड़ा के फाहे पर चाकू या छुरी से लगा कर जरा सी अग्नि की गरमी दिखा (सुलगे कोयले से जरा सेकते) या दिया सलाई को जला उससे गरम कर व्रण पर चुपड़ दें।

गुण—पके व्रण को फोड़ कर मवाद निकाल २-३ फाहे में ही सुखा देती है। बिगड़े सड़े और पुराने जख्मों को नीम के अच्छे प्रकार बनाये पानी से पिचकारी के जरिये साफ करले फिर गोजे या कपड़े के तन्तुओं को मरहम में सान कर जख्म में धीरे २ भर दे यदि अधिक बिगड़ा हो तब दिन में दो बार अन्यथा एक बार लगावें। इससे कैसा ही बिगड़ा जखम फोड़ा हो अवश्य आराम हो जाता है। यह प्रयोग हमारे बाबा साहेब बनाते थे और पिता जी भी बनाते हैं दूर २ तक के लोग ले जाते हैं।

नोट—बनाते समय इसके धुआं से बचते रहें इसका धुआं अधिक लगने से श्वास हो जाने का भय रहता है। इसको कढ़ाई से कुछ गरम रहते ही कांच या चीनी के चौड़े मुख की शीशी (बरनी) में भरले क्योंकि यह ज्यादा खुली रहने और ठन्डी होने से चीचड़ रबड़ जैसी होजाती है हवा नहीं लगने से उत्तम मरहम बनी रहती है।

प्रयोग नं० २—दन्त पूय और दन्त कृमि पर—

वच (घुड़वच)		हींग बढ़िया
कपूर	वायविड़ंग	गौ घृत

विधि—चारों औषधियों को कूट कर कपड़ा में छान शीशी मे रखले १॥ माशे चूर्ण को ६ माशे गौ घृत को चम्मच में मिला कर गरम करे और एक रुई की फुरफुरी सींक पर बना उसको दवा मे डुबो कर मुख के अन्दर मसूड़ो और दांतों को सेके।

गुण—इसके सेक करने से फूले, सूजे मसूडे टीस मारते हुये दांत, दांत में कीड़ा लगने से पीड़ा लपकन आदि सब १०-१५ मिनट सेकने से तत्काल बन्द हो जाती है जो मसूड़े इतने ज्यादा फूल और सूज गये हों कि मुख खोलने रोटी खाने मे तकलीफ हो तब इसके द्वारा सेक करने से उसी समय आराम मालूम होने लगता है दन्त शूल के लिये अव्यर्थ है। जब डाढ में ही ज्यादा दर्द हो या कीड़ा लग गया हो तब रुई के फाहे में सूखी दवा ही २-३ रत्ती रख दबाने से रतूबल निकल दर्द दूर होजाता है।

राजवैद्य श्री० पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित आ० वि०

प्रधान मंत्री अ० भा० आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रचारक संघ

बाराबङ्की यू० पी

—*—

आपकी आयु लगभग ३५ वर्ष की होगी। कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान राजवैद्य स्वर्गीय पं० श्रीनिवास जी दीक्षित वैद्य शास्त्री के आप सुपुत्र हैं। आपने व्याकरण और आयुर्वेद का विधिवत् अध्ययन किया है। अनेक उपाधि पदक प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं वैद्यक सभा सोसायटी के प्रमुख व्यक्ति हैं। आयुर्वेद विशारद, साहित्य रत्न परीक्षायें पास की हैं।

प्रयोग नं० १—श्वास हर तैल—

गङ्गाजी की बालू २० तोला, कलमी सोरा २० तोला

संखिया शु० २ तोला, जावित्री २ तोला

लौंग, तज कलमी, शीतल चीनी

पठानी लोध, जायफल, केशर असली

छोटी इलायची का दाना, प्रत्येक १-१ तोला

व्यवहार विधि—सबको कूट कपड़ मिट्टी की हुई आतसी शीशी में भर पाताल यन्त्र में रख तैल निकाल ले। तैल बहुत थोड़ा निकलता है सावधानी से निकाल शीशी में भर काके लगा रखलें। एक सींक बङ्गला पान में लगा प्रातः सायं सेवन करावें, गरमी मालूम हो तब मक्खन मिश्री खिलावें। हर प्रकार की श्वास में अति लाभदायक।

प्रयोग नं० २—सुजाक हर वटी

शुद्ध रस कपूर २ माशे   छोटी इलायची के दाने ६ माशे
गेरू ६ माशे   रार देशी ६ माशे
बैरोजा का सत्व ६ माशे   पुराना गुड़ २ तोले

व्यवहार विधि—सब को पीस गुड़ मिला गोली छोटे बेर की बराबर बना रखलें। सुबह शाम १-१ गोली आम के अचार के तैल में खांय। पथ्य में अधिक मिर्चों से बने हुये दही बड़े व खटाई आदि खाना हित कर है।

प्रयोग नं० ३—सुजाक हर पिचकारी

—बकरी का दूध २ सेर लेकर ४ बोतलों में भर कर कड़ी डाट लगादे और ऊपर से मजबूत-कपड़ा बांध दें और धूप में ३ दिन तक रखे। जब दूध फट जाय तब मोटे कपड़े में छान लें और बोतल में भर कर निम्न औषधियां कपड़ छन कर पिलादें

कत्था पपरिया   शु० रसौत   छोटी इलायची के दाने
कलमी सोरा   कपूर देशी   १-१ तोला
रस कपूर १ रत्ती   तूतिया भुना   आधी रत्ती
तूतिया कच्चा   आधी रत्ती

—सब को मिला बोतलों की कार्क लगा दूध में ३ दिन रक्खें बाद कपड़े में छान इसकी पिचकारी लगावें। +

+ पिचकारी लगाते समय ध्यान रक्खे कि मूत्रनली के अन्दर ही तक अर्क जासके। जोर से पिचकारी न लगावे अथवा एक हाथ से इन्द्री की जड़ की तरफ दबाये रहे जिससे अर्क भीतर न चला जाय सिर्फ मूत्रनली तक ही रहे।

—सम्पादक

कविराज श्री० वैद्य श्रीराम जी गोयल भिषगरत्न

एल० ए० एम० एस० ए० ऐम० ए० एस० एफ०

किशोर आयुर्वेदिक वर्क्स बुलन्दशहर

—*—

आपकी आयु ३१ वर्ष की है। आप अग्रवाल कुल भूषण श्रीमान् बा० किशोरी लाल गोयल मुख्तार के सुपुत्र हैं। आपने हाई स्कूल (अंग्रेजी) परीक्षा पास कर कलकत्ता जाकर अष्टांग आयुर्वेदिक कालेज कलकत्ता से आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त कर परीक्षाऐं दी यू० पी० मैडीशन बोर्ड के रजिस्टर्ड वैद्य हैं अनेक सभाओं के पदाधिकारी हैं श्री गान्धी धर्मार्थ औषधालय के इंचार्ज हैं।

प्रयोग नं० १—कफान्तक भस्म—

—नवीन स्वच्छ गेंहू को आक के दूध में किसी कांच के पात्र में भिगो दें इतना दूध डालें कि गेंहू डूब जाय। जब २-३ दिन में गेंहू आक का दूध पीकर फूल जाय तब एक सकोरे में रख ऊपर से दूसरा सकोरा रख ऊपर से गेंहू का आटा लगा बन्द करदें और मन्द अग्नि में रख फूंक दें ध्यान रहे कि अग्नि अधिक न हो मन्द हो जिससे गेंहू भुन जाय पर राख न होने पावें। स्वांग शीतल होने के बाद गेंहू पीस छान कर रखले।

सेवन वि०—जिस रोगी को कफ अधिक जाता हो उसे दो दो रत्ती मधु में मिला कर चटावें दिन में तीन वार। ३ दिन में कफ जाना बन्द होजाता है, जिस रोगी को कफ कठिनता से निकलता

हो खांसी अधिक हो उन को मलाई के साथ चटाने से कफ पतला हो निकल जाता है और नवीन बनता नहीं। यह प्रयोग एक सन्यासी से प्राप्त हुआ है इससे मूल्य वसूल नहीं करना चाहिये। धर्मार्थ बांटनी चाहिये।

प्रयोग नं० २—मलेरिया नाशक वटी

शु० संखिया ६ माशे काली मिर्च १ तोला
शु० हिंगुल ६ माशे

विधि—सब को करेले के रस में मर्दन कर सरसों बराबर गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—ज्वर चढ़ने से ३ घन्टे पूर्व एक गोली तुलसी पत्र में रख रोगी को देने से मलेरिया ज्वर नष्ट होता है।

आयुर्वेद जगत में क्रान्ति दूत

सचित्र आयुर्वेदीय मासिक पत्र

"प्राणाचार्य"

आयुर्वेद के अनुभवी विद्वान् एवं कर्मठ वीर वैद्य बांकेलाल गुप्त "प्राणाचार्य" के सम्पादकत्व में प्रकाशित होरहा है। इसमे-आयुर्वेदोन्नति, रोग-विज्ञान, गृहस्थ विज्ञान, वनौषधि विज्ञान, वैद्य-परिचय, परीक्षित प्रयोग, वैद्यों से परामर्श वैद्यों की सम्मतियां और विविध समाचार आदि स्तम्भ हैं, जिनमें वैद्यों के लाभार्थ सर्वोत्तम लेखादि दिये जाते हैं।

प्रत्येक वैद्य मात्र को ग्राहक बन कर लाभ उठाना चाहिये। वार्षिक मूल्य भी केवल ४≡) है।

प्राणाचार्य-भवन, विजयगढ़ (अलीगढ़)

आयुर्वेदविज्ञानाचार्य श्री० पं० गयाप्रसाद जी शा०

मुरलीधर बाग, हैदराबाद (दक्षिण)

आपका जन्म सं० १९५१ वि० में स्वर्गीय श्री० पं० केदारनाथ जी मिश्र के यहां हुआ। आप कान्य कुब्ज ब्राह्मण हैं। अपने काशी आदि में व्याकरण, साहित्य, न्याय, सांख्य वेदान्त, आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की। डी०ए०वी० कालेज देहरादून, गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी, हिन्दी युनवर्सिटी इलाहाबाद में प्रोफेसर प्रिन्सीपल आदि रह चुके हैं। आप लेखक कवि भी हैं। निजाम गवर्नमेंट के आयुर्वेदिक एडवाइजरी बोर्ड, मेडीकल सेन्ट्रल बोर्ड के मेम्बर भी हैं।

प्रयोग नं० १—अपस्मार नाशिनी वटी—

ब्राह्मी	मीठी वच	शंख पुष्पी
मीठा कूठ	शु० कुचिला	स्वर्ण माक्षिक भस्म

प्रत्येक २—२ तोला,

अभ्रक भस्म	मल्ल चन्द्रोदय

शृङ्ग भस्म	केसर	प्रत्येक १-१ तोला
कस्तूरी	३ माशा	सर्पगन्धा घन सत्व १० तोला

विधि—१० तोला जाटमांसी को ६० तोला पानी में २४ घंटे भिगो कर १५ तोला क्वाथ सिद्ध करना। उपर्युक्त काष्ठादि औषधियों के सूक्ष्म चूर्ण तथा रस भस्मादि को भली भांति खरल करना केसर और कस्तूरी को पृथक २ घोट कर अन्य औषधियों के साथ मिलाना। एवं औषधियों के एक जीव हो जाने के अनन्तर सर्पगन्धा घन सत्व को मिलाना तथा जटामांसी के क्वाथ के साथ भली भांति २-२ रत्ती की गोलियां बना लेना। आवश्यकतानुसार प्रातः सायं या दिन में तीन बार इन गोलियों को जल के साथ सेवन करने से अपस्मार (मृगी) तथा हिस्टीरिया रोग में अपूर्व लाभ होता है। रक्त चाप (ब्लडप्रेशर) तथा उन्माद (पागलपन) में भी ये गोलियां लाभकारी सिद्ध हुई हैं।

सर्पगन्धा घन सत्व विधि—

१ सेर सर्पगन्धा के अध कुट चूर्ण को ८ सेर पानी में भिगोना। २४ घंटा भीगने के बाद अग्नि पर चढ़ा कर २ सेर पानी शेष रखना। क्वाथ शीतल हो जाने पर औषधि को हाथों से खूब मलना और महीन कपडे से छान लेना। इस औषधि को पुनः किसी कलई दार भगोने में डाल कर अग्नि पर चढ़ाना और अवलेह सदृश हो जाने पर पात्र को अग्नि से उतार कर शीतल होने पर उक्त औषधि को किसी चौड़े मुख के पात्र में रखना। यही सर्पगन्धा घन सत्व कहलाता है।

प्रयोग नं० २—जीर्ण विषम ज्वर नाशनी वटी

सोंठ	अतीस	काली मिर्च
पिपरामूल	छोटी पीपल	तुलसी के पत्र
वड़ी हरड़ का वक्कल	कुटकी	शुद्ध कुचला
इन्द्रायण की जड़	पारद गन्धक की कज्जली	वनफ्सा
पित्त पापड़ा	चिरायता	प्रत्येक २॥-२॥ तोला

गिलोय का घन सत्व गोदन्ती हरताल भस्म
शुद्ध फिटकरी ५-५ तोला शुद्ध करंज की गिरी १५ तोला

विधि—काष्ठादि औषधों का सूक्ष्म चूर्ण, कज्जली तथा भस्मादि समस्त औषधों को खरल में डाल कर जल के योग से भली भांति खरल करना। अनन्तर ३ ३ रत्ती की गोलियाँ बना कर रख लेना। शीत पूर्वक ज्वर में ज्वर आने से पहले १-१ घंटे के अन्तर से २-२ गोलियाँ, कुल मिला कर तीन वार में ६ गोलियाँ जल के साथ देने से पारी का ज्वर का निश्चित रूप से रुक जाता है। अनन्तर प्रातः सायं १-१ गोली जल के साथ मलेरिया के कीटाणु नष्ट होते हैं, रक्त कणों एवं बल की वृद्धि होती है। जीर्ण विषम ज्वर, मलेरिया जनित जीर्ण ज्वर तथा दूषित विष से उत्पन्न मन्द ज्वर, में ये गोलियाँ अत्यन्त लाभ कारी सिद्ध हुई हैं।

अमृतादि घनसत्व निर्माण विधि—

हरी गिलोय (गुड़ूची) २॥ सेर सताना (सप्तपर्ण) की छाल २॥ सेर
नीम की अन्तर, छाल २॥ सेर चिरायता १॥ सेर
कुटकी १ सेर जल ४० सेर

विधि—गिलोय. नीम और सतौना की छाल के छोटे २ टुकड़े करके इमाम दस्ते में जवकुट करना। इसी प्रकार चिरायता तथा कुटकी को भी कूट कर जव कुट करना। भली भांति कुटी हुई पाँचों औषधों को ४० सेर जल में ५ दिन भिगोना और प्रति दिन १वार दोनों हाथों से मलते रहना। ५ दिन तक भीगने के अनन्तर पात्र को अग्नि पर चढ़ाना और मन्दाग्नि से क्वाथ सिद्ध करना। २० सेर जल शेष रहने पर पात्र को अग्नि से उतारना और क्वाथ के शीतल होने पर पुनः उसे हाथों से खूब मलकर किसी झीने कपड़े से कड़ाही या भगोने में छान लेना। इस छने हुए क्वाथ को पुनः अग्नि पर चढ़ा कर मन्दाग्नि से लेह सिद्ध करना। जब अवलेह कुछ गाढ़ा होजाय तो पात्र को अग्नि से उतार कर शीतल होने पर "अमृतादि घनसत्व" को किसी चौड़े मुख के पात्र में रखना और आवश्यकतानुसार उपयोग में लेना। "अमृतायनी" में इसी "अमृतादि घनसत्व" को उपयोग में लेना।

कविराज श्री० हरिचरण सिंह जी आयुर्वेदाचार्य

कांग्रेस आयुर्वेदिक फ्री अस्पताल, रादौर जिला करनाल

—*—

आपका जन्म जाट सिक्ख कुल में हुआ था आपकी आयु २८ वर्ष की है, आपने सनातन धर्म आयुर्वेद कालेज लाहौर से वैद्यक शिक्षा पाई है, आपने आयुर्वेदाचार्य फस्ट डिवीजन में उत्तीर्ण की है। आप देश सेवक हैं, इसी भावना से पं० शिवशर्मा आ० आ० के अनुरोध से कांग्रेस आयुर्वेदिक फ्री, अस्पताल में चिकित्सक नियुक्त हो जन सेवा कर रहे हैं

प्रयोग नं० १—गर्भ दाता योग

शंखनाभी आध सेर को सेंधे नमक के पानी (१० तोला सेंधा नमक को ३ सेर पानी में मिलालो यही नमक का पानी है) ३ सेर मे दोपहर तक जोश दो फिर चूना (कलई) २ सेर मे सम्पुट कर १ मन उपलों की आच दो उसके बाद १ सेर को २ सेर पानी मे हल कर उसका पानी नितार कर आध सेर ले उस पानी म उपरोक्त भस्म को खरल कर टिकियां बना सुखाले। चूना २ सेर बिना बुना-हुआ ही नया लेकर उसके बीच मे रख सम्पुट बना १ मन उपलों की आंच दो। फिर बथुआ घास के आध सेर रस मे खरल कर टिकिया बना सुखा २ सेर कलई के बीच मे रख १ मन उपलो की अग्नि दें, फिर बनफसा के स्वरस आध सेर मे खरल

कर टिकिया बना २ सेर चूना में रख १ मन की अग्नि दें, फिर अर्क दुग्ध में खरल कर चूना में रख १ मन की अग्नि दें, भस्म करले और शीतल होने पर निकाल मर्दन कर शीशी में भर रक्खें।

व्यवहार विधि—यदि मासिक धर्म (ऋतु) बन्द हो तब १४ दिन रात्रि को गौ दुग्ध के साथ एक एक माशे भस्म फकावें। ७ दिन भस्म देना बन्द कर फिर १४ दिन सेवन करावें। इस प्रकार भस्म सेवन कराने से मासिक धर्म (ऋतु) आ कर सन्तान होगी।

(२)—यदि आर्तव आता रहता हो तब उस स्त्री को —ऋतु होने के बाद उपरोक्त विधि से ही ७ दिन सेवन करावें और ७ दिन बन्द रख पुनः ७ दिन के (मास में सात सात दिन २ बार दें) इसी प्रकार २ रे मास मासिक धर्म के बाद से सेवन करावें। इसी प्रकार २ मास में ४ वार में २८ दिन सेवन करावें। औषधि सेवन काल में स्नान और पुरुष सहवास नहीं करना चाहिये। शेष दिनों में जब औषधि बन्द रहे तब स्नान और पुरुष सहवास करती रहे। तो इससे गर्भाशय के सब रोग दूर हो सन्तान होगी। शरद वायु और वायु कारक चीजों से परहेज करे। प्रकृति की स्त्री को दे सकते हैं।

प्रयोग नं० २ वायुनाशक गुटिका

दाल चिकना	रसकपूर	संखिया श्वेत
सिंगरफ	प्रत्येक	१-१ तोला

विधि—प्रथम सिंगरफ को २ दिन हस्तसुण्डी के रस में खरल करें और २ सेर रस प्याज का लें, दोला यन्त्र में रख सिंगरफ को पकावें, मन्दाग्नि से सिंगरफ को निकाल बाकी ३ औषधियां भी मिला प्याज के रस में घोट कर टिकिया (गोली) बना सुखा लें और लाल मिर्च हरी २ सेर की लुगदी बना उसके बीच में

टिकिया (गोली) रख ऊपर कपर मिट्टी कर धूप में सुखालें। सूखने पर एक लोहे की कढाई में एक मन बालू रेत के बीच में रख ऊपर से लोहे के वर्तन से ही ढकदें और २४ घंटे की अग्नि दें व शीतल होने पर सम्पुट खोल गोला के भीतर से टिकिया (गोली) निकाल और पीस कर रखले।

सेवन विधि—मात्रा १ चावल से २ चावल तक। मक्खन में रख प्रातः सायं निगलनी चाहिये। इसके सेवन से—आमवात अर्धाङ्गवात कुष्ट, चरमदल, पार्श्वशूल, कंठमाला, उपदंश में अति-लाभदायक है।

वायुनाशक तैल

असगंध का रस ॥ऽ　　अर्क पत्र रस ॥ऽ

धतूरे का रस ॥ऽ　　एरण्ड के पत्तों का रस ॥ऽ

थोहर दुग्धरछटांकसिगरू (सहजने की) छाल का क्वाथ १ सेर

तमाकू की लकड़ी का क्वाथ ॥ऽ　　सोंठ १८ तोला

पीपल ५ तोला　　भांग ५ तोला

हींग १ तोला　　कुचला १ तोला

दाल चीनी २ तोला　　अजमायन २ तोला

मेथी २ तोला　　अफीम १ तोला

तिल का तैल १ सेर　　सरसों का तैल १ सेर

एरड का तैल ॥ऽ　　महुआ का तैल ॥ऽ

—तैल विधि से तैल बनालें। सर्दी में खूब और गरमी में कम तैल कीमालिश करावें ×

×—स्वरस क्वाथ प्रथक रखले। तैल सब १ जगह रखले काष्ट औषधि कूट कर और किसी स्वरस को डाल लुगदी वनालें और फिर सब को कढाई में डाल मन्द २ अग्नि दे जब तैल मात्र रहे तब छान कर बोतल में रखलें।

—सम्पादक

आयुर्वेदाचार्य पं० श्रीपति प्रसाद जी पाठक वैद्य

व्यवस्थापक-श्रीकालकेश्वर कार्यालय, बक्सर चौक (आरा)

—*—

आप की आयु अभी २० वर्ष की है इतनी छोटी अवस्था में आपने व्याकरण की प्रथमा एवं मध्यमा के खंड दिये हैं और आयुर्वेद की विहार संस्कृत एसोसियन से आयुर्वेदाचार्य पास की है। आप स्वनाम धन्य श्रीमान् पं० गिरिजादत्त जी पाठक आयुर्वेदाचार्य के सुपुत्र हैं। आपके यहाँ परम्परागत चिकित्सा व्यवसाय चला आता है। आयुर्वेदाचार्य, भिषगाचार्य, आयुर्वेद केशरी परीक्षा उत्तीर्ण हैं। संग्रहणी के विशेषज्ञ हैं।

प्रयोग नं १ सर्वज्वर हर अर्क

करंज के पत्ते	निम्बवृक्ष की अन्तरत्वक	चिरायता हरा
चित्रक हरा	धनियाँ	गुडूची पञ्चाङ्ग हरा
आमला	प्रत्येक बीस बीस तोला	जल १२ सेर

विधि—इन सब औषधियों को जौ कुट कर जल में १ दिन भिगोदे दूसरे दिन वकणी यन्त्र (भवका) में ७ बोतल अर्क निकालले और उस अर्क मे फिटकरी की खील, सुहागे की खील, गोदन्ती हरिताल भस्म, चूना (कलई), नीबू का रस ६--६ माशे, मर्दन कर मिलादें। यह गुलाबी रंग का अर्क बन जायगा।

सेवन विधि—मात्रा १ तोले से २॥ तोले तक प्रातः सायं सेवन करावें विषम ज्वर (मलेरिया) में प्रातः और ज्वर आने से १ घन्टे पूर्व पिलावें। यह त्रिदोष को छोड़ सब ही ज्वरों का वेग रोकने वाला है विषम ज्वर की प्रधान औषधि है।

प्रयोग नं० २-उदर शूल हर चूर्ण

जीरा सफेद	५ तोला	काला निमक	१० तोला
जीरा स्याह	५ तोला	समुद्र निमक	५ तोला
सौंफ	५ तोला	सैंधा निमक	५ तोला
अजमायन	५ तोला	यवक्षार	२॥ तोला
छोटी हरड़ (जंगी हरड़)	५ तोला	नौसादर	१॥ तोला
नीबू का सत्व	१॥ तोला	अम्लवेत	५ तोला

विधि—सफेद जीरे को घी में भूनले और छोटी हरड़ को भी घी में भूनले फिर सब औषधियों में मिला कूट कर कपड़ा में छान रखलें ३ माशे से ६ माशे तक गरम जल या सौंफ के अर्क के साथ फकाने से सब प्रकार के उदर शूल में लाभ होता है *

---

* यह चूर्ण वायु के उदर शूल में लाभ प्रद देखा गया है पाचक और स्वादिष्ट है।

—सम्पादक

साहित्यरत्न श्री० पं० श्रीकृष्णजी शर्मा आयु० शा०

नाथद्वारा (मेवाड़ प्रान्त)

—*—
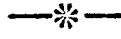
आपका जन्म कानपुर निवासी सनाढ्य ब्राह्मण श्री० पं० हीरालाल जी शुक्ल के यहाँ सं० १६५५ में हुआ था। नाथद्वारे के श्रीमान् पं० गोपाल दत्त जी के दत्तक पुत्र हैं। आपने बम्बई में श्री० वैद्य-राज हनुमान प्रसाद जी से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की है।

प्रयोग नं० १—स्त्रियों की निर्बलता हर मोदक—

नवीन जीरा १ सेर		लोध आध सेर
खोवा (मावा) १ सेर		गौ घृत १ सेर
मिश्री ३ सेर		तज १ तोले
तेज पात	इलायची छोटी	नाग केशर
पीपल छोटी	सोंठ	जीरा स्याह
देवदार	खैर	रसौत
धनिया	हल्दी	हरदार
अडूसा	वंसलोचन	तवाखीर

प्रत्येक १-१ तोला

विधि—जीरा लोध को कूट कपड़ छन कर मावा मिला घृत में भून लें और मिश्री की चासनी कर उसमें मिलालें तथा शेष औष-

धियां भी कपड़ छन कर मिला कर जमादे और दो दो तोले की कतली काट कर रखलें।

सेवन विधि— प्रातः काल और रात्रि को सोते समय एक-एक कतरी दूध के साथ सेवन करने से स्त्रियों की निर्बलता दूर होती है नदी के समान बहता हुआ रक्त और श्वेत प्रदर नष्ट होजाता है *

प्रयोग नं० २– काम वर्धक मोदक

कूठ मीठा	त्रिकुटा	मेथी
जायफल	सैंधव	अजवाइन
अड़ूसा	विदारी कन्द	मोचरस
मूसली सफेद	कायफल	चित्रक छाल
जीरासफेद	जीरा स्याह	दाख
गज पीपल	कौंच के बीज	हरड़
तज	तेजपात	तालीस पत्र
इलायची छोटी	सांभर नमक	संचर नमक
बहेड़ा	केले का कल्क	काकड़ा सिङ्गी
असगन्ध	सितावर	कचूर
मुलहठी	गिलोय	चिरोंजी
केशर	लोंग	जाबित्री
खस	गोखुरू	सेमल का मूसला
उरद	आंवले	मस्तङ्गी
शु० कनक बीज	पुनर्नवा	सिघाड़े
जटामांशी	बला	नाग बला
सुगन्ध वाला	अति बला	भारङ्गी
तिल	ब्राह्मी	शीतल चीनी

---

* बल वर्द्धक अवश्य है पर बिना दूसरी औषधि के सहयोग के प्रदर नहीं रुकता—सम्पादक

अकरकरा कौड़िया लोहूवान दन्ती
वच काहू के बीज कमल गट्टा
इमली बीज ताल मखाने प्रत्येक १-१ तोला
गौ घृत भुनी भांग १६ तोला अभ्रक भस्म ८ तोला
बङ्ग भस्म ४ तोला लोह भस्म २ तोला
रस सिंदूर १ तोला शहद
मिश्री २॥ सेर

विधि—सब काष्टौषधि कूट कपड़ छन कर घृत से कुछ २ चिकना करे (घी का मोया दें) पश्चात् भस्म और मिश्री मिलावें और शहद इतना मिलावें कि मोदक बन जांय तब दो दो तोले के मोदक बनाले।

सेवन विधि—एक एक मोदक प्रातः और रात्रि को मिश्री मिले दूध के साथ लेने से काम शक्ति बढ़ती है नपुंसकता दूर होती है ×

× बल बर्धक अवश्य है पर नपुंसकता को विना दूसरी औषधि के सहयोग के नष्ट नहीं करता —सम्पादक

वैद्य विशारदा श्रीमती सरोजनी देवी जी शर्माणी

भारतीय औषधालय बुढ़ानगेट, मेरठ

—o—

आपका जन्म लगभग १६६८ विक्रमी सम्वत् में ब्राह्मण कुल-भूषण श्रीमान् पं० घासीराम जी मिश्र जहांगीराबाद (बुलन्दशहर) निवासी के यहां हुआ था। आपने वैद्य विशारद परीक्षा पास की है। मेरठ की महिलाओं में आपका एक विशेष स्थान है। महिला परिषद मेरठ की मंत्राणी हैं कांग्रेस की सदस्या हैं यू० पी० इण्डियन मेडीशन वोर्ड लखनऊ की सदस्या हैं और श्रीमान् पं० दयानिधि जी शर्मा वैद्यराज की धर्मपत्नी हैं।

प्रयोग नं० १—योनि कण्डू हर

सिंगरफ १ माशे	तूतिया १ माशे
सफेद सुरमा २ तोले	दही का तोड़ २ छटांक
गुलाब जल	६ छटांक

विधि—औषधियों को खरल कर थोड़ा सा दही का तोड़ डाल घोटे जब रवा नहीं रहे तब शेष दही का तोड़ और गुलाब जल मिला १ शीशी में भर कर रखले।

व्यवहार विधि—रुई का फोहा भिगो कर योनि मार्ग को इससे साफ करदे इस तरह ३–४ वार प्रति दिन साफ करने से योनि कण्डू (खुजली) शान्ति हो जाती है। उपदंश, सुजाक से उत्पन्न खुजली भी अच्छी होजाती है।

प्रयोग नं० २—प्रवाहिका हरि चूर्ण

बेलगिरी	जीरा सफेद	सोंफ
बड़ी इलायची	गुलाब के फूल	मीठे इन्द्र जौ
ईसबगोल की भुसी		

विधि—सब को समान भाग ले कूट छान चूर्ण करले और सब की बराबर मिश्री मिला कर रखले।

सेवन विधि—प्रवाहिका, पेचिश, में ६ माशे जल के साथ फंकाना चाहिये प्रातः और सायं। यह दीपन पाचन है। अधिक दस्त हों तब कर्पूर रस १–१ गोली भी मिला कर दे।

डमरू यन्त्र
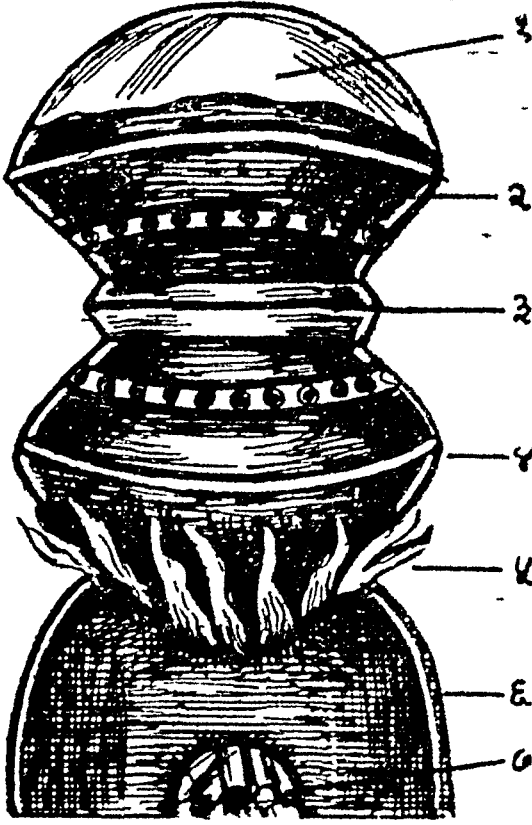
१—भीगा कपड़ा

२-४—हांडी

३—दोनों हांडी जुड़ा हुआ मुख कपड़-मिट्टी किया हुआ।

५—अग्नि

६—चूल्हा

७—जलती लकड़ी

दोला यन्त्र
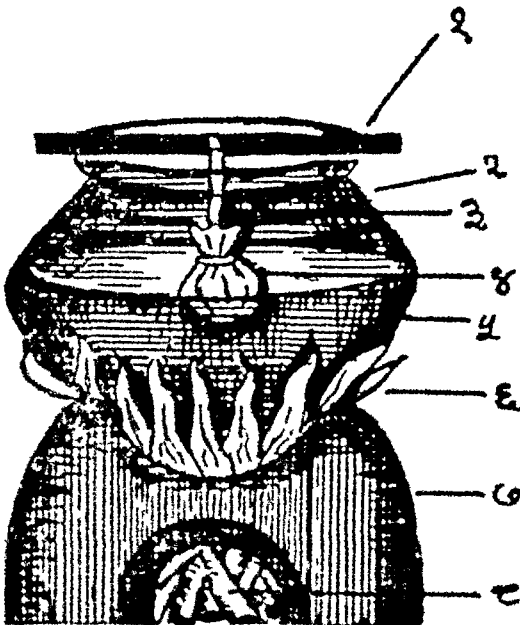
१—लकड़ी-जिसके बीच मे पोटली बंधी हुई लटक रही है।

२—हांडी

३—लटकती हुई पोटली की रस्सी

४—पोटली जिसमें दवा बंधी हुई है।

५—पानी या जिस द्रव्य जिसका शास्त्र में उल्लेख हो।

६—अग्नि की लपटें।

७—चूल्हा

८—जलती हुई लकड़ी

आयुर्वेद शिरोमणि श्रो० सुरेन्द्रदेव जी शास्त्री

आनन्द मेडिकल हाल भोंगाव (मैनपुरी)

—*—

आप महाशय दयानन्द जी आर्य के सुपुत्र हैं। आपकी आयु ३० वर्ष की है। आपने गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन से आयुर्वेद शिरोमणि और बनारस से भिषगाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपको गुरुकुल से सर्व प्रथम उत्तीर्ण होने से स्वर्ण पदक तथा जनता से भिन्न समय में २२ स्वर्ण पदक एवं रौप्य पदक प्राप्त हुऐ हैं। आप बालकों के सूखा रोग एवं संग्रहणी, यक्ष्मा के प्रधान चिकित्सक हैं।

प्रयोग नं१ सूखा (बाल शोष)पर तैल

तिल का तैल ५२ सेर भांगरा स्वरस ५२ सेर

कुकरौंधा स्वरस ५२ सेर चिरचिरा (अपामार्ग)स्वरस ५२ सेर

विधि—अग्नि पर कढ़ाई रख उसमें तिल तैल डालें और क्रमशः उपरोक्त स्वरसों को पृथक २ डाल कर पकावें जब सब स्वरस जल जाय तब उसमें १० तोले कछुरी(कछुवा) की पीठ की हड्डीको पीस कर डाल दीजिये और तैल को गरम कीजिये जब हड्डी भुन जाय तब अग्नि से उतार १॥ तोला अफीम मिला दीजिये और ठन्ढा होने पर छानकर उसमें २॥ तोला चन्दन का तैल (संदल) डाल

कर बोतल में भर लीजिये।

गुण और व्यवहार—सूखा रोग को नष्ट करने वाला है इसको बालक के सम्पूर्ण शरीर में विशेषतः पीठ में प्रातः साय ;मालिश करनी चाहिये।

प्रयोग नं २ सूखा (बाल शोष) पर गोली

स्वर्ण माक्षिक भस्म	१ तोला	मृगाङ्क	१ तोला
स्वर्ण मालिनी वसंत	१ तोला	जीरा सफेद	१ तोला
सुहागा	२ तोला	काकड़ासिंगी	१ तोला
सत्व गिलोय	१ तोला	आक का क्षार	१ तोला
तमाखू का क्षार	१ तोला	शु० अफीम	६ माशे

विधि—प्रथम काष्ठौषधि कूट कपड़ा में छानलें फिर खरल में शेष सब औषधियाँ और कपड़ छनी काष्ठौषधि डाल लाल अपामार्ग (डंठल वाला) के स्वरस की सात भावना दें एक एक रत्ती की गोली बनालें।

गुण—माता के दूध के साथ एक एक गोली प्रातः सायं सेवन करावें उल्लिखित तैल की मालिश करावे तब ३ दिन में ही सूखा रोग नष्ट हो जाता है।

---

३ दिन में रोग तो नष्ट नहीं होता पर लाभ अवश्य मालूम होता है।

—सम्पादक

श्रीमान् डा० सुधाकरजी त्रिवेदी द्विजराज वैद्य

जसरापुर (जयपुर स्टेट)

आपकी आयु ३२ वर्ष के अनुमान है। आप गौड़ ब्राह्मण कुल के श्रीमान् पं० कालूराम जी त्रिवेदी वैद्य के पुत्र हैं। आपने इंगलिश और चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किया है।

प्रयोग नं० १—कण्डू (पामा) रोग हर मरहम

सत्व वैरोजा गंधक नवसादर
फिटकिरी सफेद का लावा

—समान भाग ले कूट कपड़ छन कर नवनीत में मिला घोट कर मलहम बनालें। इसके २–३ बार लगाने से ही खुजली खाज दूर होजाती है।

प्रयोग नं० २—अर्श रोग नाशक

—कसीस को तवे पर भून कर और पीस छान कर शीशी में भर कर रखलें, एक एक माशे शीतल जल के साथ प्रातः सायं सेवन कराने से १–२ सप्ताह में ही ववासीर चाहे खूनी हो या वादी अवश्य नष्ट हो जायगी। गुड़ तैल, खटाई, लाल मिर्च, स्त्री प्रसङ्ग का परहेज रक्खे और पपीता, मूली जमीकन्द का शाक अधिक सेवन करे।

वै० श्रीमती शान्तिदेवी अग्रवाल

धर्मपत्नी डा० देवेन्द्रकुमार जी आयुर्वेदाचार्य

डालटनगञ्ज (पलामू)
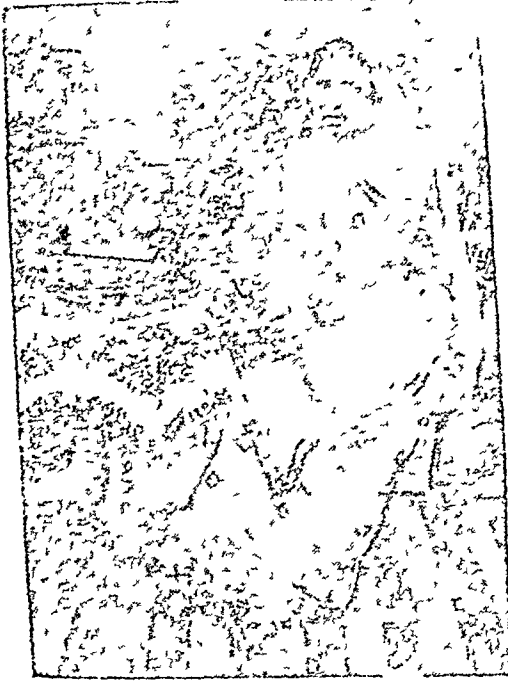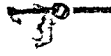
आपकी आयु लगभग २३ वर्ष की होगी। आप अग्रवाल कुल दीपक हैं। आपने कन्या गुरुकुल देहरादून में नियमित शिक्षा समाप्त की। हिन्दू विश्वविद्यालय काशी में भी शिक्षा प्राप्त कर रहीं थी उन्हीं दिनों श्री० डा० देवेन्द्रकुमार जी से आपका विवाह होगया और आप उनसे आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त करती रही। ×

प्रयोग नं० २—रजः प्रवर्तनी वटी

मुसव्वर	१ भाग	शु० हींग	१ भाग
सुहागे का फूला	१ भाग	शु० कसीस	१ भाग
सोठ	आधा भाग	वङ्ग भस्म	आधा भाग

विधि—सब को कपड़छन कर जल मे मर्दन कर मटर बराबर गोली बनाले।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः साय गरम जल के साथ सेवन करे और निम्न बत्ती को गर्भाशय में रक्खे तो बाधक कष्ट रज, न्यूना-

---

× हम आपके विधवा होने से बड़े दुखी हुए हैं और समवेदना प्रकट करते हैं— वैद्य बांकेलाल गुप्त

र्तव कष्टार्तव नष्ट होजाते हैं। यह मासिक धर्म के समय से ७ दिन पहले से सेवन कराना आरम्भ करे और मासिक धर्म होने पर बन्द करदे।

प्रयोग नं २—बत्ती का प्रयोग

—इन्द्रायन की जड़ को कूट कर कपड़ा में छान ले और घृत कुमारी के रस में मर्दन कर अङ्गुष्ठ प्रमाण मोटी बत्ती बना १-२ बारीक कपड़ा की तह लपेट कर गर्भाशय में रक्खे।

श्री० वैद्यराज लक्ष्मीनारायण जी शर्मा ओजटूवाले

श्री सरस्वती आयुर्वेदिक औषधालय
चिड़ावा (जयपुर स्टेट)

—o—

ओजटू निवासी श्रीमान् स्वर्गीय पं० कालूराम जी राजवैद्य के आप पुत्र हैं। आपने अपने पिता जी से ही आयुर्वेद की शिक्षा ग्रहण की है। आप अनुभवी वैद्य हैं। परम्परागत चिकित्सा कार्य होता आया है।

प्रयोग नं० १—नहरवा (स्नायु) रोग पर —

तैल तिली १ सेर अजवाइन खुरासानी १ पाव

भिलावा १ पाव	मोंम १ पाव
मुरदासन ४ तोला	सिंदूर १ पाव
कपूर	४ तोला

उपयोग विधि--सब को पीस कर सारी दवा तेल में पकावें लोहे की कढ़ाई में सब दवा जला कर उतार ले और नीम की लकड़ी से घोट कर खूब बारीक करलें। नहरवा के ऊपर फोहा से लगावें। १० फोहों से आराम अवश्य होगा। खाने को पापड़ खार दो आना भर रोज दही में खिलावें।

प्रयोग नं० २--श्वान विष

सितावरी १॥ तोला	मिर्च काली ३१ नग

--जल में घोट कर पीने से ही श्वान (कुत्ता) का विष दूर होजाता है। फिर उस विष का भय नहीं रहता। शर्तिया दवा है

राजवैद्य श्री० पं० लक्ष्मीनारायणजी शर्मा वै० वि०

श्रीकृष्णा औषधालय घाटोली
पोस्ट इकलेहरा जिला कोटा

—*—
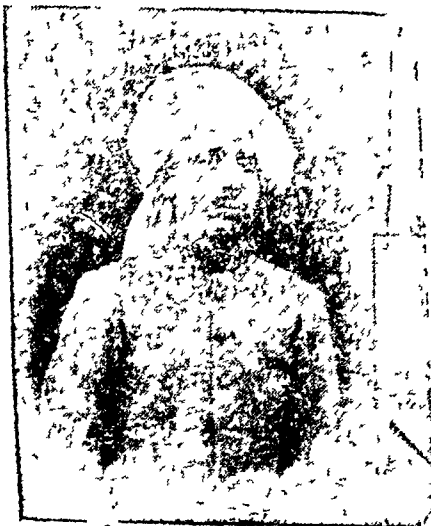
आप की आयु लगभग ३० वर्ष की है। आपने गौतम ब्राह्मण कुल के श्रीमान् पंडित मथुरालाल जी शर्मा के यहाँ जन्म लिया था। आपने वैद्य, वैद्य विशारद, वैद्य भूषण की परीक्षाएं दी हैं। राज्य की तरफ से आपको राजवैद्य की उपाधि और इनाम प्रशंसा पत्र मिले हैं तथा और भी अनेक महानुभावों से प्रशंसा पत्र मिले हैं।

प्रयोग नं १ पामा (खाज) हर मरहम

पारा, सिगरफ, आमलासार गंधक
मनसिल हरताल पीलो, मुरदासंख
सफेद जीरा काली मिर्च बावची
कत्था सिन्दूर नीला थोथा

प्रत्येक तीन तीन माशे

व्यवहार विधि—प्रथम पारद गंधक की कज्जली कर शेष औषधि कूट कपड़ छन कर मिलालें और २-३ घन्टे खरल कर १० तोले धुले हुऐ गाय के घी में मिला कर मर्दन कर मरहम बना रखें। जब कि शरीर पर व चूनड़ पर हाथों पर कमर पर फलक पड़े हुऐ हों वेदना होती हो दर्द के मारे चैन न पड़ता हो हर प्रकार की गीली खाज (पामा) हो इसके लगाने से अवश्य लाभ होता है खुजली पहले दिन ही बन्द हो जाती है। इसके लगाने के साथ ही साथ पच सकार चूर्ण या अन्य विरेचनीय औषधि से दस्त भी कराते रहना चाहिये। ×

प्रयोग नं २ शीत पित्त पर क्वाथ

त्रिफला १॥ तोला, काली मिर्च ६ माशे

पानी ३० तोला

व्यवहार विधि—त्रिफला काली मिर्च को कूट कर ३० तोले पानी में औटावें जब १५ तोले शेष रहे तब छान कर रखले और पाँच पाँच तोले प्रातः, दोपहर, सायंकाल, तीन समय पिलावें और रोगी के शरीर को—सज्जी खार या सोड़ा बाई कार्ब एक तोला ले पावभर गरम पानी में मिला कर उसमें कपड़ा भिगो शरीर से मले। पुराने से पुराना शीत पित्त (पित्ती) ३ दिन में नष्ट हो जाती है। औषधि सेवन करा और लगा कर कम्बल उढ़ा कर रोगी को सुला देना चाहिये। पथ्य में गेंहू की रोटी सेंधा निमक डाल कर मूंग की दाल और अदरख की चटनी से खानी चाहिये +

× पारद गंधक सिगरफ अशुद्ध ही डाल कर बनाया गया और अच्छा लाभ प्रद पाया गया—सम्पादक

+ प्रथम १-२ विरेचन देने के बाद क्वाथ और सोड़ा लगाने से बड़ा लाभ होता है। —सम्पादक

वै० भूषण श्री० राधेलाल जी गुप्त

पूनाहाना (गुड़गांवा)

—※—
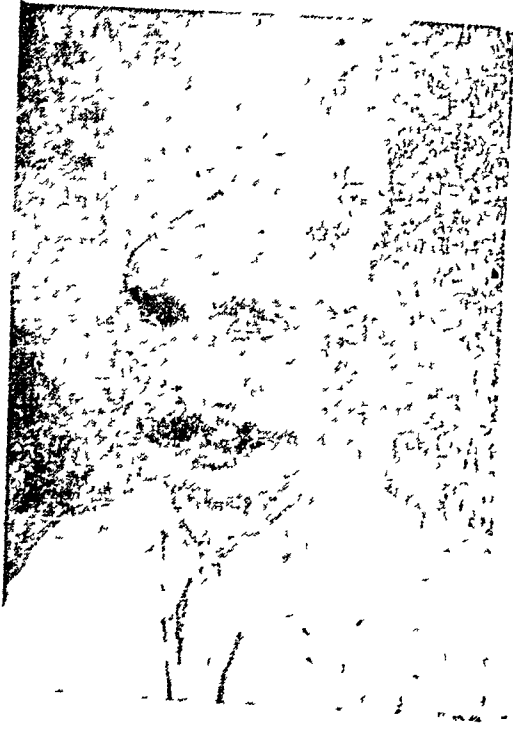
आपका जन्म सं० १६४४ वि. में अग्रवाल कुल भूषण श्रीमान बा० रामसिंह जी के यहां हुआ। आपने आयुर्वेद भूषण की उपाधि प्राप्त की है। आप अनुभवी वैद्य हैं।

प्रयोग नं० १ उपदंश रिपु

काली हरड़ १० तोले,
मिर्च स्याह वंसलोचन पिपरमेंट
प्रत्येक ३-३ माशे
नीबू १०१

विधि—प्रथम पिपरमेंट नीबू को छोड़ कर शेष औषधियों को कूट कर कपड़ा में छान कर लोहे के खरल या कढाई मे डाल दे, उसमे ही पिपरमेंट और नीबू का रस निकाल डाल लोहे की मूसली से खरल करें जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब मटर बराबर गोली बनाले।

प्रयोग विधि—एक गोली प्रातः और एक गोली सायं काल नीबू के रस के साथ ही सेवन करें। पथ्य में चने की रोटी गौघृत के साथ-सेवन करें बिना निमक की। इन्द्री पर घाव हो तब इन गोलियों को नीबू के रस मे घिस कर लगावे। इस से उपदंश और उपदंश

जन्य शरीर पर पड़े चवते, घाव, फुन्सी आदि उपद्रव भी शान्ति हो जाते हैं। ध्यान रहे कि इन गोलियों के सेवन से पूर्व निम्न औषधि से विरेचन अवश्य दे देना चाहिये।

विरेचन का प्रयोग–

शुद्ध जयपाल १० तोला	हरड़ वड़ी ५ तोला
मिर्च काली २॥ तोले	चिरोंजी ५ तोला

पारा शुद्ध १ तोले सवको खरल करने से ही पारद भी मिल जायगा। खुराक २-३ माशे ठन्डे जल के साथ प्रातः १ ही समय दें। *

प्रयोग नं० २ अग्नि दग्ध पर

राल सफेद ५ तोला	कत्था सफेद १ तोला
मुरदासन १ तोला	तूतिया १॥ माशे
कबीला १ तोला	तैल सरसों १० तोला

विधि—प्रथम तैल छोड़ शेष औषधियों को कपड़ छन कर तैल में मिला १०१ वार मीठे जल से धो लेने से मरहम वन जायगी। इस को कपड़ा पर लगा जले स्थान पर लगादें। जलन तो लगाते ही बन्द हो जाती है फफाले और घाव भी धीरे २ भर जाते हैं। प्रधान वात यह है कि घाव अच्छे होने पर चमड़े का रंग नहीं बदलता है। ×

---

* बिना विषैली औषधि के हो यह प्रयोग रस कपूर आदि के प्रयोगों से उत्तम लाभ कारक है। इन्द्री पर लगाने से लगता है पर लाभ भी जल्दी होता है। विरेचन में जव तक पारद दीखे घोटना चाहिये।

× फफोले से सावधानी से गरम सुई से छेद कर गीले कपड़ा से पानी पोंछ कर लगावें। उत्तम प्रयोग है।

—सम्पादक

वैद्यराज श्रीमान् रतन जी आर० रास्ते

ऐम० वी० वी०, एच० एल० एस० एस० भुजपुर (कच्छ)

—*—

आप द्राविड़ ब्राह्मण वैद्य रामकृष्ण जी रास्ते के सुपुत्र हैं आपका जन्म सं० १९४७ वि० में हुआ। आप वंश परम्परागत वैद्य हैं आपने संस्कृत और अंग्रेजी दोनों भाषा पढ़ी हैं आपने कच्छ के प्रसिद्ध वैद्य श्री त्रीकम जी भाई श्री राम रास्ते के पास चिकित्सा शास्त्र पढ़ा है। आपको उत्तम चिकित्सा के लिये अनेक स्वर्ण रौप्य पदक मिले हैं। आप विशूचिका ग्रहणी में सिद्ध हस्त चिकित्सक हैं। आपके अनुभूत प्रयोग निम्न हैं।

प्रयोग नं १ संग्रहणी पर

आमलासार शुद्ध गंधक	२॥ तोला	मोचरस	२॥ तोला
इलायची छोटी	२॥ तोला	शुद्ध अफीम	६ माशे
सकर खड़ी (मिश्री)			४ तोला

विधि—सब को खरल कर बारीक कपड़ा में छान लें। और एक एक माशे औषधि प्रातः सायं लाल चावल (साठी चावल) के पानी के साथ फकावें बालकों को २ रत्ती छोटे बालकों को १ रत्ती देना चाहिये।

गुण—संग्रहणी, रक्तातिसार, मरोड़ा (पेचिश) के लिये उत्तम है।

प्रयोग नं० २ विशूचिका पर

बन्दूक की बिलायती बारूद १० तो० पीली कौड़ी भस्म ५ तो०
नीबू का रस

विधि—बारूद और भस्म को खरल कर बारीक छान कर नीबू के रस की ३ भावना दे खुश्क कर शीशी में भर लें।

सेवन विधि—मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक।

अनुपान—ठन्डा जल।

गुण—कैसा ही भयंकर हैजा (कोलेरा) हो उल्टी हो रही हो दस्त होते हों १-२ मात्रा में ही बन्द हो जाते हैं। १२ वर्ष की उमर में आधी खुराक दें।

हकीम हाजिक श्री०पं० मूलराजजी शर्मा

रामपुर लिहोड़ा, तहसील ऊना (होशियार पुर)

—※—

आपकी आयु लगभग ३० वर्ष की है। आप श्रीमान् हकीम रामरखामल जी शर्मा के सुपुत्र हैं। आप खानदानी हकीम हैं आपने तिबिया कालेज पंजाब में शिक्षा पा सनद प्राप्त की है। आप अनुभवी हकीम हैं।

प्रयोग नं० १—देशी टिंचर आयोडीन

सत्व नीबू	१ तोला	कत्था सफेद	१ तोला
रसोत शु०	१ तोला	तेजाब गन्धक	१ तोला
शराब देशी			२० तोला

विधि—काले रङ्ग की एक बोतल जमीन में गाढ़ दे मुख ऊपर रहने दें फिर उसमे सत्व नीबू कत्था पीस कर डालदे और रसौत भी पीस कर या बहुत छोटे टुकड़े कर डाल दे उसके बाद तेजाब डाले और फिर धीरे (थोड़ी थोड़ी) शराब डाले इससे उसमें खूब जोश पैदा होगा १२ घण्टे बाद बोतल को निकाल ले बस दवा तैयार है।

गुण—चोट सूजन और घाव के लिये अकसीर। चाहे जैसा घाव हो फाये से चुपड़ दे, यदि हड्डी गल गई हो तब वह भी निकल जाती है। नासूर (नाड़ी) व्रण को भी लाभदायक है इसके साथ निम्न खाने की औषधि भी खाई जाय तो पुराने से पुराना नासूर जाता रहता है।

प्रयोग नं०२—नासूर नाशक गोलियां

रस कपूर	१ तोला	तबाखीर	१ तोला
सफेद मिर्च	१ तोला	केशर असली	१ तोला
शुद्ध रसौत			४ तोला

विधि—लिसौड़े के पेड़ के मुलायम २ पत्तों को कूट कर जरा सा पानी के छींटे देकर निचोड़ ले और १ पाव अर्क निकाल ले फिर एक खरल में रसौत डाल अर्क थोड़ा मिला घोटे फिर पहली चारों औषधियों को सुरमा की तरह बारीक पीस उसमें ही मिलादें और शेष बचा हुआ अर्क डाल घोटे जब गोली बनने योग्य हो जाय तब चार चार रत्ती की गोली बना सुखा रखलें। एक गोली सुबह एक गोली शाम को जल के साथ निगल जाय चबावे नहीं, तो कैसा ही नासूर हो अवश्य नष्ट होजायगा घाव में भी लाभदायक होगा।

पथ्य—मोंठ की दाल और गेहूँ के फुलका दें (घृत अधिक सेवन करावे) अर्श में भी लाभदायक है। उपदंश जन्य जोड़ों के दर्द को भी लाभप्रद है।

आयुर्वेदरत्न श्री० वैद्य मोहनलाल जी कामालिया

अध्यक्ष-श्री बालकृष्ण औषधालय

उन्हैल जिला उज्जैन

—o—

आपकी आयु २६ वर्ष के लगभग होगी। वैष्णव जांगड़ा पोरवाल वंश के श्रीमान् बा० बालचन्द्र जी कामालिया के पुत्र हैं। आपने वैद्य सम्मेलन की भिषक् और हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वैद्य विशारद एवं आयुर्वेद रत्न परीक्षा पास की है।

प्रयोग नं० १-खाज खुजली नाशक

आवा हल्दी १ तोला काली जीरी १ तोला

बावची के बीज १ तोला पोहकरमूल अ० (लक्कड़ चोप) १ तो०

आमलासार गन्धक १ तोला

विधि—पांचों औषधियां दरदरी कूट कर ३ खुराक बनावें और एक खुराक को शाम को मिट्टी के सकोरे में पानी डाल कर भिगोदें (गलादें) सुबह उसका पानी उतार कर रोगी को पिलादें ऊपर से एक दो छटांक भुने हुये चना खिलादें। इस तरह ३ दिन में ३ खुराक पिलादें। तैल, खटाई, लाल मिर्च ६ दिन तक नहीं खानी चाहिये।

लगाने को—औषधि का पानी नितार कर रोगी को पिलादे शेष जो कोछल (गाद छूंछा) बचा रहे उसको सिल पर पीसे। पीसते समय ३ माशे मंशिल भी पीस कर अच्छी तरह मिलादे और तिल्ली के तैल में मिला कर धूप में बैठ कर सारे शरीर से मालिश करे घन्टे भर बाद शीतल जल से स्नान करे। इस प्रकार ३ दिन लगावे। सिर्फ ३ दिन ही लगाने खाने से चाहे जैसी खाज हो अवश्य दूर हो जायगी।

प्रयोग नं० २—बालकों के डब्बा रोग पर

शुद्ध जयपाल (जमाल गोटा) रूमी हिंगुल पौहकर मूल

विधि—समान भाग लेकर नीबू के रस में २ दिन खरल कर १-१ रत्ती की गोली बनालें। १ या २ गोली गरम जल के साथ देने से दो तीन दस्त होकर बालक स्वस्थ हो जायगा।

वैद्यराज पं० महेन्द्रनाथ जी अग्निहोत्री

शिवशक्ति औषधालय ललुआमऊ,

पो० हरपालपुर जिला हरदोई

—*—
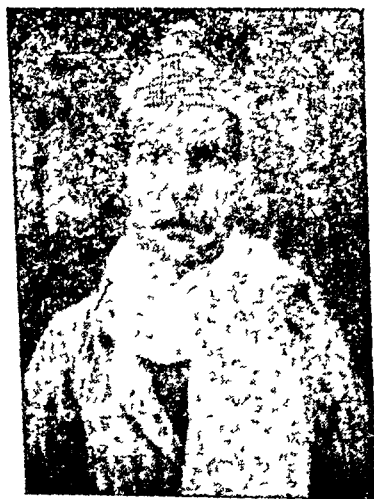
आपकी आयु ५० वर्ष के लगभग है आप ब्राह्मण कुल के श्रीमान् पं० गया-प्रसाद जी शर्मा के पुत्र है। आपने आयुर्वेद का पठन पाठन पुरानी रीति से किया परीक्षा नहीं दी। आपको वैद्यराज की उपाधि तथा अनेक प्रशंसापत्र मिले है आपका शुभ नाम मैकूलाल जी था उपरोक्त उपनाम है।

प्रयोग नं० १-आयुर्वेदिक कोनाईन

हुलहुल सत्व १ तोला — गिलोय का सत्व १ तोला

विधि—दोनों को खरल कर रखलें।

मात्रा—एक रत्ती से एक माशे तक।

अनुपान—मधु, शर्बत बनफ्शा या गौ दुग्ध।

—ज्वर चढ़ने से ३ घन्टा पूर्व से १-१ घन्टे के अन्तर से १-१ खुराक दें। ज्वर आने के पूर्व कुछ भी नहीं खाना चाहिये। अधिक भूक होने पर फल या दूध ले सकते हैं। मलेरिया ज्वर (ठण्ड लग कर आने वाला ज्वर) अवश्य दूर होजाता है औषधि सेवन से पूर्व २-३ दस्त रोगी को करा देना उचित हैं। +

प्रयोग नं० २-नेत्राभिष्यन्ध नाशक वटी

सफेदा जस्त का १ तोला — मिश्री ६ माशे

फिटकिरी ३ माशे — भुना तूतिया १ माशे

विधि—एक दिन अर्क गुलाब में घोट कर वटी बना सुखा रखले।

उपयोग—दुःखती आंखों में गुलाब जल या जल में घिस कर लगाने से सुर्खी ढलका किरकिराहट नष्ट हो नेत्र स्वच्छ हो जाते हैं!

+ हुलहुल का सत्व बनाने की विधि—हुलहुल जङ्गल से हरी मंगा कर और कूट कर कपड़ा में रख निचोड़ लें इस तरह निकाला हुआ स्वरस को १ घन्टे रख कर नितार ले जिससे मिट्टी और मोटे रवा (गाद) नीचे बैठ जाय उस नितारे हुये अर्क को कढ़ाई में पकावें जब पकते २ गाढ़ा लेही की भांति होजाय तब उतार कर और सुखा कर रखले। —सम्पादक

वैद्यवर श्रीमान् पं० महाचन्द्र जी शर्मा मिश्र

अजीतगढ़ अमरसर (जयपुर)
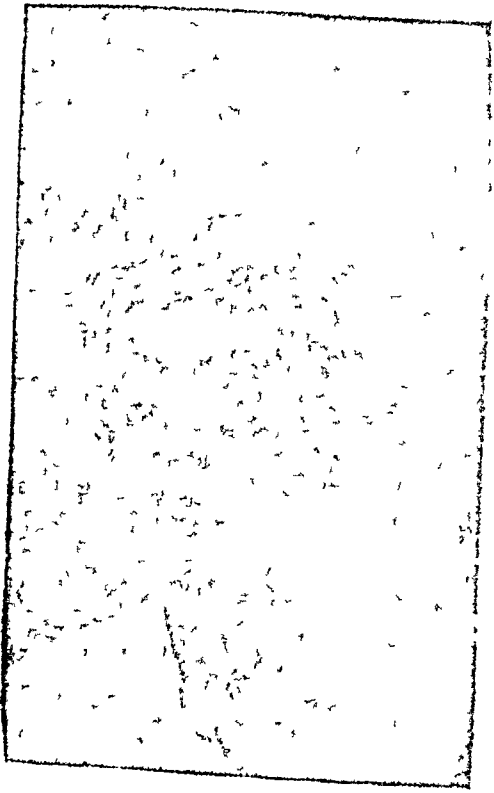
आपका जन्म सं० १९६९ को हुआ। आपने घर पर ही चिकित्सा कार्य की शिक्षा प्राप्त की परीक्षायें नहीं दी आपको चिकित्सा करते १८ वर्ष हो चुके हैं।

प्रयोग नं० १ उपदंश हर धूम्रपान—

अकरकरा
माजूफल
सुहागा
सिंगरफ (हिंगुल)

विधि—चारों औषधियां पांच पांच माशे ले कूट छान कर पानी के साथ ४ गोली बना कर सुखालें। उपदंश रोग को तमाखू की भांति हुक्के में रात्रि के समय एक एक पहर के अन्तर से एक एक गोली खिलावें। इससे रोगी को दस्त और वमन होंगे इससे घबराने की आवश्यकता नहीं। रोगी को सम्पूर्ण रात्रि सोने नहीं दिया जाय टहलाते फिराते रहना चाहिये बैठने भी न पाये अन्यथा गठिया वात होजायगी, परिचारक को चाहिये कि स्वयं जगते रहें और रोगी को सहारा दे टहलाते रहें। जब प्रातः कालहो जाय तब

रोगी को ठन्डे जल से स्नान करा कर गेंहू की रोटी मूंग की दाल धुली हुई खिलाकर सुलादें, मांस खाने बाले को मुर्गीके मांस का शोरवा गेंहूं की रोटी खिला कर सुलावे। बस एक रोज के प्रयोग से ही उपदंश रोग नष्ट हो जाता है दूसरे दिन से ही लाभ मालूम होने लगता है यदि लिंग पर सूजन हो तब ६ माशे त्रिफला पानी में उबाल कर उससे धो देना चाहिये।

प्रयोग नं० २ वीर्य विकार हर चूर्ण—

उड़द के कपड़ छन किये हुऐ चूर्ण को वबूल की पकी फली (जिन्हें विरछे या पातड़े कहते हैं) जिनमें चेपसा निकलना हो उस चेप से (रस) से भिगोवे और सुखाले इस प्रकार ७ बार भिगोवे और चूर्ण कर बराबर मिश्री मिला रखले

सेवन विधि—प्रातः और रात्रि को एक एक तोला गौ दुग्ध के साथ २१ दिन सेवन करें। पथ्य में गेंहूं की रोटी मूंग की दाल पुराने चावल फल आदि सेवन करावें स्त्री सहवास, उत्तेजक पदार्थ, तैल मिर्च, खटाई आदि सेवन न करे +

× यह प्रयोग कब्ज करता है। —सम्पादक

आयुर्वेद विशारद श्री० पं० भगवान सहाय जी शर्मा

परोपकारी औषधालय, नन्दभवन, दौसा जिला जयपुर

आपका जन्म सं १९७४ में श्रीमान पं० कन्हैयालाल जी वकील के यहां हुआ। आपने अंग्रेजी की मिडिल और आयुर्वेद की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

प्रयोग नं० १ नेत्र रोग पर—

अनारदाना	४ माशे	शु० अफीम	१ माशे
भुनी फिटकिरी	६ माशे	कपूर भीमसेनी	१ माशे
शुद्ध रसोत	६ माशे	मिश्री	३ माशे
लोधपठानी	६ माशे	छोटी इलायची के बीज	६ माशे

गुलाबजल २० तोले

उपयोग—सबको कूट गुलाबजल में मोटी शीशी भर कार्क लगाकर रखदे, प्रति दिन हिला दिया करे, चौथे दिन निथार कर और वस्त्र में छानकर रखलें। एक एक बूंद दिन-रात में २-३ बार दुःखती आंखों में डालदे; बहुत ही जल्दी दुःखती आंख अच्छी हो जाती है।

प्रयोग नं० २ रक्तातिसार—

कुटजत्वक (कुड़ा की छाल) ३ माशे रूमी मस्तंगी १ माशे

इनको कूट छान कर तीन खुराक बना सुबह, दोपहर, सायं तक्र (छाछ) से जो गौ के दूध की हो, उसमें जीरा भुना सेंधा निमक डाल उसके साथ फांके। छाछ जितनी चाहे पी सकते हैं। तैल, गुड़, खटाई, घी, मीठा नहीं खाना चाहिये। इससे रक्तातिसार रक्तजगृहणी नष्ट हो जाती है +

+ इस प्रयोग के साथ ही साथ "जातीफल रस" जिसका प्रयोग रसराज सुन्दर में है, उसे भी बनाकर रखले और दो समय कुड़ा की छाल को पानी में पीस छान उसके साथ दे, तो रक्तातिसार और रक्तज गृहणी अवश्य नष्ट होजाती है। हमारे अनेक बार का अनुभव है। साधारणावस्था में यह प्रयोग ही फकाने से काम चल जाता है, पर अधिक दिन का रोग हो या रोग की अवस्था बढ़ी हुई हो, तब तो जातीफल रस अवश्य सेवन कराना चाहिये। —सम्पादक

वैद्यभूषण श्री० कविराज ब्रह्मानन्द जी चन्द्रवंशी

जमीदार बरोदा, पो० पनागर, जि० जब्बलपुर (सी० पी०)

—+—

आपका जन्म स० १९५५ वि० को चन्द्रवंशी कौर्मि क्षत्रिय श्रीमान् बा० इच्छाराम जी जमीदार के यहां हुआ। आपने शिक्षा अपने ज्येष्ठ भ्राता जी से ही प्राप्त की। तथा वैद्य मार्त्तण्ड, वैद्य भूषण परीक्षा भी पास की, आप अच्छे लेखक और कवि हैं। आपने पुस्तकें और लेखों द्वारा पदक, प्रशंसा पत्र भी प्राप्त किये हैं।

प्रयोग नं० १ नेत्र पोटली-

दारु-हरिद्रा, सोनागेरु, शिवा, सिता, कर्पूर
शुद्ध फिटकिरी तथा रसाञ्जन, त्रय त्रय माशा पूर ॥
माशा अध अफीम मिलाकर, बांध वस्त्र में लेउ ॥
कांच पात्र में दुग्ध राखिके, भिगो पोटली देउ ॥
नयनों ऊपर ताकहि फेरो, भीतर भी रस जाय ॥
दाह, ललामी, पीड़ा नाशै, सेवत सुख अधिकाय ॥
अभिष्यन्द का दुक्ख दुरावै, कंकर यदि घुसि जाय ॥
विष उपविष जो लगै नेत्र में, उनका दर्द नसाय ॥

प्रयोग नं० २ वात-दर्द नाशक तैल—

एक छटांक बंगलिया तमाखू को आध सेर जल में १२ घंटे भिगो कर हाथों से मलकर पानी छानले तथा धतूरे के पत्तों का रस ऽ। लहसुन ऽ— छिलका निकला हुआ पीसलें सेंधा नमक १ तोला- इनको ऽ। तिल तैल, ऽ। अलसी का तल, ऽ। एरंड तेल में मिला कर कड़ाही में डाल अग्नि पर पकाकर तैल विधि से तैयार करले। इससे वात दर्द, पार्श्व शूल, पृष्ठशूल मालिश करने से आराम होते है, तत्काल लाभ पहुँचता है।

श्रीमान् पं० विश्वनाथप्रसाद जी शुक्ल वैद्य

मकबूलगंज (लखनऊ)

—*—
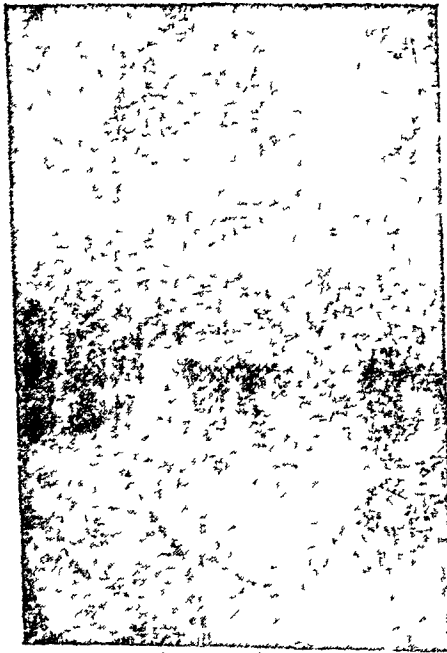
आपकी आयु ४० वर्ष के लगभग है। आप श्रीमान् पंडित रामचरण जी शर्मा शुक्ल वैद्य के सुपुत्र हैं। आपके यहां परम्परागत चिकित्सा कार्य होता आया है। आप लखनऊ बनारस कलकत्ता- आदि स्थानों मे पढ़े पर परीक्षा कोई नहीं दी। आपको अनेक प्रशंसा पत्र मिले हैं।

प्रयोग नं० १ निमोनियां नाशक रस.

शु० मीठा तेलिया	१ तोला	शु० आमलासारगंधक	२ तोला
संखिया भस्म	६ माशे	ताम्र भस्म	६ माशे
शु० कुचिला	३ माशे	अभ्रक भस्म	६ माशे

अकरकरा असली	१ तोला	जावित्री	१ तोला
जायफल	१ तोला	लोंग	१ तोला
मकरध्वज	६ माशे	पीपल छोटी	३ तोला

विधि—भस्मों को शेष औषधियां कूट कपड़ छन करलें। और खरल में भस्मों को तथा कूटे हुये चूर्ण को डाल पान के स्वरस की ७ भावना देकर एक एक रत्ती की गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—अद्रक मधु, या पान के स्वरस के साथ एक एक गोली दिन भर में ३-४ बार दे। इससे निमोनियां रोग नष्ट हो जाता प्रसूत, अर्द्धाङ्ग, नामर्दी में भी लाभदायक है। *

प्रयोग नं० २ बिशूचिका नाशक वटी—

असली जहर मोहरा खताई	पपीता	दरियाई नारियल
पोदीना सूखा	छोटी इलायची के दाने	पीपल छोटी
लवंग फूलदार	बहेड़ा छाल	चित्रक छाल
शु० पारद	केशर असली	शु० अहिफेन
जंदवार खताई	पियावांसा	वंसलोचन असली
जायफल	हरड़ छोटी	आमला
शु० नवसादर	शु० गंधक	शु० कपूर

प्रत्येक वस्तु १-१ तोला

असली कस्तूरी	३ माशे	चन्द्रोदय	१। तोला
कुचला	५ तोला	अर्क मूल छाल	५ तोला

विधि—पारद गंधक की कज्जली कर चन्द्रोदय मिला खूब खरल करें वाद में केशर, कस्तूरी अहफेनादि मिलावें और काष्टौपधियों को कूट कपड़ छन कर मिला दें। नीबू के रस में और अदरख के रस में घोट कर चना बराबर गोली बना सुखालें।

सेवन विधि—एक या दो गोली अदरख या प्याज़ के रस में २-२ घन्टे बाद दें। विशूचिका उपद्रव सहित नष्ट हो जाती है।

---

* रोगी को कफ न निकलता हो तब हानिप्रद रहती है कारण कफ और भी रुक जाता है, खुश्की करती है। कफाधिक्य में लाभकारी रहती है। —सम्पादक

श्री० पं० विनायक जी शर्मा द्विवेदी

गणेश चिकित्सालय—गणेश मन्दिर
सुजालपुर सिटी (ग्वालियर स्टेट)

—*—
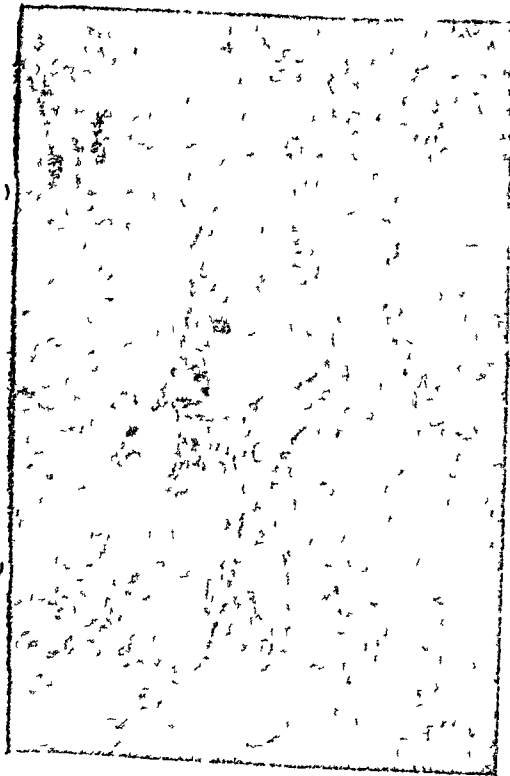
आपकी आयु ६० वर्ष के अनुमान है। आप श्रीमान पं० गणेशदत्त जी शर्मा द्विवेदी वैद्य के पुत्र हैं। आपके यहां पर वंशपरंपरागत चिकित्सा कार्य चला आ रहा है। आयुर्वेद भिषक् मथुरा से, वैद्य विशारद अलीगढ़ से वैद्यराज कानपुर से कलकत्ता म्यूनिसिपल बोर्ड से आयुर्वेदाचार्य उपाधि प्राप्त हुई है।

प्रयोग नं० १ उपदंशारि वटी—

शु० पारा	शु० भिलावा	सफेद मूसली
अजमायन	शुद्ध गंधक	काली मूसली
अजमोद		खुरासानी अजमायन

प्रत्येक वस्तु १-१ तोला
तीन वर्षीय पुराना गुड़ ४ तोला

विधि—पारा गंधक की कज्जली करे शेष सब औषधियां कूट कपड़ छन कर मिला दें और घोटले फिर गुड़ मिला घोट कर एक लोहे के इमाम दस्ता मे डाल लोहे की मूसली से कूटे और २०० चोट उस मूसले की लगने पर दो दो रत्ती की गोली बना रखलें।

सेवन विधि— एक गोली से चार गोली तक सुबह शाम आम के अचार के भीतर रख निगल जावे। आचार आम का तैल से बना हुआ हो। इसके सेवन से उपदंश फिरंग ७ दिन या १४ दिन में अवश्य उपद्रवों सहित नष्ट हो जाता है।

प्रयोग नं० २ प्रदर नाशक रस—

माजूफल	१० तोले	बबूल की पत्ती	४ तोला
बंग भस्म	१ तोला	मोती भस्म	३ माशे

स्वर्णमाक्षिक भस्म ६ माशे

उपयोग विधि—प्रथम माजूफल बबूल की पत्ती कूट कपड़ा में छान भस्म मिला अच्छी प्रकार मर्दन कर रखलें। प्रातः सायं तीन २ माशे मक्खन मिश्री के साथ अथवा शहद के साथ चटाने से श्वेत और रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

कविराज श्री० पं० विष्णुदत्त जी शर्मा आयु०

हरसौली (मुजफ्फर नगर)

—*—

आपका जन्म ब्राह्मण कुलभूषण श्री० पं० द्वारिकाप्रसाद जी शर्मा के यहां हुआ। आपकी आयु ३१ वर्ष के लगभग होगी। आपने वैद्य कविराज आयुर्वेदाचार्य परीक्षाएं श्री० सनातन धर्म आयुर्वेदिक कौलेज लाहौर से पास की हैं।

उनहासो

प्रयोग नं० १ दोषी ज्वर-

प्रवाल भस्म | सिद्ध मकरध्वज | मुक्ताशुक्ति भस्म
मृगश्रृंग भस्म | मुलेहठी का सत्व असली

प्रत्येक वस्तु १-१ तोला

काली मिर्च ३ तोला | अभ्रक भस्म सहस्र पुटी ३ माशे

सुहागा भुना २ तोला

विधि—काष्टौषधि कूट कपड़ छन कर रखले और खरल में प्रथम सिद्ध मकरध्वज डालें और वांसे (अडूसे) का रस डाल मर्दन करे जब रवा न रहे खूब बारीक हो जाय तब शेष भस्म तथा काष्टौषधि चूर्ण डाल मर्दन कर खुश्क करलें।

सेवन विधि— एक एक रत्ती प्रातः सायं शहद अद्रक का स्वरस वांसे का स्वरस समान-भाग मिला कर १ तोला ले उसमें मिला चटावे। इसमे कफ निकलता रहेगा ज्वर पच जायगा साथ ही सब दोष शान्ति हो जांयगे। *

प्रयोग नं० २ पार्श्व शूल हर तैल-

रोगन बादाम, | जैतून का तैल, | रोगन अलसी
तिल का तैल | तारपीन का तैल

यह प्रत्येक एक-एक माशे

स्प्रिट १ तोला में मिला कर शीशी भर ले।

विधि—पार्श्व शूल में पार्श्व पर धीरे २ पन्द्रह बीस मिनट मालिश कर ऊपर से पान को इसी तैल से चुपड़ गरम कर दर्द स्थान पर रख ऊपर से रुई बांध दें। इससे पार्श्व शूल नष्ट हो जाता है।

---

* कफ ज्वर, निमोनिया में अधिक लाभ दायक है।

—सम्पादक

विशारद श्री० पं० वंशीधर जी वैद्य

मारवाड़ी सेवा संघ औषधालय नागपुर सी० पी०

—*—
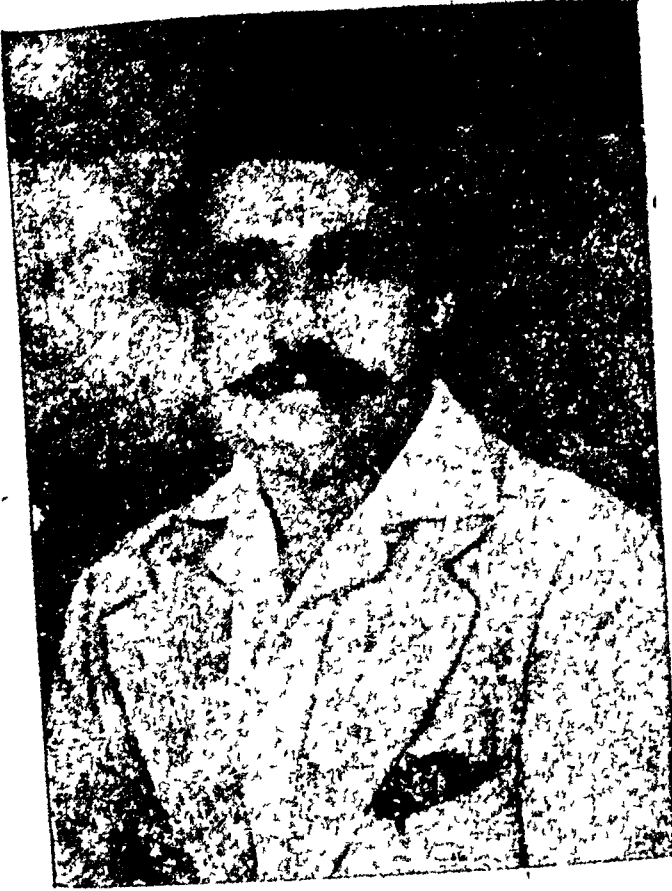
आपका जन्म सन् १६१३ में डीडवाना जोधपुर निवासी श्रीमान् पं० मुन्नालाल जी ज्योतिषी के यहां हुआ। आपने प्रथम काव्यतीर्थ की परीक्षा दी वाद में श्री धन्वन्तरि विद्यालय नागपुर से वैद्य भूषण वैद्य सम्मेलन से आयुर्वेद विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की अर्श के विशेषज्ञ हैं।

प्रयोग नं० अर्श हर मरहम—

मुरदासन　　यसद भस्म　　काला सुरमा

जीरा

पपरिया कत्था

प्रत्येक वस्तु १-१ तोला

कपूर २ तोला　　शु० गौघृत २८ तोला

विधि—घृत छोड़ अन्य औषधियों को कूट कपड़ छन कर रखले और कांस्यपात्र में घृत को डाल पीनी से धोवे इसी तरह घृत सौ वखत (१०० बार) धोवे फिर सब औषधियों का चूर्ण मिला मर्दन कर मरहम बना रखलें।

दृस्यासी

वैद्यवर श्री० कुं० पृथ्वीरसिंह जी वर्मा

पृथ्वीरसिंह एन्ड कम्पनी छतरसा (कानपुर)

—*—
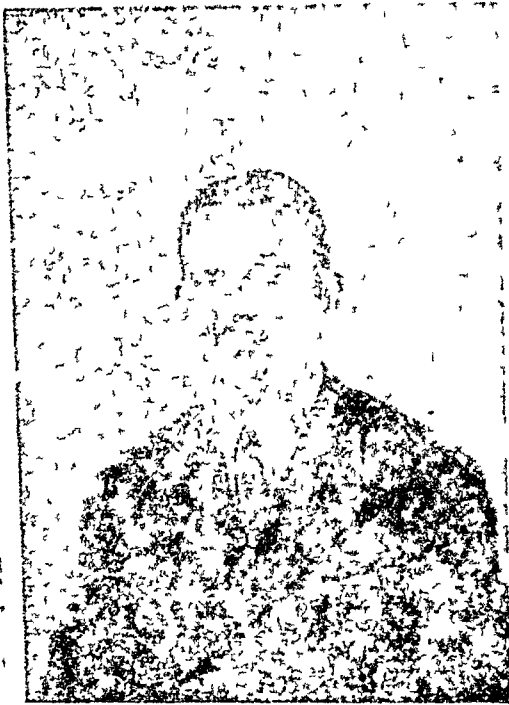
आपकी आयु ४४ वर्ष के करीब है। आप क्षत्रिय वंश भूषण श्रीमान ठा० मुकटसिंह जी जमींदार के सुपुत्र हैं। आप ने आयुर्वेद घर पर ही पढ़ा है परीक्षा नहीं दी है। सूखा सहार औषधि के आविष्कारक है स्वर्ण पत्र और प्रशंसापत्र भी प्राप्त किये हैं।

प्रयोग नं० १ अर्श नाशक वटी—

त्रिफला	३ तोला	एलुआ	३ तोला
चाक्षुबीज	३ तोला	निबोड़ी	३ तोला
बकायन का बीज	३ तोला	शुद्ध रसौत	३ तोला

मुनक्का १ तोला काला सुरमा १ तोला पोदीना १ तो०

विधि—शुद्ध रसौत मुनक्का आदि छोड़ शेष खुश्क औषधियों को कूट कपड़ छन कर फिर शेष औषधि मिला पत्थर पर बारीक पीस और कुकरौंधे का स्वरस डाल मर्दन कर गोली चना बराबर बना सुखा रखले।

उपयोग—एक दो गोली प्रातः और सायं ताजे जल के साथ सेवन कराने से खून बन्द हो जाता है मस्सों का दर्द बन्द हो मस्से बैठ जाते हैं दस्त साफ होता है।

आयुर्वेदाचार्य पं० दयानिधि जी शर्मा
गुनाना गेट सेन्ट

प्रयोग नं० २ सर्प दंश पर—

१ तोला कान्हाटेरी   काली मिर्च नग ७

विधि—बारीक पीस एक छटांक असली घी में मिला किंचित ऊष्णकर पिलादें इस प्रकार आध आध घन्टे बाद कई बार देने से चाहे वह किंगकोबरा सर्प का ही विष क्यों न हो अवश्य नष्ट हो जायगा। दांत बन्द हों तब किसी उपाय से खोल कर दवा मुख में डालदें।

पशुओं को चौगुनी मात्रा दें। +

+ कान्हाटेरी (कनकौवा) जिसका फूल नीले रंग का होता है। जल के स्थानों पर यह लुआब दार बूटी मिलती है। चैत से पूस तक मिलती है सरदी के कारण जाड़ों में नष्ट हो जाती है। किम्वदन्ती है कि कालिया मर्दन के समय भगवान कृष्ण ने इसे पुकारा था इस से ही कान्हाटेरी नाम पड़ गया है।   —लेखक

आयुर्वेद शास्त्री श्री० डा० पी० एस० द्विवेदी

द्विवेदी मैडीकल हाल, सम्भल जिला मुरादाबाद

-*×—×*-

आपकी आयु ३२ वर्ष के अनुमान है। आप ब्राह्मण कुल के श्री० पं० रूपीराम जी द्विवेदी ज्योतिषी के सुपुत्र हैं। आपने आयुर्वेद-शास्त्री परीक्षा पास की है। अंग्रेजी भी जानते हैं।

प्रयोग नं० १ रक्त शोधक विरेचन—

हरड़ पीली का वक्कल २ तोला, सनाय १॥ तोला
अजवायन १ तोला

विधि— सबको जौकुट कर १० तोले पानी में रात्रि को भिगोदें प्रातः-काल मल छान कर २ तोला शहद मिला कर ठन्डाई पीवे। इसके पश्चात २ दिन-सोंफ ४ माशे गुलकन्द २ तोला बड़ी इलायची ६ नग को २० तोले पानी में पीस छान कर पीवे चौथे दिन फिर पहले वाला क्वाथ पीवें। उससे दस्त हो पेट साफ हो जाता है खुश्की दूर होती है।

प्रयोग नं० २ रक्त शोधक शर्बत—

उन्नाव ३ तोला, हरड छोटी १ तोला चिरायता १ तोला,
त्रिफला ३ तोला शाहतरा ६ माशे मुंडी ६ माशे

सरफोंका	६ माशे	फूल गुलाब	१ तोला
चोवचीनी	६ माशे	+ बिसफारज	६ माशे
उशवा	६ माशे	चन्दन सफेद	६ माशे
चन्दन लाल	६ माशे	* बिल्ली लोटन	६ माशे
सोंफ	१ तोला	गांजवा	६ माशे
गुलबनफसा	६ माशे	कन्द (मिश्री)	६० तोला

विधि—मिश्री को छोड़ शेष सब वस्तुओं को जौकुट कर ८ सेर पानी में रात्रि को भिगोदें सुबह उसी पानी में पकावें जब १ सेर रहे तब छान लो और मिश्री कन्द मिला कर पकाओ जब तक शर्बत न हो जाय

गुण—इसके सेवन से रक्त विकार, रक्त की गरमी शान्ति होती है।

+ यूनानी औषधि है इस नाम से अत्तारों के यहां मिल जाती है।
* बिल्ली लोटन को बालछड़ कहते हैं।
पित्त प्रकृति और गरमी के मौसम में नाजुक मिजाज स्त्री पुरुषों के रक्त विकार में उत्तम।

—सम्पादक

वैद्यरत्न श्री वैद्य नवमीलाल जी देव

देव औषधालय डालटनगञ्ज (पलामू)

—*—
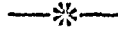
आपका जन्म पटना जिले के नन्दपुरा ग्राम में सम्वत् १६३४ में हुआ। आप वैश्य कुल भूषण हैं। आपने विधिवत आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की है आप अनेक वैद्यक सभाओं के पदाधिकारी एवं सभ्य हैं। आपने ही प्रथम विहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन का आयोजन किया था।

प्रयोग नं० १—औपसर्गिक मेह पर

शीतलचीनी	१ तोला	छोटी इलायची	१ तोला
विरोजा का सत्व	१ तोला	हजरत जहूर	१ तोला
फिटकिरी लावा	१ तोला	कलमी शोरा	१ तोला
चन्दन	१ तोला	रेवन्द चीनी	१ तोला
खीरा के बीज	१ तोला	सोना गेरू	१ तोला

मिश्री १० तोला

व्यवहार विधि—सबका चूर्ण बना मिश्री मिला तीन तीन माशे दिन में ३ बार दूध की लस्सी या चावल के मांड़ में शहद मिला करदें यह सुजाक की सभी अवस्थाओं में लाभ दायक है।

प्रयोग नं०२–शीघ्र पतन नाशक–

गुडूची सत्व १ भाग, दिल्ली की सफेद मूसली २ भाग
ताल मखाना ३ भाग मखाने की ठुर्री ४ भाग
मिश्री ५ भाग

व्यवहार विधि—सबको कपड़छन कर १ माशे से ३ माशे तक दूध के साथ फकाने से शीघ्र पतन और औपसर्गिक मेह वाली औषधि से आराम होने पर सेवन करने से पुनः सुजाक नहीं होता है।

वैद्यराज श्री०पं०दयानिधि जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य

भव्यौषधालय, लाल कोठी, बुढ़ाना गेट, मेरठ

—

आपकी आयु लगभग ३६ वर्ष है। आपका जन्म श्रीमान् पं० प्रेमनिधि जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य के यहां हुआ। आप बुलन्दशहर के सुप्रसिद्ध पं० होमिनिधि जी शर्मा वैद्यराज के पौत्र हैं और श्रीमती सरोजनी देवी वैद्य विशारदा के पति हैं। आपने हिन्दू यूनिवर्सिटी काशी से आयुर्वेदाचार्य (ए० एम० एस) की परीक्षा पास की है आप भी मेरठ के प्रसिद्ध वैद्य और सार्वजनिक कार्य कर्त्ता हैं। तथा यू० पी० वैद्य सम्मेलन के प्रधान मन्त्री हैं।

प्रयोग नं० १ रक्त शोधक–

उशवा ५ तोला चिरायता ५ तोला
मुंडी ५ तोला स्याहतरा ५ तोला
अनन्तमूल ५ तोला

विधि—इन सब को कलई के बरतन में १० बोतल जल डाल कर पकाओ जब ५ बोतल शेष रहे तब छानलो और मेगनिशियम सल्फ नामक क्षार ३० तोला मिला बोतलों में भरलें। रोगी को बलानुसार १ तोले से ५ तोले तक रात्रि को पिलाओ इससे रक्त शीघ्र ही शुद्ध हो जाता है।

प्रयोग नं० २ शूल रोग पर—

शुद्ध पारद	१ तोला,	शुद्ध गंधक	१ तोला
लोह भस्म	१ तोला	अभ्रक भस्म	१ तोला
कपूर	१ तोला	जावित्री	१ तोला
लोंग	१ तोला	जायफल	१ तोला
इलायची के बीज	१ तोला	रस सिंदूर	१ तोला

अफीम ६ माशे

विधि—सब को खरल में डाले काष्टौषधि कूट कपड़ छन करले पारद गंधक की कज्जली करलें और भस्म मिलालें तथा अफीम डालें। ७ भावना धतूरे के पत्तों के स्वरस की दे मूंग बराबर गोली बनाले। यह सब प्रकार के शूल (दर्द) में अदरख के स्वरस के साथ देने से मारफिया इंजेक्शन की भांति काम करता है। दस्त भी रोकने वाला है। ×

+ २-३ खुराक से ही रोगी अफीम के नशा में अचेत सा हो जाता है। —सम्पादक

आयुर्वेद विशारद श्रीमती सौ० द्वारकाबाई जी वैद्या

श्रीशंकर आयुर्वेद सेवाश्रम, भुसावल—पूर्व खानदेश

—※×※—

आपकी आयु २० वर्ष की है आप लेवा जाति भूषण श्रीमान् वैद्य हरिराम जी की पुत्री है। आपने इन्दौर के वैद्य ख्यालीराम जी शास्त्री के पास वैद्यक पढ़ा और आयुर्वेद भिषक्, आयुर्वेद विशारद परीक्षा पास की है आपने एक वैद्यक पुस्तक भी लिखी है जो अभी छपी नहीं है।

प्रयोग नं० १ मलेरिया के लिये—

कटु निम्ब के पत्ता	६ माशे,	नाय	६ माशे
तुलसी पत्र	६ माशे	करंज बीज का चूर्ण	६ माशे
काली मिर्च	४॥ माशे		

विधि—सब को बारीक पीस अदरख के रस में दो दो रत्ती की गोली बना सुखा रखलें। एक एक गोली सुबह दोपहर और शाम को गरम जल के साथ देने से विषम ज्वर नष्ट हो जाता है

प्रयोग नं० २ गर्भ धारण कराने वाली वटी—

शिव लिङ्गी	२० तोले	पूर्ण चन्द्रोदय	२ तोले
स्वर्ण भस्म	१ तोला	रौप्य भस्म	१ तोला
चन्द्रपुटी प्रवाल	१ तोला	मुक्ता पिष्टी	१ तोला
स्फटिक पिष्टी	१ तोला	लोहभस्म	१ तोला
बंग भस्म	१ तोला	त्रिवंग भस्म	१ तोला
सरफोंका मूल	१ तोला	जेष्ठमध	१ तोला
चन्दन	१ तोला	असगंध	१॥ तोला
सितावर	१॥ तोला	विदारीकंद	१॥ तोला
नागकेशर	१॥ तोला	कुष्ठ	१॥ तोला
ब्राह्मी	१॥ तोला	तिल फूल	१॥ तोला
बांसाफूल	१॥ तोला	श्वेत कंटकारी	१॥ तोला
विष्णुकान्ता	१॥ तो०	बरगद की कोमल जटा	१॥ तो०
कस्तूरी	६ माशे	केशर	६ माशे

विधि—सब को कूट पीस भस्मादि मिला विदारी कंद के रस की १ भावना और शतावरी के रस की १ भावना दे दो-दो रत्ती की गोली बना रक्खें। दूध के साथ एक एक गोली सुबह शाम सेवन कराने से गर्भाशय शुद्ध हो सन्तान होती है।

आयुर्वेदाचार्य स्व० डा० देवेन्द्रकुमार जी ए० एम० एस०

डालनगञ्ज (पलामू)

—*—

आपका जन्म पटना जिलान्तरगत नन्दपुरा निवासी वैद्यरत्न श्री० वैद्य नवमीलाल जी देव के यहां संम्वत् १९७१ वि० में हुआ था। आपने अंग्रेजी की मैट्रिक परीक्षा पास कर काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में पढ़ कर आयुर्वेदाचार्य ए० एम० एस० परीक्षा पास की। बम्बई में स्त्री रोग और नेत्र रोग का विशेष ज्ञान प्राप्त किया। आप एक होनहार युवक थे।

प्रयोग नं० १—मलेरिया (विषम ज्वर) पर

—सुदर्शन चूर्ण की सब औषधियां १-१ तोला लें और फूलदार चिरायता सब औषधियों से आधा लें और सब को यवकुट कर दो भाग करलें। एक भाग को ४ सेर पानी में एक दिन भिगोदे दूसरे दिन अग्नि पर चढ़ा अष्ठावशेष क्वाथ करलें अर्थात् आध सेर रहे तब उतार कर मल कर कपड़ा में छान लें।

—आधा भाग जो बचा था वह कूट कर कपड़ छन कर लें और उस कपड़ छन चूर्ण में ऊपर के क्वाथ की ३ भावना दें फिर गोदन्ती हरताल की भस्म २॥ तोला मिला कर और क्वाथ को डाल खरल करे सब क्वाथ समाप्त होने और गोली बनाने योग्य होजाय तब १-१ माशे की गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—ज्वर के वेग के ४ घन्टे पहले १ गोली और २ घन्टे पहले १ गोली और १ घन्टे पहले १ गोली इस तरह ३ गोली

जल के साथ देने से ज्वर का वेग एक दो दिन में ही रुक जाता है। ज्वर का वेग रुकने के बाद प्रातः सायं एक २ गोली जल के साथ देते रहने से फिर मलेरिया (विषम ज्वर) नही आता। *

---

* इसको जल के स्थान पर सुदर्शन अर्क में मधु मिला कर उसके साथ देने से विशेष लाभ मालूम हुआ। —सम्पादक

वैद्य भू० वैद्य तेजीलाल जी नेमा आयुर्वेद रत्न

चिकित्सक—श्री नेमा आयुर्वेद भवन

भाटापारा जिला रायपुर सी० पी०

—*—
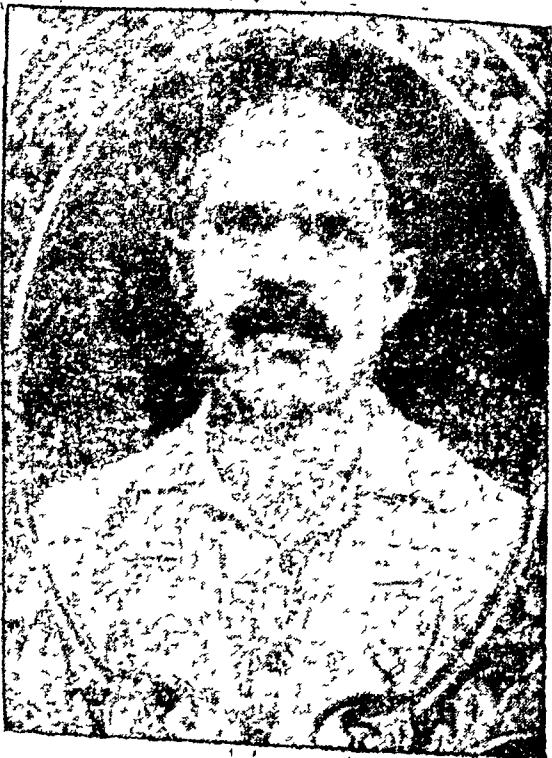
आपका जन्म १९६४ वि. में हरई (छिन्दवाड़ा) निवासी नेमा वैश्य कुल के श्रीमान् वैद्य काशीराम जी के यहां हुआ था। आपने पिता, पितामह से तथा अन्य वैद्यों से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की है। आगरा से वैद्य-शास्त्री परीक्षा पास की है। वै० सम्मेलन से आयुर्वेद-रत्न की उपाधि सं० १९८५ में और धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ से वैद्य-भूषण उपाधि प्राप्त की है अनेक प्रशंसापत्र पदक भी प्राप्त किये है।

प्रयोग नं० १-हृदय की निर्बलता पर

शृङ्ग भस्म	६ माशे	अकीक भस्म	३ माशे
अर्जुन सत्व	१ तोला	अभ्रक शतपुटी	३ माशे
मौक्तिक भस्म	३ माशे	केशर	६ माशे
कस्तूरी			१॥ माशे
मकरध्वज (षट गुण बलिजारित स्वर्ण मिश्रित)			३ माशे

विधि—प्रथम केशर को गुलाब जल ५ तोले में डाल भिगोदे और एक खरल में सब औषधियां डाल केशर सहित गुलाव जल को डाल घोटते रहें जब गोली बनाने योग्य होजाय तब १ रत्ती की गोली बनाले या खुश्क कर चूर्ण वत रक्खे और एक रत्ती की मात्रा से मृत संजीवनी सुरा के साथ दें।

गुण—हार्टफेल की बीमारी, दिल की धड़कन, दिल की कमजोरी, नाड़ी की शिथिलता, शीताङ्ग सन्निपात, मंथर ज्वर, आदि पर बड़ा उपयोगी है।

प्रयोग नं० २-बाल उदर शूल पर

सोया का अर्क	२० तोला	सोंफ का अर्क	१० तोला
चूना (कलई) का जल	१० तोला	मिश्री बारीक पिसी	५ तोला
संजीवनी सुरा	५ तोला	सत्त पिपरमेंट	१॥ माशे
कपूर	१॥ माशे	दालचीनी	४ माशे

विधि—सबको एक कांच की बोतल में डाल कड़ी डाट लगादो और सूर्य की किरणों में ३ दिन रक्खे पश्चात् छान कर फिर शीशी में भर कर रखदें।

सेवन विधि—नये जन्म पाये बालकों को ५ से १० बूंद और ६ मास के बच्चे को एक चम्मच एक वर्ष से ऊपर दो चम्मच पिलावें।

—पेट का दर्द, अजीर्ण, उल्टी को लाभदायक। जो बालक रोता हो रोग समझ में न आने उसको देने से बालक रोग मुक्त हो

जाता है पीड़ा शान्त होजाती है। बाल उदर रोग पर एक ही औपधि है।

प्रयोग नं० ३—प्लेग निरोधक

शु० हरताल १ तोला	अशुद्ध संखिया १ तोला
देशी शु० कपूर १ तोला	हिंगुल शु० १ तोला
निर्विषी	१ तोला

विधि—प्रथम निर्विषी को कूट कपड़ छन कर खरल में डाल शेष सब औषधि भी खरल में डाल गुलाब जल से १२ घण्टे घोट कर सरसों बराबर गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—एक गोली प्रातः निराहार खाकर ऊपर से ɔ।। दूध पी जावें इस प्रकार ४ दिन सेवन करने से प्लेग नहीं होता। मैंने करीब पांच सौ स्त्री पुरुषों को दिया किसी को भी प्लेग नहीं हुई। मैंने देखा कि २ बार टीका लगाने वालों को हुई, पर मेरे एक भी आदमी को नहीं हुई। *

× प्लेग को रोकने के लिये ऐलोपेथी डाक्टर टीका देते है। और उसके द्वारा प्लेग से मनुष्य की रक्षा करते हैं पर देखा गया है कि टीका लगने पर भी कोई २ मनुष्य प्लेग का शिकार हो ही जाता है। इस प्रयोग के लेखक ने तो दावा किया है कि इसके सेवन कर लेने पर प्लेग नहीं होता। इस तरफ प्लेग नहीं हुआ और न होने की आशा ही है इसलिये हम इस प्रयोग की परीक्षा कर नहीं सके हमारे वैद्य बन्धु इसकी परीक्षा कर हमें सूचना दें तो उनकी बड़ी कृपा होगी और आगामी संस्करण मे हम उन की सूचना का उल्लेख भी कर देंगे।

—सम्पादक

कविराज श्री० वै० ठाकुरदास जी वर्मा

नूरशाह जिला मिंट गुमरी (पंजाब)

—*—

आपकी आयु ३७ वर्ष की होगी। आप हिन्दू जाति के श्रीमान् लाला विशम्भरदास जी के पुत्र हैं। आपने तलुम्बा में शिक्षा प्राप्त की है।

प्रयोग नं० १ पक्षाघात नाशक रस

शुद्ध पारा	शुद्ध गंधक	शु० पीला संखिया
शु० हिंगुल	शु० तूतिया	शु० मन्शिल
शु० खर्पर		गोदन्ती भस्म

विधि—प्रत्येक औषधि दो दो तोले लें। प्रथम पारद गंधक की कज्जली करे और प्रत्येक द्रव्य पृथक् २ बारीक पीस कर कज्जली में मिलाले ३ दिन करेले के रस में घोट टिकिया बना सुखा सराव सम्पुट में रख ६० कपरोटी सन्धि की मुलतानी मट्टी से कर सुखा ले पश्चात बालुका यन्त्र में रख ४ पहर की अग्नि दें आग शीतल होने पर रस निकाल कर खरल में डाले और रस के बराबर ही षटगुण बलिजारित सिद्ध मकरध्वज डाले और

इतना ही शुद्ध विष मुष्टिका का बारीक कपड़ छन चूर्ण डाल १ दिन मर्दन कर रखलें।

सेवन विधि—एक रत्ती यह रस और ४ रत्ती तलादि चूर्ण और ४ रत्ती पान की जड़ का चूर्ण काली मिर्च २१ नग इनको घोट कर १ तोला मधु मिला चांटले ऊपर से एक पाव गरम किया हुआ दूध मे १॥ तोला बादाम रोगन तथा चीनी मिला कर पिलावें। यह प्रातः और सायं काल सेवन करें। भोजनोपरान्त दशमूलारिष्ट एक औंस सौंफ का अर्क १ औंस मिलाकर पिलावें रात्रि को महायोगराज गूगल १ माशे दशमूल क्वाथ के साथ दें तथा निम्न तैल की मालिश करावें। ध्यान रहे कि चिकित्सारम्भ से ६-७ दिन तक रोगी को लंघन करावें सिर्फ मधुमिश्रित जल ही पीने को दें।

मधुमिश्रित जल की विधि— मधु १० तोला सोंठ पिसी हुई ६ माशे जल दो सेर को गरम करें जब १ सेर रहे तब छान कर रखलें इसमें से ही थोड़ा पिलाते रहे। समाप्त होने पर और बनालें मधु मिश्रित जल के अतिरिक्त कोई भी औषधि नहीं दें।

तलादि चूर्ण विधि—शु० वर्की हरिताल १ तोला खरल में डाल ४ तोला कालीमिर्च उसमें एक एक मिर्च करके डालें। १ मिर्च डाल घोटें जब वह खूब मिल जाय तब दूसरी डाले इस तरह सब मिर्च डाले जब सब मिर्च पड़ जाय तब १४ दिन पान के रस में खरल करें खुश्क होने पर रखलें।

प्रयोग नं० २ पक्षाघात हर तैल—

विषमुष्टि १० तोला कायफल १० तोला
लौंग सोंठ मिरच काली
कूठ कड़वी प्रत्येक वस्तु ५-५ तोला
जायफल २॥ तोला मुरगी के अन्डे नग ६ की जरदी

अर्क मूलत्वक गीली	शिग्रुमूलत्वकी गील
आकाश वल्ली गीली	कंट कारी पचांग गीला

अजमायन देशी प्रत्येक वस्तु २०-२० तोला

विधि—लोंग मिरच जायफल अन्डे को छोड़ शेष सब औषधियों को यव कुट कर १२ सेर जल में २४ घन्टे भिगोकर मन्दाग्नि पर क्काथ करें चतुथाशं रहने पर वस्त्रद्वारा छान कर मूर्छित तिल तैल ६० तोला डाल कर लवंग मरिच जायफल डाल कर मन्दाग्नि दे जब तैल मात्र रहे तब छान कर उस तैल में अन्डों की जरदी मिला रखलें।

उपयोग विधि—मध्यान के समय धूप में निर्वात स्थान पर बैठा या लेटा कर थोड़ा गरम कर तैल को मालिश करें रुग्ण स्थान तथा मेरू दन्ड पर भली प्रकार धीरे २ मालिश करें और कायफल की पोटली से सेक भी करदें।

———※———

वैद्य शास्त्री श्री० वैद्य जगन्नाथप्रसाद जी गुप्त कविराज

देशबन्धु आयुर्वेदिक औषधालय, झाझा (मुंगेर)

आपका जन्म सम्वत १९४९ वि० में केशरवानी वैश्य कुल भूषण श्रीमान् शिवटहल साह गुप्त के यहां हुआ। आप ने कविराज और वैद्य शास्त्री परीक्षा पास की हैं। अनेक प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं। पुस्तकें भी लिखी हैं।

प्रयोग नं० १ कृमि रोग पर–

पलास के बीज १ तोला, वायविडंग १ तोला

सोमराजी बीज १ तोला कुटकी १ तोला

छोटी हरड १ तोला ब्रह्म दन्डी १ तोला

कबीला ६ माशे सनाय २ तोला

शुद्ध कुचला ६ माशे

विधि—सबको कूट कपड़ छन कर रखलें। एक एक माशे प्रातः सायं गरम जल से या कांजी से फांके तो सब प्रकार के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

प्रयोग नं० २ कुष्ट रोग पर–

—श्वेत अर्क मूल की छाल छाया में सुखा कर चूर्ण कर अदरख के रस की भावना दे एक एक रत्ती की गोली बना छाया में सुखा रखलें।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक एक गोली खिला ऊपर से खदरारिष्ट दो दो तोले पिलावें तो श्वेत कुष्ट और गलित कुष्ट को लाभ होता है। श्वास को भी लाभ प्रद है। ×

× इन्द्रायण की जड़, कचनार की छाल, बबूल की फरी, कटेरी की जड़, इन्द्रायन के फल, गुड़ पुराना समान भाग ले क्वाथ बना कर पिलावें। इससे दस्त होते हैं पेट में ऐंठा हो आंव निकलती है। इसके ५–७ दिन सेवन के बाद यह प्रयोग दिया जाय तब विशेष लाभ करता है अन्यथा साधारण श्वास में जब दौड़ा न हो और कफ अधिक निकलता हो तब अदरख के स्वरस के साथ प्रातः सायं देने से लाभ होता है।

—सम्पादक

वैद्यभूषण श्री० पं० घनश्याम जी शर्मा आयु० शा०

आयुर्वेदिक घनश्याम सिद्ध औषधालय

फालके बाजार-लश्कर

+——+*

आप का जन्म सं० १९६५ वि० में गुर्जर गौड़ ब्राह्मण परिवार के श्रीमान् पं० नारायण जी शास्त्री के यहां हुआ था। आपने आयुर्वेदाचार्य पं० अप्पा शास्त्री वेलणकर से आयुर्वेद शिक्षा एवं अनुभव प्राप्त किया। आप बाल रोग और नपुंसकता के विशेषज्ञः हैं।

प्रयोग नं० १ बाल रोग पर वटी—

जायफल	जावित्री	दालचीनी
लौंग	इलायची	अजमोद
सफेद मिर्च	वायविडंग	सेंधा निमक
हरड	चिरायता	करञ्ज बीज भुने
अतीस	अनार का छिलका	पीपरामूल
खस खस	पीपल	मोथा
वंशलोचन	केशर	काकड़ासिंगी

विधि—केशर २ माशे और सब औषधियां एक एक तोले ले कूट कपड़ छन कर शहद में घोट कर मूंग बराबर गोली बना रक्खे

सेवन विधि—एक या २ गोली माता के दूध के साथ प्रातः, सायं दे और ६ मास से १ वर्ष के बालकों को भी माता के दूध के साथ तीन बार सेवन करावें यह बालकों के पतले दस्त, वमन, अजीर्ण, निर्बलता दूर करने वाली और भूक बढ़ाने वाली है।

प्रयोग नं० २ नपुंसकता नाशक—

अभ्रक भस्म	२ तोला,	बंग भस्म	१ तोला
रससिंदूर (पारद भस्म)	६ माशे	धुली सूखी भांग	३॥ तोला
दालचीनी	२ तोला	तेजपात	२ तोला
छोटी इलायची	२ तोला	नाग केशर	२ तोला
जायफल	२ तोला	जावित्री	२ तोला
काली मिर्च	२ तोला	पीपल	२ तोला
सोंठ	२ तोला	लोंग	२ तोला
केशर	२ तोला	अकरकरा	१ तोला

विधि—दोंनो भस्म, रससिंदूर, छोड़ बाकी औषधियां कूट कपड़ छन कर दोंनो भस्म और रससिंदूर डाल कर घोटे उसके बाद ५४ तोले मिश्री और १० तोले घृत तथा १३॥ तोले शहद मिला घोट कर आठ आठ माशे की गोली बना रखलें।

सेवन विधि—एक या दो गोली गरम दूध में मिश्री मिला उसके साथ सेवन करें। कैसा ही नपुंसक हो अवश्य लाभ होता है।+

+ इन्द्री में यदि कोई दोष नहीं सिर्फ रुकावट नहीं होने से जल्दी शिथिल होती हो तब लाभ प्रद रहता है। दोष होने पर लगाने की औषधि भी आवश्यक होती है।

—सम्पादक

श्रीमान् वै० गंभीरचन्द्र जी जैन वैद्य विशारद

अलीगञ्ज (एटा)

आपका जन्म २१ जनवरी सन १६२० ई० को जैन जाति के श्रीमान् वैद्य जौहरीमल जी के यहां हुआ था। आपने घर पर ही आयुर्वेद अध्ययन कर वैद्य विशारद आगरा से पास की।

प्रयोग नं० १ बालकों को पसली चलने पर लेप—

नाड़ीशाक १ तोला, काले तिल १ तोला, दोनों को पानी के साथ सिल पर बारीक पीस कर थोड़ा पानी मिला गरम कर लेही वत् कर बालकों की पसलियों पर लेप करे। एक घन्टा लगा रहने दें। यदि आवश्यकता हो तब दूसरा लेप कर दें, अन्यथा १ लेप में ही आराम हो जाता है। कफ को खुश्क करने वाली गरम औषधियां नहीं खिलावें। × यह पेशाब खुल कर लाती है और गरमी खुश्की नहीं करती।

× लेप तो अच्छा है पर यह बाल निमोनियां रोग होता है इस लिये केवल लेप करने से काम नहीं चलता खाने के लिये ऐसी औषधि जो श्वास को शान्ति करे और कफ को वमन या दस्त द्वारा निकाल दे, देनी चाहिये।

—सम्पादक

प्रयोग नं० २ वमन पर

पित्त ज्वर रोगी, गर्भिणी स्त्री की वमन के लिये एक-एक तोला अर्क केवड़ा हर आध घन्टे बाद पिलावें। *

---

* जहर मोहरा भस्म एक-एक रत्ती चटा ऊपर से केवड़े का अर्क पिलाना अधिक लाभप्रद है।

—सम्पादक

वै० भूषण वै० गोविन्द प्रसाद जी अग्रवाल

पुन्हाना (गुड़गांवा)
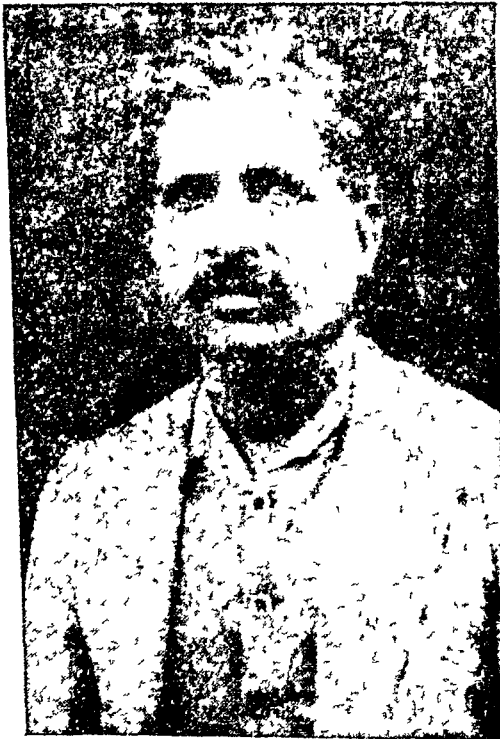
आपका जन्म सम्वत् १९-९६ वि० में श्रीमान् लाला सुखियामल जी अग्रवाल के यहां हुआ था। श्री० महात्मा रामजीदास जी से आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त कर वैद्य भूषण की परीक्षा दी।

प्रयोग नं० १ उपदंश पर दीपक

एक नौ इञ्च लम्बा चौड़ा खादी का कपड़ा लें उस पर १ तोला हिंगुल ४ तोला गौ घृत में पीस कर लेप करदे और फिर उस कपड़े की बत्ती बनालें। एक दीपक मिट्टी लेकर उसमें एक छटांक गौघृत डाल

वत्ती रख दीपक चास (जोड़) दें। उपदंश रोगी को चारों तरफ से एक गाढ़ा कपड़ा ओढ़ा कर दो ईंटों पर विठा दें शिर और मुख को उघाड़ दें कपड़े के अन्दर जले हुये दीपक को रखदें जिससे उसका धूआं और गरमी रोगी को पहुंचे। मुख से ठन्डे पानी के कुल्ले करता रहे आध घन्टे वैठा रहे पसीना आवेगा जब खूब पसीना वह निकले तब दीपक बुझा कर अलग रखदें और रोगी को उठा कर पसीना पोंछकर चारपाई पर मुलायम गद्दा विछा उस पर लिटा रजाई से ढक दें चारपाई पर भी पसीना आता रहेगा जब वह कपड़े भीग जांय तब दूसरे बदलदें, जब पसीना आना बन्द हो जाय तब कपड़े पहनलें और थोड़ी देर हवा से बचा रहे इस तरह ३ दिन पसीना लेने से ही उपदंश बिना दवा खाये और विना मुंह आये ३ दिन में आराम हो जाता है। पथ्य में हलवा ही दें और कुछ नहीं दें। गेंहू का आटा गौघृत खांड़ जल डाल कर हलवा बनावें।

प्रयोग नं० २ सुजाक रोग हर भस्म

पुराना टाट जो सन का बना हुआ होता है नौ इञ्च लम्बा चौड़ा लें उसमें सुपारी नग ४, बड़ी इलायची नग ८, धनियां तोले १ रख का लपेट कर गद्दी सी बना डोरा से लपेट कर २ सेर कंडों में रख फूंक दें जब धूम्र निकलना बन्द होजाय तब निकाल कर ऐसा ढकदें कि सन्धि न रहे, कोला रूप होजाय सफेद रखना हो तब पीस छान कर शीशी में भर कर रखलें।

सेवन विधि—एक एक माशे प्रातः और सायं काल जल से फकावें। ७ दिन में ही सुजाक जाता रहेगा पुराना हो तब १४ दिन में जाता रहेगा। पथ्य में मूंग की दाल गेंहू की रोटी चना मिला अलौनी दाल (बिना) नमक की लेनी चाहिये। अन्य कुछ पदार्थ नहीं देना चाहिये।

वैद्य वाचस्पति श्री० पं० खूबचन्द जी वैद्यराज

खूबा आयुर्वेद भवन, झुण्डपुरा
पो० सबलगढ़ (ग्वालियर स्टेट)

—※—
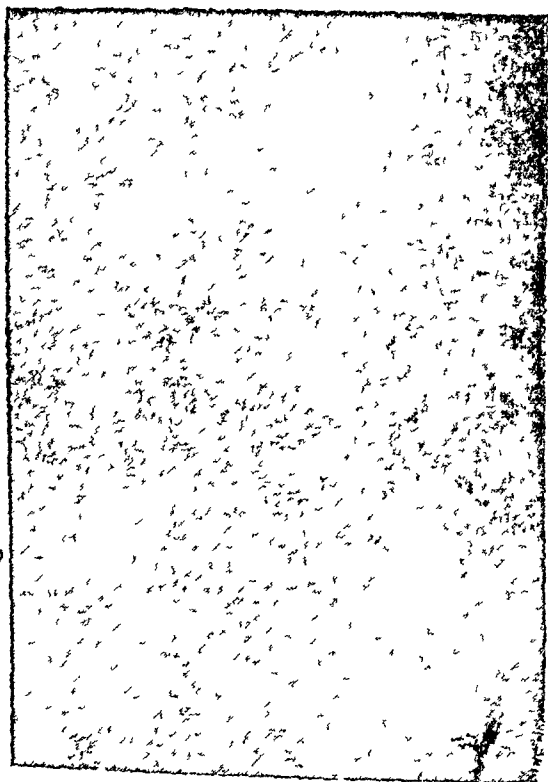
आपका जन्म सं० १९६३ सनाढ्य विप्र कुल भूषण वैद्यवर पं० रामरतन जी मिश्र के यहां हुआ है। वैद्यक का कार्य वंश परम्परा से होता चला आया है। आपने वैद्य शास्त्री, वैद्य वाचस्पति की परीक्षा उत्तीर्ण की है। ग्राम वैद्य मंडल से वैद्यराज की उपाधि और रईस ठिकानेदारी से प्रशंसापत्र प्राप्त किये है।

प्रयोग नं० १—मन्थर ज्वर हर वटी—

मोती शुक्ति भस्म — प्रवाल भस्म
स्वर्ण माक्षिक भस्म — सत्व गिलोय असली
तुलसी के बीज — इलायची छोटी के बीज
काश्मीरी केशर — गोदन्ती भस्म

विधि—सब समान भाग ले ब्राह्मी के रस में एक पहर मर्दन कर गुंजा प्रमाण वटी बनालें।

व्यवहार—मधु और अदरख के रस के साथ सेवन करने से मन्थर ज्वर और उसके उपद्रव शान्त हो जाते है।

मात्रा—२ गोली से ४ गोली तक एक पहर में देनी चाहिये।

प्रयोग नं० २—कास हर—

स्फटिका (फिटकिरी) — श्वेत मल्ल (संखिया) शुद्ध

सुहागा	सैंधा नमक	नवसार (नौसादर)

विधि—पांचौ औषधियां प्रत्येक १-१ तोला ले आक (अर्क) के दूध में खरल कर टिकिया बना गजपुट में फूंक दें स्वांग शीतल होने पर टिकिया निकाल उसमें कंटकारी क्षार, वांसाक्षार, मूलीक्षार, यवक्षार, प्रत्येक १-१ तोले मिला घोट कर रखलें।

व्यवहार विधि—मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक। लगे हुए पान के बीड़ा में रख सेवन करें। प्रत्येक कास में अद्भुत लाभकारी है विशेषतः शुष्क कास को नष्ट करने में अद्वितीय है।

हकीम हाजिक कुरैशी मुहम्मद खलील अहमद जी 'कान्ति'

श्री०कान्ति दवाखाना निकट कोतवाली

दमोह सी० पी०
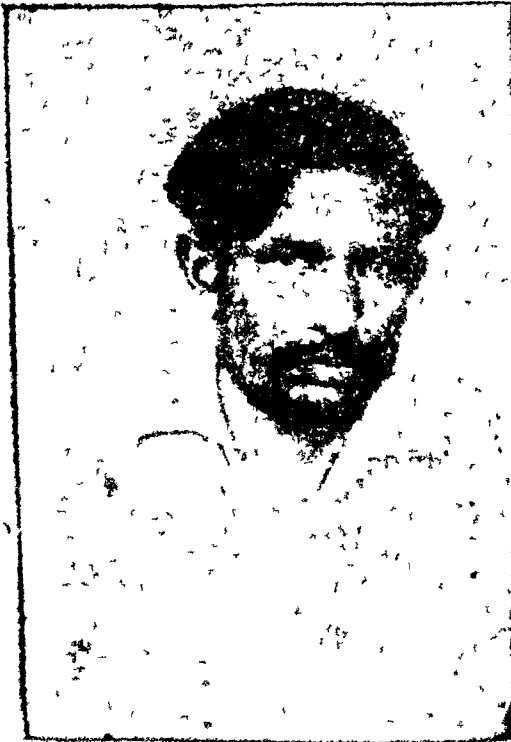
आपकी आयु लगभग ३५ वर्ष की होगी। आप मुसलिम कुरैशी खानदान के श्रीमान् वा० अब्दुलशकूर जी ठेकेदार मालगुजार के पुत्र हैं विश्वनाथ आयुर्वेद भवन दमोह में शिक्षा प्राप्त कर व्याकरण काशी विश्वविद्यालय की प्रथमा और तिब्बी कालेज लाहौर से हकीम हाजिक की परीक्षा दी है अनेक प्रशंसा पत्र मिले हैं)

प्रयोग नं० १—अर्क शिफा

अगया घास १ भाग — सौंफ आधा भाग

जीरा आधा भाग — कसोंधि की जड़ या लकड़ी १ भाग

पानी आठ भाग

विधि—सबको यवकुट कर औटावे। २ भाग पानी रहे तब छान कर काम में लें, अथवा ४ भाग पानी में १ दिन भिगो कर भबका में अर्क निकाल कर रखलो।

सेवन विधि—१ वर्ष तक के बालकों को १० बूंद और १ से ५ वर्ष तक के बालको को ३ माशे पिलावे। बालकों को पिलाते रहने से कोई रोग होने का भय नहीं रहता। चेचक मोतीझरा भी नहीं निकलते। रक्त विकार, उपदंश विकार के बाल रोगी को भी लाभदायक है। *

प्रयोग नं० २—बुखार के लिये अकसीर

लौंग भुनी १ तोला — पीपल भुनी १ तोला

गोंद बबूल १ तोला — मुलहठी २ तोला

काली मिर्च २ तोला — कुकरोंधा की पत्ती २ तोला

सुहागा भुना ६ माशे — + लगराही की राख ६ माशे

छोटी इलायची के दाने ६ माशे

प्रयोग विधि—सबको कूट छान कुकरोंधा के रस में चना बराबर गोली बना सुखा रखले। बुखार की तेजी में शहद के साथ बुखार की कमी या सर्दी की दशा में अदरख, पान के रस के साथ दें।

---

* हकीम साहेब की यह पेटेण्ट औषधि है जो वह विज्ञापन द्वारा बिक्री करते हैं उसका ही प्रयोग वैद्यों के हित के लिये प्रकाशित कर दिया है।

+ लगराही—मक्का की छूंछ जो मक्का निकलने पर रह जाती है उसको आग में जलावे जब धुआं निकलना बन्द हो जाय तब बर्तन से ढक दे जिससे कोयला सरीखी हो जाय। —सम्पादक

आयुर्वेद शास्त्री श्री ज्यो० जानराव जी ठोंके वैद्य

श्री समर्थ नानागुरु गणेश प्रसादिक कार्यालय

शिरखेड़ जि० उमरावती (वरार)
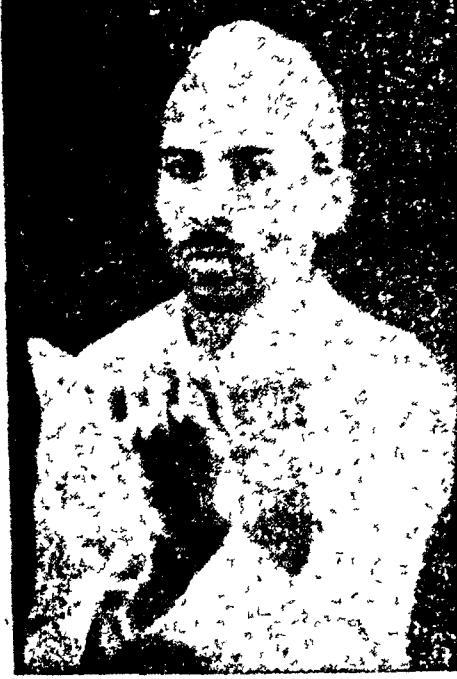
-*-

आपकी आयु लगभग ३० वर्ष की होगी। आप क्षत्रिय वंश में मराठा पटेल जाति के श्रीमान् चन्द्रभान जी ठोंके वैद्य के सुपुत्र हैं। आयुर्वेद शास्त्री वि० से० से उत्तीर्ण की है। अनेक प्रशंसापत्र भी प्राप्त किये हैं।

प्रयोग नं० १ पुराना मलेरिया और चतुर्थिक ज्वर-

प्रातः काल—सितोफला १ माशे घृत शहद के साथ। भोजनोपरान्त दोनों समय-रोहितकारिष्ट १। सवा सवा तोले बराबर का जल मिला कर। रात्रि को-स्वर्ण बसंत मालती १ रत्ती लोनी (नवनीत) ६ माशे मिश्री ६ माशे के साथ। इस प्रकार २१ दिन सेवन कराने से कैसा ही ज्वर हो अवश्य ही शान्त हो जाता है। भोजन में दूध रोटी। लाल मिर्च तैल खटाई वगैरह नहीं खानी चाहिये।

प्रयोग नं० २ क्षय रोग पर-

प्रातः सायं—बृहत् स्वर्ण मालिती वसंत दो चावल रससिन्दूर ४ चावल मृगशृंग भस्सम १ रत्ती सत्व गिलोय २ रत्ती प्रवाल चन्द्र पुटी १ रत्ती सबको मिला २ पुड़िया कर घृत शहद के साथ दें। दोपहर १२ बजे-पंचामृत पर्पटी आधी रत्ती स्वर्णपर्पटी आधी रत्ती मीठे छाछ के साथ। रात्रि को लक्ष्मी विलास १ रत्ती शहद

में। इससे प्रथमावस्था का क्षय या क्षय के साथ घबराहट और अतीसार हो तब विशेष लाभ करता है। रोगी को छाछ पर ही रक्खा जाय।

वै० भूषण कृष्णराव तात्या जी पाटील

रामकृष्ण आयुर्वेदिक औषधालय
नरखेड़ पोस्ट मुलताई
जि० बैतूल सी० पी०

—*—

आपका जन्म सन १८६२ ई० में क्षत्रिय कुल के श्रीमान तात्या जी पाटील जमीदार के यहां हुआ था। आपने वैद्यभूषण की उपाधि और स्वर्ण पदक प्राप्त किये हैं। आप अच्छे चिकित्सक और मिलनसार व्यक्ति हैं। आप अनेक संस्थाओं के मंत्री सभापति भी हैं लोकल बोर्ड जिला बोर्ड के भी आप सदस्य हैं।

प्रयोग नं० १—नाडी व्रण हर

—१०० वर्ष का पुराना किला या मकान हो उसका चूना जो ईंट को जोड़ने के लिये लगाया जाता है उसका ढेला लेकर खूब बारीक पीस कर कपड़ा मे छान लेना यह चूना ३ माशे उसी प्रकार संग जीरा+३ माशे कपड़ छन किया हुआ दोनो को एकत्र मिला कर खूब खरल करें और तमाखू की कटी हुई जड़ के हरे पत्ते १ तोला

लेकर उसकी खूब महीन चटनी (पिड़ लुगदी) सी बाटी जाय और ऊपर की दोंनो चीजें उसमें मिलादी जायं और खूब घोटा जाय और उसका पिड़ (टिकिया) वना कर नासूर को नीम के पानी से धोकर पोंछ कर उस पर रख और उसके ऊपर तमाखू का पत्ता रख यही बांध दें इस प्रकार औषधि रोज तैयार कर १४ रोज तक बांधे तो नासूर किसी किस्म का हो, नया पुराना फोड़ा×या घाव हो सब आराम हो जाता है ※

प्रयोग नं० २ प्लीहा विकार हर—

—पपीता का एक बड़ा कच्चा फल ले उसके मध्य भाग में से अच्छा चौरस एक टुकड़ा काट पपीता का गूदा युक्त से बाहर निकाल लेवे और उससें १ पाव सेंधव निमक पीस कर भरदे पश्चात् जो टुकड़ा काटा था उसे लगा कर मुख बन्द करदे। पपीते को कपड़ मिट्टी करके ऊपर से गोबर का भी १ अंगुल का मोटा लेप करदें। एक हाथ गहरा चौड़ा लम्बा गढ्ढा कर उसमें वन उपले पर बीच में पपीता रख अग्नि लगादे स्वांग शीतल होने पर गोबर कपड़ मिट्टी अलग कर पपीता नमक सहित पीस छान कर रखले।

व्यवहार विधि—बड़ों को सुबह शाम छः छः माशे चूर्ण फंका ऊपर से गरम जल पिलावें। २१ दिन में बड़ी से बड़ी प्लीहा गल जावेगी यकृत को भी लाभ होगा। प्रथमावस्था का पांडु भी दूर हो जाता है। +

× संग जीरा (संग जिरा) संस्कृत में इसे शंख जीरक कहते हैं। शालिग्राम निघन्टु देखिये।

※ चूना और संग जीरा एक बार बना कर पृथक २ शीशी में रखलें तमाखू के पत्ते रोज मंगा कर औषधि तैयार करा लिया करें।

+ पपीता का गूदा निकाल फेंके नहीं नमक में ही मिला कर पुनः भरदें। —सम्पादक

आचार्य श्री० कमलापति जी शास्त्री

भूदेव फार्मेसी वानकपुर
जहानावाद (गया)

×—*—×
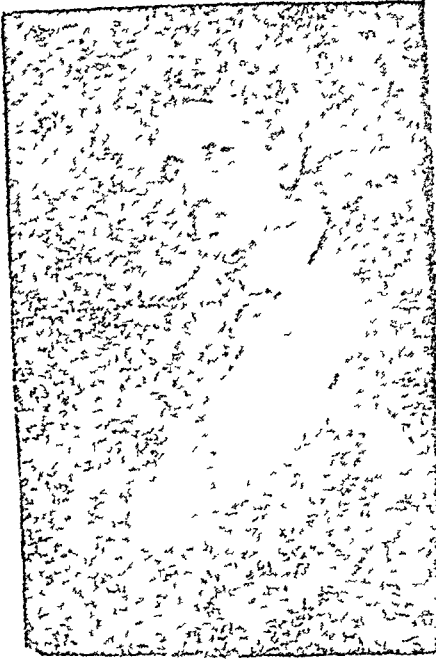
आपका जन्म सं० १९६२ में बेलागंज (गया) में श्रीमान् पं० सोमेश्वर मिश्र वैद्यराज के यहां हुआ था आपने साहित्याचार्य आयुर्वेदाचार्य, काव्य, व्याकरण वेदतीर्थ की परीक्षायें विहार और बनारस से दी हैं।

प्रयोग नं० १ जलोदर हर—

लोह भस्म	पीपल छोटी
पीपरामूल	सोंठ
देवदार	नागरमोथा
इन्द्र जौ	वार्यविडंग
कुटकी	त्रिफला

स्वर्ण माक्षिक

विधि—समान भाग सब औषधियों को ले कपड़ छन्न कर गौमूत्र में घोट कर झरवेर की बराबर गोली बना सुखा रखले ।

सेवन विधि—एक एक गोली प्रातः और सायं काल पुर्ननवा का रस और शहद के साथ निगलनी चाहिये । पानी पीने को नहीं देना चाहिये पानी की जगह अर्क मकोय और अर्क पुर्ननवा देना चाहिये भोजन में नमक नही दें । चने की रोटी, गेहूँ की रोटी

दूध सहजने की तरकारी बिना नमक की दें। साथ ही साथ कुटकी, त्रिफला, देवदारु का क्वाथ भी प्रति दिन देना चाहिये। यह प्रयोग मेरे गुरु त्र्यम्बक जी शास्त्री काशी का है।

प्रयोग नं० २ पान्डु रोग पर—

सोंठ काली मिर्च छोटी पीपल स्वर्ण माक्षिक लोह वायविडंग
प्रत्येक पांच पांच तोला मोथा की जड़ २० तोला

विधि—स्वर्ण माक्षिक और लोह शुद्ध कर डालें, सबको कूट कपड़ कर शर्करा (मिश्री) मधु मिला कर बेर के बराबर गोली बनालें

सेवन विधि—प्रातः सायं एक एक गोली शहद के साथ सेवन करने से ७ दिन में ही पांडु नष्ट हो जाता है। ×

× यह प्रयोग नवायस लोह का ही रूपान्तर हैं ७ दिन में कुछ लाभ और बराबर सेवन से रोग नष्ट हो जाता है।

—सम्पादक

—*—

भिषग् रत्न श्री० पं० कृष्णबिहारी जी पांडेय

श्रीमार्तण्ड आयुर्वेदिक फार्मेसी, छिंदवाड़ा सी० पी०

आपका जन्म सं० १९७५ वि० में ब्राह्मण कुल के पांडेय वंश के श्रीमान् पं० शुकदेव प्रसाद जी पांडेय प्रजा वैद्य के यहां हुआ आपने व्याकरण और आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त कर हिन्दी सा० सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा पास कर आयुर्वेद रत्न की उपाधि प्राप्त की और बरार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन से भिषग् रत्न उपाधि प्राप्त की आप म्यूनिस्पल कामिश्नर भी हैं और उसके शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग के चैयरमेन भी हैं।

प्रयोग नं० १ योषापस्मार हरि वटी—

कोशाण्ड (कुसियारी) २५ अदद — शु० कुचला ६ माशे
शु० शिलाजीत १ तोले — हींगपुली ३ माशे
मल्लचन्द्रोदय ६ माशे — लौह भस्म ६ माशे
कस्तूरी १॥ माशे — पीपरामूल ७॥ तोले

विधि—प्रथम कोशाण्ड× कोलेकर सराव सम्पुट में बन्द कर गजपुट दे भस्म करले उसके बाद शुद्ध कुचला एवं पीपरामूल को कूट कपड़ छन करले और सब औषधियां मिला कर ब्राह्मी के स्वरस की ७ भावना दे दो दो रत्ती की गोलियां बना कर सुखा कर रखले।

सेवन विधि—एक एक गोली प्रातः सायं निगलवा कर निम्न क्वाथ पिलावे यदि कोष्ट साफ न हो तब क्वाथ में अमलतास के गूदे की मात्रा बढ़ा दे।

क्वाथ विधि—

जटामांसी ६ माशे, — जवासामूल ६ माशे
संख पुष्पी ६ माशे, — दुधवच ६ माशे,
अमलतास का गूदा १ तोला, — मुनक्का १२ नग

सब को कुचल आध सेर जल में औटावे जब ऽ— एक छटांक शेष रहे तब छान कर पिलावे। यह १ ही मात्रा क्वाथ की है। शाम को पुनः इसी प्रकार बनाले।

प्रयोग नं० २ अपस्मार नाशक नस्य—

—मदार (आक) पर रहने वाला कीड़ा जो कि कुछ हरित पीत रंग का होता है जिसे अकफूटा भी कहते हैं उसको लेकर नीम के पुष्प की लुगदी के बीच में रख सराव सम्पुट कर फूकले स्वांग शीतल होने पर पीली रतनजोत की भावना देकर और सुखा कर चूर्ण कर रखलें।

व्यवहार विधि—बीनुआ कन्डे की राख २ रत्ती कुचला का बारीक चूर्ण १ रत्ती ऊपर की भस्म २ रत्ती मिलाकर किसी नलिका में भर नाक के दोनों नथुनों में आधी आधी फूक दे जिससे मस्तिष्क तक औषधि पहुँच जाय २-४ बार के नस्य से ही अपस्मार नष्ट हो जाता है।

× कोशाण्ड—कोशा नामक का जो रेशम होता है उसको मय जीव (कीड़ा) के लेकर भस्म करे।

१—आतशी शीशी

२—नाँद

३—बालू
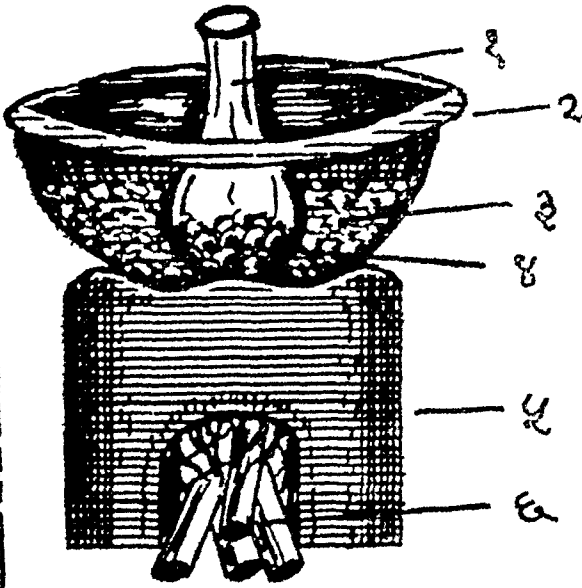
४—शीशी में भरी हुई औषधि कज्जली आदि।

५—चूल्हा

६—जलती हुई लकड़ी

बालुका यन्त्र
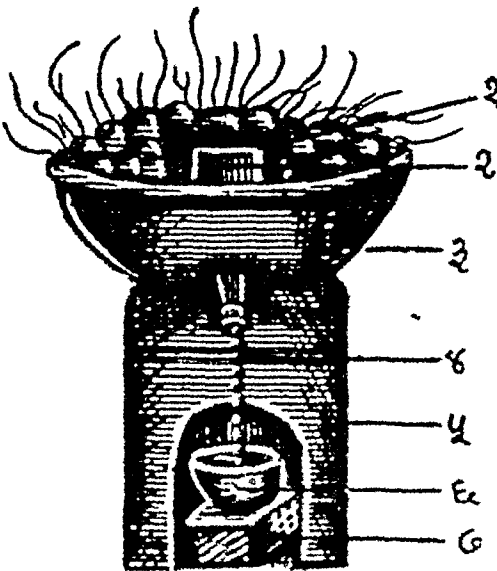
१—कण्डा नांद में भरे और जलते हुए

२—शीशी आतशी

३—नांद

४—टपकता हुआ द्रव पदार्थ

५—चूल्हा

६—प्याला

७—ईंट जिस पर प्याला रक्खा है।

पाताल यन्त्र

चिकित्सक श्री० वैद्य कपिलदेव जी शर्मा व्यास

कपिल (देव प्रचारक) एन्ड कम्पनी रजि०
अन्दोली पोस्ट सकसोहरा जि० पटना

—*+*—

आपका जन्म सम्वत १९७५ वि० को कान्य-कुब्ज ब्राह्मण श्रीमान पं० देवदत्त जी त्रिवेदी व्यास वैद्य के यहां हुआ। आपने संस्कृत एवं आयुर्वेद की शिक्षा घर पर ही प्राप्त की है। आपको अनेक प्रशंसा पत्र मिले हैं। मलेरिया रोग के विशेषज्ञ हैं।

प्रयोग नं० १ पांडु शोथ रोग पर

शुष्क थूहर,	भृङ्गराज का पचांग शुष्क
शुद्ध लोह चूर्ण	अजवायन खुरासानी,
वाय विडंग,	शुद्ध मांडूर

प्रत्येक एक एक छटांक

विधि—मांडूर की छोटी छोटी टुकड़िया करले और लोह चूर्ण के साथ के आध सेर गौ मूत्र में डाल (भिगो) ४ सप्ताह तक रक्खा रहने दें (सप्ताह में १ वार गौ मूत्र निकाल ताजा गौ मूत्र डाल दिया करें) ४ सप्ताह बाद लोह मांडूर को निकाल अच्छी प्रकार जल से धोले और चूर्ण बना रखलें फिर इस चूर्ण को घृत कुमारी के रस में खरल कर सुखा करलें।

फिर उस लोह मांडूर चूर्ण को उपरोक्त औषधियों के साथ हांडी में भर कपड़ मिट्टी कर गजपुट में फूकदें। स्वांग शीतल होने पर औषधि निकाल सूक्ष्म चूर्ण कर शीशी में भर कर रखलें।

सेवन विधि—मात्रा ६ माशे से १ तोला पर्यन्त गो मूत्र के अनुपान से फकानी चाहिये। इससे पांडु और सर्वाङ्ग शोथ अवश्य नष्ट हो जाता है मेरे पिता एवं मेरा अनुभूत दे शत प्रति शत लाभ प्रद है।

प्रयोग नं० २ मलेरिया पर—

तबकी हरताल ५ तोला समुद्रफेन ५ तोला
चुन्ना (चूना कलई) ५ तोला

विधि—सेमल की ताजी छाल का क्वाथ कर दोला यन्त्र में भर हरिताल लटकादें ४ घन्टे की आंच दें स्वांग शीतल होने पर हरताल निकाल जल के साथ अच्छी प्रकार खरल कर टिकिया बना सुखालें। एक मिट्टी के पात्र में आधी छटांक समुद्रफेन को पीस कर रख उसके ऊपर हरिताल की टिकिया रख ऊपर से फिर आधी छटांक समुद्रफेन को पीस कर डाल हरताल को दबादें पश्चात पात्र का मुख अच्छी प्रकार बन्द कर कपरोटी करदें और गजपुट में फूंकदें। स्वांग शीतल होने पर दवा (हरताल समुद्रफेन) निकाल चुन्ना (कलई) के साथ खरल कर एक-एक रत्ती की गोली बनालें।

सेवन विधि—मात्रा पूर्ण व्यक्ति को दो गोली ३ माशे मिश्री मिलाकर शीतोष्णजल के साथ ज्वर आने के पूर्व दो-दो या तीन-तीन घन्टे के अन्तर से देनी चाहिये। यह इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि सब प्रकार का विषम ज्वर (मलेरिया) में किनाइन की अपेक्षा कई गुणा अधिक लाभ करती है।

मुझे मलेरिया के बहुत से प्रयोग याद हैं पर इसके मुकाबले का आज तक कोई प्रयोग नहीं देखा। *

---

* ज्वर आने से पूर्व २-३ मात्रा से अधिक नहीं दे बड़ी गरमी करता है। हमने एक एक घन्टे के अन्तर से दो मात्रा ही दी थी लाभ हुआ।

—सम्पादक

आयु० श्री० पं० आनन्द स्वरूप जी मिश्र वै०

श्री मिश्र आयुर्वेदिक फार्मेसी, वलंजरी, जानी (मेरठ)
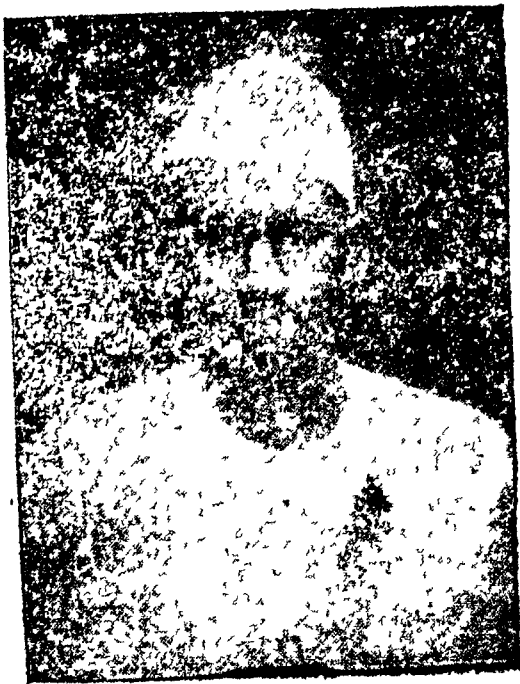
आपकी आयु लगभग २५ वर्ष की है। आप ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान् पं० लालमणि जी शर्मा वैद्यराज के पुत्र हैं। आपने आ० भा० वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेदाचार्य और बनवारी लाल आयुर्वेद विद्यालय की वैद्यराज परीक्षा उत्तीर्ण का है। आप खानदानी वैद्य हैं।

प्रयोग नं० १ शीत पित्त पर धूनी—

शक्कर देशी १६ तोला मोम कच्चा ७ तोला
शिवलिंगी बीज २ तोला

व्यवहार विधि—शिवलिंगी बीज को पीस कर मोम शक्कर मिला ६ गोली (टिकिया) बना रखले। ऐसे शीत पित्त रोगी का जिसका बदन सूख गया है खुजली खूब आती हो उस रोगी को चारपाई या बेंत की कुरसी पर कपड़े उढ़वाकर लिटा दें और मुख खुला रख शेष सब शरीर ऊनी वस्त्र से ढकदें और नीचे अग्नि रख ऊपर से उस अग्नि पर गोली रखदे इससे रोगी को खूब स्वेद (पसीना) आवेगा इस प्रकार ६ बार धूनी (स्वेद) देने से रोगी को कैसा भी भयंकर शीत पित्त हो अवश्य नष्ट हो जायगा।

प्रयोग नं० २ सुरमा नेत्र ज्योति बढ़ाने को—

शीशा (धातु) २० तोला हिंगुलोत्थ पारद ६ तोला
शीतल चीनी ३ तोला छोटी इलायची बीज ३ तोला
काला सुरमा ३ तोला जस्त की खील २ तोला
पिपरमेन्ट १ तोला

विधि—प्रथम शीशी को अग्नि पर गला २ कर गौ मूत्र, त्रिफला गाय की खट्टी छाछ, सरसों का तैल में सात २ वार बुझा कर शुद्ध कर पुनः उसे साफ कर लें और अग्नि पर गलावें और पारद को लौह पात्र में रख ऊपर से गला हुआ शीशा डाल किसी लोह शलाका से चला कर मिलादें और ठन्डा होने दें। ठन्डा होने पर उसको इमाम दस्ते में कूट कर चूर्ण बना लें और पिपरमेंट को छोड़ शेष सब औषधियां कूट कर कपड़ छन कर उस मे डाल दें सौंफ के अर्क की २० भावना दे और फिर पिपरमेंट मिला सौंफ का अर्क डाल मर्दन कर खुश्क कर घोट कर सुरमा वत होने पर शीशी में भर रखले। यह सुरमा नेत्र की ज्योति बढ़ाने वाला है ज्यादा दिन लगाने से चश्मा छूट जाता है। *

---

* आपका सुरमा का योग पेटेन्ट है नाम आनन्द नेत्र कल्पद्रुम है अतः इस नाम से कोई बना कर नहीं बेचे। वैद्यों के लाभार्थ हमारे आग्रह पर प्रकाशित करा दिया है। —सम्पादक

—*—

श्रीमान सरदार उजागर सिंह जी वै० भूषण

चौक लक्ष्मणसर, अमृतसर

आपका जन्म अरोड़ा जाति के श्रीमान् सरदार गण्डासिंह जी के यहां हुआ था। आपकी आयु अनुमान ५० वर्ष के होगी, योगिराज वैद्य विनोद सन्त गणेश सिंह जी से १० वर्ष उनके पास रह कर आयुर्वेद की शिक्षा एवं अनुभव प्राप्त किया है।

प्रयोग नं० १—योनि शूल नाशक

सोंठ	काली मिर्च	पीपल छोटी
मीठा तेलिया	एलुआ	समान भाग

विधि—सब को कूट कपड़ा में छान बकरे के पित्ते के साथ मर्दन कर उरद के समान गोली बना लें और १-१ गोली गरम जल से देने पर योनि शूल अवश्य शान्त होजाता है।

प्रयोग नं० २—निमोनियां नाशक

क्षार काक जङ्घा १ तोला	सुहागे का फूला १ तोला
बारह सिंघा की भस्म १ तोला	गोदन्ती भस्म ६ माशे
फिटकरी की भस्म	८ माशे

विधि—सब को कूट कपड़ा में छान कर रखलें। खुराक २ रत्ती अजवायन के अर्क के साथ दिन में तीन बार देने से निमोनियां ज्वर नष्ट होजाता है।

—o—

कविराज श्री० अशोक कुमार जी आयुर्वेदालङ्कार

अन्दरून हरम दरवाजा गली साबुन वाली मुलतान शहर

आपकी आयु लगभग २५ वर्ष की होगी आप स्वर्गीय श्रीमान् रमलदास जी के सुपुत्र हैं। आपने अपने पितामह से आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त की है आप अच्छे लेखक हैं। आपके लेख मासिक पत्रों में प्रायः निकलते रहते हैं। आप आयुर्वेद महा विद्यालय कांगड़ी के स्नातक हैं।

प्रयोग नं० १—श्वासान्तक वटी—

—एक पाव सेंधा नमक का चूर्ण कर आध पाव आक के दूध से खरल कर जब दुग्ध खुश्क होजाय तब टिकिया बना शीत स्थान में सुखा गज पुट की अग्नि दे। स्वांग शीतल होने पर निकाल गोली एक एक रत्ती की बना रखले।

सेवन विधि—१-१ गोली मक्खन मधु या मुनक्का के साथ सेवन कराने से श्वास के दौरे नहीं होते श्वास रोग नष्ट हो जाता है। श्वास के दौरे के समय मुनक्का के साथ दे। थोड़ा कफ निकल कर शान्ति होजायगा।

प्रयोग नं० २—अर्श हर—

चाक्सो (चाकसु) रसौत गूगल

विधि—समान भाग ले और १-१ माशे की गोली बनाले। प्रातः सायं १-१ गोली पानी के साथ सेवन कराने से दोनों प्रकार की बवासीर को लाभ होता है।

राजवैद्य श्री० पं० काशीराम जी शर्मा वैद्यभूषण

श्री धन्वन्तरि फार्मेस्यूटिकल वर्क्स
झालू जिला बिजनौर
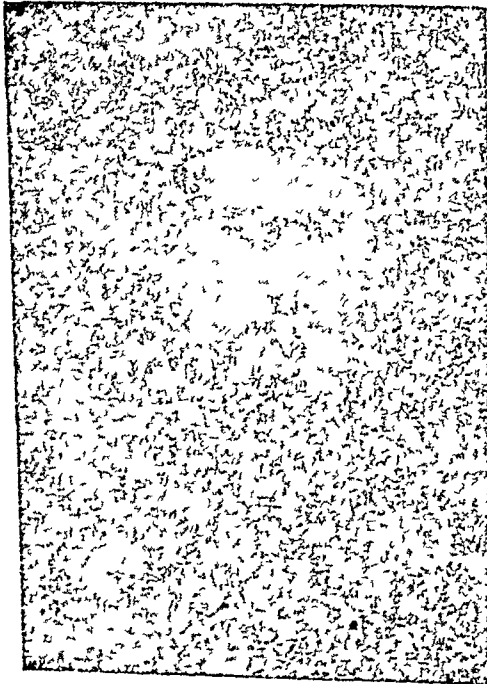
आपकी आयु ४० वर्ष की होगी। आप ब्राह्मण कुलभूषण श्रीमान् पं० जगन्नाथ प्रसाद जी मेदनी के सुपुत्र हैं। आपने धामन आयुर्वेद विद्यालय हरिद्वार में शिक्षा प्राप्त की तथा अनेक धर्मार्थ औषधालयों में चिकित्सक पद पर रहे।

प्रयोग नं० १ तिला—

क्रोटन आइल (जयपाल का तैल) ६ माशे
इत्र हिना मुश्की ६ माशे तैल चमेली २ तोला

विधि—तीनों को चीनी या कांच के खरल में ३-४ घन्टे खरल कर शीशी में भर कर मजबूत कार्क लगा कर रखलें।

व्यवहार विधि—रात्री को सोते समय इन्द्री का सिर (सुपारी) सिवन छोड़ कर १५-२० मिनट हलकी हलकी मालिश करें और बंगला पान सेक कर इन्द्री का मुख नाभी की तरफ करके सीधा बांध दें सुबह खोलदें। बांधने में कच्चा सूत काम में लावे। इन्द्री पर छोटे २ दाने पड़ जाय तब तिला लगाना बन्द कर नैनी घी (नवनीत) चुपड़ दिया करे जब दाने ठीक हो जायं तब पुनः तिला लगावे २१ दिन लगाना चाहिये। स्त्री से बचे रहे, ठन्डे पानी से बचे, शौच में भी गरम पानी ले, स्नान भी गरम पानी से करें।

प्रयोग नं० २ नपुंसकता हर वटी—

संखिया शुद्ध १ तोला हरताल वर्की शुद्ध १ तोला
सिंगरफ (हिंगुल) शुद्ध १ तोला गंधक शुद्ध १ तोला

विधि—सबको लेकर बढ़िया पत्थर के खरल में नीबू का रस डाल घोटे, जब तक १०० नीबू का रस घुटते २ न सूख जाय तब तक बराबर घोटते रहे फिर गोली के योग्य होने पर मूंग के बराबर गोली बनाले।

सेवन विधि— पहले सात दिन तक आधी आधी गोली और फिर एक एक गोली मलाई में रख कर खानी चाहिये। ऊपर से दूध मिश्री मिला पियें। जाड़ों में विशेष गुण दायक है। इस गोली के सेवन काल मे घृत दूध खूब खाना चाहिये ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये। तैल लाल मिर्च गुड़ खटाई नहीं खानी चाहिये। किसी प्रकार से नपुंसकता हो अवश्य नष्ट हो जायगी। तिला भी साथ ही साथ व्यवहार करते रहना चाहिये। हमारे मित्र ने इन प्रयोगों से हजारों रुपये पैदा किया है। बड़ी कृपा कर उन्होंने प्रयोग हमें बताये थे और हमने भी लाभ उठाया है।

राजवैद्य श्री० पं० नागर दत्त जी शर्मा आयु० चार्य

प्रधान वैद्य डावर (डा० एस० के० वर्म्मन) लिमिटेड
वैद्य नाथ देवघर (एस० पी०)

×—*—+

आपकी आयु ३५ वर्ष की है आप ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान् पं० गणेश दयाल जी जोशी के सुपुत्र हैं। आपने व्याकरण और आयुर्वेद की आचार्य तक की शिक्षा प्राप्त की है। आपको वैद्य शास्त्री, आयुर्वेदालंकार आदि उपाधियां पदक प्रशंसा पत्र मिले हैं। जीवन विज्ञान मासिक पत्र के सम्पादक भी रह चुके है।

प्रयोग नं० १ स्तम्भन के लिये—

मल्ल सिन्दूर	४ तोला	भीमसेनी कपूर	४ तोला
अभ्रक भस्म	४ तोला	जाय फल	६ माशा
जावित्री	६ माशे	लवंग	६ माशे
कस्तूरी	१ तोला	× कुचला का सत्व	२ तोला

अफीम २ तोला।

विधि—प्रथम जायफल जावित्री लवंग कूट छान कर भस्म वगैरह सब मिला पान के रस मे मर्दन कर दो रत्ती की गोली बना सोते समय पात्र मे रख खना ऊपर से दूध मक्खन मलाई खाना

× कुचला सत्व विलायती जिसे स्ट्रीकनिया कहते है नही लेना चाहिये। कुचला का घन सत्व बना कर लेना चाहिये और इसकी मात्रा दो रत्ती नहीं आधी रत्ती की लेनी चाहिये —सम्पादक

चाहिये। स्तम्भन के अतिरिक्त श्वास कास वात व्याधि में भी लाभ दायक और बल वर्धक है।

प्रयोग नं० २ मलेरिया नाशक—

× काल मेघ (महा भा।) स्वरस ४० तोला, मधु ३० तो०
पिप्पली चूर्ण २॥ तोला मरिच चूर्ण २॥ तोला

उपयोग विधि—महा भांग का रस निकाल छान अन्य वस्तु मिला प्रयोग करें। प्रति दिन २ खुराक दवालें। मात्रा १ औंस समान भाग जल मिला कर। नवीन और पुराने दोनों प्रकार की मलेरिया को उत्तम।

× काल मेघ (महा भांग) यह एक कड़वी औषधि है बंगाल की तरफ अधिक होती है जंगली भांग को यू० पी० में जो महा भांग कह देते हैं जो नशीली भांग से भी अधिक होती है उसे नहीं लेनी चाहिये।

काल मेघ को यव तिक्ता भी कहते हैं। —सम्पादक

—※+※—

वै० शास्त्री वैद्य पं० देवदत्त जी स्नातक ऋषिकुल

धनञ्जय आरोग्य भवन, शङ्करगढ़ गुरुदासपुर

आपका जन्म संम्वत् १९६१ वि० में स्वर्गीय नाड़ी विज्ञानाचार्य श्री० पं० मोहन लाल जी प्राणाचार्य के यहां हुआ। आप ऋषिकुल हरद्वार के स्नातक हैं और आपने ऋषिकुल के ही आयुर्वेद विद्यालय में आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त कर वैद्य भास्कर की उपाधि प्राप्त की वैद्य सम्मेलन की विशारद की है आपको अनेक पदक और प्रशंसा पत्र मिले हैं।

श्री दर्शन

प्रयोग नं० १ नेत्र के नाड़ी व्रण पर—

अपामार्ग मूल को रविवार को उखाड़ कर छाया में सुखा कर रखलें। इसको मुख की लार थूक में साफ पत्थर पर घिस कर नेत्र के नासूर पर लगावें। दिन मे ३-४ बार लगानी चाहिये। जो रोगी आपरेशन कराकर भी हताश हो चुके हैं उनको भी इससे लाभ हो गया है।

प्रयोग नं० २ वस्ति और वृक्क शूल पर—

कलमी सोरा ५ तोला भिलावा १० तोला

विधि—भिलावा के सरोते से छोटे २ टुकड़े करले और एक लोहे की कलछी में प्रथम भिलावे टुकड़े रक्खे ऊपर से सोरा रक्खे फिर भिलावा फिर सोरा इस तरह ३-४ परत रखदें ध्यान रहे सब से ऊपर नीचे भिलावें रहें। कलछी को तेज आंच पर रखदें पहले भिलावे का तेल बनेगा फिर जलेगा आंच लग जावेगी (धुआं से बचा रहे) जब अग्नि बुझ जाय तब भिलावे मय पिघले सोरा के एक मट्टी के पात्र में डालदे ठन्डा होने पर पीस छान कर रखलें।

सेवन विधि—मात्रा ३ माशे उष्ण जल के साथ फंकाना चाहिये हर तीन घन्टे बाद यह ४ मात्रा दिन भर मे दी जासकती है। वृक्क शूल या वस्ति शूल होने पर रोगी को १५-२० मिनट पहले ही मालूम हो जाता है यदि उसी समय १ मात्रा और एक १५-२० मिनट बाद ले ले तत्काल शूल रुक जाता है। १-२ महीने बराबर सेवन से फिर दौरा होता ही नही है। पथरी को तोड़ कर निकाल लेने वाला गुण भी इस प्रयोग में है। इस योग के सेवन से पूर्व दूध मे एरण्ड तेल डाल कर कोष्ठ शुद्ध करले। *

---

* भिलावे जल जाने चाहिये पर राख नहीं होने देना चाहिये।

—सम्पादक

वै० श्री० पं० गिरजा शंकर जी बोरा भिषगाचार्य

आयुर्वेदिक औषधालय, रतलाम

—*—*—

आपकी आयु लगभग ३० वर्ष के होगी। श्रीमाली ब्राह्मण श्रीमान पं० गुलाबचन्द जी बोरा के आप सुपुत्र हैं। आपने आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली से भिषगाचार्य धन्वन्तरि परीक्षा पास की है। अनेक प्रशंसा पत्र भी प्राप्त कर चुके हैं।

प्रयोग नं० १ मन्दाग्नि पर—

काला निमक ७५ तोला,
अर्क क्षार २ तोला २ माशे
काली मिर्च १०। तोला
इमली क्षार २ तोला २ माशे
अडूसा क्षार १। तोला
तेजपात ४ तोला
धनिया ३ तोला
अकरकरा १० तोला
नोसादर १ तोला
सेंधा निमक ५ तोला
सांभर निमक ८ माशे
पीपल छोटी १०। तोला
जीरा सफेद भुना १० तोला
यव क्षार १। तोला
दालचीनी २ तोला
छोटी इलायची ५ तोला
अजवायन ४ तोला
शंख भस्म ४ तोला
पीपरामूल २ तोला
लोंग ५ तोला

विधि—ग्रीष्म ऋतु में सब औषधियों को कूट कर कपड़ा में छान कर रखले। एक मिट्टी का मटका ले उसके नीचे का हिस्सा (खपड़ा)

अलग कर उस पर ७ कपरोटी कर सुखालें और उसको अग्नि पर रख औषधि डालदे जब औषधि गरम हो जाय तब ही नीबू का रस इतना डाले कि वह लेही से कुछ पतली हो जाय और अग्नि दे जब खुश्क हो जाय तब पुनः नीबू का रस डाले इस प्रकार ७ बार नीबू का रस डाले ध्यान रहे कि लकड़ी के खुरते से चलाता रहे जब सब नीबू का रस सूखासा हो जाय उतार कर ठन्डा कर उसमें ५ तोला घी में भुनी हींग मिला सिल पर पिसवा कर गोली चने बराबर बना छाया में सुखा रखले।

गुण—२ गोली भोजनोपरान्त जल के साथ और दो दो गोली प्रातः सायं चित्रक के क्काथ के साथ देने से मन्दाग्नि दूर हो खूब पाचन होता है यह पाचन दीपन स्वादिष्ट गोली है। यह अनेक रोगों मे अनुपान भेद से दी जा सकती है।

प्रयोग नं० २ मलावरोध पर वटी

—सत्यानाशी (स्वर्ण क्षीरी) पर जब फल आगया हो तब जड़ सहित उखाड़ कर मिट्टी आदि दूर कर छोटे छोटे टुकड़े कर किसी कलई दार बड़े बर्तन में डाल औषधि से दुबारा जल डाल भिगोदे ३ दिन भीगा रहनेदें फिर अग्नि पर चढादें जब ३ हिस्सा जल, जल जाय तब उतार कर और मल कर छानलें और पुनः अग्नि पर चढ़ादें, जब रबड़ी के समान गाढ़ा हो जाय तब उतार रखले ३-४ दिन में में जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब मटर बराबर गोली बना छांय मे सुखा कर रखले।

सेवन विधि—१-४ गोली तक गरम जल के साथ रात्रि को निगल जाने से सुबह खुल कर दस्त हो जाता है। कृमि रोग में देने से कृमि निकल जाती है उपदंश मे चोवचीनी भी रात्रि को २ माशे फकी लगाने से उपदंश का विष भी नष्ट हो जाता है।

वैद्य भूषण श्री० प्रह्लाद दास जी

शङ्कर आ० औषधालय शिवपुरी
ग्वालियर स्टेट

—०—

आपकी आयु ४५ वर्ष के अनुमान है। आप खण्डेलवाल वैश्य परिवार के श्रीमान् ला० तांनूलाल जी के पुत्र हैं। आपने वैद्य भूषण परीक्षा पास की है आप प्रायः धर्मार्थ चिकित्सा करते है।

प्रयोग नं० १—नेत्र रोग पर

फिटकिरी ६ माशे कलमी सोरा ६ माशे

—वर्षा का पानी या गुलाब जल एक बोतल मे पीस कर डालदे। और ३ दिन रक्खा रहने दे बाद को नितार छान कर रखलें दो दो बूंद नेत्रों मे डालने से आंख की सुरखी, पानी गिरना दर्द होना बन्द हो जाता है।

प्रयोग नं० २—पेट दर्द को

—एक साफ बोतल बड़ी सफेद रङ्ग की लेकर उसमे ४० तोला भबका द्वारा निकला जल या वर्षा का पानी भर दो और १ छटांक (५ तोला) गंधक का तेजाब और डमरू यन्त्र में उड़ा हुआ नवसादर का जौहर ५ तोला काली मिर्च ५ तोला नमक ५ तोला।

हींग भुनी ६ माशे कूट कपड़ छन कर मिला कर रखें और उसको जल से तार तक भर दें।

सेवन विधि—५ से ३० बूंद तक २ तोले पानी में मिला कर कांच पात्र में मिलावे। इससे पेट का दर्द, गर्मी दस्त, अजीर्ण, शान्त हो जाता है। ×

वैद्य चूड़ामणि श्री० पं० फतहशङ्कर जी शर्मा

आयुर्वेदाचार्य बूंदी (राजपूताना)

—o—
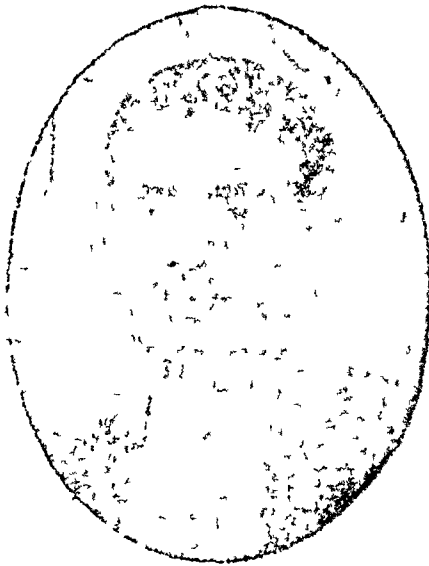
आपका जन्म सं० १९६५ वि० में ब्राह्मण कुल के श्रीमान् वैद्य कालूराम जी शर्मा के यहां हुआ था। आपने मिडिल तक अंग्रेजी और संस्कृत की साहित्य तीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण कर स्व० पं० विशुद्धानन्द जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की। आप धर्मार्थ औषधालय में ८ वर्ष से प्रधान चिकित्सक है।

प्रयोग नं० १—श्वेत प्रदरान्तक वटी

नीम के बीज की मिगी १० तो. मुनक्का बीज निकले हुये १० तो.

विधि—नीम की मिंगी को बारीक पीस उसमे मुनक्का मिला सिल पर मिलावे एक जीव होने पर झड़ बेर के बेर से दूनी बड़ी गोलियां बनालें।

सेवन विधि—मात्रा १ गोली से २ गोली तक।

× प्रयोग अति उत्तम है।

—सम्पादक

अनुपान—बबूल (कीकर) की पत्तियों का क्वाथ। इसके ४१ दिन के लगातार दिन में सिर्फ एक ही वक्त सुबह प्रयोग करने से अत्यन्त बढ़ा हुआ जीर्ण श्वेत प्रदर अवश्य नाश होता है। +

प्रयोग नं० २—उदर शूलान्तक

अफीम १ माशे चूना खाने का बिना बुझा ३२ माशे
हल्दी खाने की ३२ माशे गुड़ पुराना ३२ माशे

विधि—सब को मिला कर गोली १-१ माशे की बनालें और १ या २ गोली गरम जल के साथ निगलनी चाहिये।

गुण—इसके सेवन से दर्द तत्काल बन्द होगा। दर्द वात गुल्म का हो या वायु शूल हो अवश्य लाभ होगा।

कविराज श्री० पं० विश्वनाथ जी त्रिपाठी वै०

विश्वनाथ फार्मेसी सिधावे
पोस्ट रामकोला जि० गोरखपुर

आपका जन्म सन् १९१२ ई० मे श्रीमान् पं० भृगुरासन जी त्रिपाठी के यहां हुआ। आपने व्याकरण मध्यमा उत्तीर्ण कर आयुर्वेद शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। कविराज की उपाधि प्राप्त की है वनस्पति विशेषज्ञ हैं।

+ सिल प० प्रथम नीम का निवाला फिर मुनक्का डाल पीस लें और खरल में कूटें तब एक जीव होता है। —सम्पादक

प्रयोग नं० १ प्लीहान्तक—

ताम्र भस्म १ तोला,	लौह भस्म १ तोला
शुद्ध जमाल गोटा १ तोला	चौकिया सुहागा २ तोला
शु० अमृत विप १ तोला	जवाखार १ तोला
सज्जी खार १ तोला	जंगी हर्रे ३ तोला

कच्ची हल्दी ५ तोला

विधि—इन सबको कूट कपड़छन कर जमींकंद के रस में भावना ५ दे घीकुमारी के रस में २६ घन्टे घोट कर ४ रत्ती की गोली बनाले।

सेवन विधि—एक एक गोली प्रातः दोपहर सायं काल, गर्म पानी के साथ ४० दिन सेवन करने से यकृत सहित प्लीहा वृद्धि नष्ट हो जाती हैं। *

प्रयोग नं० २ उपदंश हर—

शुद्ध रस कपूर	गलुआ
कपूर	एसारहरियोह (उसारे रेवन)
जायफल	जावित्री
लोंग	काली मिर्च

काला जीरा

विधि—समान भागले कूट पीस छान खरल में डाल पानी डाल घोट कर गोली दो दो रत्ती की बना सुखा रखले।

सेवन विधि—सुबह शाम एक एक गोली ताजे जल के साथ निगल जाय। निमक तैल, खटाई, दही, लाल मिर्च, गुड़, स्त्री सहवास इन का त्याग करदे। दूध भात परवल आदि सेवन करे ११ रोज में आराम हो जाता है किन्तु परहेज २१ दिन तक करें।

---

* प्रातः सायं यह गोली और भोजनो परांत एक एक माशे संख चूर्ण शहत के साथ देने से शीघ्र लाभ मालूम हुआ

—सम्पादक

आयुर्वेद शास्त्री श्री० चिरन्जीलाल जी वैद्य

कल्याण औषधालय
बाह (आगरा)

—*—

आपका जन्म पारना निवासी श्री० वैद्य गुलजारीलाल जी जैन के यहां सम्वत १९ ६७ वि० में हुआ था। आपने आयुर्वेद शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की है। कल्याण योग माला मासिक पत्र भी अपने ही सम्पादकत्व में निकाला था जो अब बन्द है। आप प्रतिष्ठित वैद्य हैं।

प्रयोग नं० १ स्वप्न दोष पर

ब्राह्मी बूटी का कूट कपड़ छन कर बराबर की मिश्री मिला कर रखलें। एक तोला प्रातः एक तोला सायं धारोष्ण दूध (तत्काल दुहे हुये दूध) के साथ फाकें। इससे स्वप्नदोष नष्ट हो जाता है।

प्रयोग नं० २ आनन्द कारी लेप

औरतों के नर के बालों की राख और कबूतर की बीट एक एक माशे लेकर २ माशे चमेली के तेल में मिला इन्द्री पर लेप कर स्त्री सहवास करने में अतीव आनन्द आता है।

आयुर्वेदाचार्य पं० विरंचीलाल जी वै० शा०

श्री माहेश्वरी दातव्य औषधालय

इस्लामपुर (जयपुर स्टेट)
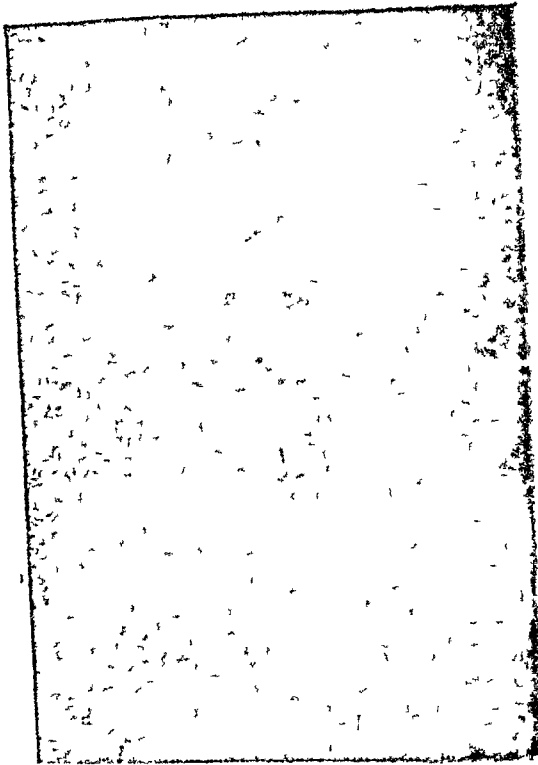
आपका जन्म ब्राह्मण कुल में ग्रा० ओजट्ट पोस्ट चिड़ावा जिला जयपुर निवासी पं० जयदेव जी वैद्य के यहां हुआ। आपकी आयु २८ वर्ष की होगी। आपने व्याकरण पढ़ने के बाद आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त कर जयपुर की वैद्यशास्त्री और वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। आयुर्वेद मनीषी काव्य धुरीण अयोध्या से प्राप्त हुई है।

प्रयोग नं० १—यक्ष्मा हर भल्लातक

—भल्लातक (भिलाये) अच्छे मिंगी वाले लेकर उनको दो तीन दिन गौ मूत्र में भिगो दे फिर उसके नाकू काट कर इंट का चूर्ण (खौर) में एक दिन दबादे फिर गरम पानी से धोकर निम्न प्रकार व्यवहार करे शुद्ध किये यह भल्लातक को बीच मे से काट कर दूध मे बराबर का जल मिलाय गरम करे जब जल, जल जाय दूध मात्र रहे तब छान कर मिश्री मिला कर क्षय रोगी को पिलावे। ध्यान रहे कि पानी रहने न पावे और दूध जलने न पावे दूध रोगी को इच्छानुसार गाय का जितना ले सके लेना चाहिये।

पथ्य—में गाय या बकरी का दूध ही लेना चाहिये ४० दिन अन्न और जल नही दे।

—इससे कठिन अवस्था के क्षय रोगियों को लाभ हुआ है परीक्षा प्रार्थनीय है।

प्रयोग नं० २—केशोत्पादक तैल

चन्दन सफेद का बुरादा ६ माशे	मुलेहठी ६ माशे
मूर्वा ६ माशे	त्रिफला १॥ तोला
नीलोफर ६ माशे	प्रियंगु ६ माशे
बड़ की कोंपल ६ माशे	गिलोइ ६ माशे
लौह बुरादा ६ माशे	जटामांसी ६ माशे
सारिवा दोनों १ तोला	भृङ्गराज रस १ तोला
चमेली के पुष्प पत्ता १ तोला	चित्रक की जड़ ६ माशे
करंज मींग ६ माशे	आमले का रस १ तोला
आम की गुठली मींग ६ माशे	कन्नेर छाल ६ माशे
मुनक्का ६ माशे	केशर ६ माशे
रसौत ६ माशे	बड़ी कटेरी का रस १ तोला
कलिहारी हरी ६ माशे	इन्द्रायन की जड़ ६ माशे
कड़वे परवल के पत्तों का रस १ तोला	गोखुरू ६ माशे
तिल के फूल ६ माशे	बिल्मी (रतिया) ६ माशे
श्वेत सरसों ६ माशे	वच ६ माशे

विधि—सब को लेकर कूटने वाली औषधियों को कूट कर तीन सेर पानी में औटावें और चतुर्थांश शेष रहने पर एक सेर बकरी का दूध मिलावें।

अन्तधूम की हुई घोड़े के खुर की भस्म		६ माशे
हाथी दांत की भस्म ६ माशे		आक का दूध १ तोला
थूहर का दूध १ तोला		शहद, घी १-१ तोला
आंवला	हल्दी	मोथा
लाल पुष्प (जाया के पुष्प)		प्रत्येक ६-६ माशे

—लेकर उपरोक्त बकरी के दूध से कल्क कर तिल का तैल ४० तो० डाल कर तैल पाक की विधि से पाक कर छान शीशी में भरदें

गुण—इसकी मालिश करने से रोम (बाल) उत्पन्न होजाते हैं इसके लगाते रहने और त्रिफला प्रातः सायं सेवन करते रहने से जल्दी लाभ होता है।

श्रीमान् कविराज पं० व्रजमोहन जी नागर वै० शा०

धन्वन्तरि आयुर्वेद औषधालय

बाग मथारामकुंवर स्याल कोट
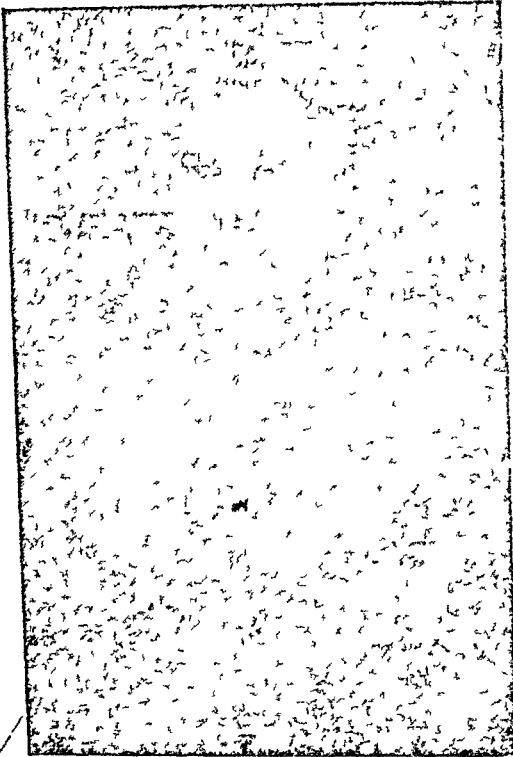
आपका जन्म सन १९२१ ई० को श्रीमान पं० मेला-राम जी नागर वैद्यराज के यहां हुआ। आपने १० वीं श्रेणी तक इङ्गलिश पढ कर लाहौर सनातन धर्म आयुर्वेद कालेज में शिक्षा प्राप्त कर वैद्य शास्त्री उपाधि प्राप्त की और अनु-भव अपने पिता जी से प्राप्त किया।

प्रयोग नं० १ सूखरो रोग पर

अहिफेन	१ तोला	चरस	१ तोला
गिरी बादाम	१ तोला	जायफल	१ तोला
(गिरी का गोला)	१ तोला	छुहारा	१ तोला

शुद्ध घृत २॥ तोला

विधि—पहले बादाम जायफल गिरी छुहारा को मोटा २ कूट कर घृत में मिला अग्नि पर रक्खे जब लाल हो जाय तब (ध्यान रहे जले नहीं) खूब घोटे और शीशी में रखलें।

सेवन विधि—एक रत्ती की पूर्ण मात्रा है बालकों को दो चावल दें। सर्वत्र नीलोफर अथवा चावल के जल के साथ सेवन करावें।

पथ्य में प्रातः दही चावल और सायं काल दाल मूंग और चावल

दें। रोटी वर्जित है ग्रहणी के लिये अव्यर्थ। *

प्रयोग नं० २ यकृत प्लीहा नाशक—

एक पाव नवसादर को १ सेर नीबू के रस में घोट खुश्क कर जोहर डमरू यन्त्र से उड़ालें। ऊपर के पात्र में लगे जोहर को लेलें यकृत प्लीहा के लिये यह जोहर दो रत्ती शंख भस्म २ रत्ती पिला फकावें ऊपर से इमली और आलूबुखारे को पानी में हिम बनाकर पिलावें। इससे यकृत प्लीहा वृद्धि नष्ट हो जाती है। यह जोहर और भी अनेक कार्य में आता है।

वै० भूषण श्री० वैजनाथ प्रसाद जी रजि० वैद्य

संस्थापक सरस्वती वाचनालय
धर्मार्थ औषधालय
सहराँवा पोस्ट कांथा जि० उन्नाव

×—×

आपका जन्म स्वर्णकारवंश में श्रीमान् मगलप्रसादजी हाथी नशीन नम्बरदार के यहां सन १९१२ ई० में हुआ। आप योग्य चिकित्सक हैं। आप की चिकित्सा से प्रसन्न हो हाकिम परगना और तहसीलदार साहेब ने बड़ी सराहना की है।

---

* प्रयोग उत्तम हैं। तक्र विशेष दें, अन्न कम दें।

—सम्पादक

प्रयोग नं० १ दन्त रोग पर—

सिरका (ईख का बना) २॥ तोला, गंधक का तेजाब ३ माशे
अकरकरा असली १ तोला

विधि—एक कांच के छोटे गिलास में सिरका और गंधक का तेजाब डाल कर मिलादें फिर उसमें अकरकरा भिगोदें शाम के समय और प्रातः काल उसमें से अकरकरा निकाल खरल कर चना बराबर गोली बनालें। खोखली डाढ़ या दांत में रख दांत से ही दबा कर नीचे मुख कर बैठ जाय तब लार निकल दर्द बन्द हो जाता है।

प्रयोग नं० २ रक्तशोधक—

शुद्ध अफीम १ माशे
शुद्ध कपूर ४ माशे
शुद्ध रसौत ८ माशे
अनार के पत्ता का रस

विधि—तीनों औषधियों को खरल में डाल अनार के पत्तों के रस में मर्दन कर दो दो रत्ती की गोली बनावे। अनुपान श्वेत दूर्वा (सफेद दूब) ४ तोले ले ४६ तोले पानी में औटावे जब ४ तोला शेष रहे तब छान कर गोली १ या २ खिला ऊपर से पिलावे।
इस प्रकार प्रातः सायं सेवन कराने से रक्तप्रदर-रक्तार्श रक्तातिसार रक्तपित आदि किसी कारण से रक्त जा रहा हो इसके सेवन से अवश्य रुक जाता है। ×

× जब शीत प्रधान औषधियों से रक्त बन्द नहीं होता अथवा जिन को शीत वीर्य औषधियां देना उपयुक्त नहीं तब ऐसे समय में यह अति लाभदायक सिद्ध होती है।

दन्त रोग पर—जो प्रयोग है यह जिनके दांत डाढ़ खोखले हो जाते हैं उनको विशेष लाभ प्रद है।

—सम्पादक

प्रोफेसर श्री० कविराज बालकराम जी शुक्ल शा०

आयुर्वेदाचार्य बाबा काली कमली वालों का आयुर्वेदिक महा विद्यालय ऋषि केश जिला देहरादून

आपका शुभ जन्म संखड़ा ग्राम पोस्ट नेरी जिला सीता पुर के कान्य कुब्ज ब्राह्मण कुल मे श्रीमान् पंडित रघु-दयालु जी शुक्ल वैद्यराज के यहां सम्वत् १६५४ में हुआ था। आपका कुटुम्ब सदैव से प्रसिद्ध चिकित्सकों में प्रसिद्ध रहा है। आपने व्याकरण की आचार्य और वैद्यक की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा पास की। आपको काशी के वैद्य सम्मेलन से आयुर्विज्ञानाचार्य की उपाधि और स्वर्ण पदक मिला। आप अ० भा० व० आयुर्वेद महा मंडल के आयुर्वेद विद्या पीठ के तथा अन्य संस्था एवं विद्यालयों के परीक्षित भी रहे हैं। अध्यापन कार्य तो आप सन् १६२४ से बराबर करते आ रहे हैं आप वैद्यक पत्रों के सम्पादक भी रह चुके है साथ ही आपने शल्य तन्त्र, उपदंश विज्ञान, गनोरयािविज्ञान मलेरियाविज्ञान, मानस शास्त्र, गुप्तेन्द्रविज्ञान, संक्रामक रोग विज्ञान आदि वैद्यक की उत्तमोत्तम पुस्तकें भी लिख आयुर्वेद साहित्य की सेवा की है। आप से वैद्य समाज खूब परिचित हैं इसलिये यह थोड़ा परिचय दिया गया है।

प्रयोग नं० १ मधु मेहघ्न—

शु० कपूर	६ माशे	असगन्ध	३ माशे
बिधारा	६ माशे	शीतल चीनी	१ तोला

* पलास पुष्प ६ माशे	तालीसपत्र ३ माशे
लवङ्ग ३ माशे	नागर मोथा ३ माशे
त्रिकुटा ६ माशे	त्रिफला ६ माशे
वंसलोचन १ तोला	गिलोय का सत्व १ तोले

नाग केशर — जायफल — दाल चीनी

मीठा कूठ — सफेद इलायची के बीज — शृंग भस्म

रससिन्दूर षटगुण वलिजारित — लोह भस्म ६-६ माशे

अभ्रक भस्म नं० १ तोला (हिंगुलद्वारा जारित)

त्रिवंग भस्म ६ माशे	चांदी भस्म ३ माशे
स्वर्ण भस्म ३ माशे	सुहागे का फूला ३ माशे

विधि—प्रथम कास्टादि औषधियों को कूट कपड़ छन कर अलग रखले फिर एक खरल में रस भस्म को मर्दन करें जब अच्छी तरह मर्दन (घुट जाय) करे उसके बाद काष्टादि औषधियों का कपड़ छन चूर्ण मिला करेले के पत्तो के स्वरस की ७ भावना दें फिर जामुन के पत्तों के रस की ७ भावना दे फिर २ माशे कस्तूरी को जल में प्रथक खरल में मर्दन कर उस पहले खरल मे डाल मर्दन कर दो-दो रत्ती की गोली बनाले।

अनुपान मात्रा गुण—विल्व पत्र का स्वरस १ तोला, मधु ४ माशे के साथ प्रातः और सायं एक-एक गोली सेवन करावें। भोजनोपरान्त लोध्रासव (चरकोक्त) १॥-१॥ तोला की मात्रा से लेवे। सायं ४ बजे के समय गुड़मार वटी पत्ती ३ माशे काली मिर्च ४ संख्या में लेकर जल से पीस कर गोली बना प्रति दिन सेवन करें। ४० दिन तक निरन्तर प्रयोग करने से पूर्ण लाभ होता है निम्न लिखित तैल की मालिश भी करता रहे।×

---

* पलाश पुष्प (ढाक के फूल जिसे टेसू के फूल भी कहते) त्रिकुटा त्रिफला की तीनों चीजों को मिला कर नौ-नौ माशे ले अर्थात् प्रत्येक चीज तीन-तीन माशे।

× इस प्रयोग में गुड़मार वटी का सेवन लिखा है वह जब तक शर्करा आती रहे तब तक ही सेवन करावें सिर्फ वटी ही सेवन करावे अन्यथा यह प्राकृतिक जो शरीर में रहना आवश्यक है वह भी शर्करा को नष्ट कर रोगी को हानि करती है अतः मूत्र परीक्षा बार-बार कर लेनी चाहिये। —सम्पादक

प्रयोग नं० २—मधु मेहान्तक तैल

मेंहदी के बीज	हल्दी	करंज
गूलर की छाल	दारू हल्दी	काली अगर
नागर मोथा	मरोड़ फली	तेजपात
कूट कड़वा	कुटकी	आमला
असगन्ध	मुलहठी	हरड़
सफेद चन्दन	रार	बहेड़ा
दालचीनी	इलायची छोटी	सुगन्ध वाला
ब्रह्म दण्डी	चव्य	खरैटी
धनियां	इन्द्र जौ	कंघी
मजीठ	राल	कमल के फूल
पठानी लोध	सौं	सोया
वच	काला जीरा	खस
जावित्री	वांसा	तगर

प्रत्येक १-१ तोला

सितावर का स्वरस ४ सेर	लाख का रस ४ सेर
दही का मस्तु (पानी) ४ सेर	गौ दुग्ध ४ सेर
तिल का तैल	४ सेर

विधि—तैल पाक विधि से तैल को मूर्छित कर तैल बनावें अर्थात् तिल तैल का प्रथ। मूर्छित कर इसमें उपरोक्त स्वरस रस पानी दूध डाल कर काष्टौषधि की लुगदी (कल्क) बना कर सब एकत्र कर अग्नि पर पकावें जब तैल मात्र रहे तब छान कर रखले।

गुण—इस तैल को मधुमेह रोगी के मालिश कराने से सब वातोपद्रव नष्ट हो शरीर पुष्ट होता है।

पथ्य—"यव भक्षस्तु भवेत्प्रमेही" इस महर्षि के वाक्य का पालन करने से ही पथ्य का निर्वाह होता है। मधुर पदार्थ त्याज्य हैं। पत्ते वाले शाक खाने चाहिये। कन्द वाले शाक नहीं खाने चाहिए प्रातः भ्रमण अधिक लाभप्रद है।

आयु० श्री० पं० ब्रह्मानन्द जी दीक्षित विद्यालङ्कार

चिकित्सक--आयुर्वेदीय औषधालय, राजा की मन्डी; आगरा ।
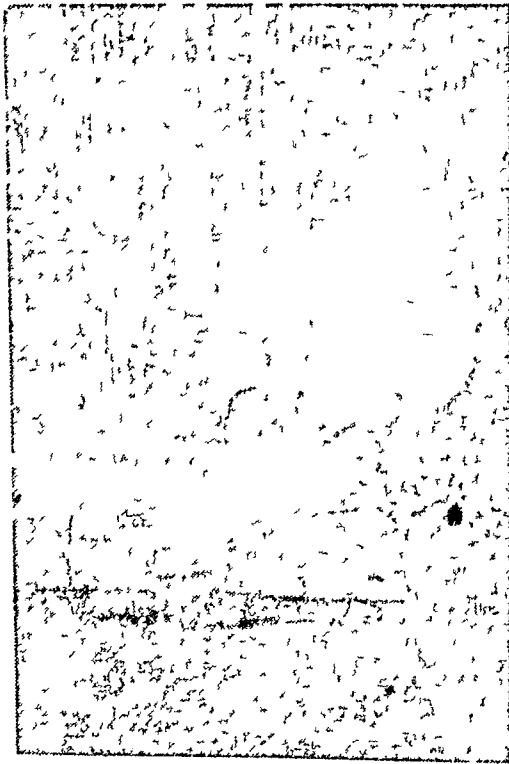
आपका जन्म सम्वत १९४९ वि० में श्रीमान् पं० चतुर्भुज जी दीक्षित तहसीलदार के यहां हुआ था। आप गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी के स्नातक और विद्यालङ्कार हैं। आपने अष्टाङ्ग आयुर्वेदिक कौलेज कलकत्ता में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण की है। अखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा पास की है। आप प्रोफेसर भी रह कर चिकित्सा शास्त्र पढ़ा चुके हैं। अ० भा० आयुर्वेद स्नातक सम्मेलन के सभापति भी रह चुके है। आप विद्वान और मिलनसार अच्छे चिकित्सक हैं।

प्रयोग नं १ सुजाक नाशक–

रससिन्दूर ६ माशे शुद्ध बैरोजा का चूर्ण ६ तोला, फिटकिरी ४ तोला,

विधि—सबको मर्दन कर रखले। मात्रा १०॥ रत्ती दूध की लस्सी के साथ प्रातः सायं सेवन करने से नवीन और पुराना सुजाक नष्ट हो जाता है। कष्ट प्रथम दिन ही कम हो जाता है।

प्रयोग नं २ प्रमेह पर–

तुलसी के बीज १ तोला फिटकिरी २ तोला, मिश्री ३ तोला

विधि—चूर्ण बनाकर रखले। दूध की लस्सी के साथ सुबह एक बार २-३ माशे की मात्रा लेने से सब प्रकार के प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। यदि औटे दूध में घृत मिश्री मिला उसके साथ फांके तो स्तम्भन और वाजीकरण गुण कारक हो जाता है।

आयु० वाचस्पति श्री० पं० विद्याप्रकाश जी वाजपेयी

दि प्रकाश मेडीकल हाल रजिस्टर्ड
औरंगाबाद-खीरी
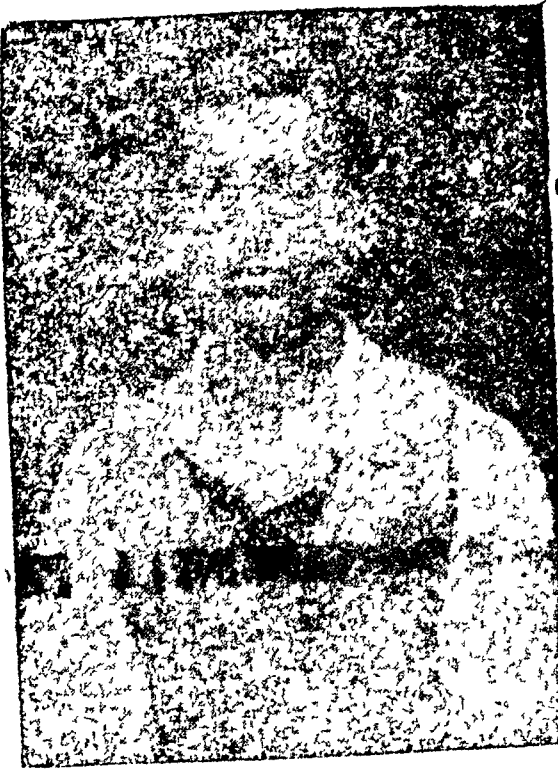
आपकी आयु लगभग ३० वर्ष की होगी। आप ब्रह्मावली ग्राम निवासी राज वैद्य श्री० पं० नन्दलाल के पुत्र हैं। आपके यहां परम्परा से वैद्यक कार्य चला आया है और घर पर ही चिकित्सा विधि का ज्ञान प्राप्त किया है।

प्रयोग नं० १ प्रदर नाशक वटी—

× शण भस्म २ तोला, रस सिन्दूर १ तोला
यशद भस्म २ तोला लोह भस्म २ तोला
वंग भस्म १ तोला संग जरात भस्म २ तोला
कौड़ी भस्म १ तोला।

विधि—सब औषधियों को खरल में डाल घोटें, पलाश के फूल के रस की ३ भावना, खिरेटी के रस की ३ भावना दें एक एक रत्ती की गोली बना सुखा रखलें।

उपयोग विधि—गूलर के पत्तों का स्वरस १ तोला मधु ३ माशे में १ गोली मिला चाटें इस प्रकार प्रातः सायं सेवन करने से प्रदर रोग नष्ट हो जाता है

× शण भस्म—पटशन जिसकी रस्सी बनती है उस की भस्म कर डालनी चाहिये— लेखक

प्रयोग नं० २ गंज नाशक-

पारा, गंधक, मुर्दासंग, कबीला, समान भाग प्रथम, पारद गंधक की कज्जली कर शेष औषधि डाल खरल कर रखलें।

उपयोग विधि—गंज स्थान को नीम के पानी से धोकर ऊपर घी औषधि घी में मर्दन कर लेप करदे। इस प्रकार १ दिन में २-३ बार लेप करें। यह औषधि प्रांत तीसरे दिन लगाय गंज नहीं लगन्दे।

वैद्यरत्न पं० बनमालीप्रसाद जी शर्मा आयु० विशा०

गणेश औषधालय पाटन पोल गेट
कोटा (राजपूताना)
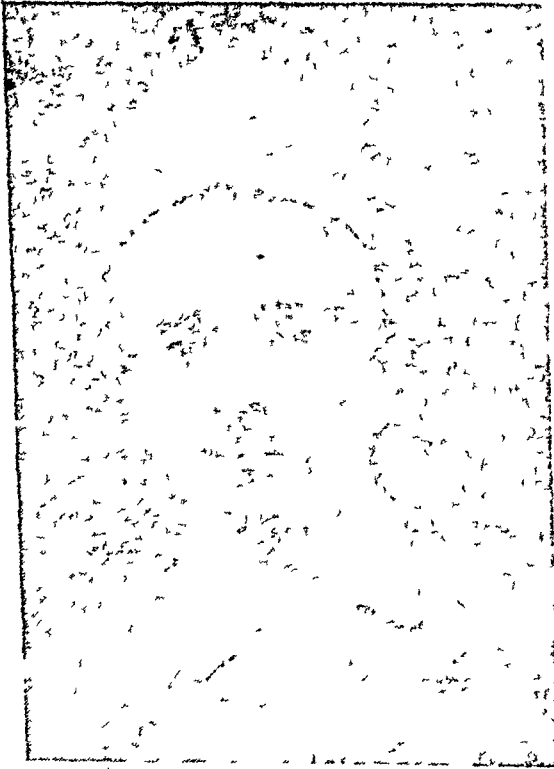
आपका जन्म ब्राह्मण कुल में श्री० पं० कृष्ण प्रसाद शर्मा वैद्य के यहां हुआ। आपके पिता जी भी आयुर्वेद के सिद्ध हस्त चिकित्सक थे। आपने बनवारी लाल आयुर्वेद विद्यालय देहली से वैद्य परीक्षा एवं विद्यापीठ से आयुर्वेद विशारद की परीक्षा दी।

प्रयोग नं० १—कासान्तक क्षार

अड़ूसे के पत्ता २० तोला
नीम के पत्ता २० तोला
अपामार्ग २० तोला
कटेरी पञ्चाङ्ग २० तोला
धतूरे के पत्ता २० तोला
नमक सामर ४० तोला

भिषग्रत्न बा० दलजीत सिंह जी कोषाकार

रामपुरी पोस्ट चुनार जि० मिर्जापुर

विधि—सब को एक हांडी में भर कर मुख बन्द कर कपरौटी कर गजपुट की अग्नि में फूंक दें। आग शीतल होने पर निकाल कर पीस छान कर रखलें।

सेवन विधि—खाली पान के टुकड़ा में ४-५ रत्ती रख कर रोगी को खिलावें। इससे खांसी श्वास को लाभ होता है।

प्रयोग नं० २—वीर्य दोष हर—

सोने के वर्क १ माशे	कस्तूरी २ माशे
वर्क चांदी ३ माशे	केशर ४ माशे
छोटी इलायची के दाने ५ माशे	जायफल
वंशलोचन ६ माशे	जावित्री ८ माशे
वङ्ग भस्म ६ माशे	शु० शिलाजीत १० माशे

विधि—पान के अर्क में गोली १-१ रत्ती की बनावे सुबह शाम रोगी को मक्खन या मलाई में ४० दिन निरन्तर सेवन करावें। तैल, गुड़, खटाई, लाल मिर्च, स्त्री सहवास नहीं करें।

श्रीमान् डा. भगवानदास जी भंडारी एच. एम. बी. एस.

राष्ट्रीय आरोग्य मन्दिर, ललितपुर झांसी

—*—

आपकी आयु २५ वर्ष के लगभग है। आप श्रीमान लाला लखमीचन्द जी भंडारी जैन के सुपुत्र हैं। आपने आयुर्वेद और होमियो पैथिक शिक्षा प्राप्त की है।

प्रयोग नं० १-वीर्य विकार पर-

सितावर ५ तोला	मूसली १० तोला
तुलसी के बीज ५ तोला	लौंग ५ तोला
जावित्री २॥ तोला	शु० कुचला ७॥ तोला
संखिया शु० १। तोला	त्रिफला १५ तोला

विधि—आमले के रस में घोट कर खुश्क करलें ।

मात्रा—१ रत्ती से ६ रत्ती तक प्रातः सायं दूध मिश्री के साथ फांकें।

प्रयोग नं० २-रज विकार पर-

केशर काश्मीरी २ तोले	जायफल २ तोले
गूलर की छाल २ तोले	अशोक की छाल २ तोले
कलमी शोरा २ तोले	यवक्षार २ तोले

विधि—सबको कपड़ छन कर रखलें। २ माशे औषधि में १ तोला काले तिल मिला कर सेवन करावे। प्रातः सायं गरम जल के साथ या दूध के साथ दें। यह सब प्रकार के रज विकार को उत्तम है।

—×※×—

डा० भाई जी हकीम पुलवाले एल०एम०पी०सी०पी०

मोहल्ला चौक बाजार, बुरहानपुर जिला निवाड़ सी० पी०

आपकी आयु ४८ वर्ष की है। आप वैश्य कुल के श्रीमान् ला० रामदास जी हकीम पुल वाले के सुपुत्र हैं। आपने राबर्टसन मेडी-कल स्कूल नागपुर से डाक्टरी कोर्स पूरा किया और डिग्री ली। होमियोपैथिक, दांत रोग परीक्षा के विशेष परीक्षायें दी। आयुर्वेद अपने पिता जी से घर पर ही पढ़ा।

प्रयोग नं० १ बल वर्धक–

खारक बड़ी ७ (छुहारे) लोहवान ३ माशे गूगल ६ माशे

विधि—खारक का मुख फोड़ गुठली निकाल लोहवान गूगल मिला (मिश्रण) कर उन सातों में बराबर बराबर भरदें और मुख बन्द कर भूभल में भून लेना चाहिये बाद कूट कर मूंग बराबर गोली बना लेनी चाहिये।

सेवन विधि—सुबह शाम दो दो गोली दूध के साथ २१ दिन सेवन करने से शारीरिक और मानसिक दुर्बलता नष्ट हो जाती है ×

प्रयोग नं० २ नपुंसकता हर अर्क–

पलास के वृक्ष के जड़ का रस निकाल कर २ बूंद सुबह २ बूंद शाम को पानी में सेवन करने से २१ दिन में सर्व प्रकार की नपुंसकता नष्ट हो जाती है।

रस निकालने की विधि–पलास वृक्ष की १ इंच मोटी जड़ जमीन से निकाल कर काट देना और उसी जड़ का वह भाग जो वृक्ष से लगा है उसको १ कांच की शीशी जिसका मुख १ इन्च का हो लगा देना। यह जड़ १ इंची शीशी के मुख में फंसी रहे और फिर जड़ समेत शीशी के ऊपर कपड़ मिट्टी कर वहीं गाड़ दे (ढक दे) १४ घन्टे बाद निकाल कर देखें शीशी में उत्तम लाल रंग का रस (अर्क) निकल आवेगा उसे कार्क लगा रखले।

× छुहारे मुलायम हों तब तो गुठली निकाल भरले अन्यथा दूध में औटाकर मुलायम करलें। गरम भूभल (गरम अग्नि) में भूनने से पहले छुहारे पर कपड़ा लपेट दें या आटा (गेहूं का चून) लगा दें। —सम्पादक

आयुर्वेद केशरी श्री० पं० श्री भुवनेश्वर जी झा वैद्य

मिथला रत्न औषधालय, लक्ष्मीपुर-दरभंगा

—॥×॥—
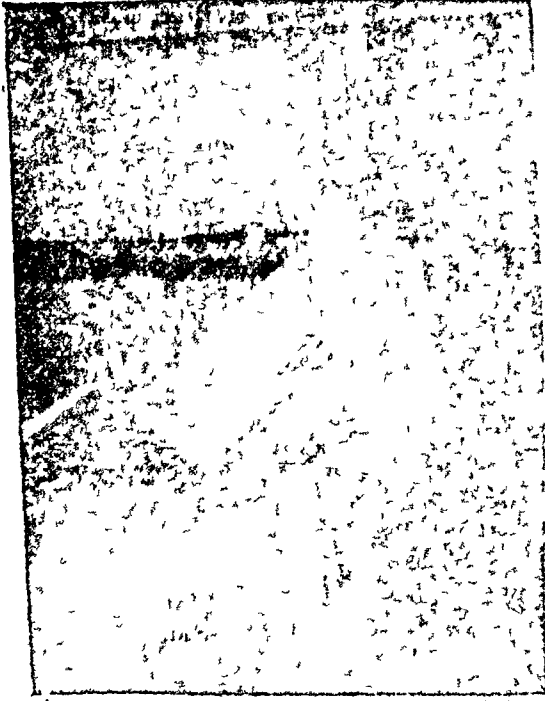
आपका जन्म सं० १६३० वि० में श्रीमान पं० जयानन्द जी झा के यहां हुआ। आप ५५ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं आप विद्वान अनुभवी पुराने वैद्य हैं। आपको वैद्य मनीषी, आयुर्वेद केशरी की उपाधियां मिली हैं। आपने पुस्तकें भी लिखीं हैं, पुराने लेखक भी हैं।

प्रयोग नं १ पुराने ज्वर पर—

कूट, कायफल, कनक बीज, समान भाग ले अदरख के रस में घोट पीस कर चना बराबर गोली बना सुखा कर रखलें।

उपयोग—बलगम वाले ज्वर रोगी को अदरख के रस और मधु के साथ प्रातः सायं। बिना बलगम वाले ज्वर रोगी को तुलसी पत्र के रस और मधु के साथ प्रातः सायं देने से पुराना ज्वर जाता रहता है।

प्रयोग नं० २ उपदंश हर योग—

भांगरा का मूल काट कर फेंकदें पावभर अपामार्ग बिना मूल और बिना साखाका आध सेर दोनों को जवकुट कर ६ माशे सिगरफ रूमी महीन बारीक चूर्ण कर मिलादें।

उपयोग—उस चूर्ण से १ तोला ले चिलम में रख आग रख रोगी को निर्वात स्थान पर बैठाल कर शरीर को कम्बल से ढक कर चिलम पिलावें। दिन में ३-४ बार पिलावे। पसीना आने पर पोंछ दे। पसीना सूखने पर तालाब में स्नान कर लिया करे। पथ्य में गाय का दूध, भात, बिना लवण का सेवन करावें। इससे बहुत जल्दी उपदंश (टांकी) रोग नष्ट हो जाता है।

चिकित्सक श्री० पं० मोहनदत्त जी शास्त्री वै०

श्री तिलोकचन्द्र सगावगी धर्मार्थ औषधालय
कटनी सी० पी०

आपकी आयु लगभग ४० वर्ष की होगी आप श्रीमान् पं० हल्कूराम जी वैद्य के सुपुत्र हैं। आपने धर्म शास्त्र और कर्मकांड की पूर्ण योग्यता प्राप्त कर आयुर्वेद का अध्ययन किया है। वैद्य भूषण, आयुर्वेद शास्त्री परीक्षायें पास की हैं।

प्रयोग नं० १ कास रोगान्तक वटी—

वांसा (अड़ूसा) की जड़ का बकल	२॥ तोला
अफीम शु०	१॥ माशे

विधि—शकर (खांड़) चीर खिस्त दोनों को छोड़ शेष औषधियों को कपड़ छन करलें पश्चात चीर खिस्त शकर डाल सबको मिला खरल कर रखलें।

सेवन विधि—एक एक तोला औषधि प्रातः सायं ताजे जल के साथ फकावें। यह १५ दिन सेवन कर फिर भल्लातक वटी सेवन करें।

महात्मा श्रीमान् अम्बालाल जी आयुर्वेद विशारद

श्री महात्मा औषधालय

चार भुजारोड (आमेट-मेवाड़)

आपका जन्म सं० १९७४ वि० में आमेट से १ मील दूर एक ग्राम में महात्मा कुल के श्रीमान् महात्मा अगर चन्द जी के यहां हुआ। आपने आयुर्वेद विशारद परीक्षा पास की है और ३-४ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर सर्व साधारण का उपकार कर रहे है।

प्रयोग नं० १ अर्श रोग पर—

नीम के फल की गिरी २ तोला   रसौत २ तोला
कुड़ा की छाल २ तोला   गोपी चन्दन २ तोला
बकायन के फल की गिरी ५ तोला

विधि—सबको खरल कर चूर्ण बना कर रक्खें। २-३ माशे दही के अनुपान से प्रातः सायं सेवन करावे। मस्सा बाहर निकला हुआ

हो तब सोमल (संखिया) पानी में घिस मस्से पर बिन्दु मात्र लगादे। इसके प्रयोग से मस्सा फूल कर गिर जायगा। व्रण को भरने के लिये गुदा पर गुड़ का हलवा बना कर बांधें। प्रयोग के समय रोगी को घृत मिश्रित दूध प्रचुर मात्रा में देते रहना चाहिये।

प्रयोग नं० २ उष्ण वात भञ्जन—

वंग भस्म	१ तोला	शिलाजीत शुद्ध	१ तोला
इलायची छो०	१ तोला	मिश्री	३ तोला

विधि—सबको कपड़ छन कर छः छः माशे जल के साथ फकावें। १ महीने में सुजाक नई पुरानी उपद्रव सहित नष्ट हो जायगी।

वैद्यभूषण श्री० पं० मदनलाल जी त्रिपाठी

जनकपुरा—मन्दसौर (मालवा)

—०—

आपकी आयु ३७ वर्ष की है आप ब्राह्मण कुल में श्रीमान् पं० हजारीलाल जी वैद्य के सुपुत्र हैं। आपने पिता जी से ही आयुर्वेद पढ़ा है। वैद्य भूषण की उपाधि मिली है।

प्रयोग नं० १ रक्त प्रदर पर ठन्डाई

× संग जराय ३ तोला गुल्तानी मिट्टी ३ तोला
सफेद कत्था ३ तोला मिश्री १० तोला

उपयोग विधि—सब को कूट छान कर रखलें। १॥ तोले दवा रात्रि को ५ तोले पानी में भिगो दें। सुबह भांग की तरह पीस छान लें। पानी १० तोला रहना चाहिये (पांच तोला और मिलादें) रक्त प्रदर ३-४ रोज में नष्ट हो जाता है।

प्रयोग नं० २ श्वेत प्रदर नाशक चूर्ण

सफेद चन्दन कुरैया की छाल लोध
कमल केशर जटामांसी खस
नाग केशर नागर मोथा झरबेर
बेल कागूदा इन्द्र जौ अतीस
सूखे आमले रसौत आम की गुठली की गिरी
मोचरस कमल गट्टा की गिरी मजीठ
इलायची अनार के बीज सोंठ
जामुन की गुठली की गिरी कूठ मीठा कत्था सफेद
अशोक छाल गूलर के फल सूखे

उपयोग विधि—सब समान भाग ले कूट कपड़ छन कर रखलें। ६-६ माशे सुबह शाम शहद डाल उसके साथ फकानें। १५ दिन में ही श्वेत प्रदर नष्ट होजाता है।

× सङ्गजराहत—को संलखड़ी भी कहते हैं। इसकी भस्म रसतन्त्रसार व सिद्ध प्रयोग पुस्तक के अनुसार बना कर डालनी चाहिये; अथवा उसे साफ कर गुलाब जल में मर्दन कर डालनी चाहिये।

—सम्पादक।

वैद्यराज श्री० रघुवीर शरण जी आयुर्वेदाचार्य

श्री सिहानिया आ० औषधालय

खुरजा जि० बुलन्दशहर

—o—

आपका जन्म सं० १९६१ वि० को वैश्य कुल भूषण श्रीमान् लाला भूरामल जी के यहां हुआ। आपने व्याकरण शास्त्र का अध्ययन कर वैद्य रत्न परीक्षा पास की उसके बाद वैद्य सम्मेलन की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण कर चिकित्सा कार्य किया। धर्मार्थ औषधालय के प्रधान वैद्य रहे हैं।

प्रयोग नं० १--वायु रोग नाशक

कड़वी तुम्बी का गूदा १ तोला   हरड़ का बक्कल ५ तोला

मुसब्बर २॥ तोला   सुरञ्जान शीरी २॥ तोला

केशर   ६ रत्ती

विधि—सबको कूट कपड़ छन कर ग्वार पाठे के रस में घोट चने बराबर गोली बना सुखा रखलें।

गुण—प्रातः सायं ४-४ गोली उष्ण दुग्ध अथवा उष्णोदक से निगलने से वायु रोग शान्ति होते हैं।

प्रयोग नं० २-गर्भश्राव रोधक—

गली सुपारी ६ माशे   सफेद कत्था ७ माशे

लौंग ६ रत्ती गोंद बबूल (चुनिया) ६ माशे
माजूफल नग ४

उपयोग विधि—निम्नांकित क्वाथ से एक बालिश्त सफेद बारीक कपड़ा (मलमल) तर करके उपरोक्त औषधियां कूट कपड़ छन कर ३ माशे उस कपड़े पर बुरकी लगा कर बत्ती बना योनि में प्रवेश करनी चाहिये। इससे रक्त बहना बन्द होजाता है। गर्भ रुक जाता है और रक्त प्रदर का भी रक्त रुक जाता है।

क्वाथ—अनार की छाल २० तोला अनार की कली नग ४
सफेद फिटकरी का फूला १ तोला माजूफल नग २

—आध सेर पानी में औटावे और पाव भर रहने पर छान कर कपड़ा भिगोवें।

राजवैद्य श्री० वैद्य रामरतन जी निगम

जसवन्त नगर—इटावा

—o—

आपका जन्म सं० १९५१ में कायस्थ कुल के श्रीमान् बा० चन्दीप्रसाद जी निगम के यहा हुआ। आपने एफ० सी० एच०, एम० बी० एफ० आदि उपाधि प्राप्त की हैं। राज्य वैद्य की उपाधि मिली है।

प्रयोग नं० १ बालकों की पेचिश पर—

हींग अफीम, केशर जायफल छुहारा

विधि—छुहारे छोड़ शेष सब औषधियों को एक एक माशे लेकर पीस कर छुहारे की गुठली निकाल उसके भीतर भर कर धागे से बांध कर गुंधे हुये आटे में लपेट कर वाटी सी बना भूभल में दाबदे जब आटा सुर्ख हो जाय तब निकाल आटा और धागा अलग कर सिल पर पीस बाजरे बराबर गोली बनाले।

सेवन विधि—एक एक गोली सोंफ के अर्क या माता के दूध के साथ देने से बालकों के दस्त, पेचिश नष्ट हो जाती हैं।

प्रयोग नं० २ सुजाक नाशक—

बंश लोचन	१ तोला	शीतल चीनी	१ तोला
रेमत चीनी	१ तोला	जीरा सफेद	१ तोला
बिजय सार	१ तोला	कलमी शोरा	१ तोला
छोटी इलायची के बीज	१ तोला	शहद	७ तोला

विधि—सबको कपड़ छन कर शहद मिला रखलें छः छः माशे सुबह शाम जल के साथ लें। पथ्य में दूध, भात मीठा करलें। तैल मिर्च खटाई नहीं लें। सुजाक के लिये उत्तम। अधिक मवाद आवे तब गुलाब जल और जल मिला पिचकारी दें। +

+ अधिक मवाद आने पर—गुलाब जल में जल मिला पिच-कारी देने के स्थान में-शुद्ध रसौत, फिटकरी, कत्था, सोरा कलमी मेंहदी के पत्ता १-१ तोला ले, एक सेर पानी में औटावें, जब तीन पाव पानी रहे तब छान कर और नितार कर पिचकारी लगाने से अधिक लाभ होता है।

—संपादक।

वैद्यराज पं० रामचरणलाल जी दीक्षित बी० ए०

लोहार मण्डी, बुरहान पुर सी० पी०
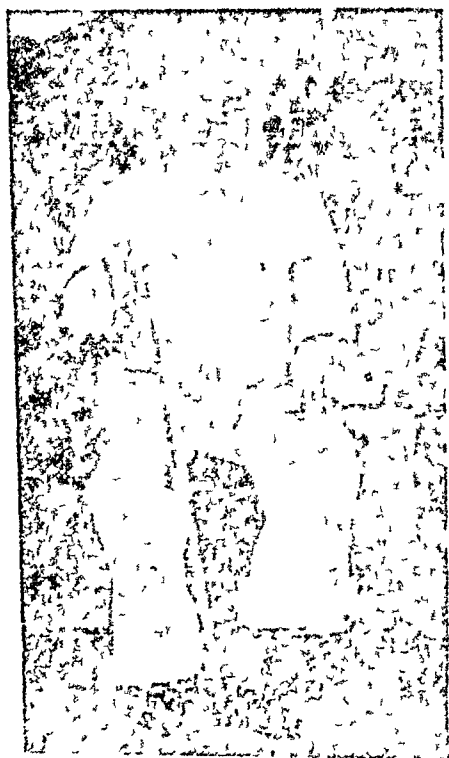
आपकी आयु ५० वर्ष की है। आप श्रीमान पं० बिहारीलाल जी दीक्षित वैद्य के सुपुत्र है। आपके यहा परम्परागत से चिकित्सा कार्य होने से आयुर्वेद की शिक्षा घर पर ही प्राप्त की।

प्रयोग नं० १ आम वात रोग पर-

ताल भस्म (तबकी हरताल भस्म) एक एक रत्ती, अण्डी (एरण्ड) के पत्तों का रस १ तोला, गो घृत १ तोला तीनों को मिलाकर पीना चाहिये। प्रातः और सायं काल दो समय।

गुण—इसके सेवन से आम वात रोग पर जिसमें घुटने वगैरह मे दर्द एवं शोथ हो अवश्य ही १४-१५ दिन मे नष्ट हो जाता है। पथ्य में दूध रोटी या घी रोटी ही खानी चाहिये। ×

× तबकी हरताल भस्म वै० बांकेलाल जी गुप्त बिजयगढ़ द्वारा मंगाकर हम व्यवहार करते रहे है। अतः भस्म की विधि हमारी परीक्षित न होने से नही लिखी।

—लेखक

प्रयोग नं० २ तीहा पर—

खजूर के वृक्ष से तक्र के समान जल टपकता है उसे ताड़ी या नीरा भी कहते हैं उसको १०-१५ तोला लेकर आधा माशा फिटकरी का फूला मिला कर सुबह शाम पिलावें। १०-१२ दिन तक कोई लाभ नही मालूम होगा उसके बाद तीहा (तिल्ली) कम होती मालूम होगी। ३-४ महीने देने से बढ़ी हुई तिल्ली घट जायगी। और पाचन शक्ति बढ़ जायगी।×

आयुर्वेद मनीषी श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी शर्मा

साहित्य भूषण, गढ़ा कोटा जिला सागर सी-पी०

-o+o-

आपका जन्म सम्वत् १९६१ में ब्राह्मण कुल के श्रीमान् पं० भैयालाल जी दुबे के यहां हुआ। आपने हिन्दी साहित्य में अच्छी योग्यता प्राप्त कर आयुर्वेदाध्ययन किया और अयोध्या के संस्कृत विद्या मन्दिर ने आपको वैद्य धुरीण और आयुर्वेद मनीषी की उपाधि प्रदान की है।

आप पुराने लेखक हैं।

× यह नशा लाने वाली है पर १० तोला प्रति दिन देने से नशा का अभ्यास नहीं पड़ता फिर भी एक एक तोला कम करके ही छुटानी चाहिये।

—सम्पादक

प्रयोग नं० १ रक्तार्श हर चूर्ण-

शुद्ध जिमीकंद ३२ भाग	चीते की छाल १६ भाग
सोंठ ४ भाग	काली मिर्च २ भाग

विधि—जमीकंद को अरण्डी के पत्तों में लपेट कर अग्नि में (भूभल) में भरता की तरह भूनलें और छोटे छोटे टुकड़ा कर पीसलें साथ ही अन्य औषधियां भी पीस कर मिलाकर छाया में सुखा पुनः पीस छान कर रखलें ।

व्यवहार विधि—२ माशे से प्रारम्भ कर ६ माशे तक बढ़ावें और दिन मे ३ बार जल के साथ फंकावें । इसमे एक सप्ताह में लाभ और १ वर्ष के भीतर अर्श रोग नष्ट हो जाता है ।

प्रयोग नं २ अर्श हर लेप-

हीरा कसीस		सेंधा निमक
दन्ती	कन्नेर की जड़	चीते की छाल

विधि-समान भागलें कूट कर चूर्ण करलें । पश्चात इसी चूर्ण को आक के दूध की ७ भावना दें और छाया में सुखालें । पश्चात इसे तिल के तैल में पकावें और पकने पर घोट कर लेपवत् कर शीशी मे रखलें ।

व्यवहार विधि—इसको मस्सों पर लगावे शौच क्रिया के बाद दोनों समय । बगैर ओपरेशन के मस्से गिर जाते हैं । बादी पदार्थ से परहेज रक्खें ×

× –इसके लगाने और उपरोक्त जमीकंद वाले प्रयोग को सेवन कराने से लाभ तो अवश्य होता है पर देर से

—सम्पादक

श्रीमान् वैद्य रतनलाल जी गुप्त वैद्य शास्त्री

गुप्ता आयुर्वेदिक फार्मेसी साँकुरा, पो० दादों (अलीगढ़)

—०—

आपका जन्म सं० १९६७ वि० वैश्य कुल के श्रीमान् वैद्य मिश्रीलाल जी के यहां हुआ। आपने विद्यापीठ आगरा की वैद्य भूषण और वैद्य शास्त्रीपरीक्षा उत्तीर्ण की हैं।

प्रयोग नं० १ विशूचिका हर वटी—

लाल मिर्च का छिलका हींग घी में भुनी २-२ तोला
भीमसेनी कपूर ३ माशे अफीम शु० ३ माशे

व्यवहार विधि—सबको प्याज के अर्क में ३ घन्टे घोट कर छाया में सुखावें। इसी प्रकार दूसरे दिन अर्क पोदीना में और ३ घन्टे तुलसी पत्र के अर्क में, ३ घन्टे अरहर के पत्तों के रस में घोटे और १-१ रत्ती की गोली बना सुखा रखले। ५-५ मिनट के बाद १-१ गोली दें।

अनुपान—सूखा पोदीना, इलायची, खस २॥-२॥ तोला—को ऽ२॥ सेर पानी में औटावें जब ऽ॥ पाव बचे तब छान कर बोतल में रखलें ×

× ५-५ मिनट के स्थान मे १५-१५ मिनट में ३-४ मात्रा मे अधिक नहीं दें। अनुपान का क्वाथ एक बार में एक छटांक ले दस्त वमन बन्द होने पर नहीं दें। —सम्पादक

प्रयोग नं० २—नेत्र रोग हर वर्त्ती--

संख भस्म	मनशिल शु०	मुर्गी के अण्डे का छिलका
बहेड़े की मींग	हरड़ का छिलका	पीपल छोटी
काली मिर्च	बच	कूठ
कंजा की मींग	समुद्र फेन	सेंधा नमक
चूड़ी हरी		(हरे कांच के टुकड़ा)

व्यवहार विधि—सबको कूट कपड़ छन कर बकरी के दूध में मर्दन करे जब खूब बारीक होजाय तब वत्ती बना सुखा रखलें। पानी मे यह वत्ती थोड़ी सी घिस कर नेत्रों मे लगाने मे जाला, फूला, मांस वृद्धि, कांच बिन्द नेत्र पटल के रोग में लाभदायक है। साधारण फूली और धुन्ध इससे अवश्य नष्ट होजाती है।

श्रीमान् पं० रामचरण लाल जी बाजपेयी वै०

श्री विष्णु आयुर्वेदिक फार्मेसी, औरैया-इटावा

—×—

आपका जन्म सं० १९४४ वि० मे कोंटरा निवासी श्रीमान् पं० मन्नूलाल जी बाजपेयी वैद्य के यहां हुआ था। आपके यहां परम्परागत चिकित्सा कार्य होता रहा है। आपने अपने पिता जी से ही आयुर्वेद पढ़ा और अनुभव प्राप्त किया है।

प्रयोग नं० १– उकौता (छाजन) रोग नाशक–

चोक	वाकुची	मैनशिल
हरताल गुवरहा	आवाँ हल्दी	गंधक
काली मिर्च		सुहागा।

उपयोग विधि—सबको कूट कपड़ छन कर रखलें। पानी में पीस उकौता (छाजन) दाद, खाज, पर लगाने से अवश्य लाभ होता है। यदि इसके साथ मंजिष्ठादि अर्क दो–दो तोला प्रातः सायं पिलावें या खदिरारिष्ट पिलावें तो गलित कुष्ठ तक में लाभ देता है। उपदंश से उत्पन्न रक्त विकार भी इस से ही नष्ट हो जाता है।

प्रयोग नं० २–अर्श नाशक तैल--

हीरा कसीस	कलिहारी	कूठ कड़वा
सोंठ	पीपर छोटी	मन्शिल
कन्नेर	वायविड़ग	चित्रक छाल
बांसा	दन्ती	कड़वी तोरई
चौक	हरिताल	प्रत्येक १–१ तोला

विधि—औषधियों का चूर्ण कर ६४ तोला तैल और थूहर का दूध ८ तोला, आक का दूध ८ तोला, गौ मूत्र ३२ तोला डाल कर मन्दाग्नि पर तैल सिद्ध कर रखलें।

उपयोग—इसको शौच के बाद मस्सों पर लगाने से बवासीर को लाभ होता है। बराबर लगाते रहने से मस्से भी गिर जाते हैं। ×

\+ अर्श रोग महा कठिन रोग है इस औषधि को लगाते रहें और शंकर लोह चार चार रत्ती मधु के साथ प्रातः सायं और दोपहर तथा रात्रि को बहुशाल गुड़ तीन तीन माशे जल के साथ सेवन करावें तब विशेष लाभ होता है। २–३ महीने लगातार सेवन करावे।

—सम्पादक

वैद्य विशारद श्री पं० रामसेवक जी शर्मा

श्री० सेवक आयुर्वेदीय औषधालय
कसोला पोस्ट सन्दलपुर (कानपुर)
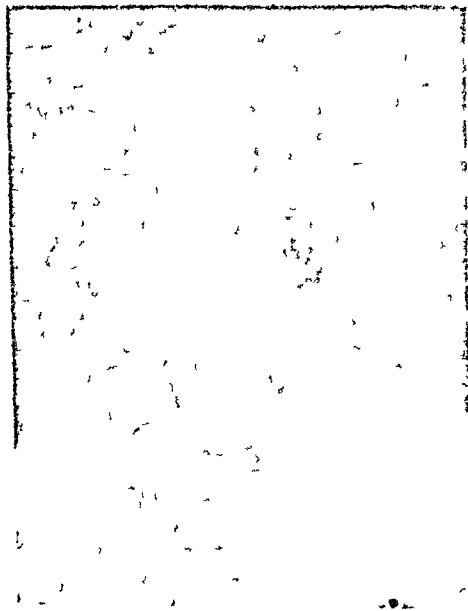
आपका जन्म सं० १६८० वि०में ब्राह्मण कुल के श्रीमान पं० रामदयालु जी अवस्थी के यहां हुआ। आपने व्याकरण मध्यमा और अंग्रेजी की हाईस्कूल पासकर वैद्य सम्मेलन की वैद्य विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपने रौप्य पदक और प्रशंसापत्र भी प्राप्त किये हैं।

प्रयोग नं० १ मलेरिया नाशक द्राव—

नौसादर ८ माशे	कलमी सोरा ४ माशे
सिरका १ तोला	पानी १२ तोला

विधि—एक बोतल में नौसादर सोरा पृथक २ पीस छान कर डाल दें उसके बाद सिरका डाल हिला दे और पानी डाल कार्क बन्द कर रख ले।

सेवन विधि—ज्वर के वेग से १ घन्टे पूर्व सब औषधि को रोगी को पिलादे। इसके एक बार के पिलाने से ही मलेरिया नहीं आता यदि आ भी जाय तो बड़ा तेज ज्वर आता है, १०४ डिगरी तक हो जाता है पर चिन्ता न करे और दूसरे दिन ज्वर के वेग से पूर्व इस ही प्रकार दे तो ज्वर सदैव के लिये नष्ट हो जाता है। *

---

* तेज ज्वर आने पर रोगी यदि अधिक घबड़ावे तब शिर से गुल रोगन की और हाथ पैर के तलुओं पर बकरी के दूध की मालिश करादें तब ज्वर कम हो जाता है बेचैनी शान्ति हो जाती है।

—सम्पादक

योग नं० २ नपुंसकत्व हर चूर्ण—

मोरवरु, रातमूली, वानरी, अतिबला, इला सब को समान भाग में कूट कपड़ छन कर चूर्ण बनालें।

उपयोग विधि—भोजन के बाद रात्रि को दूध के साथ सेवन करने से नपुंसकता नष्ट हो पुरुषत्व की प्राप्त हो। ×

—*—

वै० विशारद श्रीपं० लक्ष्मणकुमार जी त्रिवेदी वैद्य

श्री अरुणोदय फार्मेसी, अरुणोदय भवन
माधव नगर उज्जैन सी० आई

आपकी आयु लगभग २५ वर्ष की है। आदि गौड ब्राह्मण कुलभूषण श्रीमान् वैद्य गोवर्धनाचार्य जी त्रिवेदी के सुपुत्र हैं। आपने लाहौर विद्यापीठ की भिषक् और हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वैद्य विशारद परीक्षा पास की है।

× चूर्ण की मात्रा ३ माशे और ३ माशे पिसी मिश्री मिला कर सोते समय दुग्ध गरम किया हुआ ठन्डा कर मिश्री मिला कर उसके साथ १०१ दिन फांकने और ब्रह्मचर्य से रहने पर लाभ होता है जिनको वीर्य की कमी से नपुंसकता हो उनको अधिक लाभ करता है। जिनकी अग्नि निर्बल है उनको हानिप्रद रहता है।

—सम्पादक

प्रयोग नं० १ बाल रोग नाशक वटी--

जायफल	जावित्री		दालचीनी
लोंग	मोकामाली		इलायची
अजमोद	सफेदमिर्च		दुधवच
कुटका	चिरायता		पीपरामूल
वंशलोचन	अतीस	लोहवान	केशर

विधि—सबको समान भाग लेकर कपड़ छन कर गोमूत्र में गोली मूङ्ग बराबर बना कर सुखा ले। बालकों के सब रोगों में माता के दूध या गरम जल के साथ दें।

—*—

वैद्यविशा० श्री पं० राधेमोहन जी मिश्र डी० डी० एच०

गुड्डी स्ट्रीट—बहराईच (अवध)
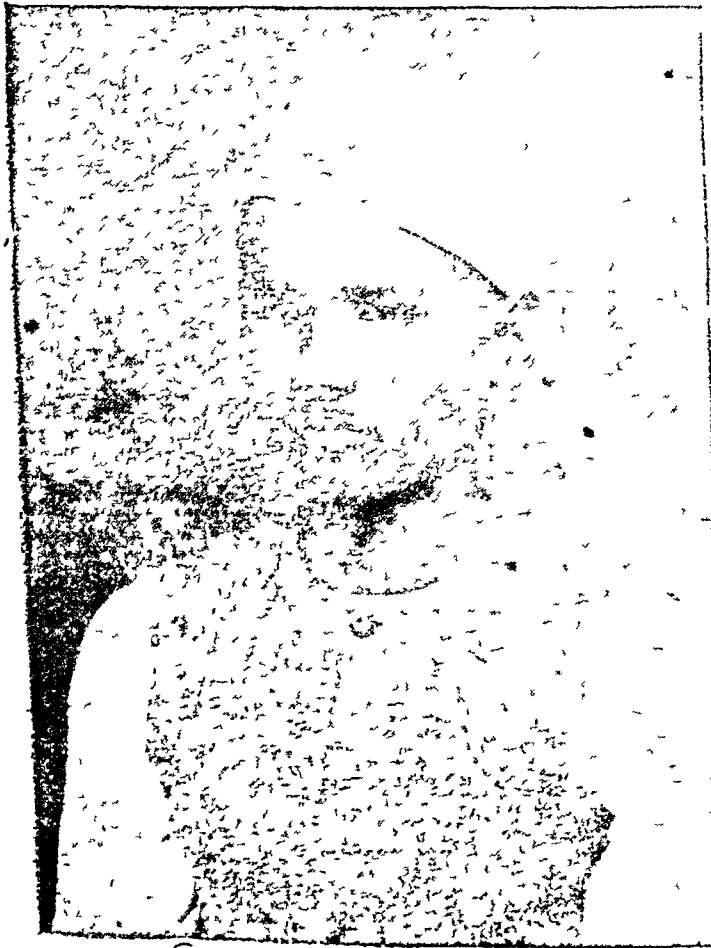
आपका जन्म ब्राह्मण कुलभूषण श्री० पं० हरिहर दत्त जी मिश्र के यहां हुआ। आपकी आयु लगभग ३० वर्ष की होगी। आपने भिषग, विशारद वैद्य सम्मेलन की और मथुरा से आप को डाक्टर की उपाधि मिली है।

प्रयोग नं० १ खाज छाजन पर—

अशुद्ध पारद, १ तोला		गंधक नोनिया, १ तोला
आंवा हल्दी १ तोला	घोड़+ १ तोला	अजवाइन* १ तो०
सिगरफ १ तोला	तूतिया ३ माशे	गाय का घी १० तो०
	भांगरे का रस १० तोले	

विधि—प्रथम पारद गंधक की कज्जली करे पश्चात शेष औषधियां कूट कपड़ छन करलें। कज्जली और चूर्ण घृत मे मिला छोड़े और थोड़ा २ भांगरे का रस मिलाता जाय तथा घोटते जांय मरहम-वत होने पर रखलें।

उपयोग—कारबोलिक साबुन× से स्नान करे इस मरहम को लगाते रहें तब ३ दिन में ही खाज चली जाती है।

प्रयोग नं० २ वात भंजन तैल—

सोंठ देशी २० तोला	संखिया १ तोला
सोंठ चैतरा २० तोला	अफीम १ तोला
सेंधा निमक १० तोला	कपूर १० तोला
तैलकडुआ ४० तोला	मिट्टी का तैल ४० तोला

विधि—दोनों सोंठ तथा सेंधा निमक को जवकुट कर के कडुआ तैल में मन्द २ आंच से पकावें जब सोंठ का वर्ण लाल हो जाय तब नीचे उतार कर अफीम संखिया उस गरम तैल में ही डालदे (धुआं से बचा रहे) जब ठण्डा हो जाय तब उसमें कपूर और मिट्टी का तेल डाल कर घोटे तत्पश्चात उसे छान कर शीशी में रखलें।

उपयोग विधि—इसकी मालिश करने से वात विकार अवश्य शान्त हो जाता है। शिर एवं कोमल अङ्गों पर इसकी मालिश नहीं करना चाहिये। यदि इस तैल के प्रयोग के साथ निम्न मोदक भी सेवन करे तब अति लाभ होता है।

+ घुड़बच * अजवायन खुरासानी

× कारबोलिक साबुन के स्थान पर नीम की पत्ती गरम पानी में औटावें तथा छान कर उससे भी स्नान कर सकते हैं।

विधि मोदक—सोंठ २० तोले धनियां २० तोले,
गुड़ ६० तोले तैल कड़ुआ २० तोले ले।
प्रथम सोंठ धनियां को कूट छान कडू तेल में भूने जब लाल हो जाय तब गुड़ की चासनी बना लड्डू (मोदक) बनालें प्रातः और सायं एक एक छटांक सेवन करावे।

कवि० श्री योगेन्द्रसिंह जी कश्यप बी०ए० आ०

योगेन्द्र आयुर्वेदिक फार्मेसी ऊना, होशियारपुर

—※—
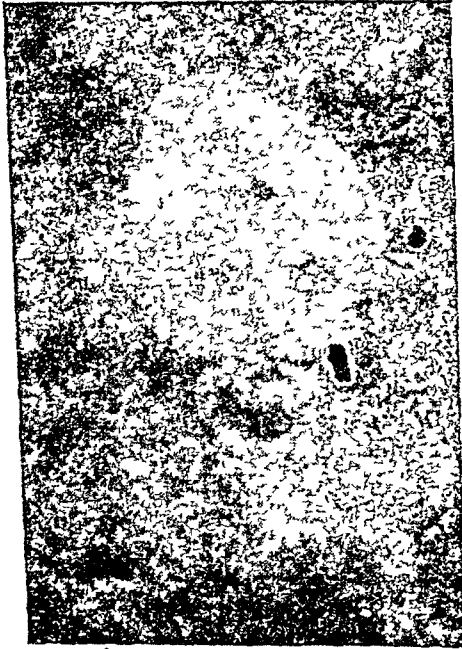
आपकी आयु २५ वर्ष के लग भग है। आप अरोरा खानदान के श्रीमान् स० हरदत्तसिंह जी के सुपुत्र है। आपने पंजाब विश्वविद्यालय की बी० ए० और सनातन धर्म प्रेमी गिरि आयुर्वेदिक कालेज लाहौर से कविराज और आयुर्वेदाचार्य परीक्षा पास की है। आप एक नवयुवक उत्साही वैद्य है।

प्रयोग नं० १ सूर्य वर्त नाशक चूर्ण—

काली मिर्च जौ (यव)

प्रयोग विधि—दोनों औषधि समान भाग लेकर तवे पर भूनलें जब काली राखवत् हो जाय तब पीस कर शीशी में भर कर रखले। एक-एक माशे की तीन मात्रा ताजे जल के साथ दर्द होने से ४ घन्टे पूर्व से देना आरम्भ करदें तो कैसा ही सूर्य वर्त और आधा सीसी का दर्द हो अवश्य नष्ट हो जाता है।

प्रयोग नं० २ प्रवाहिका हर चूर्ण--

सौंफ १ तोला — जंग हरड १ तोला

फक्की ईसव गोल २ तोला — खांड ४ तोला

प्रयोग विधि--सौंफ को और जंग हरड को तवे पर छः छः माशे घी डाल कर प्रथक् प्रथक् अधभुनी कर लें और उतार कर खूब बारीक पीस कर फक्की ईसव गोल और खांड मिला कर रखलो दिन में ३ बार चार चार माशे अर्क सौंफ के साथ दो कितना ही रक्त आता हो एठन होती हो ३ मात्रा में ही लाभ हो जाता है।

वैद्य श्री हरिप्रसाद जी जोशी भट्ट आयुर्वेदाचार्य

प्रसाद मेडीकल हाल रायपुरा

जूना तोपखाना बड़ौदा

—※—

आपकी आयु ४१ वर्ष की है। आप बाज खेड़ा वाल ब्राह्मण कुल के श्री पं० चुन्नीलाल जी भट्ट के सुपुत्र हैं। आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली से आचार्य धन्वन्तरि और विश्वनाथ आयुर्वेद महा विद्यालय कलकत्ता से प्राणाचार्य एम० ए० एम० परीक्षायें पास की हैं। आप बात रोग के विशेषज्ञ हैं और अनेक लेखों के लेखक हैं और उन लेखों पर रौप्य पदक और प्रमाण पत्र मिले हैं। तक्र कल्प और आरोग्य डायरी के भी लेखक हैं। आप आयुर्वेद की परीक्षाओं के परीक्षक और धर्मार्थ औषधालयों के चिकित्सक भी रह चुके हैं। अध्यापन कार्य भी आप कर चुके हैं। आप विद्वान और कुशल निरीक्षक हैं।

प्रयोग नं० १ कुत्ता खांसी—

कच्ची फिटकरी का चूर्ण १० तोला × सोम कल्प चूर्ण ५ तोला दोनों को अच्छी तरह मिला घोट कर रखलें। अथवा टेबलेट बना लेवें। कुत्ता खांसी की उग्र अवस्था में ८–१० दिन व्यतीत होने पर देने से निश्चय पूर्वक ६–१० दिन में आराम हो जाता है। ८–८ सप्ताह तक आराम नहीं होता ऐसी भावना (सिद्धान्त) झूठी पड़ती है। हजारों रोगियों पर परीक्षित है।

मात्रा—१ से २ वर्ष के बालक को २ रत्ती। ५ से ६ वर्ष तक को ३ से ५ रत्ती तक। बड़े बालकों को ७ से १० रत्ती तक, दिन भर में तीन बार देवे। अनुपान गरम (उष्ण) जल अथवा शहत में मिलाकर चटावें। छोटे २ बालकों (बच्चों) को जब कुत्ता खांसी का दौरा होता है उसे देख हृदय रो उठता है उसका दुःख देखा नहीं जाता उस समय उसको ८–१० दिन ने से सम्पूर्ण आराम हो जाता है। परीक्षा प्रार्थनीय है।

प्रयोग नं० २ उदर रोग पर स्नुही प्रयोग—

स्नुही दंड (थूअर का दण्डा) एक विलस्त (१२ अंगुल) प्रमाण लेकर चाकू से ऊपर का छिलका और कांटे छील लें बाद में पानी में तर किया हुआ कपड़ा अच्छी तरह उस पर लपेट दें। बाद में अगीठी में सुलगे हुये कोले की आग पर उसे भूने। थोड़ी-थोड़ी देर पलटते जाना चाहिये ऐसा करने पर १०–१२ मिनट में सब दण्ड स्वन्त (उसीज जायगा) हो जायगा. उसे मरोड़ कर निचोड़ लें पानी जैसा स्वच्छ स्वरस निकलेगा। दूध का उसमें कुछ भी अंश नहीं दीखेगा। कपड़े में छान ५ से १० तोला तक यह स्वरस बलाबल देख कर प्रातः एक बार ही पिलावें। १५ या २१ दिन तक प्रयोग करें

× सोम कल्प अर्थात् एफेडावलोरिस को कूट कपड़ा छान ले यही चूर्ण डालें।

—लेखक

गुण—इस प्रयोग से २-३ सप्ताह में कफोदर, जलोदर, कठिनोदर यकृतोदर, प्लीहोदर अच्छा हो जाता है। स्नुही क्षार की तरह विरेचन होगा ऐसी बात को निशंक भूलजाय। इस स्वरस के पीने से पतले पानी जैसे जुलाव नहीं होते परन्तु संचित कठिन काले मल के २-३ दस्त होते रहते हैं। शायद ही कभी किसी को पतला जुलाव होता है बिना शंका के निर्भय होकर प्रयोग करें साथ में आरोग्य वर्धनी रस (रसरत्नसमुच्चय) २ से ३ रत्ती तक प्रातः सायं दो बार देते रहें। पथ्य में केवल दूध या दूध भात देना चाहिये। कभी किसी रोगी को कब्जी की शिकायत मालूम हो तब नाराचरस या अश्वकचुन्की से ५-७ दस्त करादें। छोटे २ बालकों को भी उनके आयु बल के अनुसार मात्रा में देने से लाभ होता है। *

—x—

नेत्र चिकित्सक-श्री० डा० लक्ष्मीनारायणसिंह जी वैद्य

महरीपुर तप्पा, दुःख खरा, पोस्ट बस्ती

आपकी आयु ४६ वर्ष की है। आप गौतम क्षत्रीय-वंश भूषण श्रीमान् ठा० रामरतन सिंह जी के पुत्र हैं। आपने आगरे से वैद्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप सुश्रुत के अनुसार मोतिया बिन्दु का ओपरेशन करते हैं और शिक्षा भी देते हैं।

प्रयोग नं० १ नाड़ी व्रण (नासूर) नाशक मरहम—

देशी जंगाल १ तोला   आंबा हल्दी १ तोला

बहरोजा ५ तोला

---

* जलोदर, वातोदर, कफोदर में विशेष उपयोगी साबित हुआ है। —सम्पादक

विधि—जंगाल, हल्दी, कूटकर, कपड़ छन करलें और १ कटोरी में बेरोजा गीला गरम करें जब पिघल जाय तब कपड़ छन चूर्ण मिला उतार कर रखले। नासूर को साफ कर मरहम का फाया बना लगादें। प्रति दिन बदलते रहें इससे प्रथम मवाद पतला हो अधिक निकलेगा चिन्ता नही करें फिर धीरे धीरे बन्द हो कर नासूर नष्ट हो जायगा। पथ्य में दूध भात या दूध रोटी देनी चाहिये।

प्रयोग नं० २ सर्वज्वर नाशक—

नवसादर	मृगशृंगभस्म	संख भस्म
मृत्युंजय रस	अभ्रक भस्म नं० १	—ये सब १-१तोला

विधि—सबको मर्दन कर शीशी में रखले। खुराक १॥ रत्ती तुलसी का रस, अदरक का रस, शहद, लोंग १ यह सब रस दो दो माशे शहद भी २ माशे में मिला कर चटावें। इसमें निमोनियां, कफ ज्वर में अति लाभ होता है बाकी सब ही ज्वरों में दे सकते है।

आयुर्वेद विशारद श्री पं० लखनलाल जी शर्मा वैद्य

आयुर्वेद कुटीर श्री सार्वजनिक औषधालय मनोहरपुर (जयपुर स्टेट)

आपकी आयु २७ वर्ष की है आप श्री० पं० भक्तराम जी शर्मा के सुपुत्र हैं। आपने आयुर्वेद महा मंडल की आयुर्वेद विशारद और आगरे विद्यापीठ की आयुर्वेद शास्त्री परीक्षा पास की है। आप को अनेक प्रशंसा पत्र भी मिले है।

श्रीमती हैम्य पंजनीदेवी जी गर्गा

द्वारा भेंट भेंट
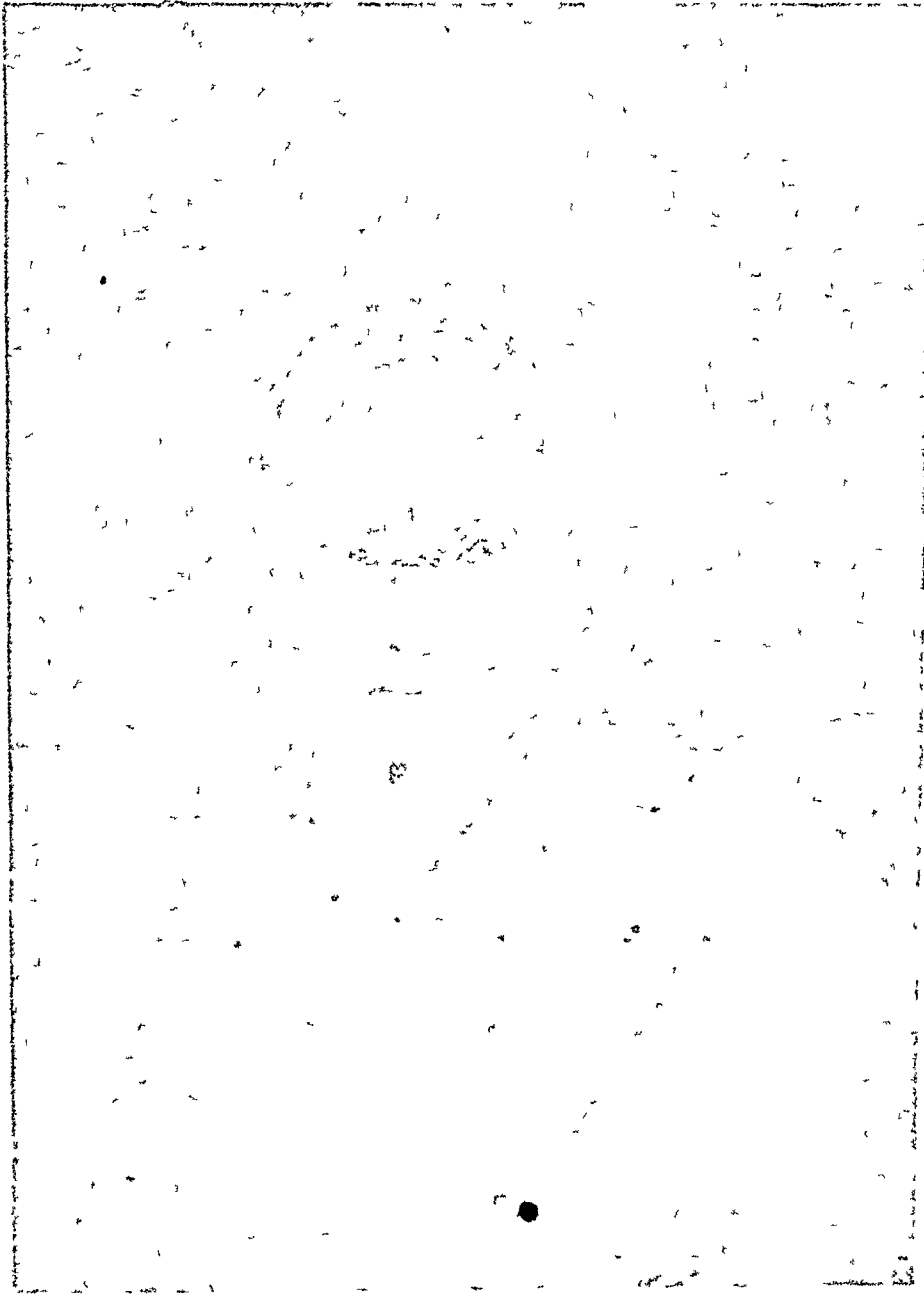
प्रयोग नं० १ प्रदर रोग पर—

राल श्वेत १ तोला
मोचरस २ तोला
नाग केशर २ तोला
असगंध २ तोला
आम की गुठली १ तोला
खस १ तोला
देवदार १ तोला
चिकनी सुपारी १ तोला
खिरेटी १ तोला
इन्द्रजौ ६ माशे
कायफल १ तोला
त्रिफला ३ तोला
मिश्री १० तोला
कुक्कुडान्डत्वक भस्म २॥ तोला
प्रवाल भस्म १॥ तोला
अकीक भस्म १ तोला
श्वेतसुरमाकीपिष्टी ६ माशे, खूनखराबा (दम्बुलअखवेन) १ तो०
जहर मोरा खताई ३ माशे
वंग भस्म १ तोला
स्वर्ण वंग ६ माशे

मुलहटी २ तोला
रसौत १ तोला
इलायची २ तोला
गिले अरमनी १ तोला
अतीस ६ माशे
जायफल ६ माशे
दारु हल्दी १ तोला
शीतल चीनी १ तोला
शतावर ३ तोला
कुड़ा की छाल ६ माशे
नागर मोंथा ६ माशे
अमलतास १ तोला
अहिफेन ८ माशे
विद्रुम पिष्टी १॥ तोला
विषाण भस्म (अर्क गुलाब मे घोट कर) १ तोला
लोह भस्म १ तोला
संग जराहत पिष्टी १ तोला
शीशा भस्म ३ माशे

विधि—काष्ठोषधि को कूट कपड़ छन करले। पिष्टी योग्य औषधि गुलाब जल में मर्दन कर पिष्टी करले। भस्म वाली औषधि की उत्तम भस्म ले सबको मर्दन कर एक कर रखले। और—

आमले हरे वसन्तु ऋतु के प्रथम सप्ताह में वृक्ष से पके हुए तोड़ कर सुखाले। यह सूखे आमले १० तोले लेकर कूट कर चूर्ण करले और आमले के स्वरस की ५१ गिलोय के स्वरस की ११ गूलर के स्वरस की ११ अशोक छाल के स्वरस की ५ श्वेत चन्दन के क्वाथ की ५ केला के स्वरस की ५ निम्ब स्वरस की ५ गोखरू के क्वाथ की ५ गंगेरन स्वरस की ५ वांसा स्वरस की ५ गुलाब स्वरस की ५ लाल चन्दन के क्वाथकी ५ मुलेहठी के स्वरस की ५ भावना दे

और खुश्क होने पर कपड़ छन कर उपरोक्त बनी हुई औषधि में मिला १ दिन मर्दन कर रखले।

सेवन विधि—दो या ३ माशे की मात्रा से प्रातः निम्न क्वाथ के साथ और सायं काल धारोष्ण दूध के साथ देने से १ श्वेत रक्त प्रदर, नष्टार्तव आदि रोग अवश्य नष्ट हो जाते हैं।

क्वाथ

धनियां	दारु हल्दी	रसोत
नागर मोथा	वांसा	शुद्ध भल्लातक
तिल	गोखरू	गिलोइ

विधि—सबको समान भागलें जौ कुट कर १ तोला की मात्रा लें। १ तोला औषधि को १५ तोला पानी में औटावे जब ३ तोले रहे तब छान कर उसमें १ तोला शहद मिला औषधि फक्की ऊपर से पिलावे।

—※—

आयुर्वेदविशारद श्री० पं० शिवदत्त जी त्रिवेदी भिषक्

सार्वजनिक औषधालय वांसा, पोस्ट समोदा (जयपुर)
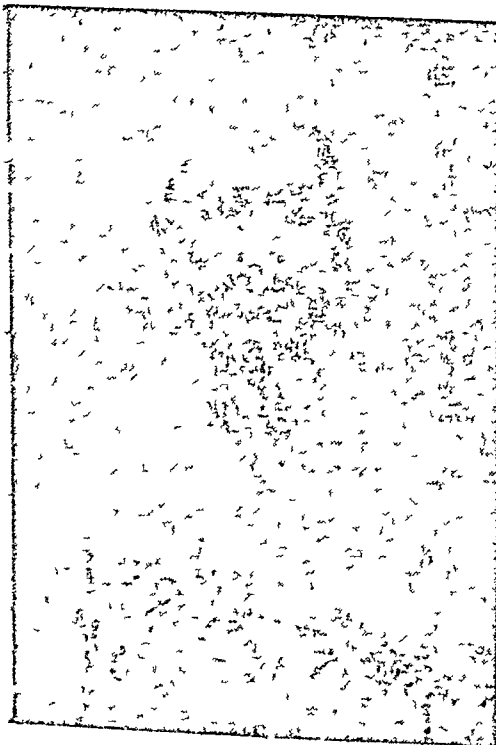
आपकी आयु ३२-३३ की होगी। आप गौड़ ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान् पं० गंगासहाय जी त्रिवेदी वैद्य जी के पुत्र हैं। आपने जयपुरसेआयुर्वेद शिक्षा प्राप्त कर आयुर्वेद विशारद, आयुर्वेद भिषक, वैद्य शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की है।

प्रयोग नं० १ जलोदर नाशक वटी—

लोह भस्म १ तोला — मांडूर भस्म १ तोला

बड़ी हरड़ १ तोला — सोंठ १ तोला — तुम्बा १ नग

विधि—सोंठ हरड़ कूट कपड़ छन कर भस्में मिला तुम्बा के अन्दर १ छेद कर उसमें भरदें और छेद को तुम्बा के टुकड़े से बन्द करदें और जब तुम्बा सूख जाय तब उसमें से औषधि और गूदा बीज सहित निकाल सबको ग्वार पाठे के रस में घोटे और छोटी पीपल इन्द्र जौ, वायविडंग, अजमायन, हींग भुनी यह पांचों औषधि आधा आधा तोला लेकर कूट छान उसमें मिला कर दो-दो रत्ती की गोली बना सुखा रखलें।

सेवन विधि—प्रतिदिन सुबह शाम एक-एक या दो-दो गोली खिला ऊपर से चार-चार तोले गौ मूत्र पिलावें साथ ही जब तक यह औषधि चालू रहे पथ्य में दूध और भात खिलावें पानी और मीठा बिलकुल बन्द करदे। यदि पानी बिना न चले तब थोड़ा ही पानी दें। तुम्बा पकने पर आवे तब ही हरा लें। इससे जलोदर रोग नष्ट हो जाता है। ×

प्रयोग नं० २ गुर्दे के दर्द के लिये चूर्ण—

सोंठ ५ तोला — काला निमक ५ तोला

हींग भुनी ५ तोला — कबूतर की बीठ ५ तोला

विधि—सबको कूट छान कर रखलें। छः-छः माशे चूर्ण सुबह शाम फका ऊपर से पांच तोले जौ के दलिया को आध सेर पानी में औटावें जब आध पाव रहे तब छान कर पिलावें।

पथ्य—दाल रोटी। गुर्दे के दर्द को अति लाभ प्रद है।

× अन्न जल बन्द कर केवल गौ दुग्ध पर रखने से और अधिक दिन देने से लाभ होता है। —सम्पादक

आयुर्वेद शास्त्री श्रीस्वामी सन्तोषानन्द जी महाराज

श्री लक्ष्मणायुर्वेद रसायन शाला

देहरादून

—※—

आपकी आयु ५६ वर्ष के लगभग है। आप उदासीन सम्प्रदाय के प्रमुख रत्नों में से एक हैं। आपने काशी निवासी स्वर्गीय श्यामसुन्दराचार्य से आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त की और भारत धर्म महामंडल से आयुर्वेद शास्त्री की उपाधि प्राप्त की है आप योग्य चिकित्सक हैं।

प्रयोग नं० १ बहु मूत्र रोग पर वटी—

वंग भस्म ताल-योगेन जारित ५ माशे फौलाद भस्म ५ माशे
सेमल की मूसली का चूर्ण १ तो० अभ्रक भस्म नं० १, ५ माशे
गोखरू चूर्ण २ तोले माल कांगुनी १ तोला
काले तिल १ तोला

विधि—सबको खरल कर शहद के साथ १२० गोली बनाले और १ गोली प्रातः १ गोली मध्यान और १ गोली सायं काल जल के साथ दें। रात्रिको सोते समय शिलाजीत नं० १ माशे १ दूध के साथ सेवन करें। बहुमूत्र, ताल सूखना, प्यास अधिक लगना आदि सब उपद्रव सहित बहुमूत्र (मधु मेह) नष्ट हो जाता है।

प्रयोग नं० २ हाई बल्ड प्रैशर (रक्त चाप) पर—

आलू बुखारा २० तोला, मिश्री ३० तोला
सौंफ २॥ तोला गुलाब के फूल २॥ तोला
सरनाडंडी तथा काली पत्ती वगैरह २॥ तोला ×

विधि—आलू बुखारा कलईदार बर्त्तन में १ सेर जल में रात को भिगोवें सुबह मल छान कर मिश्री डाल किमाम (चासनी) कर उसमें शेष औषधियां कपड़ छन्न कर मिलाकर अवलेह बना रखलें। मात्रा १ तोला जल के साथ।

वै० शास्त्री पं० हरिवंश जी शर्मा दीक्षित

जीवन मल फ्री अस्पताल
जीरा (फिरोजपुर)

—*—

आपका जन्म सन् १६१८ ई० में दीक्षित गोत्रीय सारस्वत कुल में श्रीमान् पं० खुशीराम जी के यहां हुआ। आप अनेक धर्मार्थ औषधालयों में चिकित्सक रहे हैं अनेकों प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं।

× सरनाडंडी तथा काली पत्ती वगैरह २॥ तोला लेखक ने लिखा है जो समझ में नहीं आया अतः इसकी जगह सर्पगन्धा डाल परीक्षा की और इसे उत्तम पाया।

—सम्पादक

योग नं० १ नेत्र रोग हर अर्क—

किष्टे	५ तोला +	अहिफेना	३ माशे
कलमीसोरा	६ माशे	बीकानेरी मिश्री	१ तोला
अनारदाना	५ तोला	समुद्रफेन	३ माशे
मधु (शहद)	५ तोला	रीठा के छिलका	६ माशे
बबूल के पुष्प का स्वरस	५ तोला	गौ मूत्र	५ तोला
श्वेत फिटकरी	१ तोला	शीशा निमक	६ माशे
नवसादर टिकड़ी	६ माशे	पोस्त डोडा	१ तोला
सुहागा कच्चा	३ माशे	शु० रसौत	५ तोला
भूरी मिर्च	३ माशे	जवाखार	३ माशे
श्वेत पलाण्डु का स्वरस	५ तोला	सत्व नीबू	३ माशे
पिपरमेंट	३ माशे	केम्फर	३ माशे

विधि—सबको प्रथक २ कूट कर १ सेर पानी में औटावे जब पाव भर पानी रहे तब कपड़ा में छान कर रखलें। नीबू का सत्व पिपरमेंट केम्फर यह क्वाथ होने पर डालें।

गुण—सलाई को इसमें डुबो कर नेत्रों में प्रातः सायं लगाने से फूला नेत्रों का १ वर्ष तक का नष्ट हो जाता है तथा साधारण नेत्र रोग तो ४-६ दिन में ही नष्ट हो जाता है। +

प्रयोग नं० २ अञ्जन (सुरमा)—

श्वेत सुरमा	१ तोला	जस्त भस्म	१ तोला
सुखे निमक	६ माशे	हल्दी गांठे	१ तोला
कचूर	६ माशे	माजूफल	६ माशे
नवसादर टिकड़ी	३ माशे	निबौरी की मींग	१ तो०
सत्व पोदीना	३ माशे	मिश्री बीकानेरी	१ तोला
समुद्रफेन	३ माशे	स्याह सुरमा	१ तोला
सेंधानिमक	६ माशे	बड़ी हरड़ का छिलका	१ तोला
श्वेत फिटकरी	६ माशे	सुर्ख फिटकिरी	६ माशे
सुहागा	३ माशे	छोटी इलायची बीज	१॥ माशे

+ किष्टे (कशीश को कहते हैं) जल स्थान में गुलाब जल लेना उत्तम रहेगा उससे बिगड़ेगा भी नहीं। —सम्पादक

अफीम ३ माशे अजवायन अर्क २ तोला

सीसा निसक ६ माशे अर्क गुलाब ५ तोला

विधि—सब औषधियों को कपड़ छन कर अर्क अजवायन और अर्क गुलाब में घोटें। उसके पश्चात ३ भावना नीबू के रस और ३ भावना नीम के पत्तों के स्वरस की दें, खुश्क करलें।

गुण—प्रातः सायं नेत्रों में लगाने से धुन्ध, लाली, शिर शूल के साथ नेत्रों के दर्द में अति लाभदायक। *

आयुर्वेद विशारद श्री वैद्य हरीराम जी वराटे

श्रीशंकर आयुर्वेद सेवाश्रम
भुसावल-पूर्व खानदेश

०—×—०
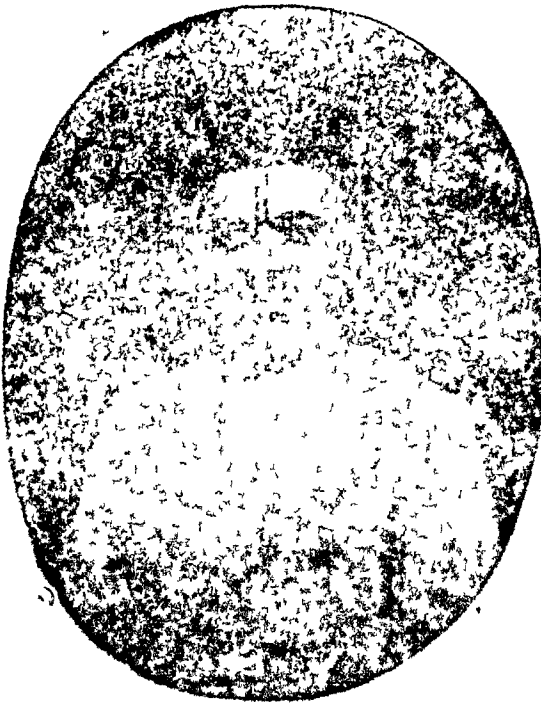
आपकी आयु ५० वर्ष की है। आप लेवा हिन्दू जाति में श्रीमान् वा० रामजी वराटे के पुत्र हैं। आपने आयुर्वेद विशारद परीक्षा दो स्थान से पास की है, ही आप अच्छे लेखक हैं। पुस्तकें भी लिखी हैं। अनेक विद्यार्थी भी आयुर्वेद पढ़कर योग्य हुये हैं।

---

* सत्व पोदीना के स्थान पर पिपरमेंट डालना चाहिये।

—सम्पादक

प्रयोग नं० १ अर्श रोग नाशक वटी—

शु० रसौत, छोटी हरड़, कटु निंबौली की गिरी
बकायन निबौरी की गिरी

दश दश तोले लेकर कूट कपड़छन कर कुकरौंधे के रस में ३ दिन और लाल बिषखपरे के रस में ३ दिन, कंघी के रस में तीन दिन मर्दन कर झरबेर के बराबर गोली बना सुखा कर रखले।

प्रयोग विधि—प्रातः सायं १-१ गोली गरम (ताते) जल के साथ निगलवा दें और रात्रि को १ गोली काशीसादि तैल में घिसकर मस्सों पर लगाले तो खूनी बादी व बवासीर जाती रहती है।

प्रयोग नं० २ मलेरिया पर वटी—

भुनी हुई करंज गिरी, भुनी हुई कुटकी,
काला जीरा, भीकामाली सोंठ,
मिर्च, पीपल, दारूहल्दी, शु० कुचला,
सेका हुआ-इन्द्र जौ नीमकी निबौरी,
चिरायता, गिलोइ बड़ी हरड़,
आमला, बहेड़ा, कीट मार (वायविडंग)
अतीस कालमेघ फिटकिरी सोरा
सप्तपर्ण वृक्ष की अन्तरछाल

विधि—सब समान भाग लेकर कपड़ छन करके सम्मल की पत्ती, धतूरे की पत्ती, कालमेघ इन तीनो के स्वरस में एक एक दिन मर्दन करके चने के समान गोली बना सुखा रखले।

प्रयोग विधि—दो से चार गोली तक दिन में ३ बार जल के साथ ज्वर आने से पहले दें छोटे बालकों को १ से २ रत्ती तक दूध के साथ। इससे सब प्रकार की मलेरिया जल्दी नष्ट हो जाती है।

आयुर्वेदाचार्य श्री० पं० गिरिजादत्त जी पाठक क० वि०

प्रधानाध्यापक श्री० कालिकेश्वर आयुर्वेद विद्यालय
चिकित्सक श्री कालिकेश्वर औषधालय
बक्सर-चौक जिला आरा

आप शाक द्वितीय ब्राह्मण कुल-भूषण श्रीमान् पं० रामशकल जी पाठक वैद्यराज के सुपुत्र हैं। आपकी आयु ४७ वर्ष की है आपने व्याकरण और आयुर्वेद का विधिवत अध्यन किया है आप जुबली संस्कृत विद्यालय में भी अध्यापन कार्य कर चुके हैं और अब भी श्री कालिकेश्वर आयुर्वेद विद्यालय की स्थापना कर और उसमें विहार संस्कृत एसोसियन से साहित्य और आयुर्वेदाचार्य की स्वीकृति प्राप्त कर स्वयं अध्ययन कार्य करते हुए चिकित्सा कार्य भी करते रहते हैं। वि० सं० एसोसियन से काव्य-तीर्थ आयुर्वेदाचार्य धर्मशास्त्र शास्त्री और धन्वन्तरि कार्यालय से कवि-रत्न नि० भा० वि० सम्मेलन काशी से आयुर्वेद भूषण, अयोध्या से साहित्य भूषण, भिषग भूषण वैद्य धुरीण विद्या विनोद की उपाधियां प्राप्त की हैं। नि० भा० वैद्य सम्मेलन से रौप्यपदक और प्रशंसापत्र मनोविज्ञानम् निबन्ध से प्राप्त किया है।

प्रयोग नं १ अग्नि दग्ध हरि—

मजीठ	लाल चन्दन
मूर्वा	लोध पठानी
मुलेहठी	गुरूची

बर जटा (वरोह) गूलर की छाल
राल मोंम

प्रत्येक पांच पांच तोला, घृत २। सवा दो सेर

विधि—गौघृत को कढ़ाई में उबाल आने तक गरम करले पीछे चूल्हे से उतार शीतल होने दे। मोंम को अलग कलछी में गलालें। राल को बारीक पीस छान कर अलग रखले। शेप औषधियों को गौ दुग्ध में पीस लुगदी बना घी में डाले और उस घी में ही अरवा चावल का जल ६४ सेर डाल कढ़ाई को चूल्हे पर रख घृत सिद्ध करले और गरम २ ही छानले और मोंम गला हुआ और राल चूर्ण की हुई उसे गरम घृत में डालदे और अच्छी प्रकार मिला चौड़े मुख की शीशी मे भरदे और कार्क लगादे।

व्यवहार विधि—कपड़ा के फाये में लगा कर अग्नि दग्ध स्थान पर लगादें। यह चारों प्रकार के अग्नि दग्ध को दूर करेगा। किसी प्रकार से कट जाने पर लगाने से रक्त बन्द कर देगा और घाव भी नहीं बढ़ेगा। जिस जले रोगी का मांस गल कर दुर्गन्ध आती हो उसे शीत किये हुये निम्न क्वाथ से धो कर इसे लगादेने से अच्छा हो जायगा जलन बेचैनी तुरन्त शान्ति हो जायगी।

—प्रयोग नं० २ चन्द्र बदन लेप—

रक्त चन्दन	५ तोला	वट जटा	५ तोला
मजीठ	५ तोला	सेमर का कांटा	५ तोला
कपूरी ×	५ तोला	१ मसूर की दाल	५ तोला
सरसों पीली	१० तोला	कपूर डली	१ तोला

केशर १ तोला

विधि—सबको कूट कर कपड़ छन करलें। झांई, व्यंग नीलिका, युवान पिडिका, हजामत बनाने से जो छुरे (उस्तरे) के दोष से व्रण होजाना आदि सब दूर हो जाते हैं। मुख मंडल शोभा सम्पन हो जाता है उबटन की तरह पानी या दूध मे मिलाकर मलनी चाहिये इसकी सुगंधि से मन प्रसन्न हो जाता है।

× कपूरी नामक एक घास विहार प्रान्त में होती है।

१ मसूड़ की दाल घी में भुनी हुई लेनी चाहिये— —सम्पादक।

आयुर्वेदमणि श्री इन्द्रादेवी जी शास्त्रिणी

नारी आरोग्य मन्दिर मुरलीधर बाग

हैदराबाद दक्षिण

—o—

आपका जन्म सन् १६१३ ई में कान्यकुब्ज ब्राह्मण श्री पं० शंकरप्रसाद जी पाण्डेय के यहां हुआ। आपने वैद्यक शिक्षा अपने पति श्री पं० गया प्रसाद जी शास्त्री से प्राप्त की। आप इ० मे० बोर्ड यू० पी० की रजिस्टर्ड वैद्या है। आपकी चिकित्सा से प्रसन्न होकर निजाम गवर-मेंट ने आपकी संस्था को ६७०) वार्षिक सहायता दी है।

प्रयोग नं०१ रक्तावरोधक चूर्ण—

अनार के फूल	कमल की केशर	नाग केशर
पाषाण भेद	सफेद कत्था	सफेद राल
मोचरस	माजूफल	पीपल की लाख
खूनखराबा	पीपल की पत्ती	छोटी इलायची के दाने
वंशलोचन	चन्द्र रूस	कहरवा
शु० सोना गेरू	संगजराहत की भस्म	शु० फिटकरी
कौड़ी भस्म	मोती सीप भस्म	यशद भस्म
प्रवाल पिष्ठी प्रत्येक १-१ तोला	चांदी के वर्क	१०० नग

विधि—काष्टादि औषधियां कूट कपड़ छन कर रख लेना। वंशलोचन प्रथक पीस छान कर रख लेना भस्म प्रथक प्रथक। भस्म और चांदी के वर्क मर्दन करें पश्चात् काष्ट औषधि और वंशलोचन उसके पीछे, मिश्री मिला एक सम कर रख लेना।

सेवन विधि—मात्रा एक माशे से ३ माशे तक। समय प्रातः सायं या आवश्यक समय पर। अनुपान दूध की लस्सी अथवा ठन्डा किया हुआ गरम दूध मिश्री मिला या जल ठन्डा अथवा उचित अनुपान से रक्त प्रदर, रक्तपित्त, रक्तार्शनकसीर आदि से रक्त श्राव को बन्द करने वाला है।

प्रयोग नं० २ अश्मरीनाशिनी वटी—

पलाशक्षार, कदली क्षार, तिलक्षार, अपामार्गक्षार, यवक्षार, टंकण क्षार, कलमी शोरा, सोनागेरू, गुलाब के फूल, सौंफ, गोखरू, (बड़ा) पाषाणभेद, शतावरी, सफेद मुसली, सफेद चन्दन ककड़ी के बीज, छोटी इलायची के दाने, कपूर, प्रवाल पिष्ठी, स्वर्णमाक्षिक भस्म —ये २० औषधियां दो दो तोला, पारद-गंधक की नीलवर्ण कज्जली ४ तोला तथा उत्तम शिलाजीत २० तोला।

विधि—काष्टादि औषधियां का सूक्ष्मचूर्ण, कज्जली तथा भस्मादि को को खरल कर एक जीव बनाना। अनन्तर ४० तोला गोदुग्ध में शिलाजीत को गलाकर और उसीमें सभी औषधियों को मिलाकर लोह के खरल में खूब कूटना। औषधि का मिश्रण स्निग्ध बन जाने पर ४-४ रत्ती की गोलियां बनाकर रखना प्रातः सायं या दिन में ३ बार १ गोली से ३ गोली तक। इन गोलियों के सेवन से सभी प्रकार की अश्मरी (पथरी रोग) मूत्र घात में आश्चर्य जनक लाभ होता।

राजवैद्य श्री० पं० प्रयागदत्त जी शर्मा वैद्यविशारद

हीरागंज कटनी सी० पी०

आप श्रीमान पं० बलदेव-सिंह जी वैद्यराज के सुपुत्र है आपकी आयु लगभग ६६ वर्ष की है। आप सुहावल राज्य के राजवैद्य हैं। वैद्य विशारद की उपाधि और अनेक प्रसंसा पत्र प्राप्त किये हैं। संस्कृत के अच्छे विद्वान और अनुभवी चिकित्सक है। आपके यहां चिकित्सा कार्य परम्परागत से चला आरहा है।

प्रयोग नं०१ रक्त प्रदर नाशक—

तृणकान्तमणि (केहरवा) भस्म ६ माशे,
+कुमोदनी के फूल १ तोला मुनक्का १ तोला
लोध १ तोला चन्दन मलियागिरी १ तोला

विधि—सबको कूट छान भस्म मिलाकर शीशी में भर कर रखलें। मात्रा ३ माशे अडूसा (वांसा) के पत्तों का रस ६ माशे शहद ३ माशे में मिलाकर चटाने से स्त्रियों के मूत्र मार्ग से आने वाला रक्त बंद हो जाता है २ सप्ताह सेवन से रक्त प्रदर रोग नष्ट हो जायगा।

प्रयोग नं० २ अतिसार नाशक—

शु० पारा १ तोला शु० आमलासार गंधक १ तोला

+ कुमोदनी को कुमुद, कोहरी, कुदनी, भी कहते हैं।

लोध १ तोला | कुड़ा की छाल १ तोला
बेल का गूदा १ तोला | धवई (धाय) के फूल १ तोला
अफीम ३ माशे | मोचरस १ तोला

विधि—प्रथम पारद गंधक को ३ घन्टे घोट कर कज्जली करले पुनः अफीम मिलाकर घोटे पश्चात काष्ठौषधि कूट कपड़ छन कर मिला कर २ घन्टे घोट कर शीशी में भरलें। मात्रा–१॥ माशे की है परन्तु प्रथम ४–४ रत्ती की मात्रा से बेल के क्वाथ से औषधि और १॥ माशे शहद मिलाकर पिलावें इसके सेवन से सब प्रकार के अतिसार, गृहणी, प्रवाहिका रोग नष्ट हो जाता है।

आयुर्वेद शास्त्री श्री० पं० सतीशकुमार जी शर्मा

आयुर्वेद सेवा सदन नाथ द्वारा (मारवाड़)

आपका जन्म सं० १९७६ वि० से राजवैद्य स्वर्गीय श्रीमान् पं० मोहनलाल जी शर्मा के यहां हुआ। आपके यहा परम्परा से चिकित्सा व्यवसाय चला आता है। आपने श्रीमान किशनलाल जी कोठारी विशारद और पं० साहित्य रत्न नरेन्द्रकुमार जी जोशी की सहायता से आयुर्वेद शास्त्री परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। ४ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं।
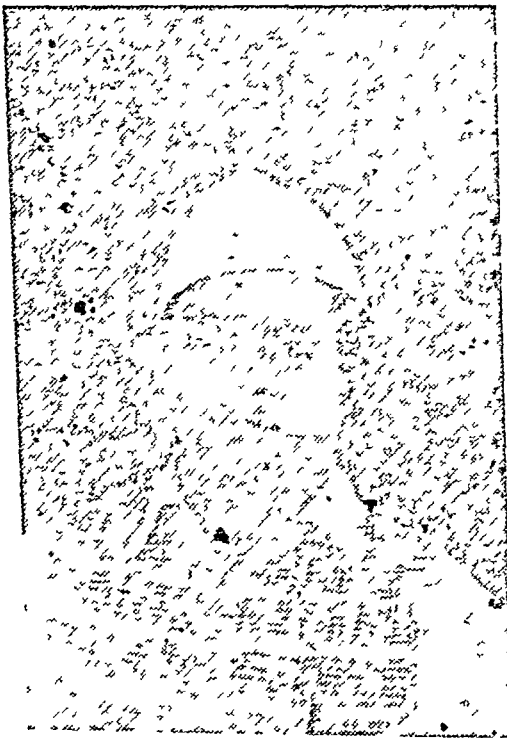
प्रयोग नं०१ दद्रु रोग हर-

श्रीफल (नारियल) के खोपटा (कांचली) १ सेर
तमाखू पावसेर | आमलासार गंधक २ तोला

विधि—तीनों को हांडी में भर पाताल यन्त्र की विधि से तैल निकाल लें और हर प्रकार के दाद पर लगावें अवश्य लाभ होगा। कुछ जलन करता है। नरम जगह पर नहीं लगावें।

प्रयोग नं० २ मलेरिया हर—

कुटकी	१ तोला	करंज की मिंगी	१ तोला
अति विषा	१ तोला	पीपल छोटी	६ माशे

नाय चूटी (नाय) २ तोला

विधि—सबको कूट छान चूर्ण कर दश दश भावना चिरायते की और गिलोइ की दें और १ भावना काली मिर्च की दें और १ भावना तुलसी पत्र के स्वरस की देकर ३-३ रत्ती की गोली बनावें। मलेरिया आने से पहले ३ मात्रा देनी चाहिये। २-२ या १-१ घन्टे बाद उष्ण जल के साथ देने से ३-४ रोज में मलेरिया और ७-८ दिन में ज्वरांश नष्ट हो जाता है।

वैद्य श्रीमान् अम्बालाल जी

द्वारा अम्बालाल नाथाभाई पटेल, काशीपुरा (छोटा उदयपुर स्टेट)

—o—

आपका जन्म श्रीमान् वैद्य नाथाभाई पटेल के यहां हुआ। आप पटेल जाति के रत्न हैं। आपकी आयु ३० वर्ष के लगभग होगी। आपने वनुला मेडीकल कालेज से वैद्यराज की पदवी प्राप्त की है और वैद्य सम्मेलन से भिषक् परीक्षा उत्तीर्ण की है।

प्रयोग नं० १—हिस्टेरिया पर—

—केशर कश्मीरी नम्बर १ की बड़े तारों वाली को कूट कपड़ छन कर शीशी में रखलें। रोगी को प्रथम ४-४ रत्ती से आरम्भ करें ८ वें दिन से मात्रा बढ़ावें और जब रोगिणी चार तोला केशर सेवन कर लेगी तभी रोग मुक्त होजायगी। रोग मुक्त होने पर भी १५-२० दिन पथ्य रक्खे और तैल, लाल मिर्चा, खटाई, अदरख राई नहीं खानी चाहिये।

प्रयोग नं० २— उपदंश रोग पर—

—स्वर्णक्षीरी (सत्यानासी) की जड़ १० तोला लेकर खरल में घोटे और स्वर्णक्षीरी के स्वरस की २१ भावना देकर बेर के बराबर गोली बना सुखा रखलें। जब आवश्यकता हो तब प्रातः काल १ गोली खिला ऊपर से स्वर्णक्षीरी की जड़ २ तोला पाव-भर पानी में खूब बारीक पीस छान कर पिलादे और उसके ४ घन्टे बाद भोजन दे। भोजन में गेंहू चना की रोटी और घृत ही दें अन्य वस्तु कुछ नहीं खानी चाहिये २१ दिन में उपदंश, चांदी, गरमी नष्ट होजाती है और उसके विष को भी नष्ट कर देती है जिससे पुनः कभी उपदंश या उपदंश जन्य रोग नहीं होते है।

वै० विशारद श्री० पं० भंवरलाल जी शर्मा मिश्र

प्र० चि० श्री गङ्गाराम होस्पीटल खारची (मारवाड़ जंक्शन)

एक सौ चौरासी

आपका जन्म सं० १९७१ वि० में स्थान सैड पोस्ट वैराट राज्य जयपुर निवासी श्रीमान् पं० वेनीप्रसाद जी मिश्र के यहां हुआ। आपने आयुर्वेद भिषक वैद्य सम्मेलन की, वैद्य विशारद साहित्य सम्मेलन की परीक्षा उत्तीर्ण की है। यू० पी० इन्डियन मैडीशन बोर्ड के बी० क्लास के रजिस्टर्ड वैद्य है। ११-१२ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं।

प्रयोग नं० १—मन्थर ज्वर पर—

सुदर्शन चूर्ण	१० तोला	संजीवनी वटी	५ तोला
तुलसी पत्र	२० तोला		

विधि—सबको १ सेर पानी में डाल गरम करें जब पाव भर पानी रहे तब छान कर पुनः गरम करें जब लेहवत होजाय तब उतार कर सुखालें और पीस कर रखलें।

उपयोग—

तुलसीपत्र ५ नग	जावित्री चौथाई रत्ती
सोंठ १ रत्ती	काली मिर्च ३ नग
सनाय ३ रत्ती	जवा हरड़ २ नग
लबङ्ग १ नग	जायफल चौथाई रत्ती
पीपल छोटी १ नग	मुलेहठी २ रत्ती
काला नमक १॥ रत्ती	छोटी इलायची नग १

—इन सब को सिल पत्थर को साफ कर पानी से धोकर इसे पानी डाल कर खूब बारीक पीस कर एक कटोरी में पोंछ कर रखलें। गाड़ा हो तब थोड़ा पानी मिला कर गरम करें जब थोड़ा गरम होजाय तब ऊपर की औषधि रत्ती ३ मिला कर पिलादे इस तरह प्रातः साय सेवन करावें। दस्त साफ होता रहेगा और ज्वर भी शान्त हो जायगा। यदि दस्त अधिक हों तब सनाय हरड़ निकाल के और बेलगिरी, अतीस आम की गुठली दो दो रत्ती मिलादें। यदि दोष घटने के बदले बढ़ते मालूम हों तब उपरोक्त औषधि मे के अनुपान में यह औषधियां न देकर मुक्ता पिष्टी चौथाई रत्ती प्रवाल पिष्टी चौथाई रत्ती मिला कर मधु के साथ दें मुक्ता प्रवाल पिष्टी न मिले तव मालती बसन्त आधी रत्ती मिला कर दें।

पथ्य—में दूध, अंगूर, अनार मीटे का रस ही दें। पानी गरम पिलावें। कास, पार्श्व शूल, हो तब मृगश्रृङ्ग भस्म मिला कर दें। छाती पर घी चुपड़ कर राई का प्लास्टर लगावें और १०-१५ मिनट बाद प्लास्टर को हटा दें।

प्रयोग नं० २—कपूरादि प्रलेप—

कपुर देशी	२॥ तोला	सफेद कत्था	५ तोला
जयपुर का सफेदा	५ तोला		

विधि—जयपुर के सफेदे को कपड़ा में छानलें। और कत्था पीस कर पृथक छान लें पश्चात एक खरल में कपूर डाल कर घोंटे और थोड़ा २ करके सफेदा और कत्था छना हुआ डालता जाय जब सब मिल जाय तब शीशी में भर कर रखलें। जब आवश्यक हो तब शतधौत घृत ४ तोला लें उसमें एक तोला औषधि मिला प्रलेप बनालें और व्रण (घाव) को नीम के पानी से धोकर प्रलेप कपड़ा पर लगा कर चुपका दें और कपड़ा से बांध दें यदि घाव गहरा हो तब जालीदार कपड़ा प्रलेप में सान कर भर दें और ऊपर से प्रलेप का कपड़ा रख बांध दे। इससे घाव भर जाता है (व्रण पूरक है) अर्श की जलन में लाभप्रद है। उपदंश के घावों में भी लाभदायक है। मामूली घावों में तो घृत चुपड़ कर इसे बुरक देने से ही लाभ होजाता है।

वैद्य शास्त्री श्रीमान पं० हरनारायण जी मिश्र

कु० पोस्ट बंगरा जिला जालौन

।—॥
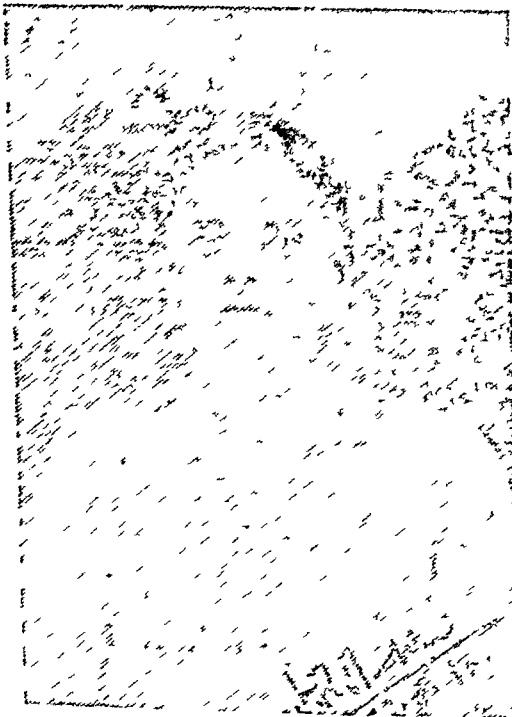
आपका जन्म श्रीमान पं० रघुवरदयाल जी मिश्र वैद्य के यहां हुआ। आपकी आयु २६–२७ वर्ष के लगभग होगी। आपने आयुर्वेद विशारद और वैद्यवर की परीक्षायें पास की हैं। आप खानदानी और अनुभवी वैद्य हैं।

प्रयोग नं० १ महा वातारि घृत–

छुहारा ३ छटांक श्वेत गुग्गुल १ छटांक
श्वेत मिर्च १॥ तोला, अफीम १॥ माशे, गौ घृत ३ पाव

विधि—सफेद मिर्च कूट कर छानले फिर अफीम मिला कर घोटे बाद को गूगल मिला कर कूटले और छुहारे की गुठली निकाल उसमें भरदें ५ छटांक मैदा पानी में माड़ कर उसकी छोटी गुझिया सी बना उसके अन्दर छुहारे भरदें और गौ घृत में पकावें। जब लाल हो जाय तब उतारकर गुझिया फोड़ कर छुहारे निकाल कर उसमें ३ छटांक मिश्री मिलाकर पीस कर झड़बेर के बराबर गोली बनालें और घृत अलग छान कर और छानने से बचे उसे भी पीस कर घृत में मिलाकर अलग रक्खे।

उपयोग—घी की मालिश इतनी करावे कि जलन होने लगे। गोली १ नित्य गौ दुग्ध से सेवन करें। वात व्याधि के लिये अचूक है पक्षघात पर भी लाभ देती है। दर्द तो १ दिन की मालिश से और गोली सेवन से ही शान्ति हो जाता है।

आयुर्वेदाचार्य श्री पं० द्वारकाप्रसाद जी द्विवेदी

श्री म्यु० गायत्री संस्कृत कालेज जब्बलपुर

आप का जन्म सं० १९६९ में सागर निवासी वैद्यराज श्री पं० रघुवर प्रसाद जी द्विवेदी म्यु० कमिश्नर के यहां हुआ। आपने संस्कृत का अध्ययन कर साहित्य की काव्यतीर्थ परीक्षा और वैद्य सम्मेलन के विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। वर्तमान में आप उक्त कालेज के प्रोफेसर और म्यु० औषधालय चेरीताल जबलपुर के प्रधान चिकित्सक हैं।

प्रयोग नं० १ उपदंश नाशक

कचनार ऽ१ भटकटैया २ तोला, इन्द्रायण की जड़ २ तोला
सत्यानाशी की जड़ २ तोला झड़बेर की जड़ २ तोला

विधि—सब को कूट कर ४ सेर पानी में औटावें जब १ सेर रहे तब छान कर पुनः गरम करे जब इतना गाढ़ा हो जाये कि गोली बन सके तब उतार झड़ बेर के बराबर गोली बना सुखा कर रखलें। एक एक गोली प्रातः सायं जल के साथ सेवन कराने से ११ दिन में ही उपदंश रोग समूल नष्ट हो जाता है। पथ्य में और दूध दें। नमक आदि कुछ भी नहीं। ×

प्रयोग नं० २ पार्श्व शूल नाशक

सोंठ, कुचला, बारहसिंहा के सींग समान भाग

विधि—तीनों को कूट छान कर रखलें। आवश्यकतानुसार यह दवा और ४ रत्ती अफ़ीम पानी में खूब बारीक पीस और थोड़ा गरम कर पसलियों पर लेप कर दे। थोड़ी ही देर में दर्द बन्द हो जाता है निमोनिया में पसली और छाती (फेफड़े पर) पर लेप करने से विशेष लाभ होता है। +

× इन ही औषधियों को पांच पांच माशे लेकर २० तोला पानी में औटावें जब ५ तोला पानी शेष रहे तब गोली खिला ऊपर से पिलावें। इससे दस्त होते हैं आँव निकलती है पेट में मरोड़ा भी होता है पर उपदंश और उपदंश जन्य सब विकार अवश्य नष्ट हो जाते हैं।

+ निमोनिया अथवा कफ ज्वर में जब पशुली में दर्द हो तब यह लाभ करता है पर निमोनिया में फेफड़ों पर लेप करने से भी लाभ होता है पलस्टर के स्थान में इसका व्यवहार भी किया जा सकता है।

—सम्पादक

भिषग्वर श्री पं० यमुनाप्रसाद जी आयुर्वेदशास्त्री

श्री नन्द विजय आयुर्वेदिक फार्मेसी जब्बलपुर

आपका जन्म सं १९७३ में नन्दवाणा ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमान् पं० देवकरण जी शर्मा के यहाँ हुआ। आपने संस्कृत अध्ययन कर जयपुर राजकीय आयुर्वेदिक कालेज से भिषग्वर परीक्षा उत्तीर्ण की और माननीय श्रीमान् पं नन्दकिशोर जी भिषगाचार्य के पास रह चिकित्सा-अभ्यास किया।

प्रयोग नं० १ नेत्र रोग हर अंजन

यशद पुष्प १० तोला निम्ब पुष्प २ तोला, इलायची दाना ६ माशे नीलाथोथा भस्म ३ माशे, फिटकरी फूला १ तोला ×रसौंत २ तोला शु० अफीम ६ माशे, पिपर मेन्ट ६ माशे, +कपूर ६ माशे

\+ कपूर को एक कांसे की थाली में पीस कर रख ऊपर से दूसरी थाली रख सन्धि बन्द कर दीपक की अग्नि दें और ऊपर की थाली पर पानी से भीगे कपड़े से पोंछते रहें। ३-४ घन्टे की अग्नि से कपूर उड़ कर ऊपर की थारी में लग जाय उसे डालें।

× रसौंत को पानी में या गुलाब जल में घोल कर कपड़ा में छान लें। और फिर नितार कर गरम कर गाढ़ा करलें यह शुद्ध रसौत ही डालें।

—सम्पादक

विधि—सबको महीन पीस छानकर १ दिन खरल में घोटे फिर रसौत को गुलाब जल में घोल छान कर उसे डाल ३ दिन घोटे फिर त्रिफला क्वाथ कर और नितार कर उसे डालकर ३ दिन घोटे फिर तीन दिन मुलहठी क्वाथ और ३ दिन निम्बत्वक् छाल के × क्वाथ से घुटाई करें फिर अफीम को गुलाब जल में घोल छान कर उसे डाल ३ दिन घुटाई करे पश्चात कपूर पिपरमेंट गुलाब जल में मिला उसे डाल १ दिन घुटाई कर सुखाकर शीशी में भर कर रखले। उपयोग—यह नेत्रों के सब ही रोगों में लाभ दायक है। तथा ज्योति बढ़ाने वाला है।

प्रयोग नं २ दद्रू विशूचिका नाशक

शुद्ध गंधक २ तोला,		शुद्ध तबकिया हरताल ३ माशे
शुद्ध जयपाल बीज १५ दाने.		नीलाथोथा का फूला ३ माशे
यशद पुष्प १ तोला	काली मिर्च ६ माशे	शुद्ध मुर्दारश्रृंग ४ माशे
शुद्ध गूगल १ तोला,	मोम १ तोला	धोया घी

विधि—घी मोम गूगल छोड़ बाकी सब औषधियां कूट पीस छान कर अलग रखलें। गूगल को गर्म पानी में डालें और पिघल जाने पर कपड़ा मे छान १ कढ़ाई में डाल अग्नि पर रख उसमे मोम भी डाल दें और ५१ बार धोये गये घृत में सब मिला कांसे के पात्र में डाल कर मलें और जलांश निकाल डाले। घी उतना ही ले जो मरहम बनाने लायक हो सके। यह दद्रु विशूचिका के लिये अनुपमेय है।

× क्वाथ उतना ही डाले जो ३ दिन घुटाई के योग्य हो।

चिकित्सक प्रभाकर श्री पं० रामचन्द्र शर्मा गौड़

श्रीमद् दयानन्द दातव्य चिकित्सालय

आर्य समाज नागौर (मारवाड़)

आप श्रीमान् पं० मूलचंद जी गौड़ ब्राह्मण के पुत्र हैं आपकी आयु लगभग ३६ वर्ष की होगी। आपने चिकित्सा प्रभाकर उपाधि प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं। आप अनुभवी और मिलनसार वैद्य हैं। वर्तमान में आप उक्त औषधालय के इन्चार्ज हैं।

प्रयोग नं० १ मद्रदावानल

नारियल की नरेली ४ सेर, नीलाथोथा एक पाव

विधि—पाताल यन्त्र से तैल निकाल कर रखले यह पामा और दाद के लिये १ ही औषधि है। +

प्रयोग नं० २ शिरशूलहर भस्म

विधि—गौदन्ती हरिताल १ सेर गुवारपाठे में घोट कर गजपुट दे इस प्रकार ३ पुट देकर पीस छान कर रखलें। यह भस्म शिरशूल

+ यह लगता ज्यादा है। पातालयन्त्र का वर्णन एक जगह पहले आ चुका है।

—सम्पादक

में एक एक माशे शहद अथवा जल के साथ सेवन करें। तीन मात्रा एक एक घन्टे बाद सेवन करावे।

नेत्रों के अन्दर शूल (धोवा) चलने पर १ माशे यह गौदन्ती की भस्म और ४ रत्ती सोड़ा सेली सिलाशा या स्प्रीन (यह अंग्रेजी औषधियां है) तथा लोह भस्म १ रत्ती मिला कर गरम पानी में दे एक २ घन्टे बाद तीन खुराक देने से आराम हो जाता है। ×

—o—

श्रीमान् वै० देवीप्रसाद जी केरारी

देवी शक्ति कार्यालय, ब्रह्मपुर आरा
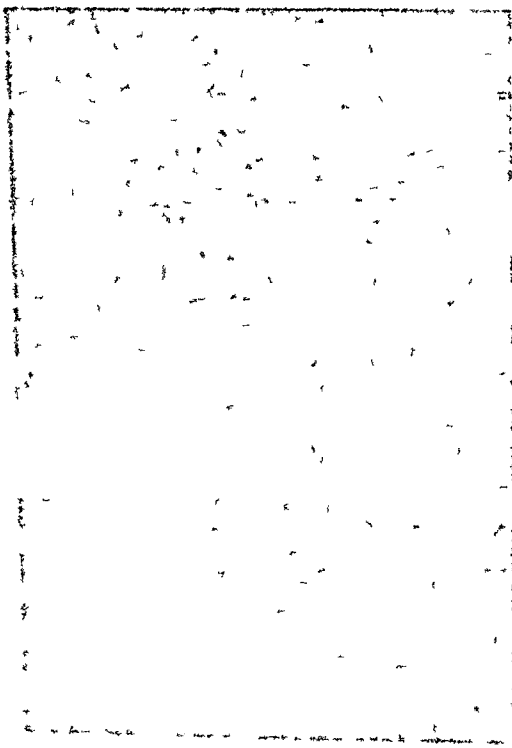
आप का जन्म केरारी वानी वंश में ब्रह्मपुर में हुआ है। आपके यहां परम्परागत चिकित्सा व्यवसाय चला आता है। आपने वनौषधि अन्वेषण में अनेक स्थानों का भ्रमण भी किया है। देश सेवी होने से जेल यात्रा भी कर आये हैं। आपकी १ ब्रांच बनारस में भी है।

× मलेरिया में दो-दो रत्ती ज्वर के वेग से पूर्व एक-एक घन्टे के अन्तर से ३ [illegible] के चटाने से मलेरिया का वेग शान्त हो जाता है। गोदन्ती के स्थान पर [illegible] कौड़ी की भस्म [illegible] शिर [illegible] दो-दो रत्ती [illegible] के साथ तीन मात्रा देने से शिर शूल [illegible] हो जाता है।

—सम्पादक

प्रयोग नं० १ लाल मरहम—

गरी का तैल ऽ।≈ मोंम देशी ऽ= हिंगुल २ तोला

रस कपूर ६ माशे सुहागा शुद्ध ५ तोला

विधि—तैल और मोम को एक कढाई में डाल कर गरम करें जब एक दिल हो जाय तब शेष औषधियों को कूट कपड़छन कर मिला कर मरहम तैयार कर रखले।

उपयोग—फोड़ा फुन्सी खुजली दाद के लिये उत्तम।

प्रयोग नं०२

गन्ध काम्ल (सल्फूरिक एसिड) ५ तोला अजमायन का अर्क ३० तोला शर्बत अनार १० तोला

विधि—सबको मिला कर रखलें। मात्रा २० बूंद से ५० बूंद तक जल मिला कर देना चाहिये। पेट दर्द वाय गोला, सीहा, यकृत रोग में अतिलाभदायक। +

+ गन्धकाम्ल (सल्फूरिक एसिड) देशी बनी होने पर भी एलोपेथी सिद्धान्त की है यदि इसके स्थान में शंखद्राव जो एक प्रकार का एसिड ही है व्यवहार किया जाय तब यह आयुर्वेद सिद्धान्तानुसार होजाता है हमने शंखद्राव से ही बना कर व्यवहार करके देखा है और लाभप्रद पाया है। अतः हम तो यही अनुरोध करेंगे कि शंखद्राव का ही व्यवहार वैद्य महोदय करें।

—सम्पादक

वैद्यभूषण श्रीमान् पुरुषोत्तमदास जी

प्रधान संचालक श्री बिहारी मणि चिकित्सालय मन्दिर

वरुड़ जिला अमरावती (बरार)

—o—
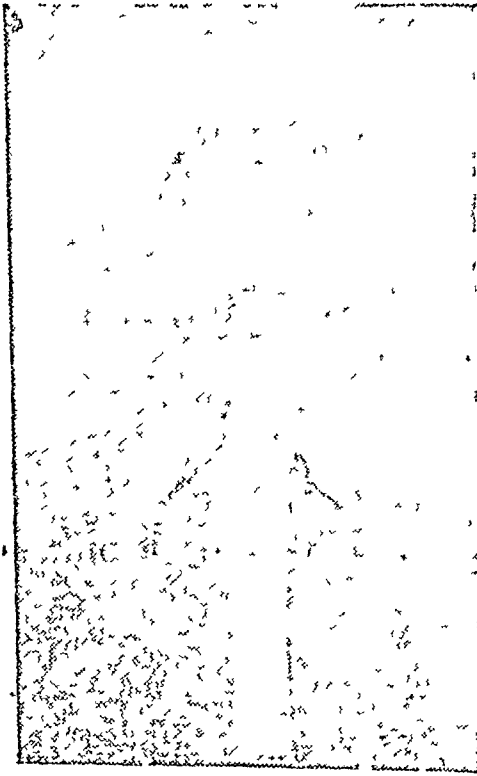
आपकी आयु लगभग २१ वर्ष की होगी। आपने हाई स्कूल परीक्षा देकर नि० भा० आयुर्वेद विद्या पीठ की भिषक् परीक्षा उत्तीर्ण की है। और वैद्य भूषण की उपाधि प्राप्त की है। आप बड़े सज्जन और मिलनसार हैं।

प्रयोग नं० १ वीर्य पुष्ट कारक—

शु० कुचिला १ तोला असली काश्मीरी केशर १ तोला
जायफल १ तोला छोटी पिप्पली १ तोला
लौंग १ तोला जायपत्री १ तोला वंग भस्म ६ माशे
रौप्य भस्म ६ माशे

विधि—प्रथम काष्टौषधि कूट कपड़ छन कर भस्में मिला, सितावर के स्वरस में खरल कर तीन तीन रत्ती की गोली बना सुखा रखलें प्रातः और सायं काल बलानुसार एक या दो गोली दूध के साथ सेवन करें। इससे बल वीर्य की वृद्धि और वीर्य पुष्ट होता है।

प्रयोग नं० २ चातुर्थिक ज्वर पर—

तीन चार माशे चूना (कलई) पानी में मिला कर उस पानी में नीबू का रस मिलावें। वह गाढ़ा होगा। बाद में ज्वर आने के २ घन्टे पहिले उस में जल मिलाकर पिलादें। ज्वर आवेगा नहीं यदि आजावे तब दूसरी बारी पर फिर सेवन करावें। अवश्य ही चातुर्थिक ज्वर नष्ट हो जायगा। +

श्रीमान् वै० नाथूराम जी चौरसे

राजूर उर बन्धु वैतूल

—o—
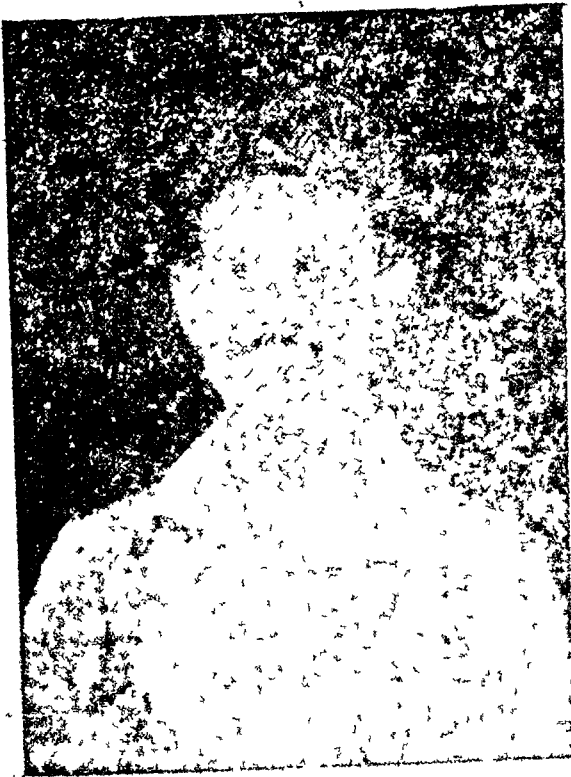
आपका जन्म श्रीमान् रामलाल जी चौरसे के यहां हुआ। आपकी आयु लगभग ३६ वर्ष की है। आपने वैद्य और वैद्य मार्तण्ड की उपाधि प्राप्त की है। आप अनुभवी चिकित्सक हैं।

+ वैद्यों को चाहिये कि रोगी के विश्वास के लिये ज्वर नाशक १॥ तोला खिला ऊपर से पिलावें।

—सम्पादक

प्रयोग नं० १ ज्वरनाशक-

कस्तूरी १ माशे	केशर २ माशे
कूट (कुष्ट) २ माशे	वच २ माशे
सुपारी २ माशे	हींग २ माशे
अजवायन ३ माशे	पिप्पली ३ माशे
सोंठ ३ माशे	शु० कुचला ४ माशे
शुद्ध शिलाजीत ४ माशे	शुद्ध भल्लातक ४ माशे
शुद्ध वत्सनाभ ४ माशे	लौंग ४ माशे
जायफल ४ माशे	जायपत्री ४ माशे
सुरजान मधुर	४ माशे

विधि—सबको कूट कपड़छन कर अद्रक, भृङ्गराज, निर्गुण्डी, पान के स्वरस में १-१ दिन खरल कर १—१ रत्ती की गोली बना सुखा रख लें।

उपयोग—अद्रक रस या गरम पानी और मधु मिला कर दें। सन्निपात में अंग शीतता और आह्पान के समय देने से दाह, उदराध्यमान दूर होता है। निमोनियां में भी लाभप्रद है कास श्वास नाशक है अनुपान भेद से अनेक रोग नाशक है।

प्रयोग नं० २ कष्टार्तव पर-

राई २ तोला	पुराना गुड़ २ तोला
केशर	१ माशे

विधि—राई को पीस गुड़ और केशर डाल मूसल से इतना कूटे कि तेल निकलने लगे तब १-१ माशे की गोली बनालें यह गोलियां कष्टार्तव अर्थात् मासिक धर्म के समय दर्द हो अनियमित मासिकधर्म, पेडू की पीड़ा और वातव्याधि नाशक है।

× केशर कश्मीरी मोगरा डालनी चाहिये। राई नई होनी चाहिये। मासिक धर्म के आरम्भ होते ही १-१ गोली प्रातः सायं गरम पानी के साथ निगलनी चाहिये। पानी के स्थान कुमारी आसव दो दो तोला पानी मिला कर गोली के ऊपर मिलाने से विशेष लाभ होता है पानी के साथ देने से इतना नहीं। दो तीन महीने मासिक के समय देने से आराम होता है।

—सम्पादक

वै० भास्कर श्री० गंगाप्रसाद जी वै०

श्रीगंगा औषधालय बजरिया हटा (सागर)

||×*—*×||

आपकी आयु लगभग ४८ वर्ष की है। चिकित्सा करते १८-१९ वर्ष हो गये हैं। आप अनुभवी वैद्य हैं। आपने वैद्यभास्कर की उपाधि भी प्राप्त की है। बाल-रोग के विशेषज्ञ हैं।

प्रयोग नं० १ बालसुधासार—

सत्व मुलेहठी १ तोला
अतीस १ तोला
दुधिया बच १ तोला
जायफल १ तोला
केशर असली १ तोला
नागर मोथा १ तोला
काकड़ा सिंगी १ तोला
वायविडंग १ तोला
जावित्री १ तोला
नेपाली कस्तूरी ३ माशे

अलकोहल १ पौन्ड

विधि—एक बोतल में अलकोहल + अथवा ब्रांडी एक सेर नम्बर १ की भर कर उसमें सब औषधियां जौ कुट कर डालदें और मजबूत कार्क लगादें और खूब हिलावें और प्रति दिन एक बार हिलावें

रहें ७ दिन रक्खा रहने के बाद को नितारकर सोखता में छान कर दूसरी बोतल में भरकर रक्खलें।

व्यवहार विधि—३ मास तक के बालकों को १ बूंद से ४ बूंद तक १ वर्ष तक के बालक को ५ से १० बूंद तक। इसी प्रकार अवस्था अनुसार मात्रा बढ़ावें। पूर्ण युवा की मात्रा ३० बूंद की है। अधिक से अधिक ६० बूंद दे सकते हैं। छोटे बालकों को माता के दूध में बाकी सबको जल में मिला कर दे।

गुण—शीतकाल में होने वाले बालकों के समस्त रोग जैसे सर्दी खांसी निमोनियां पसली चलना आदि सब प्रकार के रोग में लाभदाक है। रात्रि को ३-४ बूंद प्रति दिन बालकों को देते रहने से सर्दी से होने वाले रोग नही होते हैं यदि रोगी को दस्त अधिक होते हों तब अहफेनासव मिलाकर दें। यदि दस्त न होता हो तब एलुआ या उसारे रेमन मिला कर दें।

प्रयोग नं० २ सर्दज्वरहर वटी—

गोदन्ती भस्म १० तोला गिलोय (गुरचे) का सत्व १० तो०
सुहागे का फूला २॥ तोला फिटकिरी का फूला २॥ तो०
शु० सिंगरफ २॥ तोला भारतीय कुनीन २॥ तोला

विधि—नीबू के रस में घोटे जब खुश्क हो जाय तब घृत कुमारी का रस डाल कर घोटें और १-१ माशे की गोली बनालें।

सेवन विधि—ज्वर आने के पूर्व १-१ गोली ३-३ घन्टे बाद गरम पानी से देनी चाहिये इससे मलेरिया का वेग रुक जाता है। शेष ज्वरों में भी १ प्रातः और १ ज्वर बढ़ने के पूर्व देने से लाभ होता है।

+ अलकोहल की जगह मृतसंजीवनीसुरा उत्तम नं० की बना उसमें डालें तब गुण अधिक करेगी।

—सम्पादक

आयु० शास्त्री श्री० पं० क्षेत्रपाल जी शर्मा वै०वि०

वहरामपुर पोस्ट जताली (अलीगढ़)

—o—

आपकी आयु लगभग ४५ वर्ष की होगी आप श्रीमान् पं० जोरावर प्रसाद जी शर्मा के सुपुत्र हैं आपने ऋषिकुल आयुर्वेद कालेज से आयुर्वेद शास्त्री और विद्यापीठ से वैद्य विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप भिवानी आसाम आदि अनेक स्थानों के धर्मार्थ औषधालयों में प्रधान चिकित्सक रहे हैं। कलकत्ते में भी चिकित्सा कार्य कर चुके हैं। अनुभवी और सिद्धहस्त चिकित्सक मिलनसार और हँसमुख हैं। आप संग्रहणी और उन्माद के विशेष चिकित्सक हैं।

प्रयोग नं० १—राजयक्ष्मा हर—

काकजंघा का स्वरस २॥ तो० रेक्टीफाइड स्प्रिट १० तो०

—को एक अच्छी काक दार शीशी में बन्द करके रखदे धूप निकलने पर धूप में रक्खा रहने दे धूप न रहे तब अन्दर जहां हवा न लगती हो ऐसी जगह में तीन रोज उसके बाद फिलटर में छान कर इन्जेक्शन करने की शीशी जो विलायती केलसियम वगैरह की आती हैं उसमें रबड़ तार से बँधी होती है उसमें भर कर जैसे विलायती तरीके की पैक थी उसी तरह पैक करदे। बाद में २ शीशी वाली शिरेंज से एक दिन बीच में छोड़ कर एक दिन हाथ के मूल भाग में इन्ट्रामशक्यूलर यानी मांस में इन्जैक्शन करता रहे।

काकजंघा का घन सत्व २-२ माशे

बकरी का दूध ऽ।-ऽ। भर

—प्रातः सायं ८ बजे पिलाता रहे। अगर रोगी खर्च कर सके तो मुक्ता चन्द्रपुटी १-१ रत्ती मधु में चाट कर सुदर्शन चूर्ण ४-४ माशे भांग की तरह घुटवा छनवा कर देता रहे।

—अगर किसी तरह से दस्त हो जांय तो दुग्ध वटी भैषज्य रत्नावली का प्रयोग १-१ गोली बकरी के दूध के साथ देता रहे, प्रातः सायं दस्त न हों तो देने की आवश्यकता नहीं खाने पीने से अन्न जल छोड़ कर केवल बकरी का दूध पिलावे चिकित्सा शुरू करने से पहले रोगी से तीन साल ब्रह्मचर्य रहने की प्रतिज्ञा अवश्य कराले अगर अत्यन्त रोगी बल हीन नहीं हुआ होगा तो अवश्य आराम होगा इसमें सन्देह नहीं।

प्रयोग नं० २—उन्माद रोग पर—

षटगुण वालजारित सिद्ध मकरध्वज नं० १	१ रत्ती
सर्पगन्धा	३ माशे

—कूटी और कपड़े में छनी मिला कर ५ तोला गुलाब जल के साथ फकावे प्रातः सायं दो समय सेवन करावें।

—गाजर ५ तोला कद्दू कस में कसी हुई उसका नर्रा अलहदा किया हुआ हो, ऽ॥ सेर दूध में उबाल कर ठन्डो होने पर—

अर्क बेदमुश्क ५ तोला	अर्क केवड़ा २॥ तोला
मिश्री	३ तोला

—मिला कर उपरोक्त प्रयोग से एक घन्टा बाद खिलावे खाने पीने में गरिष्ट चीज और गरम न दे हलका भोजन दे। रोगी को नींद अधिक आवेगी मुंह से लार न गिरेगी रोगी कमजोर होगा इसकी चिंता न करे विशेष कर घीया, तोरई, लौकी अन्न में गेहूं के सिवाय कुछ न दे।

वैद्यरत्न श्री० स्वामी बसंत सिंह जी महाराज

निर्मल धर्मार्थ औषधालय, मीर घाट—बनारस
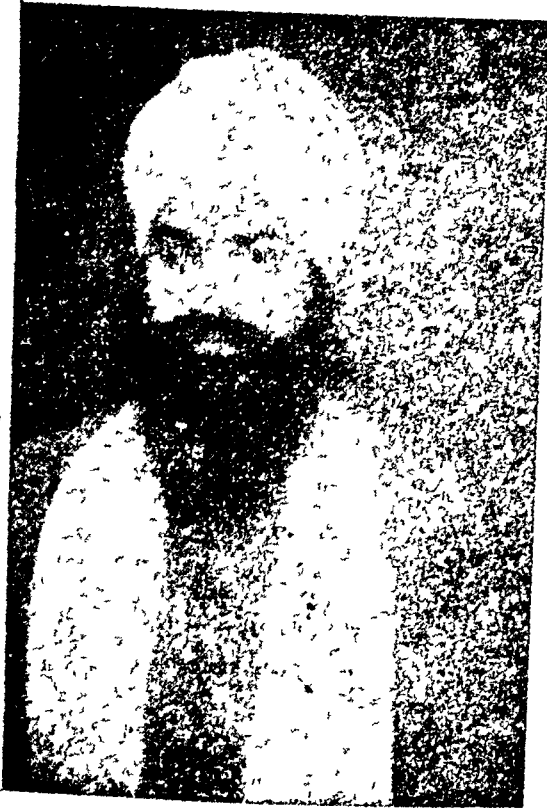
आपका जन्म स० १६६६ में पंजाव प्रान्त में निर्मल कुल में हुआ। आपने व्याकरण पढ़ने के बाद आयुर्वेद पढ़ कर कई परीक्षाएँ भी दी है आप साधु समाज के रत्न हैं। मिलन सार और साधुमयी हैं।

हृदय रोग पर—

१—वंशलोचन एलालघुवीज सत्वगिलोय

प्रत्येक १-१ तोला

वहेड़े की गुठली की मिंगी	३ तोला
मिश्री	६ तोला

विधि—सव को कूट पीस कर रखलें। हृदयशूल, हृदयकम्प पर वड़ा प्रभाव शाली है देखने में ही साधारण है। जिस समय ज्वर, विष नशा आदि के कारण जव रोगी को अधिक घवड़ाहट हो यह मालूम हो कि प्राण गये तव इसको एक एक माशे शर्वत वन्फसा के साथ चटाने से रोगी शांत मालूम करता है।

क्षयरोग पर--

श्वेताभ्र को धान्याभ्रक वना उससे आधा कलमी शोरा डाल और दही डाल इमाम दस्ते में खूव कूटे और टिकिया वना सुखा सराव

सम्पुट कर गजपुट में फूंक दे। इस प्रकार ७ आंच देने से अभ्रकभस्म निश्चन्द्र हो जाती है उस को जल में डालकर क्षार (शोरा का अंश) निकाल देना चाहिये और सुखाकर रख लेवें। इसी तरह कृष्णाभ्र की भस्म बनाई जा सकती है।

विधि—निश्चन्द्र श्वेताभ्र भस्म ५ रत्ती, सत्व गिलोय २॥ रत्ती अडूसे के शर्बत में मिलाकर चटा ऊपर से बकरी का दूध पिलावे। दिन रात में तीन वार सेवन करावें। यह पित्त प्रकृति वाले को उत्तम है, वात कफ प्रकृति वाले को कृष्णाभ्रकभस्म २ रत्ती, शृङ्गभस्म, २ रत्ती सत्व गिलोय २ रत्ती मधुमें चटावें। तीन वार दे ऊपर से बकरी का दूध दें। भोजनोपरान्त चन्द्रहासासव दें। २-३ महीने तक सेवन करावें। ×

× हम यह तो कह नहीं सकते कि शत प्रतिशत लाभकारी है पर प्रथम अवस्था वाले को ८०-८५ प्रतिशत और द्वितीय अवस्था वाले को ४०-४५ प्रतिशत लाभकारी है। तृतीयावस्था में लाभदायक नहीं। हृदय कम्पन वाला प्रयोग भी ८०-८५ प्रतिशत लाभकारी है।

प्रयोग नं० १ (हृदय रोग) में—

अकीक भस्म, अर्जुनघनसत्व, मुक्ता भस्म यह प्रत्येक तीन २ माशे मिला कर प्रयोग बनाया गया और अति लाभ दायक हुआ बिना इन तीनों वस्तु के प्रयोग बहुत ही धीरे २ लाभ करता है और रोगी वैद्य के हाथ से चला जाता है रोगी को धैर्य नहीं होता अतः उपरोक्त तीनों औषधियाँ अवश्य पिलानी चाहिये—सम्पादक

महात्मा श्री० दुर्विजयदास जी वैद्य

स्थान—दुखहरनगुफा पोस्ट हरिहरपुर, जिला दुमका

आपकी आयु ५६ वर्ष के करीब है। आप श्रीमान् चहरजासिंह जी के यहां क्षत्री वंश में उत्पन्न हुए हैं। आप योग्य परोपकारी महात्मा हैं, आपने चिकित्सा द्वारा जन साधारण की निस्वार्थ सेवा की है।

पेट के दर्द के लिये—

२—ईख का रस — बीस सेर

बड़ीहरड़ का छिलका — बहेड़े का छिलका

प्रत्येक ४०-४० तोला

सनाय की पत्ती — १० तोला

विड़ नमक — सेंधानमक

५-५ तोला

विधि—इसको छोड़ शेष औषधियां कूट कर छान ले और एक मट्टी के मटका में डाल दे और ईख का रस भी उसी में डाल अच्छी

तरह मिलाकर मुख वन्द कर १ मास रक्खा रहने दें। १ मास बाद निकालकर कपड़ा में छान बोतल में भरलें।

सेवन विधि—पेट के दर्द के समय १ या २ तोले अर्क और उतना ही पानी मिलाकर पिलावें दर्द वन्द हो जायगा गुल्म और तिल्ली में भोजनोपरान्त दोनों समय सेवन कराने से अवश्य लाभ होता है।

ज्वर हर चूर्ण—

३—पीपल छोटी	कालीमिर्च	छोटी हरड़
बहेडे का छिलका	कुटकी	चीतामूल छाल
जवाखार	सोंफ	धनिया
पंचलवण	प्रत्येक १-१ तोला	
नीम की मुलायम पत्ती		२ तोला

विधि—सब को कूट छान चूर्ण वना रख लें। सेवन विधि--छः छः माशे सुवह शाम गरम पानी के साथ फकावें।

गुण---अफरा, कब्जी, भूख न लगना आदि पाचन विकार के साथ ज्वर हो तब विशेप लाभ देता है।

प्रयोग मणिमाला

का

दूसरा भाग

के लिये हमें अब ही से वैद्य प्रकाशन के लिये विशेप अनुरोध कर रहे हैं कारण प्रथम भाग के २५१ वैद्यों के ५०१ चित्र एवं परिचय हमे प्राप्त होने से अब हमे जो प्रयोग परिचय फोटू भेज रहे थे उन्हें हमें लाचारी से वापिस करने पड़े थे अतः उन्होंने तथा अन्य वैद्यों ने भी हमें लाचार कर दिया है अतः दूसरे भाग को भी प्रकाशित करने का विचार कर रहे हैं और पूर्वाङ्क में हम अपना पूर्ण निर्णय प्रकाशित करेंगे।

—व्यवस्थापक